श्रीभक्तिशिरोमणि

जिसमें

सारपूर्ण रामायणकी कथा बहुत रोचक
छन्दों में वर्णित है ॥

जिसको

श्री [illegible]या निवासि परमभक्त महात्मा वैष्णव
रामचन्द्र [illegible] शिष्य व बारहबंकी प्रदेशान्तर्गत न-
रौली ग्रामनिवासि नम्बरदार अयोध्यासिंह
वर्मा के पुत्र भगवन्तसिंहने बनाया ॥

प्रथम बार

लखनऊ

[illegible]लकिशोर(सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
सन् १८९९ ई० ॥

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं॥

नवीनसंग्रह ।)॥

जिसमें भक्तभयहारी कुञ्जबिहारी रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचंद्र और श्रीराधिकाजी के लीलाविषयक नानाप्रकारके अत्युत्तम कवित्त और सवैयादि वर्णित हैं जिनको हफीजुल्लाहखां सांडीनिवासि मुदर्रिस मदरसा राजाबक्शपुर गलगलै डाकखाना बघोली स्टेशन ज़िला हरदोई ने अपने शौकीन दोस्तों के दिलबहलाने के निमित्त अति परिश्रमसे संग्रह किया॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह ≈)॥

हफीजुल्लाहखां संग्रहीत जिसमें बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर छओं ऋतुओं के कवित्त व सवैये [illegible] २ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परम चुहचुहे रसीले, अपने रसि[illegible] व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्त विनोदार्थ बड़े [illegible] छांट २ कर लिखेगये हैं॥

प्रेमतरङ्गिणी –)॥

मुन्शी हफीजुल्लाहखां संग्रहीत इसमें विचित्र विचित्र सामयिक दृष्टपक्ष व प्रत्येक ऋतुओं के कवित्त सवैया हरएक कविके बनाये हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम होती है॥

हफीजुल्लाहखां का हजारा ॥≈)॥

इसमें नानाप्रकार के बहुतही उत्तम २ सन् ११५४ कवित्त लि[illegible] स्थान २ पर तस्वीरें भी बनी हैं ऐसा ग्रन्थ कवित्तों का [illegible] हुआ आजतक देखने में नहीं आया उत्तमता देखने [illegible] रसिक पुरुषों के लिये अत्यन्त आनन्दकारी है॥

भक्तिशिरोमणि का सूचीपत्र ॥

बालकाण्ड ।

इति बालकाण्ड समाप्त ॥

अयोध्या काण्ड ।

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

आरण्य काण्ड ॥

आरण्यकाण्ड समाप्त ॥

किष्किन्धा काण्ड॥

इति किष्किन्धाकाण्डसमाप्त॥

सुन्दर काण्ड॥

इति सुन्दरकाण्डसमाप्त॥

लङ्का काण्ड॥

॥ इतिलङ्काकाण्डसमाप्त ॥

उत्तर काण्ड ॥

इतिउत्तरकाण्डसमाप्त ॥



भक्तिशिरोमणि बालकाण्ड

॥ सोरठा ॥

विघ्न हरण गणराय वाहन मूषक वदन गज ।
चरण कमल शिर नाय बंदौं श्रीगिरिजा सुवन ॥
गणपति होहुसहाय देहु बुद्धि करि स्वच्छ मति ।
करहु कृपा अब आय जोरि पाणि अस्तुति करौं ॥

क० ॥ एक द्विज आनन द्विरद पंचआनन सुवन विघ्न भानन बदत वेद गाथही । सिद्धि शिवसार गुण रूप के अगार मोद मंजुल उदार अब्धि पूर्ण ज्ञान पाथही ॥ दानि ऋद्धि सिद्धि बुद्धि विस्तृत सुयश चारु वंदनीय लोक सब अग्र देव माथही । भाग्यवंत जोरि हाथ अवनि नवाय माथ करत प्रणाम वारवार गण नाथही ॥ सो० ॥ बंदौं शारद माय मातु अनुग्रह कीजिये । बैठहु रसना आय जाते बल वाणी लहौं ॥ दो० ॥ बंदौं हर गिरिजा चरण वारवार शिर नाय । जासु कृपा वारिधि अगम विनु प्रयास तरिजाय ॥ छप्पै ॥ भाल चंद्र शिर गंग अंग शुभ भस्म विराजै । कुंद इंदु दर गौर मौर शिर ब्यालन राजै ॥ अम्बकाब्ज त्रयमंजु कंठ विष परम सुहावे । रंजित छाल कुरंग माल मुंडन छवि छावे ॥

कृपा जन जानिकै॥ भुजंगप्रयात छन्द॥ नमो अञ्जनी गर्भसंभूत कीशं। नमो ज्ञान वैराग्य अम्भोधिईशं॥ नमो हेम वर्णांग कैशोर रूपं। नमो कोटि कामाभिरामं अनूपं॥ नमो वीर वाणैत विख्यात लोकं। नमो भक्त आनंददं हारशोकं॥ नमोकेलि बालार्क ही ग्रास कर्त्ता। नमो लोक त्रैशोक संताप हर्त्ता॥ नमो धीर गंभीर श्रीराम दूतं। नमो दुष्ट दर्पापहं वायुपूतं॥ नमो बुद्धि विद्याकरं तेजराशी। नमो ऋद्धि सिद्ध्यादि दाता विनाशी॥ नमो मर्कटाधीश सुग्रीव मित्रं। नमो शील संतोष धामं पवित्रं॥ नमो भूरि वैदेहि शोकापहारी। नमो कौतुकै बाग विध्वंसकारी॥ नमो अक्षहाकीश वीरो अशंका। नमो दाहनं हेम लंकेशलंका॥ नमो वज्रगातारि मानापहर्त्ता। नमो लंक उत्पात प्रारम्भकर्त्ता॥ नमो वद्धवारीश द्रोणाद्रिधर्त्ता। नमो कालनेमारि संहारकर्त्ता॥ नमो प्राणसौमित्रदानंदकारी। नमो राघवेन्द्राति शोचापहारी॥ नमो कुम्भकर्णाम्बुदं नादत्राशं। नमो कारणं रावणादी विनाशं॥ नमो यातुधानारि भूभारहर्त्ता। नमो विप्र गो साधु आनंदकर्त्ता॥ नमो नन्य श्रीराम भक्ताख्य लोकं। नमो देव वृन्दापहं त्रासशोकं॥ नमो बंद्य त्रैलोक्य आनंदरासी। नमो मंगलागार दाता सुपासी॥ कवित्त॥ ज्ञान गुण वंतधीर साहसी सबलवंत वीर यशवंत कारअंत प्रेत भूत के। शील सम तोष वंत बांकुरोति तेजवंत बुद्धिवंत चातुर अनन्त राशि बूत के॥ वेदहू पुराण सन्त शारद अनन्त यश गावनालहंत ऐसे अंत राम दूतके। भाग्यवंत आपतंत भवल प्रतापवंत नौमि नौमि नौमि पद पद्म वायुपूतके॥ वेदविद ज्ञान खानि साहेब सुजान दिव्य जानत जहान गुणदेव वन्दिछोर के। काम क्रोध लोभ मान मोहमद द्रोह सिंधु शोषक अगस्त्य ग्रासकार रवि भोरके॥ पालन तवानि

दानि कानि दास भौवित्रास देत शुभ साजि काज तासु सब वोर के। भाग्यवंत रामदूत साहसी कृपाल वीर नौमि नौमि नौमिपद केशरीकिशोर के ॥ सवैया ॥ जै हनुमान सुजानबली प्रणतारति मोचननाम तिहारो। आगम वेद पुकार यशौ निज दासनके बहु काज सुधारो ॥ राघवदूत प्रताप महापद सेवत संकट शोच निवारो। पायँन माथ धरे भगवंत द्रवो जन जानि समीरकुमारो ॥

दो० बंदौं श्री गुरुदेव पद हरण अखिल भवभार।
विधि हरि हर सेवत जिन्हें सकल सुमंगलसार ॥

बंदौं गुरु पद पंकज धूरी। जासु कृपा नाशै दुख भूरी ॥
वचन भानु नभ हृदय प्रकाशा। होत मोह तम सघन विनाशा ॥
बंदौं सन्त सभा सुखदाई। जोरि पानि पायँन शिरनाई ॥
राम नाम जहँ पोत सुहावा। ज्यहि चढ़ि पतितपार भवपावा ॥
सुमिरतजिनहि सकलदुखनाशै। शमनकुमति उरसुमति प्रकाशै ॥
जे बिनु कारण पर उपकारी। कृपासिन्धु सेवक दुखहारी ॥
बन्दौं विप्र चरण जलजाता। नमतजाहि हरि शंभु विधाता ॥
द्विज पद सकल सुमंगल मूला। हरणकठिनकलिकलुषसमूला ॥

दो० बन्दौ सुर मुनि नागनर शीश नाय कर जोरि।
जानि दास निज आस उर पूरण कीजे मोरि ॥

बन्दौं विधि पद पंकज धूरी। जासु प्रभाव प्रगट जग भूरी ॥
बन्दौं सादर वेद पुराना। जेनित करहिं राम गुणगाना ॥
वालमीकि आदिक कवि नाना। जिनरघुपतियशविशदबखाना ॥
करउँ प्रणाम चरण शिरनाई। करहु कृपा सब होहु सहाई ॥
प्रणवो खल जन मन क्रमबानी। परसुख दुख सुख बड़ परहानी ॥
बारहि बार विनय सुनि मोरी। हरियश करत करब जनिखोरी ॥

बन्दौं अवधपुरी सुखरासी। संतत जहँ सियराम निवासी॥
सरयू सरि बन्दौं सुखदाई। ज्यहिदरशन अघजातनशाई॥

दो० बन्दौं श्रीदशरत्थ पद कौशलादि सब रानि।
जिन पाये सुत रामसम दुलराये सुख मानि॥

बन्दौं सकल अवधपुर बासी। जड़ चेतन खग मृग सुखरासी॥
बन्दौं जनक नगर सुपुनीता। आदिशक्ति जनमी जहँसीता॥
बन्दौं जनक सुनैना रानी। जिन जामात लहे धनुपानी॥
बन्दौं जनक नगर नर नारी। जिन सादर प्रभुरूप निहारी॥
पुनि बन्दौं सुरसरि वरधारा। पावन करणि हरणि अघभारा॥
चित्रकूट बन्दौं सुख रूपा। कीन निवास जहां सुरभूपा॥
बन्दौं सकल भालु अरु कीशा। जिनहिंप्राणसमप्रियजगदीशा॥
सब सन्त विनय करौं कर जोरे। पूरण करहु मनोरथ मोरे॥

दो० बन्दौं तुलसीदास पद गहे कृपाको पन्थ।
सुलभ जीव उद्धारहित रचि दीन्हे बहुग्रन्थ॥
गीतावलि कवितावली छंदावलि सुखदात।
मानस वरवै छप्प अरु कुंडलिका शुभसात॥
शतसैया बाहुक विनै रामाज्ञा प्रश्नैन।
अरु विराग संदीपिनी सिय मंगल सुखदैन॥
इत्यादिक औरौ बहुत रचे ग्रन्थ सुखधाम।
पढ़तसुनतजिनकेसुजन लहतसुवांछितकाम॥
धन्य धन्य तुलसी जगत कृपावन्त विनु हेतु।
भवसागर के तरणको रचि दीन्हे दृढ़ सेतु॥
वार वार करजोरिकै पुनि पुनि शीश नवाय।
तुलसिदास पदपद्म युग बंदौं मन वचकाय॥

विद्या बुधि बलहीन मैं दीन तुम्हारो दास।
हरियश चाहत गावनो करिये पूरण आस॥
वंदौं श्रीरामायणहिं सकल जगत सुखदानि।
जीवन धन संतन सुजन राम सुयश धरखानि॥
आगम वेदपुराण पै मथित्यहि तुलसीदास।
काढि सुमानसघृतअमलकीन्हे जगतप्रकास॥

अवधपुरी जग विदित अनूपा। राम घाट पावन सुखरूपा॥
त्यहि समीप सोहत शुभधामा। पूरुब मुखेहि द्वार अभिरामा॥
तहँ गुरु वैष्णव दास निवासा। जिनके दरश किहे अघनासा॥
ज्ञान विराग सकल गुणधामा। राम नाम सुमिरहिं वसुयामा॥
शांतरूप अति मृदुल सुभाऊ। समचित हृदय क्रोध नहिंकाऊ॥
कहँ लगिकहौं अमित गुणभानी। हरि अवतरे मनहुं निजआनी॥
देश देश के संत अपारा। आवत हैं तिनके नितद्वारा॥
तिनके हेत छावनी छाई। देत तहाँ सब संत टिकाई॥

दो० अशन सुधा सम संतनन्ह करखावहिं बहुभांति।
परमानंद छायो तहाँ रहत सदा दिनराति॥

यह कीरति व्यापी सब ठाँई। जहँ तहँ मिलि संतन सबगाई॥
कह्यों स्वगुरु अस्थान बखानी। अत्र निज कहौं जन्ममाहे भानी॥
अवध पश्चिमे योजन साता। बाराबंकि जिला विख्याता॥
तीनकोस त्यहि पूरब जानौ। ग्राम नरौली नाम बखानौ॥

दो० ग्रामाधिप ताके भये क्षत्रवंश राठूर।
नाम भवानीसिंह ते रहे धर्म रणशूर॥

हरिपद छंद॥ कौशिक गोत्र शिपाहे दक्षिण औरहु दक्षिण पॉयो। कात्यायनहे सूत्र सुशाखामाध्यंदिनी सुहायो॥ यजुर्वेद

उपवेद अहै धनु अरु शिव देव बखानौ। पाराशर वशिष्ठ अरु सांकृत त्रय परवर यह जानौ॥

दो० भये भवानीसिंह के सुवन भिखारी सिंह।
प्रगटभये तिनके बहुरि सुवन अयोध्यासिंह॥
तिनके सुत जन्मेउभै नीतिपाल भगवंत।
नीतिपाल मोसन अधिक देत सबै स्वहितंत॥
वनइससै सत्ताइसै सम्बत शुक्र सुवार।
श्रावण नौमी असितको भयो सुजन्म हमार॥
काव्यकला में निपुण नहिं पूरण हृदै न भक्ति।
विनयकरौ ताते सबहि निजनिज दीजै शक्ति॥
श्रीगिरिजाप्रति शंभु जो कही कथा समुझाय।
तुलसीकृत मानस सुमत कहिहौ मैं स्वइगाय॥
एकबार कैलाश शिव राजत शिवा समेत।
जानि समय करजोरिकै बोली शिवा सचेत॥
नाथ कृपाकरि हरि कथा कहौ मोहिं समुझाय।
जो सुनि प्राणी पावई भवनिधि पार सुभाय॥
प्रथम कहौ श्रीरामको जन्म चरित सुखदानि।
बालकेलि वरणौ बहुरि सकल सुमंगल खानि॥

॥ गीतिकाछंद॥ मुनि संगगे जिमि रामलक्ष्मण असुरगण जिमि मारयऊ। मखराखि मुनिगण अभय करि जिमि नारि गौतम तारयऊ॥ ज्यहि भाँति कीन्हो भंगधनु मुख नृपन कारिख लायऊ। जिमि मेटि संशय जनक परशाधरहिं गर्व छुड़ायऊ॥ जिमि ब्याहि चारों बन्धु सानँद अवधपुर आवत भये। ज्यहिं भाँति रघुपति राजहित भय सजतपुर मंगल नये॥ जिमि वचन पितु रघु

बीर सानुज सहित सियबनका गये। जिमिराम केवट भेटि उरभरि तरत जिमि सुरसरि भये ॥ जिमि कीन वास प्रयाग प्रभु जिमि बालमीकि मिलापभो। किय चित्रकूट निवासपै जिमि शमनसबकर तापभो ॥ जिमि अवध आय सुमंत दशरथ प्राण जिमि त्यागन किये। जिमि भरतकरि नृप क्रिया सादर संग सब पुरजन लिये॥ जिमि राम जहँ तहँ जाय सब अवलोकि प्रभु सुखपायके। प्रभु सीख धरिशिर पादुका लै अवध निवसे आयके॥ पुनि राम सानुज सहित सिय ज्यहि भाँति वन आगे चले। करि स्वच्छ कानन मारि बहुखल बृन्द मुनिगन दुखदले ॥ जिमि पंचवटि के थानलखनहि ज्ञान उपदेशत भये। ज्यहि भाँति शूर्पणखाइ तहँ जिमि काननासा त्यहि हये ॥ जिमि शमनभे खरदूषणादिक हाल जिमि रावण सु- न्यो। मारीच सन जिमि जाय बरण्यो सुनत जो त्यहि मनगुन्यो ॥ करि कपट ज्यों मायाहि सिय दशकण्ठ खल हरि लैगयो। जिमि राम कीन्ही क्रिया निजकर गीधकी जग यश छयो ॥ पुनि मारि ज्योंहि कबंध शबरिहि सुगति प्रभु दीन्ही सही। ज्यहि भाँति पंपा- सरहि आये भई नारद बतकही ॥ जिमि पवनसुत मिलि रामको सुग्रीव पहँ जिमि आन्यऊ। श्रीराम ज्यों बधि बालि यकशर तिलक सुगरहि ठान्यऊ॥ कपिनाथ ज्योंहित खोज सीतहि विपुलकीश प- ठायऊ। जिमि बिवर पैठेकीश मिलि संपाति हाल बतायऊ ॥ जिमि नांघि सागर पवनसुत वैदेहि को धीरज दियो। विध्वंसि कानन जारिपुर जिमि गवन पुनि प्रभुपहँ कियो ॥ कुशलात कहि सिय राम सों जिमि राम सँग सेना लिये। जिमि नीरनिधि के तीर सह सबभीर प्रभु डेरा किये ॥ ज्यहि भाँति आयो तहँ बिभीषण तिलक जिमि सार्यो प्रभू। जिमि बाँधि सेतु समुद्र उतरे रामसँग

कपिदल संयुत ॥ ज्यहि भाँति अंगद लंक गय दशकंठ बल ज्यूं दलमल्यो । जिमि राम शासन भीलु कपिदल जाय गढ़ लंक हल्यो ॥ भय युद्ध बहुविधि दोउ दिशि घटकर्ण आदिक ज्योंमरे घननाद भो पुनि बद्ध ज्यों दशकंठ रघुपति रणसिरे ॥ ज्यहि भाँति मार्यो राम रावण राज दै त्यहि भायको । सिय सहित राजे एक थल कृत विनय मुनि सुरनायको ॥ चढ़ि यान पुष्पक राम सिय सह बंधु कपि सेना लिये । करि अभय सुर मुनि साधु सज्जन गमन जिमि अवधहि किये ॥

दो० अवध आय मिलि भरत जिमि कोशलराजकुमार ।
राज बैठि दीन्हे सबहिं सुख संपदा अपार ॥
सो सब चरित पुनीत अति कहिये मोहिं कृपाल ।
सुनि गिरिजाको प्रश्न तव बरणत भे शशिभाल ॥

सो० स्वइ यह चरित पुनीत तुलसिदास मानस रच्यो ।
हरण सकल भवभीत रामभक्ति दायक अमल ॥
स्वइ हरियश सुखदाय गिरा सुपावन करनहित ।
कहिव कछुक मैं गाय निजमति सम मानस सुमत ॥

दो० मानस मत तें जो कछू उद्धरै चारित कोय ।
करिय न संशय सो कहूं ग्रंथनही में होय ॥
राम चरित दायक अमल रामभक्ति सुखदानि ।
सोई चरित पुनीत मैं धरे सुयामें आनि ॥
ताते मैं यहि ग्रंथको भक्ति शिरोमणि नाम ।
धर्यो सुजन जन बूझिकै दानि भक्ति अभिराम ॥
बलइसमें चवास शुभ सम्वत माघ सुमास ।
कृष्ण बृहस्पति द्वइजको कीन्हो कथा प्रकास ॥

दो०। सीतापति पदपद्मयुग बन्दौं बारहिबार।
जिनको सुयश प्रताप गुण पावत निगम न पार॥

कवित्त॥ हार दुष्कृताके त्रात औनि देवताके पाल साधुवृन्द ताके दातृ भुक्तिमुक्तिताके हैं। दुष्टकाष्ठताके दाहताके कारताग्नि चंडदास नै स्वशोकताके नाशकारताके हैं॥ भाग्यवंत ताके लोक सिंधुतार ताके पोतरक्षक सुधर्मताके पुण्यब्रमताके हैं। ज्ञानही प्रकाश ताके मोहतम नाशताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके हैं॥ दानि बुद्धिताके बल तेज विद्यताके कार वृद्धि भाग्यताके शक्ति भक्ति विज्ञताके हैं। कार अर्थताके फलदातृ वाँछिताके टार अन्ध अज्ञताके भानुहार मन्दताके हैं॥ भाग्यवन्त ताके कार जीवशुद्धताके दास मीन अम्बुताके दानि ऋद्धिसिद्धिताके हैं। काम क्रोध लोभ ताके द्वन्द मद मोहताके हारतांघ्रि जनकसुताके भरताके हैं॥ ध्यानि कृत्ताके हर पापताप ताके सुखश्य सर्वताके जागज्योति ज्ञानताके हैं। शील समताके तोष धीर क्षमताके दिव्य वीतरागताके ही प्रकाश कृत्यताके हैं॥ हार पीरताके धुरधार धीरताके धर्म वर्म संसृताके पोत पुष्ट मैसुताके हैं। भाग्यवन्त सत्यताके शान्ति नय सौख्यताके दातृतांघ्रि जनकसुताके भरताके हैं॥ पापतूलताके जार तेज गोत्रताके नाश मोहनकुताके तेज खण्ड सविताके हैं। कोश मृदुताके सींव शुभ मंजुताके लोक तीनि हेरि ताके समनानता सुताके हैं॥ भाग्यवन्त ताके मैसु पुण्यके पताके कन्द तीनि तापताके पाल छन्द पाटताके हैं। दानि फल अर्थ ताके धर्म काम मोक्षताके स्वच्छतांघ्रि जनकसुताके भरताके हैं॥ सेव्य करताके भरताके हरताके औ सुरेशहु गणेश ताके आसि नित्यताके हैं। कारुणीक ताके भूरि दिव्य पुराताके वोर व्याधिहूपताके लोक तीनि

व्यापताके है॥भाग्यवन्त श्रोणताके चीकने चमकताके चोखे च-
टकीलताके खानि मंजुताके हैं। दीनजन पालताके दुष्टगने शाल-
ताके कारतांघ्रि जनकसुताके भरताके हैं॥

इतिश्रीमन् अयोध्यासिंहवर्मात्मज भगवन्तसिंहविरचितायां भक्तिशिरोमणि
प्रन्थचन्द्रनाथवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० श्रीगुरुचरण प्रणामकरि सिय रघुबर हियआनि।
॥ रामचरित भगवन्त कछु मतिसम कहत बखानि॥
सवैया॥ दशकंठकियो तपपुंजदियो वर आननचारि तबै त्य-
हिका। वरपाइ जिते नरनाग सुरासुर कालहु त्रासकरै यहिका॥
मनभावत राजअखण्डकरै नितनावत माथ सबै ज्यहिका। लहि वै-
भव नीच अनीति रच्यो जगमें न खल्यो खल सो क्यहिका॥ धर्म
दिये करि लोपसबै जगव्यापि अधर्म अनन्तरहाहै। पातक भार
अपारभयो वसुधासन सो नहिं जातसहाहै॥ कम्पित भूसुर साधु
सबै प्रभुसों करजोरि पुकारि कहाहै। नाथ अनाथननाथ हरो दुख
नाथ निशाचर देत महाहै॥

कायशिरा भगवन्तलग्यो त्रित दम्पतिको हरिपायँनमा ॥ देखि महातप दम्पतिको प्रगटे प्रभुशक्ति सहानँदकारी । मांगहु जो वर-भाव मने करजोरि गिरा तव भूप उचारी ॥ आपु समान चहौं सुत नाथ पैतोहलहौं इनकी अनुहारी ॥ जानि यही रुचि रानिकिह्यो भगवन्त पुजी मनआश तुम्हारी ॥

दो० सुनि हरिवाणी मुदित मन भय वर वांछित पाय ।
कछु दिनपर तनुत्यागि द्वौ वसे अमरपुरजाय ॥
कौशल्या दशरथ स्वई भये अवध नृपआय ।
तिनको सुयश प्रताप गुण कहौ कौनविधि गाय ॥

छप्पै ॥ एकवार मनमाहिं भूप यह कीन विचारा । दिह्यो पुत्र विधि नाहिं भयो पन चौथहमारा ॥ गुरुहि सुनायो जाइ तुरत आपन दुखभारी । कहँ वशिष्ठ धरुधीर भूप ह्वै हैं सुतचारी ॥ मुनि तुरत बोलि शृङ्गीऋषै सुतहित कीन्हो जाग तव । भइ सिद्धि यज्ञ हवि पाय नृप किये उभे त्यहि भागसव ॥ सादर तव भूपाल बोलि प्रिय रानिन लीन्हा । कौशल्यहि दिय अर्ध अर्ध के द्वैदल कीन्हा ॥ केकेइहिदियै एक शेषके युगुलवनाये । कौशल्या कैकई हाथ महिपाल गहाये ॥ तिन मुदित सुमित्रहि भाग द्वउ दीन परम सुखपाय कै । इमि कछुककाल सुखयुतगयो जन्मसमयभयो आयकै ॥

दो० जन्मसमय श्रीरामको जानि मुदित तिहुँलोक ।
सचराचर आनँद जगत भयो गयो तनशोक ॥
अवधपुरी राजत परम वाजत गगन निशान ।
वरषि सुमन जयजयकरत शोभित विबुधविमान ॥

सवैया ॥ मासभयो शुभयोग नक्षत्र सुवार विराजतहे सुखदाई । मध्यसमय तिथि नौमिघरी शुभ ताछिन में प्रगटे रघुराई ॥ आनँद

दो० गुरु पद पंकज प्रणाम करि रामसिया शिरनाय।
बाल चरित श्री रामको कहौं सकल सुखदाय॥
चैत्र शुक्ल चौदशि रविवारा। लिपवाये अजिरादि अगारा॥
मणिमय चारु चौक पुरवाये। कलश थापि घृत दीप धराये॥
सादर मुनिवर चरण पखारे। श्रुतिविधि गौरि गणेश पधारे॥
पूजा कीन्ह अनेक प्रकारा। धूप दीप नैवेद्य अपारा॥
शुभ स्वरूप रवि भीति बहोरी। पुनि हरदी पीठा लैंघोरी॥
चित्रित सदन किये बहुभांती। सुखमा अमित न सो कहि जाती॥
सजि पट भूषण सुवन सुमाई। लै उछंग बैठीं छविछाई॥
पुनि पूजे पट कलश सोहाये। तंदुल सेंदुर हरदि चढाये॥
धूप दीप कीन्ही सुखदाई। घी गुर सानि अशन करवाई॥
करि पुट पानि रानि शिरनायो। जाति बंधु तब भूप बुलायो॥
विविध भांति भोजन करवाये। विप्रन्ह सकल दक्षिणा पाये॥
देत अशीष चले निज धामा। यहिविधि कीन्ह छठी अभिरामा॥

दो० गो गयन्द बाजी मुकुट मणि मुक्ता समुदाय।
विप्रन्ह दिये नरेश बहु सो नहि कहे सिराय॥
माधव कृष्ण बाण भृगुवारा। गुरुवशिष्ठ कहँ बोलि भुवारा॥
कीन्ह बारहो वेद विधाना। जाइ न सो मुख एक बखाना॥
ध्वज पताक तोरण रचवाये। बहु विधि बंदनवार बनाये॥
गोमय अजिर लिपाय बहोरी। चारि चौक तहँ मणिमय पूरी॥
मुनिवर पितर देव पुजवाये। रानिन सुवन समेत बोलाये॥
लै सुत बैठीं चौक मँझारा। विप्रन्ह वेद गिरा उच्चारा॥
गावहिं गीत सकल पुरनारी। मनअति मुदित देखि सुतचारी॥
मुनिवर सघृत होम करि ताही। नाम लिख्यो पीपरदल मांही॥

दो० पूजन करि त्रैवार स्वइ शिशु स्तुति दीन्ह सुनाय।
हिरण्य गर्भ केहि राशिको नाम सकल सुखदाय॥
रमत रसावत जो सबहि सर्वोपरि गुणधाम।
तासु राम अस नाम कहि सकल लोक अभिराम॥
जन्म पुष्य माद्विपदको वर्ण हे ईश्वर जानि।
नाम हेस निधि शशिको मुनिवर कह्यो बखानि॥
विश्व भरत पोषत जुवई सर्वोत्तम गुणधाम।
भवभंजन यश जासु कहि तासु भरत असनाम॥
अश्लेषा पद प्रथम को जन्म अहै अभिराम।
वर्ण डकार इकार स्वर डील तेज निधि नाम॥
जाके सुमिरण मात्रते होइ शत्रु क्षय आसु।
पुत्र सुमित्रा केर लघु नाम शत्रुहन तासु॥
अश्लेषा चरणोदिकर जन्म ड अक्षर जानि।
स्वर इकारहै नाम शुभ डील धराधर मानि॥
सब लक्षण युत भूमिधर रामभक्त गुणधाम।
तनय सुमित्रा जेष्ठ त्यहि कहि लक्ष्मण शुभनाम॥

स० भाग्यवड़ी तिन जीवनकी इनसों निशिवासर जे रतिलैहैं। लोक सदा सुखदा तिनको यश तीनिहु लोकनमें न समैहैं॥ हो-इहि पार बिना श्रमसो भव किंकरहू यमकेन सतैहैं। रामकृपा भगवंत नितै परलोकहु लोक महा सुखपैहैं॥

दो० यहिविधि मुनिवर नामधरि पुनि पुनि दीन्ह अशीश।
परमानंद भगवंत सुनि रानिन्ह सहित महीश॥

स० चारिहुरूप अगार अनूपम देखत मातु सबै सुखपावैं। वारहिवार लगाय हिये मुख चूमि मयंक प्रमोद बढावैं॥ संतत ध्यावत

शम्भु जिन्है जन योगि निरन्तर ध्यान लगावैं । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ।। जाहि अखेद अभेद अछेद अजन्म अनंत सदा श्रुति गावैं ।। शङ्कर शेष सुरेश जलेश दिनेशहु जाहि निरन्तर ध्यावैं ।। नारद शारद व्यास गणेश थके कहि जा यश अन्तन पावैं । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावैं ।। जा पदपङ्कज ध्यान किहे अघ जन्म अनेकन को जरिजावै ।। नाम लिहे भव सिंधु अपार बिना श्रम गोपद सो तरिजावै ।। संतत लोक अनंदकरै परिणाम सुभाय परम्पद पावै । ताहिभरे भगवंत उछंग अनंदित सो जननी पय प्यावै ।। जननी सुत सुन्दर गोद लिहे मुख शोभित षोड़श पूर्ण कला ।। अरविंद शुभाक्ष सजै भृकुटी मनमोहत भाल डिठौन भला ।। चिबुकाधर चारु कपोल बने छबिदेत अनंत सुकंबुगला । बसुयाम बसौ भगवंत हिये यह रूप अनूपम रामलला ।। अति पंकज पाणि सजै पहुँची नख ज्योति अपार जगी अमला । उर व्याल बिभूषण नाभि भली त्रिवली शुभदायक चारिफला ।। कटि चारु नितम्ब उरू शुचि जंघ बिलोकत जो अघ पुंजदला ।। यह रूप बसौ भगवंत हिये रघुवंश बिभूषण रामलला ।। वनजारुण कोमल पायँ भले अरतालिस चिह्न बने अमला ।। अँगुरीन दिये नख ज्योति मनो नग लाल जड़े कल कंजदला ।। छबि देखत मातु निहाल सबै करि मानत जीवन को सफला । शिव मानस पंकज भृंग बसौ भगवंत हिये छबि रामलला ।।

दो० । स्वस्तिक कोण बसु पद्म श्री हलमूशल अहिबान ।
ऊर्ध्वरेख ध्वज वज्र नभ अंकुश पादपपान ।।
मुकुट चक्र यव दंड नर सिंहासन शुभमाल ।

॥ छत्र चमर चौविंश पद दक्षिण चिह्न विशाल॥
॥ गो पद पृथ्वी कुम्भ दर अर्धचन्द्र षटकोण॥
जम्बूफल जिव चंद्रिका शक्ति विंदु त्रै कोण॥
अमी कुंड सरजू गदा मीन पताक मराल॥
त्रिवली धनु तूणीर विधु वीणा वंशि विशाल॥
चतुर्विंश शुभ चिह्न ये बायें पद अभिराम।
महारामायण में अमित कह्यो महातम वाम॥
यह छवि नखशिख लालकी देखि देखि पितु मात॥
महामोद पावत मनहि दिवस न जानहि जात॥
एकदिन सुत अनरस लख्यो कह्यो कौशलामाय।
काहुहि दुष्ट नारिजनु दीन्हेसि नजरि लगाय॥
क० भोरहीते आजु मेरो लालन उदास माई पीवत न दूधनेकु रोवै बारि बारहे। बैठेहू न ठाढ़ेरहे सोवत न पालने मे कौन मै उपाय करौं शोचही अपारहे॥ बोलिलै वशिष्ठ वेगि आय माथ हाथधारि पढिकै नृसिंह मंत्र मेट्यो फेर फारहैं। जासु नामलेत कोटि संकट शमन होत ताहि मातु कौशला करावै फूंकझारहैं॥
॥ नृसिंह मंत्र तंत्र शास्त्रे॥
ॐ नमोनृसिंहाय हिरण्यकश्यपवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतप्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनीकीलोन्मूलनाय स्तं म्भोद्भव समस्त दोषान् हनहन शरशर चलचल कम्प कम्प मथ मथ हुंफट् हुंफट् ठंठः महारुद्र जापियत्त स्वाहा॥
एकबार शिव सहज सुभाये। पावन भस्म सकल तनलाये॥
करभृंगी डमरू लै लीन्हा। कोशलपुरी पयाना कीन्हा॥
घर घर आगम कहत सिधाये। अवधनाथ द्वारे चलि

सुनि कौशल्या लीन्ह बुलाई। आसन दीन परम सुखदाई। करि आदर बहुविधि महतारी। मेले चारु चरण सुतचारी। पुनि पुनि दीन्ह अशीश सुरारी। भये छकित छविसिंधु निहारी। गोद मोद निधि बालक लयऊ। तनअतिपुलकमुदितमनभयऊ। तब कर कमल जोरि करि माता। बोली बचन परम सुखदाता॥

दो० स्वामी गुण आछें सकल कहिये यामें जौन।
जो कछु भँगिहो आपु सो देब सत्य हम तौन॥
सुनि बोल्यो योगी बचन सुनहु कौशला माय।
बड़े भाग्यको पुत्र तव गुण नहिं कहे सिराय॥

तोटक छन्द॥ अति सुन्दर बालक मातु अहे। गुणसागरको कहि पार लहे॥ कृत दर्शन शूल हरी सबही। यहिते सुख पुञ्ज मिली तुमही॥ कछु ह्वैहहि काल व्यतीत जबै। मुनि माँगन ऐहहि एक तबै॥ तिनके सँग देहहु जाय इन्हैं। हति निश्चर देहहिं सु ख तिन्हैं॥ मिथिलापुरको पुनि जावहिंगे। धनुखंडन के यश पावहिंगे॥ दश पुत्र बुलाय बरात तबै। अति होइहि ब्याह उछाह सबै॥ चहुँ बन्धु बिवाहि पुरावहिंगे। यश निर्जर पावन गावहिंगे॥ शुभगीत छन्द॥ यह करी अद्भुत कर्म सबही दुष्टगण संहारि है। सुर साधु महि द्विज पालि तीनिहु लोक यश बिस्तारि है॥ सुख भूरि सम्पति पूरि तुम्हरे भवन कबहु न खाँगिहै। यह सत्य सब हम कहत माई भूंझनहिं बसु लागिहै॥

सो० पुनि बोल्यो स्वइ बैन सुनहु केकई मातु तुव।
पुत्र सकल गुण ऐन लक्षण कहौं बिचारि सब॥

शुभगीत छन्द॥ यह भक्त मन क्रम बचन रघुपति चरण रति अति लाइहै। बस याम रामहि ध्यान रसना नामरस शुचिपाइहै॥

पुर जनक होइहि व्याह पावन सुयश तिहुँपुर छाइहै। इमि कहउँ आगम सत्य माई व्यर्थ नहि कछु जाइहै॥

सो० सुनहु सुमित्रा माय सकल सुलक्षण पुत्र तव।
आगम कहौं सुनाय सत्यहि सों नहिं झूठ कछु॥

शुभगीत छन्द॥ अति वीर द्वउ रणधीर वाँके शत्रु जाके डर डरै। श्रीराम पद पाथोज रति मन काय वच संतत करै॥ मिथिलेश पुर सँग राम इनहूं व्याहि पुनि सब जाइहै। भगवन्त जग यश गाइ पावन पार भवनिधि पाइहै॥

सो० सुनि शिवके शुचि बैन भई मगन रानी परम।
मुक्तामणि बहु दैन लागीं सुवन छुवाय सब॥

छन्द॥ धरि माथ इनके हाथ दीजे नाथ आशिर्वादही। कल्याण जाते होइ संतत डीठि मूठि बिनाशही॥ नहिं निकट आवै रोग कबहूं बाल रोदन नां करै। इमि कहत जोरे हाथ जननी बारबारहि पांपरै॥

सो० सुनि योगी सुख पाय बोल्यो सुनु माता वचन।
डरिहौं अनहिं नशाय डीठि मूठि बाधा सकल॥

छन्द॥ कबहूं न रोई बाल पलना गोदमें सुख सोइहै। सब ठौर रहिहै नेक तनमें रोग एकु न होइहै॥ यहि भाँति कहि योगीश पुनिकरि नादशृंगी चलिदियो। भगवन्त चारिउ बन्धु सुन्दर रूप धरि लीन्ह्यो हियो॥

सो० सुनि शिवके वर बैन भई मुदित माता सकल।
सुन्दर शिशु सुख दैन बार बार लावहि हिये॥

दो० नख शिख सजि भूषण वसन वर पलना पौढाय।
मातु झुलावहि लालनहि हर्ष न हिये समाय॥

क० श्यामतन पीतझीन झांगुली अनूप साजि लालनै सु-आनि मध्य पालनै लिटावई। देखि रामचन्द्र रूप माधुरी सुमोद कन्द प्रेमसों उमंगि चारु वालकेलि गावई॥ शम्भु सनकादि शुक नारदादि योगिवृन्द कोटिनै उपायकृत्य ध्यान जोन आवई। भाग्यवन्त स्वामिसों प्रगट्ट आनि भूपभौन ताहि मातु कौशला सुमोदसों झुलावई॥ लघु लघु लाल लाल कोमल चरण जंघ जानु औ नितम्ब कटि सिंहही लजैरही। सुन्दर गँभीरनाभि मंजुल उदर वाहु पांहुची विशाल शोभ कंजपानि दैरही॥ चारु चिवुकाधर कपोल दन्त नासिकाक्ष पूरण मयंक आस्य पुंज भास ह्वै रही। भाग्यवंत रामशिशु रूप ना वखानि जात अंग अंग प्रत्य कामकोटि छवि छैरही॥

दो० भाद्र कृष्ण रवित्रैदशी पुष्य नक्षत्र अनूप।
भूम्युपवेशन रामको कीन्ह मुदित मनभूप॥

विप्र वृन्द गुरु बोलि पठाये। विविध भांति मंगल संजवाये।
तनि वितान आंगन लिपवाई। पूजि वराहसे भूमि सुहाई।
पुनि अन्हवाय वाल सुखदाता। भूषण पट साजि वहुविधि माता।
अस्त्र शस्त्र वहु वस्तु धराई। बैठावत महि सुत सुखदाई।
गावहिं मंगल सादर नारी। करहिं वेदध्वनि भूसुर भारी।
वहु विधि दान याचकन पाये। देहिं अशीश मोद मन छाये॥
कोशल पुरी मुदित नर नारी। निरखहिं छवि तनमन धनवारी॥
त्यहि अवसर कर हर्ष अपारा। को अस कहि जो पावहि पारा॥

दो० भूपति रानी मुदित अति पुनिपुनि सुवन निहारि।
विप्रन दीन्हे दानवहु मणि भूषण धनवारि॥
जासुनाम जपि सकलसुख विनुश्रम आनत धाय।

ताके सुखहित मातु पितु करते अनेक उपाय ॥
यहि सुख सहित दिवस कछु गयऊ। पुनि अनप्राशन आवत भयऊ॥
द्वितिया मार्ग शुक्ल शशि भूपा। मिथुन लग्न शुभ परम अनूपा॥
भूपति मुदित बोलि मुनिराजू। अनप्राशनकर सज्यो समाजू॥
विविध भांति भोजन बनवाये। षटरस चारि भांति जो गाये॥
जाति बन्धु नृप न्योति पठाये। सुजन सकल सादर चलि आये॥
तब सुत सकलौ उबटि अन्हवाई। सुन्दर पट भूषण पहिराई॥
लै नृप गोद सुवन सुखदाई। ससवार मुख ग्रास छुवाई॥
पुनि अँचवाय प्रोछि मुख लीन्हा। दान मान बहु भाँतिन कीन्हा॥
पुत्रन मातु निकट पहुँचाये। पुनि सबहिन भोजन करवाये॥
अँचै पान दीन्हे सब काहू। कहि न जाय जस भयो उछाहू॥
सवैया॥ कहि जात न सो सुख एक महा मुद छाय रह्यो नृपके सदने। गुण गावत मागध सूत भलो यश पावन बंदि कदम्ब घने॥ भगवन्त विलोकत मातु पिता सुत जीवनको विन आनन्द भने। मुनि योगिन दुर्लभ स्वामि स्वई वश प्रेम भयो दशस्यन्दन तने॥

कुण्डलिया॥ रामै जननी एकदिन पलना मध्य सुताय। इष्टदेव श्रीरङ्ग हित पाकन नायो जाय॥ पाकन नायो जाय मुदित पुनि भोग लगायो। तनहि विलोक्यो खात पलन सोवत स्वइ पायो॥ पायो भ्रम मनमाहि निरखि पुत्रहि द्वैठामे। उहीं गीसी मातु विलोकत पावत रामै॥ माते विकल विलोकि के राम दियो मुसक्याय। अद्भुतरूप अखंड निज तब दीन्ह्यो देखराय॥ तब दीन्ह्यो देखराय रोम रोमन प्रतिजाके। कोटि कोटि ब्रह्मांड अमित सूरज शशि ताके॥ ताके सरि सर सिन्धु अमि हरि शम्भु विधाते। देखि चरित बहु भाँति विते कीन्हीं तह माते॥ सवैया॥ करता जगके

तुमहीं प्रभुहौ तुमहीं सब जीवनके भरता। भरता सब दासनके तुमही तुमहीं परिणाम अहौ हरता॥ हर तामरसोद्भव विष्णु रचौ तुमही पुनि भार क्षमा धरता। धरता अवतार दशौ तुमही तुमहीं शमनासुर के करता॥

॥दो०॥ सुनि बोले यह चरित मम कतहुं न जानै कोय।
॥ जननिउ कह कबहुँन हमैं तव माया प्रभु होय॥
॥ एवमस्तु कहिरूप शिशु भये बहुरि श्रीराम।
नाना विधि लागे करन पुनि चरित्र अभिराम॥
॥ चैत्र शुक्ल नौमी परम पावन अति सुख रूप।
॥ वर्ष गांठि श्रीरामकी कीन्ह मुदित मन भूप॥

॥ सवैया॥ आनँद मंगल आजु अहे पुर वर्ष कि गाँठि सु रामललाकी। बाजत बीन रबाब मृदंग सुसोहत ताल भली तबलाकी॥ पाय सुदान अशीसत याचक पूरण आश भई सकलाकी। गावतहै भगवन्त सदा कलकीरति दायक चारि फलाकी॥

दो० चारि भुवन चारौ सुभग चारौ फल दातार।
चारु अजिर खेलैं नृपति लखि सुख लहै अपार॥

सवैया॥ नृप आँगन खेलत चारितनै छबिजात कही नहिं सो सकला। मुख पूरणचंद्र विलोचन चारु विलोकत जो अघओघ दला॥ तन श्याम विभूषण बाल सजे झलके द्युति पीत झँगा अमला। छवि सागर नागर बासकरो भगवंत हिये नित रामलला॥ कचकुंचित चिक्कन शीश भले अति उन्नत भाल सुभाग्य थला। दरग्रीव महाछवि सीव मनोहर मंजु अतीवसजे कठुला॥ झँगुली तन श्याम सुपीत लसे घन मध्य मनो चमके चपला। भगवंत उरांतर नित्त बसो प्रभु भव भय भंजन रामलला॥ पग नूपुर

किंकिणि लंक सजे सुनि शब्द मुनीशन ध्यानचला। शुचि नाभि गँभीर भली त्रिवली उर आयत दाम लसै अमला ॥ पहुँची युग पाणि अनूपवनी सुख सुन्दर पंकज मान दला। नितवासकरौ भगवंत हिये करुणा सुखसागर रामलला ॥ विहरैं नृप आँगन बाल चहूँ छवि देखत मातु सुखी सकला। चलिबैंयन बैयन दूरिकछू पुनि लागत लोटन भूमितला ॥ कहुँ छाहँ विलोकि धरै झपटैं किलकैयन के मुख चंदकला। छविसिंधु बसौ भगवंत हिये नित वंशविभूषण रामलला ॥ हित खेलन माँगत चंदकवौ करि रोदन ठानत है मचला। कबहूँ लखि कागधरैं त्यहिको चलु बैंयन बैयुन भूमि थला ॥ कहुँ मैयनओरझकैंयन दै तुतराय सु बोलत बोल भला। गुण सागर आगर रूपवसौ भगवंत हिये नित रामलला ॥ विहसैं लखि भूरि खिलोननको दमकै दँतियाँ द्युति ज्यों चपला। तुतराय पुकारतमातनको सुनि आनँदभूरि लहैं सकला ॥ दुलराय उठाय लगाय हिये छविदेखत अंकके अपला। करिये प्रभुबास हिये भगवन्त सदा जनरंजन रामलला ॥ मातुगहे कर लालनको सिखवै शुभचालन आँगनमाहीं। पावँ उठाय धरावत भूपर नूपुरशब्दसुने किलकाहीं ॥ छोड़त हैं अँगुरी जननी न गिरें डर पायँनमें लपटाहीं। कौनप्रकार कहौं छविसो मनभावतहै मुखआवत नाहीं ॥ दीनरसे बैठाय महीपर आपहु बैठिगई तहँ माई। वस्तु अनेक दिखावति है ढिग राखत बातनमें भरमाई ॥ पायसुनीच चले भजि बैंयन दीन खिलौनन डारि तहाँई। मातुगहै जब धावति है तब ठानत आँगनमें मचलाई ॥ देहरि द्वारपर किढ़िले तब मातु उठाय नचावत प्यारे। धूरिगई भरि अंगसबै निज आँचरसों जननी गहिझारे ॥ लागत रोवन लालतबै लै गोदलगाय हिये चुचुकारे। आँसुनपोंछि पि-

भीरसु कौशिरहि बारणके धन प्राणदुलारे॥ सुन्दरसेज सवाँरि लाला
लै पौढ़त मातु महासुखपावै। खन्तमनैयनकै कहि मैयन बारहि
बार हिये लपटावै॥ कोमल पाणिगहे मुखचूमत प्रेमअतीव न हीय
समावै। सो सुखमा भगवन्तकहै किमि आवतही मुखमें नहिं आवै॥
दो० जीके गुणगण अगम अति पावत निगम न पार।
सो प्रभु अपनें भक्तहित करत चरित्र अपार॥
काकभुशुण्डी दिवस यक आयो भूपति भौन।
त्यहिसन जो चारितकियो कहौं कछुक अवतौन॥
जानुपानि धाये धरण ताहि देखि रघुनाथ।
भाज्यो सो जहँ जहँ गयो पाछेहि देख्यो हाथ॥
कवित्त॥ फिरत भ्रमित मन त्रसित न थिरहोत विकल विलोकि
राम दीन्हो मुसक्यायहै। हँसतहिजाय मुख दीख जो चरित्रहीस
अमित अनूप मोपै जातसो न गायहै॥ लोक लोकपाल यमका
लहू त्रिदेवजाल भूमि सर सरित पयोधि वनवायहै। देव मुनि सिद्ध
योगि नाग नर भूत प्रेत विविधप्रकार दीख सृष्टिसमुदाय है॥
दो० देखत सो चकित भयो विहसे तब रघुराय।
विहसतही पुनि कागस्वइ बाहर निकस्यो आय॥
योंही नित नवचरित बहु करत कृपा सुखकन्द।
जो सुनि सादर जीवकर छूटिजात भवफन्द॥
छप्पै॥ सतचित आनँदरूप कृपापूरण गुणरासी। सर्वोपरि
परधाम सदा सबके उरवासी॥ वन्दत पद विधि शम्भु जाहि सन
कादिक ध्यावैं। आगम निगम पुराण शेष ज्यहि नेति बतावैं॥
स्वइ स्वामिभक्तहित प्रगटि कृतचारित्र भवभय हरण। मनवचन
कीय भगवन्तगहु चरणकमल ताके शरण॥ कवित्त॥ धन्यहै अवध

जामें लीन अवतार राम धन्य आँगनाई जामें खेलको खेलतहैं। धन्य तात मातु सब देवही ससोद जौन चारित अनूप रामचन्द्रजू करतहै॥ धन्य धाम धन्य वास धन्य लोग धन्य भाग धन्यधन्य नैन जौन रामको लखतहै॥ धन्य अन्न धन्य वस्त्र धन्य क्षीरनीर धन्य धन्य धन्य सर्व हेत राम जो लगतहैं॥

इतिश्रीमन्अयोध्यासिंहजमीत्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थ श्रीरामचन्द्रबालजीलावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो० वन्दौं श्री अवधेशसुत चारित परमउदार।
कृपा दृष्टि करि देहु वर पूजै आशा हमार॥
मातु सकल आनँद भरी देखत श्यामलगात।
यथा रंक गथ पाय बहु हर्ष न हिये समात॥

रागवसन्त॥ नृप अजिर खेल खेलैं कुमार। कहि जात नहीं सुखमा अपार॥ पदपद्म चारु शुभललिलाल। कल शब्द मधुर नूपुर सुजाल॥ दलकमल पदज अतिशय विराजै। नखज्योति मनौ उडुगण समाज॥ मणि जटित पुरट किंकिणि विशाल। वर लंक शोरसो करत जाल॥ नाभी अनूप शुभ्रसरोसराज। उर विप्रपाद श्री वत्सभ्राज॥ पहुंची अनूप करकंज सोहै। लखि कंठ मंजु छवि कंबु मोहै॥ कठुला विचित्र नख वाघ माल। वरवदन विड सासि लसत भाल॥ कुलही अनूप शिर सुभग अंग। अँगुली सुपीत द्युति प्रदल भंग॥ छविधाम राम आनंदकंद बसौ भाग्यवन्त उर व्योम चन्द॥

दो० रामरूप शोभा अमित क्यहि विधिकहौं वखानि।
शेष महेश गणेश बुधि जाको कहत सकानि॥
ब्रह्मा शिव सनकादि ज्यहि पावत ध्यानहु नाहि।
सो प्रभु नाना विधि चरित करत भूपगृह माहि॥

जिनके इन पद प्रेम नहिं नहि चरित्र आधार ।
मातु जठर जन्मे वृथा केवल पुहुमी भार ॥
माता यकदिन अजिर लिय हती ठाढि रघुनन्द ।
कह्यो तात देखहु विशद उयो व्योममें चन्द ॥
सो सुनि यकटक रामजी लागे चितवन ताहि ।
वारबार करकंज सों निकट बुलावत वाहि ॥
तुतरे तुतुरे कहत हैं मातु लेव हम याहि ।
भूख लागि खावें यहै और कछू हम नाहिं ॥
अस कहि पुनि लागे तबहिं रोदन भूमि मँझार ।
मानतहैं नाहीं करत जननी यत्न अपार ॥
तस्करके बल राति है दुर्बलबल भूपाल ।
मूरखके बल मौनहै केवल रोदन बाल ॥

स० मातुकरै तब शोच हिये हम नाहक चन्द इन्हे दिखरावा । कौन उपाय करौ नहिं मानत मांगत है मनको निजभावा ॥ और कहौ ज्वइ खाउ लला तुम जातकहूं शशि नाहिन खावा । भाँति अनेक कह्यो जननी पर लालन के मन एक न आवा ॥ आवत गोद न रोवतहै कहि चंदहिलेब अबै हममाई । शोचत मातुखड़ी मन में क्यहिभाँति भलाहम चन्द्रहिपाई । जो लयदेउँ ललाकरमें खाए जाहिरहै यहि काल चुपाई । जानतहै न अबूझकछू हम काकहिकै इनको समुझाई ॥ तो यक भाजनमें भरिकै जलले कर ऊपर दीन उठाई ॥ आवहु चन्द्रबुलावतहै हित खेलनके तुमको रघुराई । फेरि धरयो धरणि महँ सो कहि लेहु लला गहि चन्दहिं लाई ॥ ताहि विलोकि हँसे रघुनायक धारणको करकंज चलाई । भाजनमें क डारिधरे पुनि बाहर आवत सो शशिनाहीं ॥ झांकतहैं पुनि पा

तरे तहँ देखिपरै नहिं तापरछाहीं ।, तौ पुनि रोइकहै जननी हम लेवैं शशी निजहाथनमाहीं ॥ वारिविषे यह झलकतहै पर हाथन मे गहि नेकु न जाहीं ॥

॥दो॰ अतिसमीप वह चन्दहै कहौतो लावों धाय।

॥ सुनि लालनके वचनवर कह्यो मातु मुसक्याय ॥

॥ तव मुखलखि संकुचै शशी जावै दूरि पाताल।

॥ ताते आवै हाथनहिं कारण यौही लाल॥

॥ सुनि विहसे प्रभु मातुतव लीन्हो गोद उठाय।

॥ दूधप्याय दुलराय पुनि दीन्हो ताहि सुलाय॥

॥ रामचन्द्र विधुवन्तलखि मातुलहत मनतन्त।

॥ देहु नाथ निज तन्तवर गावत यश भगवन्त॥

यहिविधि कृपासिंधु रघुराई। करत चरित भक्तन सुखदाई॥ देखि मातु पितु अति सुखपावें। महामोद मनमाहिं बढ़ावें॥ कछुक दिवस बीते पितुमाता। चूड़ाकर्म कीन्ह सुखदाता॥ तीसरवर्ष शुक्र सितआयो। भृगुदिनतिथिदशमीशुभपायो॥ कन्यालग्न जानि सुखदाई। पठये बोलि भूप मुनिराई॥ सुनिमुनि मुदित भूपगृहआये। विधिवत चूड़ाकर्म कराये॥ गान निशान वेदधुनि होई। याचकजन पावत मनजोई॥ नृप सबजाति बन्धु बुलवाई। सादर सबकहँ अशनकराई॥ विप्रन दानदीन बहुभाँती। देहिं अशीष न सुदकहिजाती॥ अधिकउछाह अवधपुर छाये। घरघर बाजहिं मोदबधाये॥ सब नर नारि मुदित मनमाहीं। सुखसंयुत निशिवासर जाहीं॥ रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी। जननि जनक पावहिं सुखभारी॥

॥दो॰ सुखमा सुखहइअमितअति कहिकविसककोताहि।

पदसुख शारसुख वेदसुख। अगमनिगम गमनाहिं॥

खेलहिं आँगन चारिउ भाई। करहिं अनूप चरित सुखदाई॥
अति सुंदर चारिउ सुकुमारा। पावहिं लखि मुद मातु अपारा॥
राम श्याम तन आँगन सुहायो। पीत झँगुलि भूषण छबि छायो॥
ठुमुकि ठुमुकि आँगन बिच धावैं। एकहि एक लपटि पुनि जावैं॥
लरखराय गिरि फिरि उठि लपटैं। आजत निरखि छुवन यक झपटैं॥
मणि खम्भन झाँकहिं निज छाँहीं। लागत नाचन देखत ताही॥
चलहिं भाजि पुनि हँसि हँसि गाई। पाछे लागि जाति तिन्ह माई॥
मातहि लखि करि कै मुख रूखा। कहहिं लागि हमरे अति भूखा॥
जासु रूप सचराचर माहीं। ध्यावत लखि कउ पावत नाहीं॥
जासु रोम प्रति भुवन अपारा। जो प्रभु पालत सब संसारा॥
रोवत रहइ जननी के पासा। नैन नलिन आये चुइ आँसा॥
प्रेम उमगि जननी उरलाये। आँसु पोंछि पयपान कराये॥

॥दो०॥ पुनि सुन्दर लैकै अशन सबहिन दियो खवाय।
॥ नारि पाय सुत पोंछि करि लीन्हेउ गोद उठाय॥

यहिप्रकार शिशु चरित सुहाये। करहिं अनेक जाहिं नहिं गाये॥
मुनिजन जाहि ध्यान नित लावैं। निगम आगम ज्यहि नेति बतावैं॥
सो निजभक्त हेतु तनुधारी। करत चरित संसृत दुखहारी॥
इमि सुखयुत कछु काल बितायो। पंचौ वर्ष मार्ग शुभ आयो॥
दशमी भले रेवति उडुराजा। कर्णवेध कर साजि समाजा॥
नृप गुरु विप्र बोलि सब लीन्हे। जाति कुटुम्ब निमंत्रण कीन्हे॥
मंगल साज सकल गृहसाजे। भाँति भाँति बाजन बहु बाजे॥
विमल वेदिका अजिर बनाई। अति विचित्र तहँ चौक पुराई॥
हेम कलश दीपक परितामैं। रक्षा अमित जाइ कहि कापैं॥

शिशुन सवाँरि मातु लै गोदा। बैठीं चौकं मध्य सहमोदा॥
पुत्रनकर धरि विविध मिठाई। कछुक बोरि दधि दीन खवाई॥
सींक बोरि रोचन श्रुति लाये। स्वर्णकार तब निकट बुलाये॥
दो॰ परमानंद ते झटितअति कीन बेधि शिशुकान।
भई निछावरि विविध बिधि करहिं नारि बहुगान॥
॥ रोलाछन्द ॥ लीन्हें तब भूपाल बोलि सब याचक वृन्दा। धन मणि भूषण चीर भूरिदै कीन्ह अनन्दा॥ करवाये पुनि अशन सन बहि सादर सुखमानी। विप्रन दीन्हेदान अमित अस्तुति नृपभानी॥ मुदिताशिष सब देहिं चिरञ्जीवै सुतचारी। दिन दिन इनते नाथ हमहिं होई सुखभारी॥ गावहिं गुण नभ देव सुमन संकुल झरि लाये। कर्णवेध उत्साह जाहिं मुख एक न गाये॥
दो॰ जिनके नाम प्रतापते जन्म मरण दुख जांय।
भूप भवनसो प्रेमवश रह्यो कान छेदवाय॥
परम प्रसन्न भूप सब रानी। देखत सुत चारो छवि खानी॥
कोशलपुर नित नवल उछाहू। चहुँदिशि उमगत मोद प्रवाहू॥
मंगल मोद नव्यनित ताके। मंगल मय सुन्दर सुत जाके॥
छवि समुद्र नहिं वरणि सिराई। लखि शतकोटि मदन वलिजाई॥
अब्जअरुणपद कोमल लाला। जगतनखनद्युति विशदसुजोला॥
रुनु झुनु धुनि पैंजनियां करहीं। मुनि रव ध्यान मुनिनके टरहीं॥
कहिनजायकटि किंकिणिशोभा। उर मणिमाल देखि मनलोभा॥
बाहु विशाल विभूषण भूरी। करसृह करज सनख द्युतिरूरी॥
दो॰ पूरण शशि सुखमा वदन चिबुकाधर द्विजमंजु।
नासा शुचि सीपज लसत लजित अक्ष नवकंजु॥
लघु लघु कुंडल करण विराजें। गोल कपोलन पै छवि छाजें॥

मन्मथधनुसम भृकुटि विशाला ॥ तिलक अनूप सोहि वरभाला ॥
शीश चौतनी सुभग सुहाई ॥ पीतवसन भूषण छविछाई ॥
नखशिख सुत सुंदर सुखदाता ॥ निरखिनिहालहोहिं पितुमाता ॥
सानुज सखन सहित रघुराई । खेलहिं खेल महीपन जाई ॥
भोजन हित नृप बोलि पठावें । सखनसंगजछांड़ि नहिंआवें ॥
कौशल्या तब आपुइ जाई । चलहिंसाजितकि आवतमाई ॥
कहहिजननिचलि सुतकछुखाहू । बोलत तुमहिं बैठि नरनाहू ॥
।दो०। सुनि जननीके वचनअस आये चलि तब साथ ।
विहसि भूप रज झारि ढिग बैठाये गहि हाथ ॥
॥ किरीट छन्द ॥ जेंवत पै थिरचित्तनहीं लखि ओसर भाजिचले किलकावत । आवत फेरि समीप नहीं बहु भाँतिन सो महिपाल बुलावत ॥ संगति जाय सखान मिले रचिखेल अपारन दुंदि मचावत । जा सुखको तरसैं विधि शंकर ताहि सुभाय क्षमापति पावत ॥ ग्रामवधू छवि देखि छकें घरजाय सखीन सुबैन सुनावहिं । धन्य सखी जिन वासपरोस विलोकत जे निशि द्यौस रहावहिं ॥ द्यौं जबते लखि रूप सखी उन मोहिं नहीं तबतो कछु भावहि । चाहत है मन मोर यही लिय गोद करों बसुयाम खिलावहि ॥ खेलत द्वार विलोकि कबौ पुरलोग उदास उछंग पसारहिं । चूमि निशेश मुखाम्बुज कोकर सुंदर मिष्ट सुमेवहि धारहि ॥ भाँति अनेकन प्यार करे रुचता कि पठावत वेगि अगारहिं । कोशलनाथ कि भाग्य बड़ी भगवन्त लहे कहि शेषन पारहिं ॥
दो०। कबहुँ प्रात मिलिकरि सखा द्वार पुकारत आय ।
खेलन हित सुनि तुरत तब जाय जगावत माय ॥
॥ सुंदर छंद ॥ निशि वीतिगई सुत प्रातभयो उठिये सुर सन्तनके

हितकारी ॥ द्युति क्षीण भई नभ तारनकी चकवाक लह्यो सुख पेखि तमारी ॥ निज संगसखा सब खेलनको बहुवार गये नृपद्वार पुकारी । अब सोवनकी नहिं बेरखड़ी भगवन्त जगावति है महतारी ॥ सुनि सुंदर बैन उठे रघुनन्द कृपा सुखकन्द स्वछन्द अघारी ॥ बदनाम्बुज सो कुम्हिलाय रह्यो बश आलस नैन सकैं न उघारी ॥ द्युति कुंडल लोल कपोलनपै अलकैं घुघुवारि लसैं अतिकारी । जनु चंदहिं घेरि घटा भगवन्त छटापट पीत किहै उजियारी ॥ सुखधाम विराजत राम महाछवि कोटि मनोज लजावनि हारी । जननीयुग नैन चकोर सशांक समास्यरही पल रोकि निहारी ॥ पुतरी जिमि दारु बिलोकिरही बशप्रेम दशा तनकेरि बिसारी । छविमान सुधासमकै भगवन्त मुखाम्बुज धोवत लै शुचिवारी ॥

दो० बदन धोइ करवाइ कछु रुचिर कलेऊ माय ।
भूषण बसन सवाँरि तन दीन्हो द्वार पठाय ॥

कवित्त ॥ शोभ मुखपानकी अधर अरुणानकी मधुर मुसकानकी चिबुक दंतियानकी । नासा छविमानकी कुण्डल द्युतिकानकी कमान भौंहतानकी कमल अँखियानकी ॥ कुंचितालकानकी झलक टोपियानकी सुपीत बसनानकी लसनि बपुषानकी । भूपके ललानकी समान सुखमानकी न आन ऊपमानकी बखानै सोन मानकी ॥ सानुज सखान राम खेलैं चाउगान मोदपुंज उमगान जो बखानि पावनाहीमें । चंगको उड़ावैं आसमान लों चढ़ावैं एकएकसों लड़ावैं पेच लावैं भूरि ताहीमें ॥ भौंरा नचावैं भूमि मन्नको अचावैं एक कौंडरा खचाय बैठि जावैं आपु वाहीमें । लूकि पुनि जावैं एक ढूंढनै सिधावैं दौरि चोरहीं चढ़ावैं कौन भांति सों सराहीमें ॥ श्यामश्याम अंगमें सुपट्ट पीतरंगमें कि बिज्जु

तब प्रभु चरित लषण सबगावा। सुनितन पुलक मोद मनछावा॥
तब करजोरि कह्यो द्विजबाता। को पति कहाँ गयो तवमाता॥
अवध नृपति दशरथ अँगनाई। तहँ अवतार लीन तिन्हजाई॥
कछु दिन गये जनकपुरमाही। हमहुँ आइ प्रकटब पुनि ताही॥

दो० सुनि सीताके वचन द्विज शुचि सुन्दर सुखदैन।
सकल लोकपति राम कहँ जानि हिये अतिचैन॥
सिय इच्छा बिनुश्रम अवध गये आइ ततकाल।
कह प्रभु द्विजपाये सुरभि नायो तव पदभाल॥

कवित्त॥ जैति जैति राम तो प्रभावहै अपार नाथ अज्ञतावे वश्य मंदबुद्धि मैं न जानी है। आपुके समान ईश दूसरो न ईश और, लोक है न आन ज्यो सु आपु सुखदानी है॥ कीरति कलाप लोक लोकनै प्रसिद्ध आपु भाग्यवंत दीख मैं वियोन, स्वामि सानी है। फेरि पंकजाक्ष कोर ओर दासहेरि नाथ कीजिये क्षमासो जौन ढीठतातिठानी है॥

दो० सुनत वचन सनमानि बहु बिदा किये द्विजसोइ।
गयो भवन अतिमुदितमन प्रभुप्रभाव जिय जोइ॥

सवैया॥ रामचरित्र विचित्र महा कहि कोकवि कोविद पारहि पावै। नेति वदै ज्यहि वेद सदा चतुराननहूक अगम्य लखावै॥ शेष थकै कहि पारनहीं अरु शारदकी वर बुद्धि लजावै। पावन हेत गिरा भगवन्त कछूक यथामति सादर गावै॥

सुनहु शिवा संतन सुखदाई। बहुविधि चरित करहिं रघुराई॥
कबहुँ प्रात उठिकै भगवाना। सानुज करि सरयू अस्नाना॥
करि भोजन ताम्बूलन खाई। सहित मोद मन चारिउ भाई॥
लीन्ह सकल निज सखा हँकारी। वन मृगया हित कीन्ह तयारी॥

दो० विविध भाँति भूषण वसन अँग अँग सजे बनाय।
वरणिसकै नहि सहसमुख सो सुखमा समुदाय॥

कवित्त॥ सोहै शीश चौतनी सुभग घुँघुवारी लटे कुण्डल अनूप गोल गालनपै झलकै। पङ्कज बदन चारु सुखमा सदन देखि लाजत मदनमाल मुक्तकंठ हलकै॥ जरीजरबफ्त ऊन रेशमी पोशाक साजि छोरन दुशाल गुच्छ मोतिभा सुछलकै। पानि चाप वानधारि खैंचिकै निषंग लंक रूपता विलोकि सो अपल होत पलकै॥ साहनी वोलाय दीन शासनै तेजाय वेगि जाति जाति अश्वनै लयायकै तयारहे। ताजी तूरकानी मूलतानी फीरगानी देश अरव इरानी रूम कावुली खधारहे॥ काश्मीरि गूजराति काठियाहुवार कच्छि मागधी दरयाई मरहट्ट माड़वारहे। औरहु अनेक देश देशके तुरंग साजि आनि जो वखानि जात नाहि वेशुमारहे॥ संदली कपूरि जर्द तेलिया वलख चीनि नोकरा कुमैत सब्ज धानिया सुरंगमे। कुक्षाकार सूरखा सोनाहुला समुद श्याम करन बदामि जाल सोहैं हर्द रंगमे॥ किस्मिसी अँगूरि लाखि दूधिया सु ईलमासि फूलवारि गर्रासेत गूलदार अंगमें। तामड़ा मुसुकि नूरि सीरगा संजाफि और भाग्यवन्त वाजिहैं अनन्त रङ्ग रङ्गमे॥ सुंदर अनूप नव्य जातरूप हीर आदि रचित सुजीन चारु पूजी जेरबन्दनै। भाग्यवन्त गूंधि आल चोटिनै लगाय पान कञ्चन रकाव मञ्जु खींचि पुच्छ तंगनै॥ दूमची लगाम हेम वागें दिव्य रेशम कि हैकल हमेलहे अमोल पेशवन्दनै। कामदार ज्योति थानडारिके सुजीनपोश कायजासमेत लाय वाजि शोभकन्दनै॥

सवैया॥ सानँदराम सबंधु सखा सब कूदि सवार भये वरवाजी। औरहु राजकुमार अनेक विभूषण चीर सुअंगन साजी॥ शीश

धरे कइ कीट मनोहर काहुकि टोपिनकी छवि छाजी॥ बांधिकई पगरी अगरी छविजात कही नहिं सोति विराजी॥ कइ पट्टन झारि दुपट्टन बांधि सुछोरहि पृष्ठि उलट्टतहै। उरमाल अनूप लिये करमें कइ लंकजरी सु लपट्टत है॥ अनमोल वढे सुदुशाः लकई लखिभास्कर आ ज्यहि हट्टतहै। चरनौ किमि रंगडशालन के यक एकनते वर ठट्टतहै॥ कवित्त॥ कासनी सुरंगसेत काहिली वदामि नील संदली गुलावि जर्द वैजनी अँगूरिया। नारंगी सहावि ऊदि जौजई गुलालि सब्ज धानिया बिलाखिलाल किस्मिसी अ-बीरिया॥ कोचकी सजाफरानि मूंगियाहु आसमानि शर्वती चनौ-टियारु पिस्तई कपूरिया। सुर्मई जँगालि मंजु कंजई सुभाग्यवन्त कोकई स्वनाहुला सिंगर्फि औ मँजीठिया॥ अङ्गन अनूप दिव्य भूषण विराजमान हेमहीर माणिक सुजाल ज्योति जागती। कुं-डल सकान शुभ्र नासिका बुलाक सोह मंजुल सुमाल मुक्त कम्बु कण्ठ हालती॥ रूपके अगार वे किशोर भेसवार वाजि भाग्यवंत तासमै कि गाउसे सु क्यागती। साधि वाग आसनै लगाय ढंग वाजिनै सुचालनै चलाव जो वखानि मोन आवती॥ सवैया॥ राजकुमार नचावत वाजि चलावत है बहु सुंदरचाली। पर्न बांधि सुदर्न धावत कोइ चलावत पोइरुहाली॥ कोइ कुदावत भूमिखड़े सुजमावत कोइ फँदावत नाली। कौनप्रकार कहै भगवन्त सुएकन सो गति एक निराली॥ देवन व्योम अनन्दभरे लखि फूलन की झरि भूपरलाई। पावन कीरति राघवकी भगवन्त रहे सब सादर गाई॥ जातचले मृगयार्थ वने प्रभु भाषत सो न बनै प्रभुताई। नांघत शैलनदी नदनार अटे सु अरण्य गँभीरन जाई॥ देखिपरे मृगया उतरे सुतरे निज वाजिनते मदभारे। जानि पुनीत कुरंग

कृपाकर लै धनुवाण तिन्हे तकिमारे।। रामवधे निजवाण जिते मृग ते तुरते हरिधाम सिधारे। पेखि प्रभाव कहै सुरजे प्रभु जैप्रभु जैप्रभु औधदुलारे ।। कवित्त ।। खेलिकै शिकार भानु अस्तकाल जानि फांदि बाजि ह्वै सवार वेगि भौनही सिधाये हैं । वेगता विलोकि तीन हारती हैं मन गति पावही न पार पौन गौनहू लजाये हैं ।। हंस वंश भूषण कृपाल रामचन्द कन्द आनँद स्वछन्द मध्य औध सद्म आये हैं ।। भाग्यवंत पावन सुयश शोक दावन सुताप त्रै नशावन कलाप वंदि गाये हैं ।। शुभगीत छंद ।। जै राम पूषण वंश भूषण अमल पंकज लोचनं । सुखसिन्धु पूरणकाम शोभाधाम भौभय मोचनं ।। कृत चरित संसृत तरण कलिमल हरण सुर मुनि रंजनं । आनन्द कन्द स्वछन्द व्यापक विश्व खल दल गंजनं ।। इमि सुयश गावत वंदि पावन राम घर आवत भये। शिरनाय भूपति पांय आशिष पाय पुनि भीतर गये ।। लखि मातु सानँद धाय लीन्ह्यो लायउर चारो तनै। कहि सकन शारद शेष सुख सोजौनभा जननी मनै ।। पोशाक सकल उतारि पुनि मुख धोइ मन आनँद लह्यो। चलि तात भोजन करहु सुन्दर जाय वलि जननी कह्यो ।। सुनि मातुके वरबैन करुणा ऐन सानुज आयकै। भगवन्त कीन्ह्यो अशन सादर मातु परस्यो चायकै ।।

दो०। जूठनिको गरजी करै अरजी जन भगवन्त ।
दीजे करि मरजी सपदि हरजीवन निजतन्त ।।

सुभग सेज पुनि चारो भाई । कीन शयन सुखमा अधिकाई ।।
प्रात जागि सानुज रघुराई। गुरु पितु मातु चरण शिरनाई ।।
शासन लहि कारज पुर करहीं । लखिलखि भूप मोद मनभरहीं ।।
पुरजन देखि चरित सुखपावहिं। जहँतहँ विमल रामगुण गावहिं ।।

कथा अनेक कहहिं मुनि ज्ञानी। सादर सुनहिं सकलसुखमानी॥ कबहुँ आपु प्रभु कहहिं बुझाई। सुनहिं सप्रेम मुदित सब भाई॥ नारदादि मुनिवर नित आवैं। सादर प्रभुपावन यश गावैं॥ यहि विधि अवधपुरी रघुवीरा। करहिं चरित भंजन भव भीरा॥

छप्पै॥ जो प्रभु अगम लखात शेष शारद शिव वेदैं। नारद शुक सनकादि लहत ब्रह्महु नहिं भेदै॥ जासुनाम बल सृजत लोक विधि नाशत ईशा। पालत विष्णु प्रभाव जासु आज्ञा सब शीशा॥ स्वइनाथ स रुल साकेतपति करुणाकर जन दुखहरण। धरि मनुज देह अवधेश गृह करत चरित संसृत तरण॥ स्वइ सुकृती शुचि साधु स्वई पंडित स्वइ ज्ञानी। स्वइ दाता धनवान चतुर सोई गुणखानी॥ स्वइ पावन मन वचन कर्म सोई नयनागर। जप तप तीरथ सफल तासु सोई सुख सागर॥ तजि कपट सकल ध्रुव प्रीति करि रामदास जो ह्वैरहै। भगवंत प्रशंसत संत त्यहि जीवन फल जग स्वै लहै॥

इतिश्रीरामचन्द्रकैशोरलीलावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥४॥

दो० रघुपति जन्म चरित्र शुचि मे कछु कह्यो बखानि।
सीय जन्मकर चरित अब कहौं सकल सुखदानि॥
सीतासम पावन करण सीतायश सुख कन्द।
सीता जन मन दुख हरण गावत सीता वृन्द॥
विप्र चन्द्रशर्मा रह्यो एक परम हरिभक्त।
नारि चंद्रभागा सु त्यहिं दोऊ विषय विरक्त॥
हरिसनेह सम्भारि हिय नैमिष वन चलिजाय।
युगलमंत्र जपि तपअमित कीन्हें दोउ सतिभाय॥

सवैया॥ साधन सिद्ध भयो दिन पूर्ण सशक्ति प्रभू तब दर्श

दिखायो । ह्वै सुप्रसन्न कह्यो वर माँगहु जो मनमे अभिलाष रहा; यो ॥ कै पुटपानि प्रणाम कियो अति प्रेमभरे द्विजवैन सुनायो । शक्ति सुता करि नाथ लहौं सुजमात्र चहौं तुम सो मनभायो ॥ सिद्ध मनोरथ भे तुम्हरे सब यों कहि फेरि कह्यो प्रभु बैना । ह्वै जनकापु जबै मिथिलापति होव तहां यह रानि सुनैना ॥ अंशन संयुत ह्वैतनया मम शक्ति तबै प्रकटी तव ऐना । ह्वै मिलिहौ जिमि आनि तुम्हैं तहँ सो सु प्रसंग सुनौ सुखदैना ॥

मनु शतरूपा तप बहु कीन्हा । तिन्ह कहँ मै प्रथमै वर दीन्हा ॥
अवध नृपति ते ह्वैहहि जाई । तिनके तनय होव हम आई ॥
तहँ जामात्र होव अस भाषा । करिहौ तव पूरण अभिलाषा ॥
भये बहुरि प्रभु अंतरधाना । द्विजमनमाहि परमसुखमाना ॥
कछु दिन गये त्यागि तनु दयऊ । मिथिलापुर प्रकटतदोउभयऊ ॥
भूप जनक अरु रानि सुनैना । सब गुणखानि सुकृतसुखऐना ॥
राज करत बीते बहुकाला । एक समय तहँ परेउ दुकाला ॥
भूप बुधन तब कह्यो हँकारी । करिय युक्ति बरषै ज्यहि बारी ॥

दो० तब तिन कह नृप इन्द्रमख जो कीजे यहि काल ।
तौ पुनि बरषै वारि बहु जग सब होइ सुकाल ॥

कीन्ह तुरत स्वइ भूप उपाई । चामीकर कर हल बनवाई ॥
शतानंद अरु भूपति रानी । जोतन लगे परम सुखमानी ॥
जब पटवार घूमि हल आयो । सप्तमभू यक विवर लखायो ॥
तहँ पुनि प्रकटयो एक विमाना । अति सुन्दर नहि जाय बखाना ॥
अमित प्रकाश अमित छबिछाजे । आदिशक्तित्यहिमाहि विराजे ॥
मध्य भूमिजा बैस किशोरी । राजत सकल सखी चहुँओरी ॥
रूपराशि वरणौ किमि शोभा । लखि रतिकाम कोटिमनलोभा ॥

वरपि सुमन सुर नृपसन कहेऊ। पूरण शक्ति सुता तव भयऊ॥ दो०। याते यश पैहौ अमित ह्वैहै सब मनकाम। परब्रह्म यहि हेतु नृप आवहिंगे तव धाम॥

मोदकछंद॥ मानि सुताकर भाव महीपति। सेवहुले घरजाय इन्हैं अति॥ भूप बिनै बहुभाँति किये जब। तौ सिय पूर्व चरित्र कहे सब॥ फेरि विदेह बिनै करि योंकह। है शिशु देहु सु आनँद मो कहँ॥ लीन तबै शिशुरूप सियाधरि। अन्तरधान विमान दियाकरि॥ सानँद आनि सुता तव घमहिं। श्राद्धकिये अरु जात सुकर्महिं॥ माधव नौमि सुमंगल दिन्महिं। शक्र सु पुण्य लिये सिय जन्महिं॥ विप्रन दान दिये बहुराजन। बाजहिं भाँति अनेकन बाजन॥ आनँद मंगल छाय रह्योपुर। भूपति मोद अपार लह्यो उर॥

लावनीछन्द॥ आजु मिथिलेश घरमाई। सुतागुणरूपमें जाई॥ सुमन्नभदेव भरिलाये। नगनरनारि सुनिधाये॥ लिये कर हेमकी थारी। चलीं सब आरती वारी॥ दो०॥ भूप सदनभे भीर अति परमानँद रह्यो छाय। बंदी मागध सूतगण गावत गुण समुदाय॥ शब्द तिहुँलोक मे छाई १ सखी सब मंगले गाई। जनकपुरधूम है छाई॥ लिये नृप बोलि याचकहैं। किये तिनको अयाचकहैं॥ दो०॥ दान पाय नृप हाथ सों आनँद बरषोपाय। उमँगिचल्यो है जनकपुर याचक सिंधु अघाय॥ फेरि पर द्वार ना जाई २ हरप नरनाग सुरलोकै। दुवन दुखरैनि जिमि कोकै॥ बधाई द्वार पै बाजै। मनो घन व्योम मे गाजै॥ दो०॥ कोउ नाचत गावत कोउ सस्वर दै दै ताल। मची कीच मगबीच रँग परमानँद पुरवाल॥ रह्व पारस जनुपाई ३ जनक सम पुण्य काको है। सुना शक्त्यादि

जाकी है ॥ नहीं ज्यहि ध्यान मुनि पाये । स्वई भरि अङ्क नृप लाये॥
दो० ॥ जन्म समय औ सीयके उत्सव आनँद जौन । कहि न सके भगवंत सों शेष शारदा तौन ॥ निगमहू नेति करि गाई ॥ ४॥
दिन प्रति अधिक मोद पुर छायो। शुक्ल चतुर्दशि रविदिन आयो॥
कीन्ह छठी भूपति युत प्रीती । जस कछु लोक वेद शुभ रीती॥
तृतिया ज्येष्ठ कृष्ण गुरुवारा । कीन्ह बारहौं मुदित भुवारा॥
लोक वेद विधि करि अनुरागे । पुनि गुरु नाम धरन तब लागे॥
भूमि मयेसि सुजा कहाई । सीता वेद प्रबन्ध अहाई ॥
पितु यश हेत जानकी नामा । अरु मैथिलि सम्बन्धिक नामा॥
नामकरण यहि विधि गुरु कीन्हा । पुनि आशीश भाँति बहु दीन्हा॥
सुनि नृप रानि परम सुख माना । द्विजन बोलि दीन्ह्यौं बहु दाना॥
दो० ॥ दिन दिन कन्या बढ़ लइमि शुक्लपक्ष ज्यों चन्द ।
देखि देखि पितु मातु मन लहत परम आनन्द ॥
नारद मुनि आये यक बारा । करि प्रणाम लै भवन भुवारा॥
तुरत सुता नृप आनि देखाई । देखि रूप हरषे मुनिराई॥
बोले मुनि सुनु भूपति बैना । तव कन्यका सकल गुण ऐना॥
जन रंजन भंजन भव भारा । आदिशक्ति लीन्हेउ अवतारा ॥
परब्रह्म त्रिभुवन पति रामा । यहि कहँ उर मिलिहैं सुखधामा॥
औरहु लक्षण अमित अनूपा । कहि पुनि गमन कीन्ह मुनि भूपा॥
सुनि मुनि के वर बचन पुनीता । धरि लीन्ही उर अन्तर सीता॥
कछु दिन गये सुनैना रानी । जनी अपर सुता मुद दानी॥
दो० ॥ नाम उर्मिला तासु कर अति सुंदरि गुण धाम ।
बहुरि उभय जन्मत भई सुता कुशध्वज बाम ॥
नाम माँडवी जेठि जो श्रुतिकीरति लघु जानि ।

रूप शील गुणधामचहुँ प्रकटीं नृपगृह आनि॥

हरिपदछन्द॥ और अमित दासी तिनकेरी आनि जन्म तहँ लीन्ही। मन वच कर्म्म बालपनही तें चितसेवन महँ दीन्ही॥ ऋधि सिधि आदि वधूदेवनकी निमि वंशिन घरआई। धरिधरि सुन्दररूप जनकपुर भई प्रकट समुदाई॥ खेलहिं एकसंग सादर सव करहिं चरित सुखदाई। बोलनि हँसनि देखि सुनि सानँद मातु पिता बलिजाई॥ जासुचरण सेवत निशिवासर उमा रमा ब्रह्मानी। आदिशक्ति छविधाम जनकपुर भई प्रकट स्वइआनी॥ जनकराज महराज भाग्यबड़ि को कहि पारहिपायो। अण्ड अनेक अमल जाको यश रह्यो छाइ सवठायो॥ यहिप्रकार सियजन्मि भूपगृह करत चरित भौसेतू। अब सुनिये चितलाय कहौं शुभ सीयस्वयम्बर हेतू॥ सवैया॥ एकसमय शिवशंकरको मिथिलाधिप कीन तपोव्रत भारी। आयकह्यो शिव माँगहु सो वर जो मनमें अभिलाष तुम्हारी॥ कै सुप्रणाम कह्यो नृप मोकहँ देहु यहै वर एक पुरारी। सन्ततआपु धरें ज्यहि ध्यान स्वई प्रभु हौं भरिनैन निहारी॥ तौ निज दीनशरासन शम्भु कह्यो नृपसों यहिपूजहु जाई। याहियते ममनाथ मिली भगवन्त तुम्हे दिनयें कछुआई॥ मानि नरेश महेश कि वानि लगे धनु पूजन नेह लगाई। आठहु याम यहै मनकाम कवैप्रभु देखिय नैन अघाई॥ कुण्डलिया॥ आई यकदिन आपुनहि धनुथल लीपनरानि। बोलिपठाई जानकिहि तुरत तहाँ तिनआनि॥ तुरत तहाँ तिनआनि बामकर धनुलय लीन्ह्यो। दक्षिण कर मलझारि रुचिर चौकादै दीन्ह्यो॥ धरि त्याहिठाम धनुपपुनि भवन सिधाई। पूजन हित नृपजाय दीख चिता मनआई॥

दो०। भवनआइ पुनि हालसव रानिहि पूछेउ राउ।

सुनि रहिगे चुपसाधिकै गुनिमन सुता प्रभाउ ॥
शोच-विवश पौढे नृपजाई । स्वप्ने शिव असदीन बताई ॥
धनुप्रण गहो सुतावर हेता । उठिप्रभात नृप हरप समेता ॥
कीन्ह प्रतिज्ञा शिवधनु जोई । खण्डनकरी वरी सिय सोई ॥
रंगअवनि रचि धनुप धराई । देश देश नृप निवति बुलाई ॥
वाणासुर रावण बलराशी । वीर सुधन्वा भूपति काशी ॥
इनसम अमित भूप बलवाना । रङ्गभूमि बैठे करि माना ॥
तवहिं भूप वंदीजन बोली । कहेउकहहु सवसन प्रणखोली ॥
ते उठाइ द्वउभुजा विशाला । बोले सुनहु सकल महिपाला ॥
सवैया ॥ शङ्करचाप कठोर गरुअति जानतको जगमेंनहिंजाको । राजसमाजमें शूर शिरोमणि जो करि है द्वइ भंजनयाको ॥ होय चहै स्वइ रङ्क किराउ विचार विना वरि है सिय ताको । कान लगाय सुनौ सव भूपति सत्य कहौं प्रणदै करि हांको ॥
दो० वंदीजनके वचन सुनि नृप सव सहित हुलास ।
उठि उठि आसनते तवहिं आये शिव धनुपास ॥
रावण वाणासुर सुभट जानत सव संसार ।
करन लगे बकवाद तव दोऊ आप मँझार ॥
(रावण) स० ॥ देहु हमैं इत शङ्करचाप किलै वह राजकुमारि वतावो । जाहि उठाइ गये नृपहारि सुकै द्वय तीनिक टूक वहावों ॥ हौं निज वीस भुजानवलै यहि राजसमाजहि आजु देखावों । कारिखदै मुख राजनके लै राजकुमारिहि लङ्क सिधावों ॥
(वाण) स० ॥ रे दशकन्ध महामतिमन्द त्रिसौं दृगअन्ध निलज्ज सदायो । जानतहै न प्रभाव शिवै जिन पानकियो निप कीरति छायो ॥ नाश कियो त्रिपुरासुर जो दृग तीसर खोलिकै

मैन जराये।। ताखु शरासन तोरनको खरको असीले मुख तू खल आयो॥ तजि बाद बिबादहिं वादि सबै हठछांड़ि पराक्रम आनि करै। अब आजु सुराज समाजनमे जनि कादरता निज चित्त धरै॥ शिवचाप समेरहुते गरुहै परसै जब पाणि सु जानिपरै। दशमुण्डने ताहि बिखण्डनके सुख पाय सुलै यश जायघरै॥

(रा०) दो०, रे बन्दीजन कुटिलते सुने न बात हमारि॥ राजसभमि क्यो नहीं लावत राजकुमारि॥

(वाण) दो० हे रावण जो बल तुम्हे तो किन तोरौ चाप। बिनु तोरे किमि पाइहौ राजपुत्रि को आप॥

(रावण) सं०॥ जे भुजदण्ड प्रचण्डन सों बरिखण्डन शत्रु अखंड दहाहै। खण्डि अखण्डित पाश जलेश सुरेश दल्यो पवि पुष्ट महा है॥ तूलक सो शिवशैल उखारि जुख्यालहि कलि कराल गहा है। सोइ बने मम बीस भुजा यह तुच्छ पिनाक पुरानकहा है॥

(वाण) स०॥ कीह प्रशंसत आपहिते मुख भूरि दिये करि जाहि बिधाते। ताहि नहीं कछु अंत अहै जु बनीय कहै बहुभांतिनवाते॥ बातनते नहि काजसरे यह नाहक मूढ लड़ावत घाते। होइजु बीसभुजानि बलो कस आय शरासन तोरत नाते॥

(रा०) दो० अहो बाणि बादत कहा, तेरे भुज हतसार। सकत इनते कछू, लीन्हे केवल भारि॥

(वाण) दो० हे रावण मम भुजनको जानसि तैं न प्रभाव। थोरो सो कछु कहतहौं नहिं करि बहुत बढाव॥

कवित्त॥ हौं निज पिता को पद पूजन को जात जब पावन सुभाय पापि पुञ्जन प्रनासिया। देखि तब रावण फिरत फेरि भांवनै सु सातहू रसातलोके जावते बिलासिया। तौके भुजदण्डन

अखण्डन पै आपने सुकौं क्षिति मण्डल को छत्रक प्रभासिया । भागयवन्त जाने कौन केतिकधौं ब्रारि,शेश शीशन पे,दीन जाय भुजन उसासिया॥

(रावण) सवैया ॥ ब्राण वखानत काह वृथामुख,बाहुनके बल पुञ्ज प्रतापहिं । होतेहु वीर प्रमाणिक जो बल पूरणहोत भुजानमें आपहि ॥ तो किन लेतेहु भूतलमें बर बाहुनके बल आपने आपहि । जो करतूति सुकै जगमे यरा काहेन लेतिहु जीति कलापहि ॥

(बाण) दो० पितुमानों काकेभवन सकल लोकदियदान ।
परब्रह्म रस लीन सो जीति दान मैदान ॥

कुण्ड० ॥ सेरियो सब सुरकाज ज्यहि मारयो खल बलवान । मधु मुरकैटभ से सुभट जिन जीत्यो मैदान ॥ जिन जीत्यो मैदान भुवन त्रैपालन करता । पूरण ब्रह्मसमान रचत सोई संहरता ॥ संहरता महि भार नेति जेहि वेद पुकारयो । मांगन हित स्वइनाथ हाथ बलिपाहिं पसारयो ॥

(रा०) दो० हे बाणासुर मम त्वयां यहि वर्कवाद कलाप ।
बूझियनहिं खुलिजाइगो शिवे चापतेआप ॥

(बाण) क० ॥ औरहीते और कछु कीन्हीं करतार ज्यहि जानी नहिंजातगति अतिशै प्रबलहै । आए इत शूरन मिलनकाज आज हम गयो मिलि कहौ आनि रावण अवलहै ॥ बादि बकबाद गयो नाहक रे भाइ यह धूलिना सुनाए गारि अणराउ फलहै । भाग्यवन्त कीरति सुहेतहो दखव चाप करै नृप आप पुत्रि राजहीं अचलहै ॥

(रावण) स० ॥ रावणनाम बली भट आय सकै जग रोकि हमें कछु कोरे । औरनकी न बखान करौं यमराजहु युद्धजुरे कर जोरे ॥ नेकु नहीं बलवान तुम्हे बतुवान कहा मुख सम्मुख मोरे ।

सौंधृग मोहिं पुकारि कहौं घरजाउँ जु आजु विना धनुतोरे ॥
दो० राजसभा तिनुका सरिस मय करि लेखौं बान ।
भूपसुताको देखि पुनि देखौं धनुषपुरान ॥
(बाण) सवैया ॥ रावण बातबनावतहै तु उठावत क्योंनहिं शंभु शरासन । आदिहिं वादिकरे चबवादि सुत्यागत क्यों बकवादिन आसन ॥ रे जड़ जानतहै कि नहीं जगजाहिर तै सुनिजै मदनाशन । पूरण क्यों मनभावतहोइ न जावत पूरकरैं नृपशासन ॥
(रावण) भुजंगप्रयात छन्द ॥ रहे क्या वृथा कांज वे लाज माखी । न आवै तुम्हें बात रे बाणभाखी ॥
(बाण) बड़ेहैजु वातूलतैं बाहुवीहा । कहे जो रुचे तोहिंसो रे अलीहा ॥
(रावण) करोगो तु क्या मोररे भरिवाहू । करैंगे हमैंसोहिं सीताबिवाहू ॥
(बाण) जु साहसवोंहूँ करीतो दशा रे । करोगो स्वई आजु हो राकसारे ॥
(रावण) सवैया ॥ भृंग सों वासुकि भूत गणेशं सुगंगमनों मकरन्दसुहैना । धूरिसो भूरि उड़े पटगोरि मृणाल सो बाहु भयो वलऐना ॥ आयुधसर्व समेत सुताहि उठायकिये गति पद्मसचैना । जानत बानहे बातसबै बर बाहुबलै मम जानिततैना ॥
दो० बाणपिनाक पुरान में पलमें लेब चढ़ाय ।
तुमहूं तौ करि बलकछू देखौं याहि उठाय ॥
(बाण) मेरे गुरुको धनु यह रावन । सीता मेरी मातु सुहावन ॥
दुहूँ भाँति असमंजस जानी । गवनेउ बाणभवन सुखमानी ॥
(रा०) दो० हौं बिनुलीन्हे सीयकहुं तौलगि टरौं न आन ।
जौलगि सुनौं न दासको आरत शब्द सुकान ॥
येते महँ कहुँ राकसहि हत्यो बीर कउबान ।

आरतशब्द सु तासु, सुनि रावण कीन पयान ॥

सवैया ॥ सिंह समान परयो लखि एकन एकनको दरस्यो जिमि व्याला ॥ एकन व्याघ्र लख्यो कर छूवत एकन लाग यथा नल ज्वाला ॥ शम्भु समान लख्यो धनुबान गये ढिग भोकइ अंध भुवाला । वातसबै जियजानि सयान किये उठिगौन गवे दशभाला ॥

दो० सबलभूप यहिबिधि सकल गे मन समुझि प्रताप ।
अबलभूप बलके थके टरेउ न शंकर चाप ॥
बरियाई माँग्यो तबहिं व्याह सुधन्वा राय ।
भूपन दीन्हो कोपिदल साजिपुर घेरयो आय ॥

छप्पै ॥ तासो जनक नरेश समर बहुभांतिन कीन्हा । जब त्यहिं चह्यो सकोप आगि पुर चहुँदिशि दीन्हा ॥ तब सुमिरेउ मिथिलेश शंभु निज पठे सहाई । परदल सहित सँहारि लीन त्यहि देशवसाई ॥ है सुथिर बहुरि मिथिलेश नृप धनुपयज्ञ कर साजकिय । बदि प्रथम दिवस कातिक नृपन लिखि लिखि पत्र अपार दिय ॥

दो० पत्रपाय सजि साज बहु निज निज सकल नरेश ।
चले परम आनंद मन पावनपुर मिथिलेश ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीविश्वनाथसिंहात्मजश्रीरघुराजसिंहविरचितायां भक्तिशिरोमणिप्रभवश्रीजानकीजन्मोत्सववर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

राम सीयकर जन्म सुहावा । निजमति सरिस कछुकमँगावा ॥
मुनि आगमन कहौं अवगाई । सादर सुनहु सुजन चितलाई ॥
विश्वामित्र गाधि सुतज्ञानी । सुरसरि तट बन थल भूलजानी ॥
मुनिगण सहित करहिं तहँ वासा । भये दुखित अति दनुजनत्रासा ॥
लागहिं करन योग मख जबहीं । आय विध्वंस करहिं खल तबहीं ॥
तब मुनि हृदय मंत्र अस आना । कोशलपुर प्रकटे भगवाना ॥

लावहु जाय माँगि मैं तिनका। ते दउबंधु शमन करि इनका॥ करि हैं मम मखकै रखवारी। अस विचारि मुनि तुरत सिधारी॥

दो० कोशलपुर प्राची दिशा सोरह योजन पाहिं।
विश्वामित्र ऋषीश को शुभ आश्रमहै ताहिं॥
कार कृष्ण षष्ठी दिवस मुनिवर कीन्हे पयान।
नौमीदिन आये अवध करि सरयू अस्नान॥
द्वारपाल यक भेजिकै दीन्ह्यो खबरि जनाय।
सुनि दशरथ सानंद उठि सादर भेट्यो आय॥

त्रोटकछन्द॥ करि दण्डप्रणाम ऋषीश्वरको। लय सादर भू चले घरको॥ शुभ आसन बैठन को सुदिये। पुनि पूजन षोडश भाँति किये॥ जुतपानि विनय बहुभाँति कियो। सुत चारिहुलै पग मेलि दियो॥ छवि देखि मुनीश प्रसन्न हिये। पुनि बारहिं बा अशीश दिये॥

दो० तब करजोरि महीपकह मुनि आयो क्यहि काज।
कहउ करत सो नाथ मैं देर न लैहउँ आज॥

सवैया॥ देव धरा द्विज गो मुनि रक्षक सत्यव्रती मम बैन नीजे। निश्चर घोर सतावत मोहि करै मख आश्रम देत नहीजे। सो दुखमानि भयो तव याचक धर्म विचारि भलो यशलीजे। स नुजरामहिं देहु महीपति मारहिं दुष्टन सो दुखछीजे॥

दो० गाधिसुवनके वचन इमि सुनि नृपगये सुखाय।
जैसे परसत तुहिनके कमलजाय मुरझाय॥
पुनि धरिधीर महीप कह माँग्यो मुनि न विचारि।
राम लषण किमि देउँ द्वउ जीवनप्राण हमारि॥

सवैया॥ माँगहु धेनु महीधन कोप सरोपदियो सब शं

यामै। धामहु वामदियो विनखेद करो इनकारण रंचकतामै॥ प्राण समान प्रियाकछुदेह न देउ सवऊ मुनि एक छनामै। राउर काज दियो सवआज वनै यकदेत न केवल रामै॥ हे मुनिराज विचारकरौ सुकुमार कहाँ सुतहैं ममवारे। राकस घोर कठोर कहाँ गिरिसों वलवान महाभयकारे॥ जे धनुवानगहे नहिं जानत वालसखा सँग खेलनहारे। ते लरि हैं किमि संयुगमें मुनि माँग्यहु तौ नहिं योग विचारे॥ किरीटछन्द॥ रामसनेहमई सुनि वानि कह्यो ऋषिराज सुनो महिपालक। चातुर वीर वड़े रणधीर न जानिय आपु इन्हें करि वालक॥ रक्षकहैं सुर साधुनके अरु घोर तमीचर वृन्दन घालक। मानिसही ममवानि महीपति द्यो चलिमेटहिं मो दुखजालक॥

दो० तव वशिष्ठ वहुभाँति सों समुझाये नरनाह।
जग मंगलके काज सुत दीजे सहित उछाह॥

कुण्डलिका॥ दीजे नृप मुनिराज कहँ पुत्र परम सुखमानि। निश्चरदलि मखराखिके वेगि मिलहिंगे आनि॥ वेगि मिलहिंगे आनि लाभ इनको अतिहोई। होई जगयश आपु विलँव कीजे नहिं कोई॥ कोई भाँति न आन गुनियमनमें सुनिलीजे। लीजे आयसुमानि मुनिहिं सादर सुतदीजे॥

दो० गुरुवशिष्ठके वचनसुनि नृप द्वउतनै बुलाय।
दीन सोंपि मुनिराज कहँ कुल सवरीति सिखाय॥

सवैया॥ मानि पिता गुरु मातु समान सदा मुनिसेवनमें चितलायो। वैन कठोरकह्यो न कभू जन याचक दानदियो मनभायो॥ भूलिलख्यो परनारि दिशा नहिं सम्मुख शत्रुन पीठि तकायो॥ कै मुनि कौशिककाज सवै सुत आतुर लौटि घरै निजआयो॥ छप्पै॥ पितुआयसु धरि शीश वेगि सानुज रघुराई। जननि जनक शिर-

नाय मुदितमन आशिषपाई ॥ लीन्हे कर धनुबान करे सुन्दर कटि भाथा । श्याम गौर द्वउबन्धु निरखि लाजत रतिनाथा ॥ मुनिराज परम आनन्दमन जपतपकर फल जनुमिल्यो । बहुभाँति नृपहि आशीषदय राम लषण संगलेचल्यो ॥

दो० – चलतसमय हनुमानको दीन छोरि रघुराय ।
कह्यो कछुक दिनमे तुम्हें मिलबे बनमे आय ॥

कवित्त ॥ जात मग ताड़का करालरूप व्योममाहिं आवत विलोकि मुनि रामही बतायो है । देखिताहि राघवेश कौशिकै कह्यो कि नाथ कामिनी विहीन नाह नीमशाबगायो है ॥ ताहूपै न साःमुहे समर कौनभाँति याहि मारिये न रीति वंश क्षत्रियो अहायो है ॥ होय जैस आयसु कृपालको करौं मै शीघ्र राउरे के काजहेत तात मो पठायो है ॥

दो० – रामचन्द्रके वचनसुनि कह मुनि कौशिक येह ।
पातकमय यह राक्षसी मारिय बिनु संदेह ॥
सुनत राम एकै विशिख तासुप्राण हरिलीन ।
दीनजानि त्यहि दीनहित तुरतहि निजपददीन ॥
कन्या यक्षसुकेत यह हती रूप आगार ।
घटज शाप कुरूपभइ कीन्हे हरि उद्धार ॥
प्रभुप्रभाव लखिकै ऋषय हृदय हर्ष अतिकीन ।
विद्यानिधि भगवान कहँ विद्या बहुविधि दीन ॥

सवैया ॥ लाग न प्यास क्षुधा ज्यहिते न घटै बल तेज तनोपर छावै । सुन्दर मङ्गलमै मुगदायक त्रासहु नींद समीप न आवै ॥ विघ्न निवारण शत्रु विदारण मंत्र अनेकन जे गनिजावै । आयुध सिद्धि समर्पि सबै निज आश्रमलै प्रभुको सहचावै ॥

दो० षोडश विधि पूजन किये दिये मूल फलखान।
प्रातसमय शुभ जानिके बोले श्रीभगवान॥

सवैया॥ निर्भय यज्ञकरो तुम जाय सुजे धनुबान खड़े हम आहे। आयसुपाय अरम्भ किये मखदेखत धूम निशाचर नाहे॥ लैदल धायचल्यो जबहीं प्रभु मार्योबान बिनाफरकाहे। लागतही शतयोजन पार पयोनिधि जायमरीच गिराहे॥ रामबहोरि सुबाहुके शरासन जारय। पावकबान सुबाहे। लक्ष्मण सैन संहार किये सब राक्षस एकन भागि बचाहे॥ शोक गये मुनि वृन्दनके मख पूरण भे ऋषि मोद लहाहे। देव अनन्द भरे भगवंत करें नभजै जयकार महाहे॥

दो० पुनि मुनि बोले राम सों तात जनकपुर माँहि।
अद्भुत यक कौतुक अहै चलहु देखिये ताहि॥

सवैया॥ कौन विदेह अहे प्रणयो शिव चाप कठोर जुकै दोलि डारी। सादर ताहि बरी तनया महिपाल जुरे बहुगे सबहारी॥ टारि सक्यो धनु नेकु क्यहू नहिं रावण बाणहि हारि सिधारी। दूरिकगे चलिकै रघुनायक राजहिं धर्म कुसंकट भारी॥

दो० धनुषयज्ञ सुनि जनकपुर रघुकुल कमल पतंग।
राम लषण द्वउ बन्धुवर हरषि चले मुनिसंग॥

छप्पै॥ नराकार यक शिलापरी आगे प्रभुदेखा। पूँछेउ कौशिक पाहिं कह्यो मुनि हाल विशेखा॥ गोतम ऋषिकी नारि परम सुंदरि गुणखानी। ऋषि तनुधरि विबुधेश वंचि त्यहि सों रति ठानी॥ ऋषि आय देखिकरि कोप तब दीन शाप सुरराज कहँ। भगएक हेत आयो इहाँ होय सहस तवदेह महँ॥ घनाक्षरी॥ देखि ऋषि याहि फेरि कोपिकै कुशापदीन पाहन स्वरूप ह्वैकै तोहू दुःख भोगु जाय। कीन्हीं जब अस्तुति अपारम्नि दीनशापि रामपद धरि-

लागि जाई पाप तू नशाय ॥ इन्द्रहू अपारकीन अस्तुती कहा कि जाउ चाप धुनि सुनि अक्षहैहै कछू कालपाय। सोई है अहल्या यह चाहती चरणधूरि कीजिये कृपा स्वराम दीजिये चरण छाय ॥

दो० सुनत राम त्यहि शीशनिज दीन्ह्यो चरण छुवाय।
दिव्यरूप ह्वै करनलागि अस्तुति अति हरषाय ॥

मात्रात्रिभंगी छन्द ॥ जैजै रघुनन्दन असुर निकन्दन हर अघ वृंदन भारमही। यश अमल अनन्ता तव भगवन्ता कह श्रुति संता पारनहीं ॥ सब गुण गण भारा रूप उदारा प्रभु सुख सारा आप अहै। ज्यहि दरश प्रभावा मैं गतिपावा सकल नशावा पाप अहै॥ मैं जड़ मतिपर्मा पूरुब जन्मा अमित कुकर्म्मा करतभई। करि कृपा कृपाला पदरज भाला धरि अघजाला दूरिकई ॥ किमि विनय सुनाऊँ पद शिरनाऊँ यह वरपाऊँ रामप्रभू। तव चरणन माहीं प्रीति सदाहीं रह न छुटाहीं नाथ कभू॥ भावत मन पाई बर सुखदाई पद शिरनाई हरषभरी। जैजै बहुभाखी प्रभुउररखी निज पति लोकै गमनकरी ॥ सुर देखत हरषे प्रभुपर बरषे सुमन जैति जय व्योम कही। यह कीरति पावन परम सुहावन विशद तिहूंपुर छायरही ॥

स०॥ बिनु कारण राम कृपालसदा शरणागत पालक जानिहिये। अपराध अपार करी ऋषिनारि कृपाकरिकै गति ताहिदिये ॥ अस-जानि नितै भगवन्त भजौ करुणाकरको दृढ़नेम लिये। नतु जाः इहि जन्म अकार्थ वृथाफल कौनकहो जगमाहिं जिये ॥

पुनि सानँद सानुज रघुनाथा। गमन कीन्ह आगे मुनिसाथा ॥
पहुँचे जाइ देव सरितीरा। सानुज करि प्रणाम रघुबीरा ॥
पुनि मुनिसन पूछेउ रघुराई। क्यहिविधिनाथगंग महिआई ॥
अरु उत्पति क्यहिविधि भै गंगा। कहहुनाथ सो सकल प्रसंगा ॥

पुनि मुनिकह तव कुलमें ताता । भयो सगर नृप जग विख्याता॥
केशि सुमति युग तिय तिनरहेऊ । विनसुत दुखित भूप मन भयऊ॥
त्रियन सहित नृप कानन जाई । सुतहित तपकीन्हे अधिकाई॥
भृगु तबआइ देन वर लाग्यो । एक पुत्र केशी तिय मांग्यो॥

दो० सुमतिकह्यो प्रभुदीजिये म्वहिंसुत साठिहजार।
एवमस्तु कहि भृगुगये आयउ नृप आगार॥

केशि सुवन असमंजस जयऊ । अंशुमान तिनके सुतभयऊ॥
असमंजसहि शिशुन वध दोपा । घर वाहिर किय नृप सहरोषा॥
साठिसहस्र सुमति सुतजाई । ते रणधीर वीर सब भाई॥
पति सगर यज्ञ जब कीन्हा । छाड्यउ वाजि इन्द्र हरिलीन्हा॥
पाताल कपिलमुनि नेरे । बाँध्यो नहि पायो नृपहेरे॥
पठये सुत साठिहजारा । तिन ढूंढयो सबजगत मँझारा॥
हैंपाये महिखोदन लागे । पहुँचे जाइ कपिलके आगे॥
खिहय मुनिहिं बचनकटु कहेऊ । खोलत पलक भस्म सबभयऊ॥

दो० अंशुमान कहँ वोलि पुनि कह्योभूप समुझाय।
सुत नहिंआये जाय तुम लावहु खोज लगाय॥

गीतिकाछन्द॥ सुनि तातके इमिवैन सादर अंशुमान सिधा-
। मगगरुड़ मिलि ज्यहि भाँति भे सुत नाश हाल बतायऊ॥
गरुड़मुनि पहँजाय किय बहुविनय हय तौ पायऊ। खगनाथ
। अँशुमान सो कहि वचन ऐस सुनायऊ॥

० गंगा जो आवहिं अवनि तरें पितु तव आसु।
अंशुमान सों भापि इमि गे खगपति हरि पास॥

ालिका छन्द॥ अंशुमान भौनआइ। हाल भूपको सुनाइ॥
। पाय बोलिलीन। विप्रवृन्द यज्ञकीन॥ राज अंशुमान दीन।

गोन काननापुकीन ॥ तोमरछन्द ॥ वहु भांति स्नातपकीन। पुनि त्यागिते तनुदीन ॥ अंशुमान पुत्रदलीप। तिन्ह राजदे सुमहीप। धन गौन आपहुकीन ॥ तपके सुत्यागि तनुदीन ॥ भागीरथ दलीपके भयऊ। जिनको सुयश लोकतिहुँछयऊ। सुतहिं राजदे नृप वन गयऊ। करितप कठिन तहां त्यउसरयऊ। पुत्र भगीरथ के काकुस्था। भये जवहिं सब भांति समर्था। तिनहिं राज दै गे नृप कानन। कीन अमित तप लखिचतुरानन। आइ कह्यो मांगहु वराई। जोरि पाणि कह नृप शिरनाई। नाथ कृपाकरि दीजे याही। आवहिं गंग अवनिके माही। सुनि अजकहा शिवहितुमध्यावो। तिनते मांगि ऐस वरलावो। गंगहि महिं हम छाड़ी जवहीं। राखहिं रोकि जटनमे तबहीं।

॥ दो० तब भागीरथ शम्भुको वहु प्रकार तप कीन।

राखव सुरसरि रोकि हम ह्वै प्रसन्न वरदीन ॥

पुनिअस्तुति विधिसों नृपकीन्ही। तब सुरसरिहिछाड़ि अजदीन्ही। हाहाकार करत सोधाई। दीन शम्भु निज जटा वढ़ा[illegible] त्यहि महँ सुरसरि धार समानी। नृप एक तहँ रही भुला[illegible] [illegible]। गहिकर जटा गारि शिव दी[illegible] भागीरथ [illegible]

तन महँ कछुक पसेउ बहेऊ। त्यहि क्षण विधि वरदेन जु गयऊ॥
सुकृती लखि ऋषिकेर पसीना। पोछि कमंडल में धरि लीन्हा॥
तासु अंश प्रकटी जो धारा। जात सुभई पताल मँझारा॥
परभावती नाम त्यहि अहई। अमित प्रभाव पार को लहई॥
वलिहि छलन वासन जब गयऊ। तीनि पैग महि माँगत भयऊ॥
नापत तनु यहि भाँति बढ़ाये। पग पताल यक स्वर्ग लगाये॥
ब्रह्मलोक पहुँच्यो पग जबही। चीन्हि धोइ अजलीन्हेउ तबहीं॥

दो० धर्यो कमंडल माहि लै तासु अंशकी धार।
रही भगीरथ हेतमहि गंगा नाम उदार॥
भागीरथ सँग सो चली करत लोक निस्तार।
गंगा सागर में मिली नृपपितृन करिपार॥
यहिप्रकार गंगा अवनि आई जग विख्यात।
महिमा अमित अनूपहै जो नहिं कहे सिरात॥

कवित्त॥ पावन करणि लोक जीवन हरणि शोक दोष दुख
[illegible]रिद करत अघ भंगाहै। अमित प्रभाव जाको पावत न पार वेद
[illegible]वत पुनीत वारि होत शुद्ध अंगाहै॥ ज्ञान प्रकटावे तीनि तापको
[illegible]टावे द्वार मुक्ति के अटावे वेगि दिव्य जातरङ्गाहै। घोर भवतारिवेक
मगण मारिवेक वीगरी सुधारिवेक भूतलेक गंगाहै॥ दर्श जासु
[illegible]न्म शत मज्जत विशत वारि पीवत सहस जन्म संचिताघजावई।
[illegible]सो ब्रह्म वारि जाहि शीशपै पुरारि धारि वेद औ पुराण जाकी
[illegible]त्य कीर्त्ति गावई॥ दानमख योग जप नेम व्रत पुण्यभूरि गंग
[illegible]सनान सम तुल्य एकनावई। भाग्यवंत प्रकट प्रभाव लोक तीनि
[illegible]हि सेवत सुभाय जाको मुक्तिजीव पावई॥ जैसे बाज लावाको
[illegible]पटि एक धावालेत कंदनके वृन्द यथा मारुत उड़ावई। जैसे तूल

राशिकरै दावानल जारि छार निविड निशांध यथा भानुभा मिटा-वई ॥ जैसे लघु व्यालन शिखंडि धाय खाय जात परत तुषार यथा कंज सूखि जावई । तैसे भगवंत धार गंगाजूकी लोक माहिं पापन कि राशि एकक्षण में नशावई ॥

दो॰ सुरसरि कथा विचित्र अति सुनि हरषे भगवान ।
सहित ऋषिन मज्जन किये विप्रन दिय बहुदान ॥
पुनि सानुज मुनि संग प्रभु मिथिलापुर कियगौन ।
आय दीख शोभा परम कहत वनै नहिं तौन ॥

कवित्त ॥ वापी कूप सरित तड़ाग सोहैं नानाभाँति वनज वि-काश जामें रङ्ग रङ्ग ह्वै रहे । पुरट बँधान मणि जटित विचित्र वारि पूरण सुधासों रसमत्त भृंग लैरहे ॥ डोलत सुगन्ध मंद शीतल पु-नीत वायु वृक्षन विहंग जाल शोर घोरकैरहे । कैरहे सनान ग्राम नारिनर भाग्यवंत आनँद अपार ठौर ठौरपै सुछैरहे ॥ चारोओर वाग वन बाटिका विराजे भूरि फूल फल भारनसों डारै भूमि नैरही।वृक्षन लतानके वितानसे तने हैं पुंज तासुमध्य पक्षिन कि झीनीशब्द ह्वैरही ॥ हाटवाट चौहट नगर द्वार द्वारपर आनँद अपारहोत भारी छवि छैरही । भाग्यवन्त कौन भांति शोभसो वखानिपाव देखतहि जासु अमरावती लजैरही ॥

दो॰ पुर वाहेर जहँ तहँ विपिन सरिसर कूप समीप ।
निज निज लीन्हें सेनसँग उतरे बिपुल महीप ॥

सवैया ॥ कौशिक देखि अनूप तहां यकदायक मोदभली अम-राई । पावन भूमि समीप नदीसर फूलसवृक्षलता नवछाई ॥ मंदिर हू वहु देवनके नहिं मज्जन पूजनमें कठिनाई । है सब भांति सुपास इहां मनभावत मोरहिये रघुराई ॥

दो० भलेहिनाथ कहि मुदितमन तहँ मुनिवृन्द समेत।
उतरे भलथल जानिकै सानुज कृपानिकेत॥
मिथिलापति मुनि आगमन सुनिलै संग समाज।
मिलन हेतु आये तहां उतरे जहँ ऋषिराज॥

सवैया॥ कीन्ह प्रणाम मुनीशहि भूपति दीन्ह अशीश ऋषीश्वरज्ञाता। लीन्ह बिठाय समीप नृपै पुनि सादर पूछतभे कुशलाता॥ बाग बिलोकनगेजुरहे त्यहि औसर आवतभे दउ भ्राता। श्यामल गौर किशोर उभै क्यहि भांति कहौं छविसो सुखदाता॥ भूप विदेह विदेह भये सुविशेषि विलोकत राम निकाई। प्रेम भरे युगनैन चकोर निहारिरहे मुखचन्द्र लुभाई॥ राज समाज सबै वश प्रेम न देहदशा सुधिकेहु रहाई। धीर ह्वै धरि कौशिक सों पुनि पूछत भूपति यों शिरनाई॥ नाथ अहैं क्यहिके युग बालक ये गुण धाम सुभाय सुहाये। कै मुनिपुत्र कि राजकुमार कि व्यापक ब्रह्म छिपे इत आये॥ कौ धरि काम उभैवपु संग कि भूप क्यहू तपके फल पाये। मोमन ज्ञान विराग सदारत देखि इन्हें सुख ब्रह्म बिहाये॥ हे नृप आपुकहे सबनीक न होहिं अलीक सुबैन तुम्हारे। प्राणिजहांलगि लोकविषे सबहीक अहैं यइ प्राणनप्यारे॥ कोशलराज कुमार द्वि मोमख रक्षकह्वै रणरक्षस मारे। नाम सुराम बड़े लघु लक्ष्मण देखन यज्ञ इते पगुधारे॥

दो० सुनि मुनि वचन विदेह कह नाथ कृपा वडि कीन्ह।
मोहिं कृतारथ करन हित आपु इते पगदीन॥

सवैया॥ राजर तेज प्रताप महा जिन क्षत्रिय ह्वै पदवी द्विज लीन्हं। दूसरि सृष्टि रचै सुलगेरु त्रिशंकुहि स्वर्ग पठै तुम दीन्हें॥ ह्वौ परस्वारथ सदारत कौशिक राजकुमारन संग सुलीन्हें। दुष्ट म-

राय तराय तिया ऋषि मोपर आय कृपा बड़ि कीन्हें ॥ छप्पै ॥ पुनि सादर नरनाह विनै बहुभांति सुनाई। सहित लषण रघुनाथ मुनि पुरचले लिवाई ॥ दायक सुख सब काल सदनलै तहां टिकाये करि पूजन बहुभांति पाय आय सु घर आये ॥ पुनि ऋषिन सहित रघुनाथ शुचि अशन पाय विश्रामकरि। सह अनुज मुदित बैठतभये रह्यो दिवस यकयामभरि ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेविश्वामित्रागमनश्रीरामचन्द्रयात्राताडकासुबाह्वादिवधअहल्याउद्धारजनकपुरआगमनश्रीजनकविश्वामित्रसेमागमवर्णनोनामषष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० लषण हृदय अति लालसा देखन पुर मिथिलेश।
जानि राम मुनिराज सन बोले वचन सुवेश ॥

सवैया ॥ उत्सवनाथ महा मिथिलापुर शोभ अपार छई सबठाई। है धनुयज्ञ टिके बहुभूप जहाँ तहँ बाजत मोद बधाई ॥ देखन लक्ष्मण चाहतहैं परनाथ सकोच करै न जनाई। पावहुँ मै भगवन्त जु आयसु लावहुँ साथहि जाय दिखाई ॥ कवित्त ॥ धर्मसेतु पालक सदाहौ रामचन्द तुम काहेन कहहु ऐसि रीति कुल स्यावहू दर्शनाभिलाप तौ विकल पुर नारि नर जायके देखाय रूप चित्त हरि ल्यावहू ॥ अवला अवलइत आयना सकत आपु देखे विनुपर्र अधमरी तिन्हे ज्यावहू। प्यासे छवि नैनन चकोरनको भाग्यवन्त चन्द्रमुख सुखमा पियूप रस प्यावहू ॥

दो० मुनि पदपद्म प्रणामकरि रामलपण दोउबन्धु।
हरपि नगर देखन चले रूपराशि गुणसिन्धु ॥

कवित्त ॥ श्यामगोर गातमंजु राजत सुपीतपट सुखमा निधा कामकोटि भा लजाये हैं। सोहत निषंग लंक शायक कोदंड हा नाग मणिमाल छवि ऊपमा न पाये हैं ॥ पूर्णचन्द आनन प्रका

मान भाग्यवन्त चौतनी अनूप भाल तिलक सुहाये हैं। आये ग्राम देखन नगर नरनारि सुनि धाम काम त्यागि सब देखिबेको धाये हैं ॥

दो॰ देखि सहज सुंदर युगल बन्धु सकल गुणखानि ।
पावहिं सुख पुरजन परम सफल विलोचन मानि ॥
आठौसखि सियकी सुभग निरखि झरोखन जात ।
सहित प्रेमसानंद सब कहहि परस्पर बात ॥

चारुशीला वचन ॥

दो॰ सखिइन कोटिन कामकी लीन जीति छबि आहि ।
शोभा सुर नर नाग मे सुनियत असि कहुँ नाहि ॥

सवैया ॥ विष्णुहि चारि भुजा सखि हैं चतुराननहू के अहै मुखचारी । व्याल कपाल विभूति जटाधर आनन पञ्च सदा त्रिपुरारी ॥ और कई असदेव नहीं छबिवान इन्हे उपमा जु विचारी । मोहन जो यह रूप निहारि कहो जग में अस को तनुधारी ॥ लच्मणा वचन ॥ कवित्त ॥ भूप दशरत्थ के कुमार युग यहै सखि कौशिक कि राखि मख दुष्टन सँहारे है । गौतम कि नारिवश शापभै उपल ताहि देखिके चरण धूरि छ्वाय मगतारे हैं ॥ गौरजे लषण नाम तनय सुमित्रा लघु श्याम राम नाम ज्येष्ठ कोशला के बारे हैं । रूपगुण धाम ये द्विबंधु मुनिराज संग चाप मख देखनार्थ इतै पगुधारे हैं ॥ हेमा वचन ॥ सवैया ॥ सुन्दर श्याम स्वरूप अनूपम जात नहीं सुखमांगकही है । मोहनरूप अहै सखि ये चट मोहि रही सिय देखतही है ॥ जानकि योग यहै वरहै अरु योग इन्हे सिय क्या दुलही है । जो तकिहै मिथिलेश इन्हें करि है तजिकै प्रण व्याहु सही है ॥ क्षेमावचन ॥ सवैया ॥ जानि चुके महिपाल इन्हे मिलि सादर श्री ऋषिराज सुलैकै । जाय सुबाग दिये शुभ मंदिर

भोजन पान सुपास सबै के ॥ है सब यद्यपि गो प्रथमै पर दुस्तर बात अहै सखिएकै। त्यागहिंगो प्रण भूप नहीं विधि वश्य हठी भजिहैं अविवेकै॥ वरारोहावचन ॥ सवैया॥ हानि उचित्त अहै फल जो विधि तौ मिलिहै सियको वर याही। जो विधि योग संयोगवनै भल यों कृतकृत्य सबै ह्वै जाही॥ आवहिं नात यही नतु दुर्लभ जाय सकै तियद्वार सुनाही। पुण्य पुराकृत भूरिउदै जवहोइ संयोग सखी इन पाही॥ पद्मगंधा वचन ॥ सवैया॥ ज्यो मिथिलेश सुता छवि आगरि त्यों सु अनूपम रामललाहै। उत्तम वंश उभैं कुलभूषण लोक प्रकाश्य सु कीर्त्यमला है॥ मोदमयी भगवंत द्विरूप विलोकत जन्म भयो सफलाहै॥ कैस संयोग वन्यो इनको यह व्याह सखी सवहीक भलाहै॥ सुलोचना वचन॥ सवैया॥ शुभश्यामल वैस किशोरलला अतिसुन्दर कोमल गातअहै। तिमि गोरिमनोहरि भूपलली भलयोग वन्यो सब लोग कहै॥ पर भूपकिये प्रणदुर्घटहै शिवचापदलै स्वइ व्याहुलहै। सु कठोरमहा नहिं योग्यइन्हे अवरेव वड़ी सखि एकयहै॥ सुभगावचन॥ सवैया॥ कउकोउ कहै इनको सजनी लघु देखतहै सुप्रभाव महा। पदपंकज धूरि छुये जिनके ऋषिनारि तरी अघभूरिदहा॥ शिव चापदलै विनु सोकिरहै यम-तीति तज्योजनि सत्यकहा। विधि चातुर खूब विचारि रच्यो दोरूप इन्हे जस योगचहा॥ यहि भांति सखी सब आपुसमें कहि वैनरहीं प्रभु ओरचितै। फल लोचन देतसबै भगवन्त सवंधु गये मखभूमि जितै॥ पुरबालक सादर प्रेमभरे प्रभुसोकरि वातरहे सहितै। धनुयज्ञ थली यह नाथभली रचनाद्भुत देखहु आय इतै॥ सुनि प्रेमभरे तिनके प्रभु वैन कृपाकरि आपु उतै चलिजावत। लखि शील सुभाव सनेह महा सब वालकवृन्द हिये सचुपावत॥ शिशुसादर

संगलगे प्रभुके सुखमाद्भुत रंगधरा दिखरावत ॥ ज्यहि ठौर जहां ज्यहि बैठकहै मृदुबैनन सो कहि नाम बतावत ॥ कवित्त ॥ विस्तृत विचित्र चारु चाप मखभूमि यह देखिये सुशोभकैस मंचनावलीको है । हेममणि जटित विमलवीच वेदिका सुभाग्यवन्त सुखमा अनन्त या थलीको है ॥ ग्रामलोग देखत इहांपै सब बैठि बैठि बैठक अनूप अत्र भूपमंडलीको है । बैठक बहारदार इतै पुर नारिनके आसनय दिव्य मिथिलेश लाड़िलीको है ॥

दो० रङ्ग अवनि शोभा परम निरखि राम सचुपाय ।
शिशुन प्रेमवश जानिकै अनुजहिं रहे देखाय ॥

सवैया ॥ तात तको धनुयज्ञ मही कसि मंजु प्रभा सब ठामहि छाई । कंचन के वर मंचन जाल जटे मणिभा लखि काम लजाई ॥ क्याबरणो यह वेदिभली छबि अद्भुत को नहि देखि लुभाई । आनि विरञ्चि मनो सुखमा तिहुँलोकन की यह राशि लगाई ॥ जा प्रभुके अनुशासनते भगवन्त सकुलवमाहि समाया । सुंदर सर्व्व विभौ परिपूरण देतअहै रचिलोक निकाया ॥ सो प्रभु दीनदयाल सदा कहि नेतिजिन्हें श्रुति सन्तत गाया । चक्रितह्वै मखशाल तकै निज भक्तनपे करि दृष्टि सुदाया ॥ कौतुकदेखि चले गुरुकेढिग जानि विलम्बहि ह्वै उरआयो । आडर सों डरके डरहोत स्वभक्ति प्रभाव सुस्वामि दिखायो ॥ सुन्दर प्रेमभरे कहि बैनन वयस बालन भौन पठायो । दै भगवन्त सबै फल लोचन सानुज आय मुनी शिरनायो ॥ रोलाछन्द ॥ निशि आगमन विलोकि दीन कौशिकमुनि शासन । सहित ऋषिन रघुनाथ कीन तब संध्योपासन ॥ कहहिं कथा मुनिराज सुनहिं सादर चितदीन्हे । विगत निशा युगयाम शयन मुनिवर तब कीन्हे ॥

दो० चरणकमल चापनलगे सहित प्रेम दोउभाय।
जिनके पदपङ्कज नितहिं रहे योगिजन ध्याय॥

मंदिराछन्द॥ ध्यावतहै जिनको नित शङ्कर नारदहू गुणगावतहै। गावतहै यश वेदपुराणहु आगमनेति बतावतहैं॥ तावतहैं तनको जन योगिनही लखितेउहु पावतहैं। पावतहै भगवन्त न अन्त अनन्त महन्तहु ध्यावतहै॥

दो० ते द्विवन्धुवश प्रेमगुरु सेवत पद जलजात।
लहिनियोग कीन्हेशयन प्रात जागि दोउभ्रात॥
सकलशौचकरि नित्यक्रिय मुनिवर आयसु पाय।
चले सुमनवीनन मुदित राम लषण दोउ भाय॥
जायदीख नृप बागकी शोभा सकल अपार।
नानाविधि फूले सुतरु करत भ्रमर गुंजार॥

सवैया॥ कुन्द कँदेल जुही कचनार अनार लवंग सुचम्पक जाही। फूलिरहे सघने तरुहैं नवपल्लव शोण झुके महिमाही॥ वृक्षन नव्य लता उरझी तिनमध्य विहङ्ग भरे चुचुहाहीं। गुञ्जत भृंगन की अवली कहिजात प्रभाद्भुत बागकि नाही॥

दो० अजब अजब फूले सुमन द्रुमनदेल अतिशोभ।
जिनहिं निरखि सुरराजको होत सद्य मन क्षोभ॥

कवित्त॥ सुंदर सुगन्ध सिष्ट मंजुल प्रकाशमान सूखमा अपार समता न फूल तूलाहै। कोमल कलाप सेत चिक्कन विलोकि जाहि चञ्चरीक वृन्दनको सद्यमन भूलाहै॥ देवता निहाल करि हारचित्त मैनहूके आनँद अगार औ सुढर स्वच्छमूलाहै। संकुल प्रसूननको शीशताज भाग्यवन्त वेला सुरसीला क्यालवेला फूल फूलाहै॥ कोमल अतीव मंजु माधुरी करनिमोद जात जा सुगन्ध मन्द ठौर

ठौर पेली है । सोहत सुरङ्ग दिव्य चीकनी चटकि जनु लीन सर्व फूलनकि सूखमा सकेली है ॥ पूरित सुरस भूरि पावनि चमकदार भाग्यवन्त गन्धताकि स्वच्छ याहवेली है। सुन्दरि सुढर नव्य ऊपमा न योग्य आन फूलनकि रानियालवेली क्या चंवेली है ॥ शोभित विचित्र कै सुदेखिये बहारदार पाखुरी अपार अंग अंग सब खूला है । कोमल विशेषि क्षीरफेनहुते जासुदल आवत सुगन्ध मन्द चारु सुक्खमूलाहै ॥ अजब रसील स्वच्छदार गुच्छ शोण पीत भाग्यवन्त सूँघत मलिन्द मन भूलाहै। सुन्दर गँभीर गोल पावन अमोल सर्व फूलनमे फूल एक गेदा फूल फूलाहै ॥ अद्भुत सुगन्ध ज्योंन कुन्द कचनारन मे सेवती कदम्बहूकि गन्ध मन्दकारी है। पावन विचित्र स्वच्छ कोमल सफील जासु सूखमा अपार देखि कंज गतिहारी है ॥ होत है प्रसन्न चित्त सूँघत नशात खेद फूलनि अनूप जो लगतकेन प्यारी है। भाग्यवंत कौनभांति पाऊँमे बखानि शोभ फूलन समाजमें गुलाब छवि न्यारी है॥ सम्पुट सुगन्ध कोकि सूखमाको शाल मंजु कोमल न मल रङ्गदागक बहारहै। चिक्कनन्वकील मिष्ट तीक्षण सुवास जासु छूवतहि जात अंग अंगके पसार है ॥ उत्तम निकंट औ सरस आबदार खूब भाग्यवन्त ऊपमा न आन मो विचारहै। जैसोय विचित्र चारु मैथिलेश बागमाहिं फूलन में फूल गूलशब्बो सुखसारहै ॥ फालसा करौद आंब आमरूत नूत सेव जामुनी अँगूर आड़ु गोदनी अनारही । नारँजी अँजीर रम्भ दाख पक नासपत्र पेसता बदाम औ सरीफली छुहारही ॥ कागदी चकोतरादि निम्बु मिष्ट भूरि पूरि भाग्यवन्त लांगली पनस बिल्वतारही । अगणित सुमेवनाम पारपाव कौनडार भूमती अवनि पै सफल फूल भारही ॥ सवैया ॥ कंचन मे महि सुन्दरि चारु

विशाल बनी मणिमे बहुक्यारी। पांतिन पांति लगे द्रुम संकुल थालहन पूरण निर्म्मलवारी॥ रौसनकी गति क्या वरणौं मग प्रभन की रहि छाहि उज्यारी। श्रीमिथिलाधिप बाग विषे भगवन्त सबै छवि सोहत न्यारी॥ चातक हंस चकोर मयूर करै धुनि कोकिल कीर सुमैना। गुञ्जत भौर जहां तहँ संकुल डोलत पौन भली सुख देना॥ वासकिये जहँ नित्यरहै भगवन्त लिये ऋतुराज सुसैना। कौनसि वस्तु अहै जगमें नृपबागमें जो हरवक्त मिलैना॥ कुण्ड-लिया॥ ताके मधि सरसुभगयक सोहत परमविचित्र। मणिमें शुभ सोपान त्यहि पूरण सलिल पवित्र॥ पूरण सलिल पवित्र वनज विकसे बहुरंगा। कूजत जलखगवृन्द विविध गुञ्जत तहँ भृंगा॥ गुञ्जत भृङ्ग समोद उड़त पंकज रसछाके। सुरसर प्रभा अपार त-दपि समता नहि ताके॥

दो० बागप्रभा दोउ बन्धु लखि भये मुदित मुदमूल।
माली सन बोले कि हम चहत लेन दलफूल॥

सवैया॥ श्यामल गौर किशोर मनोहर कोटिन काम प्रभा ब-लिहारी। आपुअहै किनके सुत सुन्दर औ क्यहिसंग इते पगुधारी॥ कौन निवास कहां क्यहि मंदिर आजुभई धनिभाग्य हमारी। सो सुखजात कह्यो भगवन्त न मोहि भयो जस आपु निहारी॥ हैं हम श्रीअवधेश तनै मुनि संग इतै मखदेखन आये। श्रीमिथिलेरव पौरिटिके दलफूल लिये गुरुदेव पठाये॥ शासन वेदय पूछिलिये विनु मालिहि फूलछुवे न सुभाये। ताहित पूछत मालिकहो दल फूल लयावहि जाय सुहाये॥ कवित्त॥ कोशलेश चक्रवर्ति जा-नत जहान नाम वेठके सुरेशपे सिंहासनार्द्ध पावहीं। तासुपुत्र आपु जासु कीरति प्रसिद्ध लोक आइये सुधागहो द्रुमावली देखा

वही ॥ कअहू ते कोमल अतीव मंजुपाणि आपु कंटकसंवृक्ष फूल छोतैगड़ि जावही। रावरो न योग्यदेहु आयसु कृपाल मोहिं फूल फल दल वेगि तूरि हम लावहीं ॥ छप्पै ॥ सुनु माली ममवैन धर्म सेवक यह रीती। स्वामिकाज निज हाथकरै सन्तत सहप्रीती ॥ जो तुम्हरे रुचि होय वैठि गुरुढिग लखि मोहीं। दल फल फूल उतारि डालि लायो सजिवोही ॥ निज पाणि तूरि दल फूल सुठि लैजावैं गुरुपहँ हमहिं। असि कठिन सहतक्षत्रीय करि तुच्छ कहा कंटक सकहि ॥

दो० रामवचन सुनि वंदिपद कह्यो मालि करजोरि।
नाथ कृपाकरि हाथ निज लेहु पुष्पदल तोरि ॥

घारीछन्द ॥ लागिलेन फूल ज्योंहिं। आइ वाग सीय त्योंहिं ॥ सवैया ॥ त्यहि औसर आयसु मातु सियाहित पूजन गौरि सखी सँगलै। शुभ गावत गीत सुआइ तहां सर मज्जनकैगइ गौरिनिलै ॥ करि पूजन प्रेम समेत विनै बहुभांति किये धरिमाथइलै। करि मातुदया वरदेहु यहै वर सुन्दर मो अनरूपमिलै ॥ त्यागि सिया सँग एक सखी सुविलोकन जातभई फुलवाई। देखिसि सो द्वउ वन्धु तहां छवि सिन्धु रही वशप्रेम लुभाई ॥ विह्वलगात पसेउ वहै अति आतुर लौटि सिया ढिग आई। तासु दशा सखि देखि कहै कहुकारण मोदयतै कहँ पाई ॥ देखत बाग द्विराजकुमार सुश्यामल गौर उभै छविऐना। आननचन्द्र प्रभा भगवन्त विलोकत पांगि चकोर सुनैना ॥ चोरि लिह्यो चित घायलकै म्वहिं मारि कटाक्षन केशरपैना। रूप अनूप कहौ किमि सो सखि वैन अनैन न नैनन वैना ॥ सुनि वैन मनोहर तासु सखी हरपी सब आपुसमाहिं कहै। नृप पुत्रअली स्वइ हैं य सुना मुनिसंगम आयजु काल्हिरहैं ॥

भगवन्त लिये जिन मोहि सबै नरनारिनको निज रूपमहें। छवि लोग जहां तहँ वर्णतहैं चलिदेखहु देखन योग्य अहैं॥

दो० राघव दर्शन हेतु सिय चक्षुरहे अकुलानि।
ताते त्यहि सखिके वचन अतिशै सियहि सुहानि॥
ताहि अग्रकरि जानकी सहित सखिन सानन्द।
चली लखे जितही रहैं सानुज रघुकुलचन्द॥
कंकण किंकिणि नूपुरन सुनि रव राजिवनैन।
ताहि हृदै गुनि अनुज सन कहत मधुर इमि बैन॥

कवित्त॥ पेदर सुगुल्म लता बाजिन समाज सोह शीतल सुगन्ध मन्द मारुत मतंगहै। पल्लव रसाल रथ चढि फूल चापधारि सेनापति राजऋतु लीन्हे सेन संगहै॥ रम्भ ध्वज जानकी प्रताप दल सखी शब्द नूपुरादि कंकण कि होत यो उतंगहे। भाग्यवन्त साजिके सदल विश्वजीतिवेक डंडभीय दीन जत्त भूपति अनंगहै॥

दो० बहुरि चिते त्यहिओर प्रभु सिय सुखमा हिय आनि।
कृपासिन्धु निजबन्धु सन पुनि बोले मृदु बानि॥

सवैया॥ तात तको छविराशि अनूपम श्री मिथिलेश सुता यह सोई। कारण जा धनुयज्ञ अहै सुनि आवत भूप भये सब कोई॥ पूजन गौरि लयाइ सखी इत रूप अलौकिक देखत जोई। मोमन स्वच्छ सुभाय सदा तजि सीम गयो निज क्षोभित होई॥

दो० यहिविधि गे बातैं करत लतन ओट सुख ऐन।
चकित निरखि श्रीजानकिहि कहे सखिन इमिबैन॥

सवैया॥ चौतनि शीश अनूप सजे श्रुति कुण्डल लोल चलैं अमलाहै। भ्रू धनुबाण कटाक्ष सकोर सु आनन पूरणचन्द्रकलाहै॥ हास विलास हरै मनको मणिमाल लसै अति कम्बुगलाहै। क्यों

नहिं देखत सीय उतै बिच कुंदलता दोउ ठाढ़ि ललाहै॥ श्रीरघुनंदन रूपप्रभा अति देखतही मिथिलेश किशोरी। देह दशा सुधि भूलि सबै वश प्रेम अतीव सु ह्वैगइभोरी॥ त्यागि निमेषलगी अवलोकनि ज्यों दिशि पूरणचंद्र चकोरी। दीन कपाट दृगंचल शीमहिं आनि हृदै मग अक्षन ओरी॥

दो॰ जानि बिलंबकरि मातु भै धरि उर मूरति श्याम।
सहित सखिन पुनि जानकी गईं गौरिके धाम॥
श्रीगिरिजा पद बंदिकै युगल जलज करजोरि।
बोली सीता वचन मृदु मातु विनय सुनु मोरि॥

किरीटछन्द॥ जय जय श्री गिरिराजकुमारि सदाशिवप्राणप्रिया छविरासिनि। गावत नेति किहे यशवेद विमोहनि विश्वसबै उरवासिनि॥ उत्पतिकै जग पालिहरौ वरदानि सुरासुर ज्ञान अकासिनि। मातु मनोरथ पूरकरौ मम आनँदरूप स्वछंद विलासिनि॥ सेवत तोहिं सुभाय मिलै फलचारि विनाश्रम हे गिरिनंदिनि। जाहिर लोकप्रभाव अहै तव अद्भुतरूप सुरासुरवंदिनि॥ गोर मनोरथ भाँति भली तुम जानहु मातु त्रिताप निकंदिनि। देवि विनय सुनि मोरि कृपाकरि पूरण आश करो निजछंदिनि॥ गिरिजावचन॥ सवैया॥ मम सत्य अशीष य सीय सुनौ तव जैहहि पूर मनोरथ है। मुनि नारद बैन पुनीत सदा सब ह्वैहहिं सत्य गये कहिज्वै॥ करुणाकर शील सनेह स्वया ज्वइ जानत जानन जागतिकै। भगवंत रँगो मन जाहि नितै मिलिहै वर श्यामल सुन्दर स्वै॥

दो॰ गिरिजाशिष सुनि जानकी पुनिपुनि करिसुप्रणाम।
सहित सखिन सानंद मन गमन कीन्ह निजधाम॥
इत सानुज रघुवंशमणि आये कौशिकपास।

करिप्रणाम सब हाल प्रभु कीन्हे तुरत प्रकास ॥
नृप मिथिलेश बाग हम जाई। मालिहिं पूछि मुदित द्वउभाई॥
लगे लेनदल फूल पुनीता। सहितसखिनत्यहिअवसरसीता॥
गिरिजा पद पूजन तहँ आई। रूप अनूप वरणि नहिं जाई॥
नख शिख अमित सीयके शोभा। देखि नाथ मेरो मन क्षोभा॥
उनहुँ हमहिं यकटक रहि देखी। सहित सखिन परिहरी निमेखी॥
पुनि युत सखिन गौरि गृह जाई। करि पूजन जब भवन सिधाई॥
तब हम लषण सहित इत आये। सुनि मुनि कौशिक अति सचुपाये॥
लहि प्रसून मुनि पूजन कीन्ह्यो। आशिर्वाद मुदित मन दीन्ह्यो॥

सो० चिरंजीवि द्वउ भाय सफल मनोरथ होहिं सब।
सुनि सानुज सचुपाय वार वार बंदत चरण॥

दो० पुनि भोजन करिकै मुदित बैठे मुनि ससमाज।
करि प्रणाम कर जोरितब बोले श्रीरघुराज॥
निमिवंशी रघुवंश को एकै कुल रवि होय।
उत वशिष्ठ गौतम इतै है प्रोहित क्यो दोय॥
बोले मुनि कि वशिष्ठ है प्रोहित घरके दोउ।
पर गौतम इत होनको कारण सुनि ये सोउ॥

गीतिका छन्द॥ यक समय निमि मखहेत निउता सकल ऋषि राजनदिये। नहिं लीन न्योत वशिष्ठ सुरपति काजलगि स्वर्गहिं गये॥ निमि बोलि तौ ऋषि गौतमहि निज भौन प्रोहित करि लिये। मख पूरणांत वशिष्ठ आय कुशाप तब राजहिं दिये॥ नृप प्राणतन भे हीन निमिहु शाप मुनि तनु तजिदियो। विधिकी कृपा मुनिराज पुनि तनुपाय अति हरपित हियो॥ तुम करहु पलकन वास विनुतनु निमिहि ऋषि गौतमकह्यो। पुनि देह निमि मथवाय

मैथिल पुत्र उपजाये तहीं ॥ ऋषि गौतमाशीर्वादते यह कुल विदेही ह्वै गयो। भगवन्त याही हेतुते यहि माहिंप्रोहित ह्वै भयो ॥

दो०। विगत घोसनिशि आगमन जानि गुरायसुपाय।
चले मुदित संध्या करन राम लषण द्वउभाय ॥
प्राचीदिशि शशिउदैलखि सियमुखसम सुखपाय।
बहुरि कहेउ सीतास्यसम नाहिंन यह निशिराय ॥

कवित्त ॥ बन्धुविष शत्रुराहु जन्मसिंधु रोगयुक्त पातकी कलंकि गुरुतीय रति ठानी है। पंकजको द्रोही दिन मन्द घट बढ़ होत रहतन एकरस कोक दुःखदानी है ॥ विरही दुखावे नित व्योमबीच धावै कल पलहू न पावै भूरि औगुण कि खानी है ॥ चन्द रंक ऊपमान योग्य पाव भाग्यवन्त आनँदको कन्द मुख सीय सुखदानी है ॥

दो०। सीतानन शशि मिसुवरणि जानि निशा बड़िराम।
आय गुरुहि शिरनाय लहि शासन किय विश्राम ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रबाटिकावलोकनवर्णनोनामसप्तमोऽध्याय ७॥

दो० प्रात जागि प्रभु बन्धुसन बोले अतिमृदु बैन।
तात लखहु पूषण उदै सकल लोक सुख दैन ॥
सुनिलक्ष्मणशिरनायपद जोरि जलजयुगपाणि।
प्रभु प्रभाव दर्शायके कहेउ मधुर इमि बाणि ॥

सवैया ॥ भानु किये तम नाश यथा तिमि राउर शङ्करचाप दलैंगे। ह्वैहहिं दुष्ट महीप नखत्त मलीन सुपङ्कज सन्त खिलैंगे ॥ ज्योंहि उलूक लुकें दिन त्यों खलवृन्दन के नहि खोज मिलैंगे। चन्द प्रकाश तज्यो जिमि त्यो परशाधरहू निज गर्व ढिलैंगे ॥

दो० यथा उदै रविके जगत प्रगट प्रकाश कलाप।

तथा दलत शङ्कर धनुष फैली आप प्रताप ॥
॥ तोमरछन्द ॥ सुनि बन्धुके इमि बैन । बिहँसे कृपा सुख ऐन ।
तोटकछन्द ॥ पुनि मज्जत सानुज राम भये । करि नित्य क्रिया गु
पाहिं गये ॥

दो० त्यहि अवसर आयसु जनक शतानन्द तहँ आय ।
कौशिक मुनि पद वन्दिकै कहे वचन सुखदाय ॥

स० ॥ पठये मिथिलेश हमै मुनिसो तुम जायक हाल कहौ स
-कला । हित शम्भु शरासन तोरनके नृप आवत भे बहु रङ्गथला ।
करि हारि गये बल भूप बली पर नाहिंन सो क्यहुँ नेकु हला । मम
शोच हरौ प्रभु आय कृपा करि लै सँग लक्ष्मण रामलला ॥

दो० शतानन्दके वचन सुनि कह्यो मुदित मुनिनाथ ।
बोलि पठाये जनक नृप चलहु लषण रघुनाथ ॥
सीय स्वयम्बर काज हित आये बहु अवनीश ।
आजु बड़ाई काहियो देखी देवै ईश ॥
कह्यो लषण जापै कृपा मुनिनायक तो होय ।
राजसभा के बीच में यश भाजन है सोय ॥
सुनि लक्ष्मण के वचन वर भये मुदित मुनिवृन्द ।
होहिं मनोरथ सफल सब दिय अशीस सुखकन्द ॥

क० ॥ सानुज कृपाल रामचन्द मुनिवृन्द संग, देखनार्थ चाप मख
-शालही सिधाये हैं। आय रङ्गभूमि में द्विजन्ध पाय हाल, ग्राम नारि
नर बालक सबृद्ध युवा धाये हैं ॥ देखि मिथिलेश भीर भूरि बोलि
भृत्य दीन आयसु सबन यथायोग्य बैठाये हैं। ताहीक्षण भाग्यवन्त
रूपगुण शीलसिन्धु आनँद अगार द्वौ कुमार भूप आये हैं ॥

दो० जिनके उर अन्तर विषे रही भावना जौनि ।

रामचन्द्र मूरति मधुर तिन देखी तहँ तैसि ॥
कोऊ सुत कोऊ सुहृद कउ विराट कउ इष्ट।
कउ स्वामी कउ रिपु सखा कोऊ नृपति सरिष्ट ॥
रामहि चितवत भाव ज्यहि सिय सनेह सो सुक्ख।
शेष गणेश न कहिसकै क्योंवरणै यक मुक्ख ॥

सवैया ॥ राजत राज समाज उभै अवधेश कुमार प्रभा सुख ऐना। पूरण चन्द्र शुभानन सुन्दर मंजु विशाल सुपंकजनैना ॥ गोल कपोल लसैं श्रुति कुंडल बोलत चारु अमोल सुवैना। श्याम गौरकिशोर मनोहर को अस जो लखि रूप ठगैना ॥ चौतनि शीश सजे तिलकांकित भाल सुमेचक केश सुहाये। बाहु विशाल धरे धनुबाण दुकूल कसे कटि तून लगाये ॥ अंगन अंग अपार प्रभा भगवन्त विलोकत काम लजाये। देखिभये सबलोग सुखी छबिसिन्धु उभै दशस्यंदनजाये ॥

दो० नृप विदेह दउवन्धु लखि भे मन परम निहाल।
मुनि पदपद्म प्रणाम करि कहे सकल निजहाल ॥

कवित्त ॥ एकबार पूजनार्थ चापथल लेपिवेक आई आपु रानि-नासुकन्यकै पठाई है। आइ सो उठाइ चाप चारौ ओर चौकादीन फेरि धरि वाहीथल भौनको सिधाई है ॥ देखिहौ संशोच पूँछि रानि जानि हाल सर्व कीन प्रण चाप जोई तोरिपाई है। व्याहै सोई जानकी बदनदश बाण आदि सके न चढाय फेरि भौनगे लजाई है ॥ सवैया ॥ महिपाल बहोरि दिखाइ सबै मुनि कौशिक को शुभ रङ्गथली। चितवैं सब चकित बन्धु दउ चलि जाहि जहां जब जौन गली ॥ रुचि जाहि यथा भगवन्त तही सुतथाहि लख्यो प्रभुभा अमली। मुनिराज कह्यो मिथिलेश कियो रचना अति उत्तम शोभ-

भली॥ सब मंचन ते यक मंच विशाल प्रभा ज्यहिकी सब माहिं जुदै। मणि चित्रित कंचन मै झलकै अटकै तितही जितही मनु दै॥ मुनि संयुत राजकुमार तहां बैठाय महीपसु आसनु दै। भगवन्त कहौं किमिसो सुखमा त्यहिमंत्र मनो युग चन्द उदै॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि नृपगण उडप समाज।
भयमलीन यकटकलखे ज्यों चकोर द्विजराज॥

साधु भूप॥ सवैया॥ यप्रतीत सबै रघुनन्दनजू दलिहैं शिवचाप सँदेह नहीं। न दलै तबहूं अस जानिपरै सिय मेलि इन्हैं जयमाल सही॥ सुविचारि प्रताप बलै यश तेज गवांय पयानकरौ घरही। सिय ब्याहन आश विहाय सबै तजि मोह भजौ रघुनन्दनही॥ दुष्ट भूप॥ सवैया॥ तोरयहु शंकर चाप अहै अवगाह महा सिय ब्याह बभाई। है असको जग वीर वड़ो धनुभङ्ग विना सिय जो लै जाई॥ राजनकी गन कौन कहै यकबारजु कालहु सम्मुख आई। तौसु विवाहब सीय हमै महिसंयुग में त्यहि मारि हटाई॥ साधुभूप॥ कवित्त॥ व्यर्थही बजावतेहो गाल तुम भूप सब आवत न लाज बैन वोलो न सँभारिकै। जानहु न तेज बल राघवलषणकेर राखे मुनि यज्ञ जे असुरवृन्दमारिकै॥ तोरि चाप ब्याहैंगे विदेहजा नशंक नेकु गर्ववन्त भूपन को गर्व सर्व टारिकै। जानि जक्क मातु पितु राम सीय भाग्यवंत लेहु क्यों न शोभ भरि नैनन निहारिकै॥ सवैया॥ लखि राघवसीय स्वरूप अनूप लहे हम तो जगजन्म फला। सुरजात कह्यो नहिं जोहिभयो बहुजन्मन को दुखदोष दला॥ नहि मानहु तो तुम जाय करौ मनलागहि जोकहै जोड भला। कहियो सुमहीप लगे भगवन्त लखै प्रभु आननचंद कला॥ जानिसमैसु विदेह शतानँद भेजि तहां सिय बोलि पठाई। आयसु मातु समोद

सखी सजि भूषण चरि सुअंग बनाई ॥ गावत गीत मनोहर सादर सीतहिलै चलि संग लिवाई ॥ श्रीजगदम्बिक रूप प्रभा भगवन्त कहै किमि शेप सकाई ॥

दो० रंग अवनि आई जबहि निरखिरूप नरनारि ।
भे मोहित ज्यों मृग मृगी दीपक ज्योति निहारि ॥

छप्पै ॥ जनक नगर नर नारि राम सियरूप निहारी । करहिं विनय विधि प्राहिं जोरिकर अंचलधारी ॥ हे विधि दीनदयाल कृपा करि यह वरदीजे । होय रामसिय ब्याहु लाहु लोचन भरिलीजै ॥ शिवचाप तोरि प्रणपालि नृप मुदित राम सीतहि वरय । मसि वदन लाय भूपति सकल सकुचि जाहिं निज २ घरय ॥ रोलाछन्द । बन्दीजनकी सुता एक ताको यहकामा । होय स्वयम्बर सुताजासु जानै त्यहिधामा ॥ लै कन्या जयमालि जबहिं भूपन ढिग जावै । तब तहँ ताके संग अग्र सो वचन सुनावै ॥ भूपन को कुल गोत्र राज्य पितु सह त्यहि नामा । वल प्रताप यश कीर्ति सकल वरणै त्यहि ठामा ॥ सो कन्या सुनिलेइ वहुरि भावै मन जोई । तासु भूप के कण्ठमेलि जयमाला देई ॥ जयमाला जो पाव ताहि भूपणधन देवै । यजमानी को हक सुता पितुसो सो लेवै ॥

दो० ताके संग लिय जानकी करसरोज जयमाल ।
सहित सखिन आई तहां बैठे जहां भुवाल ॥
एक ओरते नृपन को नाम गोत्र कुल थान ।
सीतासन सोइ कन्यका लागी करै वखान ॥

दिगपालछन्द ॥ ये भानुदत्त पुत्र वीर वाहुनाम याको । है कौशल कुल क्षत्री वंगदेश राजवाँको ॥ अति तेजवन्त शूर वीर सत्य शौचदानी । शुभ शांति शील विचारत धर्म्म भक्त ज्ञानी ॥ शिव

चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सँ लोकन यशछावै॥ ये चित्रकेतु पुत्र श्रीदत्तनाम याको। है चंद्रवंश क्षत्री वैदर्भराज बाँको॥ भलजान बाणविद्या गुणधाम वीरशूरो बल बुद्धि धर्मधारी श्री शम्भुभक्तरूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये हरिश्चंद्र पुत्र विष्णुदत्त नाम याको। है पुरुवंश क्षत्री करनाटक राजबाँको॥ गुणशील सिंधु ज्ञानी यशनाम लोकजानै। बलवंत धर्मधारी रत सत्यसंध दानै॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये सुयशकेतु पुत्र भानुवन्त नाम याको। है कश्यपकुल क्षत्री देशद्राविण राज बाँको॥ ये सत्यसन्ध ज्ञानी बुद्धि धर्मवन्त पूरो। श्रुतिशास्त्र रीति पालै गुणवन्त भक्तरूरो॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासन मन भावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये सत्यवंत पुत्र विक्रमध्वज नाम याको। है भानुवंश क्षत्री महाराष्ट्र-राजबांको॥ भलनीति धर्मज्ञाता बलवन्त प्रजापालै। ये जान चापविद्या गुण सिन्धु क्षमाआलै॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये भावासुरपुत्र नाम लवणासुरयाको। है आख्य दैत्यवंशी शूरसेन राजबाँको॥ बलवन्त वीरऐसो त्राढिलंक जीतिलायो। दशकण्ठ भगिनि ब्याही यश पुञ्ज लोकछायो॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै। पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै॥ ये ब्रह्मदत्त पुत्र चित्रकेतु नामयाको। है गर्गगोत्र क्षत्री गुजरात राजबाँको॥ ये धर्म्मवन्त विद्या भलनीति रीतिजानै। हरिभक्त संतसेवी रत सत्यसंधज्ञानै॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावे। पहिरावो जयमालसबै

लोकन यशछावै ॥ ये पुत्र भूपकेकै जुधाजितसु नामयाको । हैयव त्सकुलक्षत्री काश्मीर राजवाँको ॥ बुद्धिशांति शील विद्या गुण-वन्त वीरशूरो । अति तेजवन्त ज्ञानी प्रजापाल धर्म्मपूरो ॥ शिव चाप जोन टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लो-कन यशछावै ॥ ये सुकीर्तिवन्त पुत्र श्रुतिसेन नामयाको । है को-शल कुल क्षत्रीवन्तिको राजवाँको ॥ ये धर्म्मवन्त ज्ञानी हरिभक्त नीतिज्ञाता । तपसत्य दयादानी मुनि साधुन सुखदाता ॥ शिव चाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लो-कन यशछावै ॥ ये सुचित्रभानुपुत्र यशकेतु नामयाको । है गाल्हव कुलक्षत्री हरद्वार राजवाँको ॥ श्रीशंभु भक्तरूरो रतनीति रीतिदानै । बलसिन्धु बुद्धिआलै धनुविद्या भलजानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भानुभद्रपुत्र तुंगध्वज नामयाको । है गौतम कुलक्षत्री चीनदेश राजवाँको ॥ ये खानि बुद्धि विद्या गुणवन्त शूरभारी । नयधर्म ज्ञान राशी बलवन्त खड्गधारी ॥ शिवचाप जो न टूटै पितुशासनमन भावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये भूप यश केतु पुत्र श्रीवन्तनाम याको । है भानुवंश क्षत्री इलाव्रत राजवाँको ॥ ये दक्ष बाणविद्या शिवभक्तवीरशूरो । बलबुद्धि तेजराशी शुभधर्मवन्तपूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ येभूप गुणकेतु पुत्र शुभदत्त नाम याको । है क-श्यप कुल क्षत्री भद्राश्व राजवाँको ॥ गुणवंत भक्तरूरो वासुदेव इष्ट मानै । रत दान धर्म ज्ञानी श्रुति शास्त्र नीति जानै ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये चित्रभानु पुत्र ध्वजकीर्तिनाम याको । है सोमवंश क्षत्री

हरिवर्ष राज बॉको ॥ तप तेजवन्त शूरो बल धर्मवन्त ज्ञानी । श्रीनृसिंह पादसेवी है सत्यसन्ध दानी ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये हैं सुधृष्टपुत्र वीरकेतु नाम याको । कुशकेतु वंश क्षत्री केतुमाल राजबॉको ॥ ये मानइष्ट कामदेव रूपवन्त भारी । यश तेजवन्त शूरो गुणवन्त क्षमाकारी । शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये सत्यवंत पुत्रधर्मकेतु नामयाको ॥ है उत्तमकुल क्षत्री रम्यकेतु राजबॉको ॥ तपसत्यशौच ज्ञानी बुद्धि नीतिवन्तपूरो । गुणशील शांतिआले हरिमंत्स्य भक्तरूरो ॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यशछावै ॥ ये अस्तसेन पुत्र धीरकेतुनाम याको । है पुरुवंश क्षत्री कुरुखण्ड राजबॉको ॥ वाराहरूपसेवी बलवीर धीरदानी । शुचिशांति शीलआले नय सत्यवन्त ज्ञानी ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये सत्रजित्सु पुत्र हरिवर्मनाम याको । है कोशल कुलक्षत्री किम्पुरुषराजबॉको ॥ गुणवन्त ज्ञानमानी श्रीरामभक्त रूरो । श्रुति शास्त्र नीतिज्ञाता बुधिवंत वीरशूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥ ये भानुवंशक्षत्री दशरत्थ पुत्रमानी । है भरतखण्ड माही श्रीऔधराजधानी ॥ श्रीरामनाम इनको पितुकीर्ति लोकछायो । ये सत्यसंध दानी यशनाम वेदगायो ॥ गुणवन्त वीरबांके बहुदुष्ट वृन्दमारी । मुनि कौशिक मखराखे मग गौतम तिय तारी ॥ शिव चाप जो न टूटै पितुशासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबैलोकन यशछावै ॥ ये भानुवंश माहीं दशरत्थपुत्र ज्ञानी । है लक्ष्मण नाम इनको लघु

बन्धु रामजानी ॥ विद्यावल शील शक्ति तेजवन्त वीर शूरो । गुण-वन्त बुद्धिराशी शुचि धर्मवन्त पूरो ॥ शिवचाप जो न टूटै पितु शासन मनभावै । पहिरावो जयमाल सबै लोकन यश छावै ॥

दो० यहिविधि सों सब नृपनके कहेनाम गुणगाय ।
सहित सखिन पुनि जानकी बैठी आसन आय ॥
राम सीय शोभा अतुल निरखि देव समुदाय ।
वर्षिसुमन कहि जैतिजै हर्ष न हृदै समाय ॥

इतिश्रीवृश्रयोध्यानिवासिपण्डितरामजीभगवतीसहायविरचितेभाषाशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्ररङ्गभूमिआगमनवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० त्यहि अवसर वंदीजनन पठये जनक बुलाय ।
कह्यो कहौ सब नृपन सों प्रणहमार तुमजाय ॥
सुनि शासन नरनाहको भाट सहसदश सद्य ।
भुज उठाय बोले वचन राजसभाके मध्य ॥
सुनहु वचन भूपति सकल चितलगाय दै कान ।
जनकराज महराजको प्रण हम करैं बखान ॥

क० ॥ रेख वज्रदन्त ज्यों गयन्द को तथाहि प्रण जानिये वि-देह राज लोक वेद ख्यातहै । शङ्कर पिनाक शैल शम्भुते गरु अ-पार भूमिही के सद्म रचि दीनज्यों विधातहै ॥ परमकठोर कूर्म पृष्ठहू ते पुष्टवाण रावणादि वीर बॉवदीन जाल खात है । सोई यह शम्भु चाप तोरि है जु आजु ताहि ब्याहिहै विदेहजा कहत सत्यवातहै ॥ रङ्कराज शीशताज आज या समाज सोइ लेइ जो प्रचण्ड दण्ड शम्भुको उठाइहै । खैचि तोरि डारि है जु याहि शूरवीर कोइ कीरति कलाप तासुलोक लोक छाइहै ॥ भाग्यवन्त कण्ठताहि मेलिमाल जैकिशोरि आनँद समेत ब्याहि जानकी सुपाइहै । होय बल तो-

रवि समान सो धरै पिनाक राजन समाज मुख कारिख न लाइहै॥ ग्राम परधाम धन हेत देत प्राणहट्ठि मानत न मातु पितु काम क्रोधलै रह्यो। देतहै भजै प्रचण्ड क्लेश बॉंधि सेतु पाप पुण्य को विनाशिकै अधर्म मार्ग मे वह्यो॥ त्यागि सत्य धारत असत्य कालकौन्यहूम देतहै न दान अग्निलाय ग्राम जे दह्यो। भाट वैन मानिकै कलंकरूप भूपऐस शङ्कर पिनाक को न भूलि हाथसे गह्यो॥ ज्ञानधर्म्म लेशनाहिं मानहीन पितृदेव साधुन सताव देतगारि माय बापही। शत्रुवीर संयुग बिलोकि देत पीठिताहि विप्रन को दानदै सु फेरि लेत आपही॥ नित्यही मदान्ध पंथ जानहीन वेद शास्त्र काम क्रोध वश्य याम आठ कृत्य पापही। राजन समाज में पसारि हाथ भाट वैन भापही छुयो न भूप ऐस शम्भु चापही॥

सवैया॥ जिनके नहिं धर्म्म दया मनमें गुरु साधुन की नहिं सेवकरै। परनारि सदारत लाज नही शरणागत को नहिं दुःखहरै॥ प्रतिकूल सुपंथ कुपंथ चलै पितु मातन सो वसुयाम लरै। मुख कारिख लागहि गो तिनके इमि भूपति ना शिव चापधरै॥

कवित्त॥ चंद सो प्रकाशमान कीरति कलाप लोक पावक समान दीप्ति जाग जासु चंडहै। भाग्यवन्त बुद्धिवन्त ऐस ज्यों सु एकदन्त तेजवन्त भूरि ज्यों प्रसिद्ध मारतण्डहै॥ भूमिभार धारिबे मधीरमान शेष जैस पौनहूते पुञ्ज जौन वीर बरबण्ड है। रङ्गभूमि मध्यआजु होइ जो महीप ऐस लेइ सो उठाय वेगि चंद्रमौलि दंड है॥ कैतो भूपरूप धारि शङ्कर समाज मॉंझ आये होइँ लेइँ ते उठाय सद्य चापहै। कालकूट तेज ते जरत देखि देव दैत्य कारुणीक शम्भुताहि कीन पान आपहै॥ खोलिनैन जारे मैन त्रिपुर दनुज दुष्ट मारेवान ॥ २। लोकनाशकारक

सुजन तापहारक भवाब्धि घोरतारक प्रसिद्ध जो प्रतापहै ॥ कैतौ विधि सारिखे प्रतापवन्त होय भूप जासु यश विस्तृत कलाप ठांव ठांवई । भाग्यवन्त बुद्धि तीव्र चातुरी प्रसिद्ध जासुलोक रचिदीन जो सकल सृष्टि जावई ॥ शैल सरिताल जाल दिग्गज समुद्र सात कानन अपार जीवजन्तु को गनावई । होय जो प्रचंड ऐस आय सो दलै पिनाक जानकी समेत जे त्रिलोक आजु पावई ॥ कैतौ हरि आपरूप भूपको अनूपधारि आये या समाज मध्यहोयँ शोभ शालहै। कोलरूप धारिजे हिरण्य अक्षपातकीक दीनवंधु मारे आपु पैठिके पतालहै ॥ कीनहै कमठ पृष्ठिधारण सुमंदराद्रि गावत सुयश चारु जाको वेदजालहै। भाग्यवन्त स्वामि सो सबल भूमि भार हार तोरही उठायँ चाप शङ्कर विशालहै ॥ सवैया ॥ कै गणनायक सो वरदायक जाहि सुरासुर शङ्कर ध्यावै। विघ्नविनाशन वानिअहै सुमिरे ज्यहि सिद्धि सबै जनपावै ॥ जासुप्रभाव महाप्रथमै पदपंकज पूज्य सदा सब ठावै । जो इमि होय महीप कऊ भगवन्त स्वई यह चाप उठावै ॥ कै हरिचन्द समान हुवैसति कीरति जासु चहूँदिशि छाई । कै पृथुसो गहि वर्बस जे लिय धेनु स्वरूप धराहि दुहाई ॥ कै रघुसो जिन पीठिलही रिपुनाहिन नानहि याचक पाई । दृष्टि दिये परनारि नहीं इमि भूपचहै धनुलेहि उठाई ॥ कै नृपवान समान कऊ परिपूरण जो सब धर्महिपालै । कैसुदिलीप समान जिन्है डरगो हरि वारिपिये यक आलै ॥ कैजिमि सागर जासुत सागर खोदिगये सब पैठि पतालै । कैसुययाति दधीचि भगीरथ ज्यों नृपसो शिव शारँगदालै ॥ छप्पै ॥ देवदनुज मुनि सिद्धमनुज गंधर्वादि कपाला। पितृनाग शशि भानु यक्ष मारुत यमकाला ॥ गिरिसरि सिंधु अपार जहाँलगि वेदन गाये। रङ्गभूमि के माहि आजुते सब

चलिआयें ॥ त्यहि सभामध्य बंदी वचन कहत सवहिं गोहरायकै। वलहोय जाहि सो उठि तुरत तोरै शिवधनु आयकै ॥

दो० सुनि विदेह प्रण भूपसब उठे तुरत अभिलाखि।
परिकर कटिकसि बांधिकै चलत भये मनसांखि॥

सवैया ॥ निज इष्टनवंदि महीपति मानि सुधाय सक्रुद्ध पिनाक धरै। तजि एक दिये गहिएक लियै इमि वारहिंवार सुजोर भरै॥ वल बुद्धि उपाय अनेक करै पर नाहिन सो कहुं नेकुटरै। ह्वय लज्जित हारि गँवाय वलै तव आसन ओर पयान करै ॥

दो० तव सहस्र दश भूपमिलि शिवधनु एकहि संग।
लागि उठावन नहिं टरयो क्रियोमान तिन भंग॥

सवैया ॥ श्रीहत भूप समाज भये सव देखिय ज्यों दिन चन्द्रकला है। हारिगये करिभूरि वलै सव भूपनको अनुमान दला है॥ घोर कठोर शरासन शम्भु रती नहि छांड़त भूमि तलाहै। ज्योंजन कामिहि वैन सती मनपावन नाकहुं रंच चलाहै ॥ शिवचाप सुमेरुहुते गरु भो नहिं छांड़त जो तिलमात्र धरै। नहिं हालत डोलतहै तनको जनु जामतभो यह शेषशिरै ॥ शिव आप चढ्यो यहि ऊपरकै गरुता स्वइ नाहिन देतसुरै। लियभार उदै गिरिअस्त किधौं धनुरूप धरयो महिजानि परै ॥

दो० नृपसमाज गति देखिकै उठे जनक अकुलाय।
बोले वचन सक्रोध तव भूपन सबहि सुनाय ॥

सवैया ॥ नाग सुरासुर भूपजिते धरि मानुपदेह इते सव आये। तोरनको धनु कौनकहै नृपकाहु न रञ्चक भूमि छड़ाये ॥ कीरतिजै वड़ि दिव्यसुता जनु पावनहार न ब्रह्मउपाये। जाहुघरै अव गर्व करै जनि कोउ धरापर वीर न जाये ॥ जो जनत्यों भटहीन मही

करत्यो इमि तौ प्रथमें प्रण मैंना । जो करिकै अब ताहि तजौं मम धर्म नशै भल कोउकहैना ॥ पुत्रिकुमारि रहै हमकाकरि कर्म लिखा कइमेटि सकैना । जाउघरै मुख कारिखदै सियव्याह विरञ्चि कियो लिखवैना ॥ श्रीमिथिलाधिप वैनलगे इमि लच्मणके उर ज्यों शर-पैना । राघवत्रास न बोलिसकै रिसशोण भयो मुख पंकजनैना ॥ ठाढेभये करसम्पुट कै शिरनाय कहे प्रभुसों इमिवैना । नाथ विदेह कहे कटु ज्यों रघुवंश समाज कहै तिमि कैना ॥ कवित्त ॥ भूप मि-थिलेश आपुवात ना सँभारि कीन तुच्छका पिनाक रामशासन जु पावऊं। गेंदसो उठाय भौन चौदहौ समान घटभूमि को पटकि फोरि मेरुको उखारऊं ॥ शेष केशधारि खेंचि भूमिदेउँ बोरिसिंधु सिंधुलै रसातल मभ्कारभरि आवऊं। भाग्यवन्त देउं करिदिग्गज यकत्रसर्वे भूमिसा पिनाक शंभु ख्यालही उठावऊं॥ सवैया ॥ सत्यकहौं नहि झूठकछू रघुनायक जो, तव आयसु पावौं । तौ यहिराज समाज बिषे मिथिलाधिपको निजवूत दिखावौं ॥ पंकजनाल समान च-ढ़ाय पिनाक लिये शतयोजन धावौं। तोरि मिलै रजदेउँ करौंनहिं तौ कर ना धनुबान उठावौं ॥ तामरसछन्द ॥ लषण कहे इमि वैन जबैहै। डरतभये सुनि भूपसबै हैं॥ डगमग भू सब दिग्गज डोले। जनकशाके जब लक्ष्मण बोले ॥ जनमनमोद सिया हरपानी । सुख रघुनंद लहे मुनिज्ञानी ॥ पुरजनहीं अतिशै सचुपाये । रघुवर सैनहि बंधु क्षमाये ॥ सहित सनेह लगे निज राखा। तब प्रभुसों मुनि कौशिक भाखा ॥ सवैया ॥ रामउठौ शिवचाप दलौ मिथि-लाधिप को दुखमेटहु भारी। शोचहरौ य सभाक सबै भगवन्त करौ सुरसंत सुखारी ॥ चाप उठाय सुरेनृप जे मुख कारिख दै गवनै घर भ्कारी। पंकजनाल समान करौ यहि खंडन सद्य पिनाक पुरारी ॥

सुनते गुरुबैन उठे रघुनन्द हृदय नाहिं हर्ष विषादलये । पदना
सुभाल सुभायचले मधिवेदि पिनाक समीप गये ॥ भगवन्त प्र
पुर लोग निहारि रँभारत आपनि पुण्यभये । सुरसानँद वर्षि
सून सबै नभसंकुल दुंदुभि शब्द दये ॥

दो० सीयमातु लखि रामतनु अति कोमल छवि ऐन ।
　　सखिन समीप बुलायकह सहित प्रेम मृदुबैन ॥

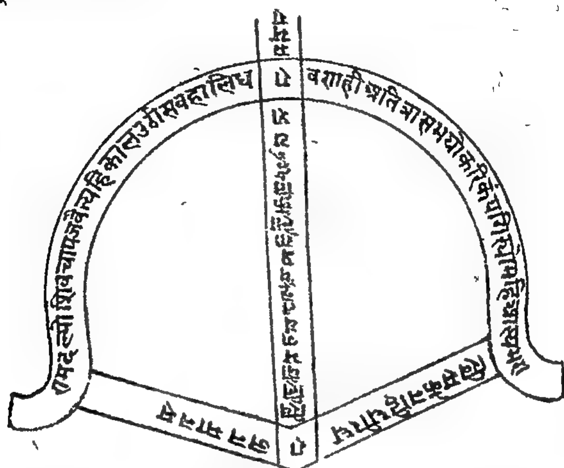
हरिपदछंद ॥ देखौ सखि यहि सभामांझ हैं बैठें चतुर अपारा ।
यह अनुचित अतिहोत बातहै कोउ न करत विचारा ॥ गरुव कठो
कहां शंकरधनु येतो अति सुकुमारे । रावण बाण महाभट जाको दे
खत गवहि सिधारे ॥ अपरभूप बलवंत चलैकरि परमहार सब पायो ।
त्यहि करषणहित राजकुमारै अब मिलि सकल पठायो ॥ सोलखि
होत हृदै मेरे दुख बरजत कोउ न अहावे । हंससुवन किमि कहै
सखीरी मंदरमेरु उठावे ॥ सुनिबोली सखिबैन गनौनाहि तेजवन्
लघु रानी । देखत लघु रवि उदैहोत ज्यहिं तीनि भुवन तमहानी ।
प्रणव मंत्रलघु विवश जासुहैं विधि हरि हर सुरसवी । कहँ गय
ताको वश अपने राखत आंकुश खर्वो ॥ अस विचारि संदेह क
जनिइनहि अतुलबल जानो । बिनहि प्रयास शंभुधनु दलिहैं मा
सत्यमम बानी ॥ सखी वचनसुनि मातुसुनैनै भईधीर मनमाही
लगी लखन भगवन्तरूप छवि प्रेमजात कहि नाही ॥ सवैया ॥
क्षण रामहिं देखि सिया मनमाहिं उठी अतिशै अकुलाई । घोर
ठोर शरासन शङ्कर रावणबाण सके न उठाई ॥ ये अति कोम
क्यो दलिहै प्रणठानत नीकभयो नहिराई । काहकहो मतिभोरि
भइ देखत ना　　　मलाई ॥ हे गणनायक शम्भुशिवा
भंजन रंजन　　　　कृपाकरिये प्रभु सेव कि

तव आजुहि लाई ॥ पूरब आशकरौ मनकी धनु कौतुक भंगकरैं रघुराई। कै हित मोर हरौगरुता धनु राघव वाहन होहु सहाई ॥ जो हमरे मनकाय गिरा रघुनायक के पद प्रीति भली है। तौ मिलिहैं न संदेह कछू करि है ममआश सबै सफली है ॥ जापरजाहि सनेह मिलै त्यहि आवत संतत रीतिचली है। यो मन जानि चितै प्रभु ओर ठन्यो प्रण प्रेम विदेह लली है ॥

दो० अन्तरयामी रामप्रभु हरणभक्त दुखघोर।
कीन्ह्यौ प्रण सियजानिकै लखत भये धनुओर ॥
लषणलाल देख्यो चहत प्रभु भंजन भवचाप।
कमठ कोल अहिदिग्गजन दियेसजग करिआप ॥
त्यहि औसर प्रभु मनहिमन गुरुपदपंकज ध्याय।
अतिलाघव आतुर परम शिवधनु लीन उठाय ॥

छप्पै॥वामपाद अंगुष्ठदाबि गोसायक दीन्हा।बायेकर गहि मध्य दाहिने दूसर लीन्हा ॥ रोदा खैंचि चढाय बहुरि दहिने गहिबीचा। दमक्यो दामिनि-सरिस भयो नभ इव जवईचा ॥ भयो कठिन घोर गम्भीर त्यहि समय शब्द त्रिभुवन भरयो। सब लखत दलत काहु न लख्यो राम खण्ड द्वउमहि धरयो ॥ कवित्त ॥ हालउर्वि गुर्वि आदि दिग्गज सकंपमान उछल समुद्र दिगपाल गे सनाका है। कोलहू कमठ व्याल जालभे विकल चौंकि शङ्कर विरञ्चि काहहोत भो धमाकाहै॥ देवगण चकित विमान भानु चंद्रमाक धाय लड़िजात एक माहि से धड़ाकाहै। भाग्यवन्त लोक लोक छायगो प्रचण्ड शोर खंड्यो रामचन्द्र दंडखैंचि ज्यो तड़ाकाहै ॥ सवैया ॥ रामदल्यो शिवचाप जबै त्यहिकाल उठी सब हालिधरा। रावणही अतित्रास भयो करिकम्प गिरयो महि आस्यभरा ॥ राखिसकै नहिं धीरधरा;

धर राजन मानस मान जरा। राखिलियो भगवन्तनृपै प्रणलोक तिहूं यशराम भरा॥

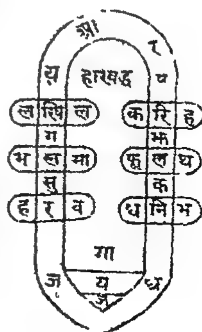


कवित्त ॥ कुलिशकठोर दंड वीरवरिवंड भूरि हारिगे उठायरंच काहु तौन मोराहे। वाण दशकंधवीर वीरताको मान जिन्हें देखत लगाय वांवगौने भवन ओराहे॥ प्रवल प्रचंड तेजवन्त भूपमंडली क नाशभो प्रताप ज्यों मलीन चंद्रभोरा है। भाग्यवन्त कौशलकु मार ता समाजमध्य सेमि वीच सारिखे पिनाकशंभु तोराहे॥ व्यो देव दुन्दुभी वजाय भापि जैति जैति वर्षही प्रसूनपुंज क्षोणि बां भोराहे। वंदीसूत मागध कलाप कीर्तिगानठान जैति जैति श लोकतीन पूरि घोराहे॥ भाग्यवन्त ता समय कि मोदना वखा जात रामचन्द्र जा क्षणे पिनाक शंभु तोराहै। रंगऔनि नारि सानँदास्य रामचन्द्र देखें एकटक ज्यों चकोर चन्द्रओराहे॥ श्या

कंद आभअंग अम्बर सुरंगपीत कुंडल अनूप दिव्यभूलैं गोलगाल पै। चन्द्रमास्य चारुनव्य पंकजाक्ष वंक भौंह सूखमा निधानहै तिलक उच्चभालपै ॥ श्यामकेश वेशवाम वाम सोहशीश श्रोण चौतनी सुबोध एतवार शोभजालपै। भाग्यवन्त रूप सूपमान आन काम कोटि वारडार अंगनांग कौशलेश लालपै॥ छप्पै ॥ नवलकमलदल नयन अमलकल जनन दरदहर।सजलजलद तनलसत बसनभल चमक पटलहर ॥ वदन अधरवर दशन हसन मद मदन हतन कर। अनद सदनतन सकल लखतमन परमहरपभर ॥ जय सकल हरनभव भय दलन धनप जनक कर पनपलन। यश भनत अमरनर शमन अघ चरण शरण दशरथललन ॥

दो० शतानंद आयसु तवहि राम हृदय जयमाल।
गेली सिय छवि देखिकै भै सबसभा निहाल ॥
लखिलखि गलभल माल सुर हरवर जयजय गाय।
धनिधनिभनि कलफूलभलैं भरिझरि हरिपरआय ॥

कवित्त ॥ कंचन सुथारवारि आरती सवांरि नारि दूब दधि रोचना सुरभि धारि फूलनै। बांधिकै झमेलजाल मंद मंद वाम वृन्द आवतीं करत गान देवदार भूलनै ॥ वाजत निशान व्योम दुन्दुभी विमान साजि वर्षही प्रसूनमाल देव सानुकूलनै ॥ भाग्यवन्त आरती उतारिवारवार देखिपावतीं अपार मोद हीय मोदमूलनै ॥ दोहा ॥ सियशोभा अद्भुत अमित देखि हृष्ट महिपाल। जहँ तहँ



आपुसमाहिं तौ लगे वजावनगाल ॥ सवैया ॥ साजि गयंद तुरंग रथै चढि कूँडिसन्नाह सुअस्त्रन धारो । धावहुवेगि गरोरिपुरै सिय छीनि लियोद्दउबांधि कुमारो ॥ जो वरजै मिथिलेश कछू रणसेनस-मेत तिन्हें पुनि मारौ। काजसरै नहिं चापदले बिनुजीति लिये नृप वृन्द अपारौ ॥ सोरठा ॥ सुनि दुष्टनके वैन, साधुभूप बोले वचन। सूझततुम्हें न नैन जक्कमातु पितु राम-सिय ॥ वादिवजावत गाल नृपौ सब लाज अहै कयहुँ लेशनराई। तेजप्रताप गरूर गुरू बल नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥ स्वैवलकी कछुसाधन कै सुरइष्ट प्रसाद अवै कहुँ पाई। है असिबुद्धि तुम्हें ध्रुव तौ चतुरानन आनन कारिख लाई ॥ ज्यो खगनायकको बलिभाग चहै वलकै खल पावन कागा। ज्यों खरगोश नहोश चहै खुद मत्तगयंदनके रिपुभागा। ज्यो हरिसों प्रतिकूल चहै गति पावन कैमतिमन्द अभागा। त्योंहि वृथा सिय व्याहन को तुम सारिप दुष्ट लालच लागा ॥

दो० बरकेवर रघुनाथजी बरबर पौरुष शाल।
बरसम तुम बरबर करत व्यर्थ भूतपति जाल ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितातेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीरामचन्द्र धनुभंगकरणसीताजयमालमेलनवर्णनोनामनवमोऽध्याय ९॥

कुंडलिया ॥ सीता राघव पद्मपद वंदौ सब सुखदानि। निरय निवारण मौशमन शरण सुखदकी बानि ॥ शरण सुखदकी बानि भजत हरि हर विधि चरना। नामलेत अनयास मुक्त जीवन औ मरना ॥ नाकभूमि पाताल सुयश जा आख्य पुनीता। ताकि शरण भगवन्त पाहिनित राघव सीता ॥

यहिप्रकार जे कुटिल भुवाला। रहे बजाइ व्यर्थ सब गाला ॥
तब सीतहि सब सखी सयानी। चलीं लयवाइ मातुपहँ आनी ॥

गुरु समीप गवने रघुवीरा। धनुषभंग सुनि शब्द गँभीरा॥ परशुराम त्यहि अवसर आये। देखत भूप सकल डरपाये॥ सवैया॥ गौर कलेवर भूतिलसै भलिभाल त्रिपुंड्र सजे छवि ऐना। शीशजटा मुखचन्द्र प्रकाशित बंक सु भ्रू रिसलोहित नैना॥ चारुजनेउ सुमाल गरे मृगछाल विशाल लिये सुखदैना। लंक वितून कसे धनुवान गहेकर कंध कुठार सुपैना॥ कवित्त॥ देखि कै कुठार पाणि वेषकी करालताति भूपवृन्द खौफखाय धाय माथ नाये हैं। बाप सांप नाम भाखि राखि पांशुपाँव माथ भूरि मानि त्रास वेप वामको वनाये हे॥ फेरिनैन हेरही सुभाय जासुओर तासु जान गै खुटाय आयु लेनप्राण आये हैं। आयतौ विदेहराज नायमाथ बोलिपुत्रि मेलिपाँव पायकै अशीष मोद छाये हैं॥ सवैया॥ कौशिक आयमिले पुनि सादर पंकजपाँय द्विबंधुनडारी। राम सुलक्ष्मण नामइन्हें अवधेश कुमार विमोहितकारी॥ रामस्वरूप प्रभाति विलोकि थके भृगुनन्द निमेषविसारी। दीन अशीष भली भगवन्त भयेसुनि सानुज रामसुखारी॥ फेरि विलोकि विदेहदिशै कहु उत्सव क्या तव मंदिरआजू। कारज कौनय भीरवड़ी इत आनिजुरे सब देशनराजू॥ भैप्रण कीन य तोरहि जोधनु ब्याहहि सो सिय तौन्यहिकाजू। आवत भे भगवन्त इतै सब देशनके नृप साजिसमाजू॥

दो०॥ नृप विदेह के वचनसुनि परशुराम रिसठानि।
बोले रेजड़ जनकातैं डारे करि वडिहानि॥

परशुराम वचन॥

कवित्त॥ दीनशम्भु पूजनार्थ चापतोहि मंदबुद्धितासुतैं अनादरेन कीन नेकु काजहैं। ठानतै पनै नहीय कीन शङ्क शङ्करो कि

त्रासहू न राखिमोरि रच्छहीन लाजहै॥ तोरे चाप दुष्टकौन केसीसो लुकान वैठ तिक्षण कुठार अग्निदाही तौन आजहै। वेगि दे वताय मोहिं मूढ सो विदेहनातु उलटौ धराहि सद्यजाहॅलौ तु राजहै॥ बिम्बछन्द॥ सुनिपरशुरामवानी। रिस अधिक माहिंसानी॥ सभयरामजानी। भयकहत आपवानी॥ राघववचन सवैया॥ नाथ अहौं तवदासमहीं यह शम्भुशरासनकेर दलैया। कहौ किनमोहिं कृपाकरि सोइकरौ यहिठैंया॥ भाविहि काहकरौं प्रभुमै यहतौपि रहै ममहाथ टुटैया। सोकर छूतहि टूटिपर्‌यो मुनि नायक है ममदोष नरैया॥ परशुरामवचन दोहा॥ करणी करिकै शत्रुकी वनाचहौ अवदास। तजिसमाज कीजै समर त्यागिजीव की आस॥ लक्ष्मण वचन सवैया॥ खेलत टूटिगई धनुहीं वहुकीन कवौं रिसयों न गुसांई। याधनुपै ममता क्यहि कारण आजुयर भृगुनाथ बढाई॥ सॉचिकहौ मुनिजानत ना हम भीव रहै य तुं अधिकाई। टूटिगयो जनि व्यर्थकरौ रिस हैनकछू रघुबीर लगाई परशुराम वचन कवित्त॥ एरेमन्द वालक सँभारि वैन बोलु क्यों अज्ञके समान मोहि ज्ञानतू सिखावई। घोर शम्भुचाप जो प्रसिद्ध तीनि लोकमाहिं ताहितू समान सर्वधानुही वतावई॥ जानकीर रामतोहिं खेदिकै सँहारि दुष्ट डारिहौं कलाम जो वदन फेरिलावई भाग्यवन्त मानु सत्यशीघ्रही करौं न जोपि परशुराम नामतौ न आजुते कहावई॥ लक्ष्मण वचन सवैया॥ हे भृगुनन्द सुनौ मम जान अहै सगरे धनु एकहिनाईं। लाभकहा यहि तोरनमें करछूतहि टूटरह्यो घुनखाई॥ मारतहौ मुनिगाल मृषा तजिईश वियोकरि काह सकाई। जोपिनहीं यह नामप्रिया द्विजबोलि लियो कइ ओर ध राई॥ परशुराम वचन कवित्त॥ जानना प्रभाव मोर कानना सुने

सुभाव मारहूँन तोहि मूढ़बालक बिचारिकै। देखु या कुठारधार जाहि सो यकीसवार क्षत्रिने सँहारि भूमि क्षत्रहीन कारिकै ॥ दीन सौंपि विप्रन समाज मैं न जानतौन साहस भुजादि वीर संयुग पछारिकै। सोई है कुठार बालगर्विनै विनाशकार तातमात शोकदेन मंदमोहिं रारिकै ॥ लक्ष्मण वचन सवैया ॥ भृगुनन्द सुनो मैं सत्य कहो यकमानि तुम्हे द्विजनातडरो। नतु छीनि कुठार तुम्है हतिकै कुल क्षत्रिन दाँवल्यतुं सगरो॥ परधर्म तुम्हैं रखवार बड़ो वधके शिरपातक भूरिपरो। भगवन्त डरौ पुनिराघवको नतु कौतुकही तवगर्वहरो॥ कवित्त ॥ वारबार मोहिं क्या देखावतो कुठार तानि चाहतो उड़ाय देन फूकने पहारहै। कुम्हडेकि वातियाहौं विप्रदेव अत्रमैंन तर्जनी विलोकि शीघ्रहोत जो सँहारहे ॥ गायविप्रदेव साधु मारिबे म शूर नाहिं मानि विप्रनातवैन साहत तुम्हारहे। जानि वीरकौन वाद कीजिये क्षमा समान कोटिवज्र वैनधार व्यर्थही कुठार हे॥ परशुराम वचन कवित्त ॥ कौशिक सुनीय मन्द बालक य टेढ़ खोट चाहताहै जानवेगि यमके अगारहे। भानुवंश चन्द्रमें कलङ्करूपहीन शङ्क अंकुश विहीन योग्य भोकिदेन भारहे ॥ लीजिये वराज जोपि चाहहु उवार याहिरोपि वलवीरता सुनायके हसारहे। भाग्यवन्त टेरि मैं कहों न खोरि मोरि फेरि डारिहों सँहारि याहि काढ़िके कुठारहे॥ सवैया॥ ज्यइधार कुठार कराल भयो वहुवीर महीपन के घर घालक॥ स्वइ आजहु हाथ वन्यो हमरे सुनुरे मतिमन्द महीपति बालक॥ कस बोलत बैन सँभारि नहीं जड़ जानत नाम न क्रोध कहालक। मुख लागहिगो वल जो हमरे तो देहहुं सौंपि अवै त्वहिं कालक॥ लक्ष्मण वचन कवित्त ॥ आपुही अछत कीर्त्ति आपुकी बखान कौन कहोवार भूरिशाति जौन फेरि गर्वहू ।

रोंकि रिस सहो न मुनीश दुःखहीय मोंहि चीखती गारीदेत शोभ को न पावहू॥ शूरना बखानकरें शूरता समर आपु कायरन कामहै प्रलाप सो न लावहू। भार्गवेश वार वार हांक यों लगाव आपुमोहि लागि मानों वेगि कालको वुलावहू॥ परशुराम वचन सवैया॥ ठानत वाद कठोरअहै शठ वाल विचारि बध्यों नहिं तोहीं। जानत मोर सुभाव नहीं कुलक्षत्रिन शत्रु सुभायन कोही॥ आवत है त्वहि त्रास नही यह तिक्षणधार कुठारहि जोही। चाहतहौं बध याहिकरै अब लोगदिये जनि दूषण मोही॥ विश्वामित्र वचन सवैया॥ भृगुनन्द क्षमा अपराधकरो यह तोपि अवै अन जानतहै। वश वाल स्वभाव न त्रासधरै तुमसों प्रतिउत्तर ठानतहै॥ शुचि साधु सुजानअहैं जगजे शिशु के गुण दोष न मानतहैं। भगवन्त करौ असजानि कृपा मुनि साधु तुम्हें सब भानतहै॥ परशुराम वचन॥ कवित्त॥ वालक विचारि तोहिं मारौं न महीपपुत्र वार वार लाव ज्वाव देतहो बरायमें। हाथहै कुठार घोर क्रोधित सुभाव मोर द्रोही गुरुलाहु अम्र रहो रिस तायमे॥ भाग्यवन्त सो तौ सव कौशिक तिहारो शील नातरु कठोरवैन हालह्यों वतायमे। काढ़िके कुठारघोर धारहीते याहि आजु गुरुते उऋणहोत्यों थोरही उपायमै॥ लक्ष्मण वचन कवित्त॥ शीलमुनि रावरो जहान में न जान कौन भयो है उऋण भांति आछे तात मायसो। रहिगो गुरुको ऋण बाढ़्यो अति शोच तौन काढ़्यो जनु मेरे शीश बैठ्यो आपु खायसो॥ वीतिगये वार भूरि २ है कलाप ज्याज लावो ईश व्योहरै सु-

उपजावत क्रोधहिये हमरे ममहाथहिका खलु मृत्युचहै॥ भल आ-
पन चाहसि जो शिशुतें लखि घोर कुठारहि मौनरहै। नतु सत्य
पुकारि कहौं सबते अब तोहिं पठावत कालपहे ॥ लक्ष्मण वचन
सवैया॥ महिदेव कुठार दिखावत का द्विज मानितुम्हें मनमाहिडरे।
इमि और प्रचारत जोपिहमें लखतू पुनितागति जौनकरै॥ द्विजदेव
गये बहिधामहिं में प्रतिवीर कबौं न मिल्यो समरै। भगवन्त सुन्यो
रघुवंशप्रभाव न कालहु जेरण त्रासधरे॥ राघव वचन कवित्त॥
सुखमुख दूधहै न कीजिये कृपालु कोह बालभाव मानि याहि विप्रजू
क्षमाकरो। रावरो प्रभाव जोपि जानतो कछूकनाथ भूलिहून आपुसों
य लावतो बराबरो॥ बालक अयोग्य कामकृत्य जोपि देखिताहितात
गुरू मात मोदपुञ्ज हीयमाभरो। भाग्यवंत शील समधीर हो मुनीश
ज्ञानि सेवक विचारि बैन बालहीय नाधरो। लक्ष्मणवचन॥ सवैया
द्विजह्वैकरि धारण अस्त्र किये पुनि क्षत्रिनके कुल घातकहै। बिनु
कारण कोहि सुभावसदा अरु मारतभे निज मातकहै॥ उरमाहिं
दयाकर लेश नहीं रत हिंसहि में दिन रातरहै। भगवन्त विचार करौ
मनमें सुकृपाकि इन्हें कसिवात अहै॥ परशुराम वचन सवैया॥
रामतवानुज पापमयी विष आननहै यहतौ मुखपैना। गौरशरीर
अहै मन श्याम सुभाय सुटेढ तुम्हें य खजैना॥ नीच कुबुद्धि महा
यह बालक मीचुसमान हमें सु लखैना। ढीठ अतीव दबै तनको नहिं
बोलत मोहि बराबरि बैना॥ लक्ष्मण वचन कवित्त॥ पाप मूल
क्रोध वश्य जासु है अनीति लोग करत विचारि आपुलीजे देखि
मनमें। त्यागिके सकल क्रोधकीजिये कृपाल छोह विप्रदेव स्वामि
आपु संततांप्रिजनमें॥ टूटो चाप जूरैन रिसाने मुनि बैठे आपुवादी
है हे पीर भूमिठाढे सो पगनमें। भाग्यवन्त पीवे चापहोय जो अ-

तीव्र आपदेउतौ जुरायके गुणीय बोलिछनमें ॥ परशुराम वचन सवैया ॥ तनसुन्दर ज्योंघट हेमलसै मनमैलभरो विषको रसज्यों। निकसे जनुज्वाल कराल महा कटुवैन कहैज्यइ बालकयों ॥ लघु भ्रातय राम विचारि तुम्हार अवैलगि मै नहिं याहि हत्यों ॥ कुश लात चहौ यहि बालक जो कटु वैनकहे न मना करिल्यो ॥ राघव वचन कवित्त ॥ बालकारु वररै सुभाव तुल्य एक जानि संतन्ना बि दूषै नाथ आपुनो सुजानहीं ।सवरो न काज सो नशायो बालविप्र देव टूटचाप हाथ मो पराधवानहों मही ॥ जानिदास अपनो कृपासु कोप बन्धवध कीजिये कृपाल जौन शीशसो सबैसही ॥ जायजा प्रकार क्रोधकीजिये प्रसिद्ध तौनकरो सो उपावनाथ याही काल शीघ्रहीं ॥ परशुराम वचन सवैया ॥ रामकहो क्यहि भांति मिटै रिस हेरत बन्धु अजौतु अनैसो। जोयहि कण्ठकुठारन दीन तु कौन कहा पुनिमैं रिसकैसो ॥ नारि महीपन गर्भकहा ज कुठार कराल बन्यो कर हे सो । देखत शत्रुमहीप किशोर अवैलागि जीवत अग्र खडैसो ॥ महिपालन जालन घालन जो य कुठार सुकुंठित भार भयो। नहिं हाथबहे ज्यहि घातकरो वश क्रोधहियो ममजारतयो॥ प्रतिकूलभयो विधिमोपरहे त्यहिते फिरि मोर सुभावगयो । कसि बात कृपाकि हृदे हमरे स्वइ आजुदया दुखभूरिदयो ॥ लक्ष्मण वचन कुण्डलिया ॥ जैसी मूरति आपुकी विप्रताहि अनुकूल । कृपाबाउ चल फूंक त्यहि झरे वचन जनुफूल ॥ झरे वचन जनुफूल सुनी यह जानत बाता । जरे कृपामुनिगातभये रिसराखु विधाता॥ ताप व्याधि उरहोयकरो ओषधि पुनि तैसी । जरतहोय जलहाव रुनै कीजै मनजैसी ॥ परशुराम वचन सवैया ॥ देखु विदेह अहै यह बालक खोट महाकटु बोलत बैना । देखन ब्याह उछाह चहै

नहिं जानतहे सुकृतांतहि ऐना ।। आवत कालभयो चलियाकर दोपदियो परिणाम हमैंना। जोपि उवार चहो यहिको तौ ओटकरौ किन सद्यहि नैना।। लक्ष्मण वचन नाराचछन्द ।। रुचै उछाह जौन आपु नैनमूँदि लीजिए। परैन देखिकै कतौ वृथान कोधकीजिए।। कितौ मुनीश जाहुवेगि काननै सिधायजू।नभेजि दूत आपुको पठा वकै बुलायजू ।। राघव प्रतिपरशुराम वचन कवित्त ।। तोरि शंभुचाप शठकरे है प्रबोध मोर कहे कटुवन्धु ताहिदीनतू सिखाई है।आपु करै विनैछल छाड़िदे कहाउवाजु तेनी। रामनाम कैतौं तोपै अस्त्र आई है।। त्यागि छलद्रोही शम्भुकौ किनयुद्ध आय भूपपुत्र मारौ तेहि नातौ युक्तभाई है। कहौं सत्यवचौन सुभायन मृदुल आजु देखु या कुठार घोर क्षत्रवंशहाई है।। राघव वचन सवैया ।। सूर्यहु दोषपरै कतहूं शशि वक्रहि ज्योनहिं घेरत राहू। लक्ष्मणकेर गुनाह अहै ममऊपर तौ मुनिव्यर्थ रिसाहू ।। हाथ कुठार अहैशिर अग्ररुचै मनै जो तजि कोध कराहू। जानि हमें भगवन्त स्वदास करौ रिसजाय यथा मुनिनाहू ।। कसियुद्ध अहै प्रभुसेवककी तजि क्रोधमुनीश कृपाहिधरौ। धनुवाण कुठारधरे लखि बालक वीर विचारि सुक्रोध भरौ।। नहि चीन्हत जानत नामअहै निजवंश प्रभाव सुज्ञाव करौ। मुनिवेष जुहोत्यहुतौ धरते शिशुपङ्कज पायँन धूरि शिरौ।। कवित्त।। क्षमौचूक बालक अजानकी द्विजन हीय चाहिये अपार कृपा क्रोध ना हृदैधरौ। रावरो न मोहि है बराबरी सुविप्रदेव पादकहां माथहै विचारहीय मे करौ ।। रामनाम छोट मोर रावरो बड़ो है नाम एकै गुण मेरे चाप आप माहिनौभरौ। दाता दयावन्त दत्त तापसेंद्रिजीत ऋजु क्षमा तृष्णातोष आपु सबै भांति हौवरौ ।। परशुराम वचन छप्पै ।। त्वहुं बन्धु समनाम निपट जाने द्विजमोही। सुनु जेमो मै

भगवन्त अहै अस को कवि जो सुखमा पुरकी त्यहि गाय कहै॥

दो० । यह सब कथा अनूप मैं कह्यों यथा मति गाय ।
अब सुनिये चर अवधपुर पहुँचे ज्यहिविधि जाय ॥

कार्तिक कृष्ण बाणतिथि कहियां । पहुँचे दूत अवधपुर महियां॥ द्वारपाल यक तुरत पठावा । जाय भूप पहँ खबरि जनावा॥ सुनत बोलि लीन्ह्यो नरनाथा । आय दूत नाये पद माथा॥ तुरतहि दीन्ह पत्रिका काढ़ी । उठि नृपललिन हर्ष अतिबाढ़ी॥ बांचत प्रेम उमँगि तन आयो । गद्गद कण्ठ नैन जल छायो॥ पुनि धरि धीर हृदय नर भूपा । लागे बांचन पत्रि अनूपा॥

हरिपदछन्द ॥ सिद्धिश्रीपद सत्य दान तप शौच धीर व्रत धारी । नीति धर्म थिर वीर शिरोमणि निगमनेति अनुसारी ॥ आदि वंश अवतंस महीपति सकल लोक हितकारी । महाराज दशरथ ज्ञाननिधि चक्रवर्ति रिपुआरी ॥ राउर चरण सरोज दास लिखि शीरध्वज कहिनामा । विविध भांति कर जोरि नाय शिर पहुँचे मोर प्रणामा ॥ कुशलअत्र तव कृपा कृपाकर सदा कुशल तव चाहों । जाते मम कल्याण श्रवण सुनि मन परमानँद लाहों ॥ राम लपण दउ बन्धु रावरो सुवन भुवन सुखदाई । तव स्थासिन सादर संग गवने विश्वामित्र सहाई ॥ मारग चलत ताडका मारे सिद्धाश्रम पुनि आये । हति सुबाहु सहसेन शाखि मख मुनिमन मोद बढ़ाये ॥ गौतम ऋषिकी नारि शाप वश भई उपल लखि ताको । चरण कमल रज छ्वाय दीन गति हरयो प्रभु तन ताको ॥ दिव्य रूप है तुरत अहल्या गई स्वपति को धामै । पुनि सानुज मुनिसंग कृपालै गवन कीन्ह मम ग्रामै ॥ राजन राउर पुत्र अनूपम निरखि सकल नरनारी । भये कृतारथरूप विना श्रम लहे मोद अतभारी ॥

अब कृपालकरि कृपा सुनीजै ममवृत्तान्त चितलाई । मैं कीन्ह्यो प्रणपूर्व इद जोभंजै शिवधनुराई ॥ सादर ताहि सुता निजब्याहों तस्यहेतु महहोई । खेप्रतभूमि वामकर कन्या लिय उठाय धनुसोई ॥ चतुरकोण चौकाकर दक्षिणदै सुचापधरि दीन्ह्यो । अर्चनार्थ मै जायदेखिकै तुरतप्रतिज्ञा कीन्ह्यो ॥ ताहित देश देशकेराजन लिखि लिखिपत्र पठाये । दर्शनार्थ धनुभूमिपाल सुनिसकल इतै चलि आये ॥ बाणासुरदशकंधर आदि भटनिजनिज जोरलगाये । भये सकलबलहीन तिलोभरि काहुन भूमिछुड़ाये ॥ तबमिलि सकल भूपएकै संग धरिधनुचह्यो उठायो । तदपि डग्यो नहिं शम्भुशरासन सबहि पराजयपायो ॥ त्यहि अवसर कौशिकमुनि आयसु श्रीरघुनन्दसुभायो । कमलनालसमदल्यो शरासन त्रिभुवन जे यशपायो ॥ तबहि सीयसानन्द रामउर जयमाला पहिरायो । रौरेपुण्य प्रभाव हमारो भयो सकल मनभायो ॥ परशुराम जमदग्नि तनै सुनिआय वाद बहु कीन्हा । लखि प्रभावकरि विनै गयेवन सौंपि शरासन दीन्हा ॥ तबहि शतानंद कौशिक सम्मत मार्गशीर्ष भृगुवारा । शुक्लपंचमी तिथि कर्क उदै मैं पाणिग्रहण विचारा ॥ त्यहि कारण महराज आपुपै पठयो दूत हँकारी । सहित पुत्र बांधव गुरुमन्त्रिण सुभग बरात सँवारी ॥ कृपादृष्टि करिकै ममऊपर कृपासिन्धु इत आवो । होय सफल त्यहि मोरमनोरथ नैनलाहु भरिपावो ॥ आपु कृतारथ रूप रावरे हमहिं कृतारथ कीजै । जानिभृत्य पादाब्ज आपने आय सबहि सुखदीजै ॥ [illegible] [illegible] हम पत्री वनके सदा करणं कल्प रविकल्प । [illegible] करौ प्रशंसा कौन विधि मैं राउर बुधिअल्प ॥ [illegible] । राउ दर्शनाचन्द्रको हम चकोर चितचाह । [illegible]

सहित समाज नक्षत्र इत उदै होहु नरनाह॥
सुनि पत्रिका परम सुखदाई। लह्यो सभा सब सुखसमुदाई॥
त्यहि अवसर रिपुदवन समेता। आये भरत समोद निकेता॥
बूझत नृपहिं प्रेम सरसाते। तात पत्रि आई कहवांते॥
राम लषण दुउबन्धु हमारे। सुखसागर प्राणन के प्यारे॥
कहिये कुशल अहैं क्यहिदेशा। सुनि पुनि बांच्यो पत्रिनरेशा॥
सुनत भये दुउबन्धु निहाला। तब दूतन ढिग बोलि भुवाला॥
बोले अति विनीत मृदुबानी। सरल सनेह सुधा रस सानी॥
सवैया॥ ममप्राण प्रिया सुठिपुत्र उभै जबते मुनि कौशिकसा गये। तबते तब आनन आजुभली सुधिपावत या हम सांचुभये। दुउश्यामल गौरकिशोरकरे कटितून शरासन बानलये। पहिचा नहुतौपि स्वभाव कहौ उनपै तुम जो निज दृष्टिदये॥
दो० तातकहौ क्यहि विधि उनहिं जाने जनकनरेश।
सुनत दूत मुसकायकै बोले वचन सुवेश॥
सवैया॥ राजनराज शिरोमणि राउर चक्रवती सम और न जायो। कौनप्रकार प्रशंसकरौं जिन विश्वविभूषणके सुतपायो॥ पूछन योग नहीं नृपते यश पुञ्जप्रताप तिहूंपुरछायो। सिंहसमान प्रसिद्ध उभै गुणसागर नागर जाहिं न गायो॥ कवित्त॥ शील सम साहसी कृपाल क्षमाधाम राम रूपतानिधान अङ्ग कामकोटि वारहे। नीतिधर्म्म पूरण प्रतापवन्त शूरवीर तैसही लषणलाल वांकुरे उदार हे॥ श्यामगौर वै किशोर माधुरी सुठौर ठौर सुखमा अपार विश्व वीर जैतवारहे। भाग्यवन्त आंखितर आवतो न तेस और कौशलेश वेशज्यों द्विरावरे कुमारहैं॥ सीय के स्वयम्बर महीप दीप दीपजाल समिटे पिनाक शम्भु काहुना उठायो है। बाण

दशकण्ठवीर देखि जाहि बाँवदीन ताहि रामचन्द्र कंजनाल सों चढ़ायो है॥ विश्व जैतवारे भृगुनन्द तौ दुलारे देखि डारिकै कुठारचाप पाँव शीश नायो है। भाग्यवन्त रावरेसमान कौन भाग्यवन्त जासुदिव्य पुत्रन प्रभाव लोक छायो है॥ तारकछन्द॥ सुनि दूतनके मुख बैन कहे हैं। सुखपुञ्ज हिये अवधेश लहे हैं॥ कहिजात न मोदहृदै नृपजेतो। निवछावरि दूतन देनलगेतो॥ चर लेत न जानि अनीति हिये है। मृदुबैन नृपै इमि ज्वावदिये हैं॥ हम दूत सुनो मिथिलाधिप के हैं। तनुजा इत ब्याहनते लहते हैं॥ महराज अहै धनतौ दुहिताको। यहिकारण हाथछुवै नहिं ताको॥ इमि धर्ममई सुनि दूतनवैना। सुख भूरिलह्यो सवही उर ऐना॥

॥दो॰ तव भूपतिलै पत्रिका दीन वशिष्ठहि जाय।
॥ दूतन निकट बुलायकै कही कथा सवगाय॥

॥ कवित्त॥ मारि मग ताड़का ससेनके सुबाहु नाश राखिकै मुनीश यज्ञ जालशोक दाये हैं। तारिकै मुनारि ऋषि कौशिक ससेत फेरि देखनार्थ चापयज्ञ आपहू सिधाये हैं॥ भूपवृन्द हारे तत्र राघव पिनाक तोरि आनिकै कुठारपानि गर्वही नवाये हैं। रामचन्द्र ब्याह काज मोहि सावरात वेगि बोलनार्थ मीथिलेश दूतपत्र लाये हैं॥

॥दो॰ जो आज्ञा मुनिराज तव होइ करों सइकाज।
॥ मुनिवशिष्ठ बोलेवचन सुनिये नृप शिरताज॥

॥ सवैया॥ ज्योंद्विजदेव गुरूपद सेवक आपु अहौ तन मानस वानी। त्यों भगवन्त पुनीतमहा नृप संततहै तव कौशिलरानी॥ आपुसमान नभो सुकृती जगहै नहिं होनसबै गुणखानी। राजन राज प्रशंस करों किमि वेद पुनीत सदा यशभानी॥

॥ दो॰ ज्यों सरिता विन चाहना जात सिंधुके पाहि।

हुत उछाह कहां लगि गावों। बादै ग्रन्थ न पारनहिं पावो॥
भूपति बोलि भरत तब लीन्हो। सजहु बरात सुआयसु दीन्हो॥
शिरधरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना॥
आयतुरत सादर शिरनाये। पाय भरत आयसु सबधाये॥
राम ब्याह हित अति अनुरागे। रथ गज बाजि सवाँरन लागे॥

छप्पै॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलक्खी। श्यामकुरण गुल्दार नकुल गर्रा सुरक्खी॥ कुल्ला स्याह सुचीतिजर्दबादामि सुरंगा। मुश्की पँचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा॥ बहुबरण बरण राजत तुरँग बरणिसकै को नाम कवि। जगमगत जीन अङ्गनि सुभग कहि न जाय सो भूरि छवि॥ कवित्त॥ साजि अङ्ग बाजिन विचित्र चारु जीतधारि हेमहीर आदिकै जटित रङ्ग रंगनै। नोकता अनूपकै लगाम हेम तागपाट गूंथिआल चौंटि शीशबांधि ग्रीवागंडनै॥ दूमची विशाल मंजु कंचन रकीब सोह लायकै सुजेरबन्द खैंचि पुष्टि तंगनै। भाग्यवन्त कौनभाँति गाऊँमै सुशोभजाल जगमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारभै अपार भीर बाजिन समाजकी बखानि जोन जातहै। मारत उछाह एक पुस्तक उहाय फेरि घूमि घूमि घूमि बारबार हिहिनातहै॥ जमत जकंदि एक फफकि तुराय बाग मारिहींस जोरधाय सौंह दाबिजात है। पाके दौरिधाकिकै सहीस बाँधिबागडोरि लावहीं सकोधते न भूमि ठहरातहै॥ टापत सकोध ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दरात दन्तन लगाम जोर चावहीं। बारबार भूमिपै पटकि पांव घूमि घूमि फेरफेर करत सुबंधनै तुरावहीं॥ जातभाँकि पांवचारि लंकही नचाय डाटि तानिकै कनौटिकादि अक्षनै तकावहीं। भाग्यवन्त जोरदार बाजिन कि ऐठमूरि देखि देखि राज पुत्र जावमोद पावहीं॥ साजि

त्योंही सब सुख सम्पदा धर्मवानपै जाहिं ॥
अस विचारि मन भूपमणि सजि वरात सानन्द ॥
नैन लाभ चलि लूटियै रामब्याह सुखकन्द ॥
सुनि गुरुशासन भूप तब दूतन सुथल टिकाय ॥
आपु गये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय ॥
बांचि सुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात ॥
भई सुनत रानी मुदित प्रेम न हृदै समात ॥
रानिन विप्रन बोलिके दीन विविध विधि दान ॥
यहि क्षणको भगवन्त मुद कोकवि करै बखान ॥

पुनि महिपाल द्वार चलि आये । सादर याचक वृन्द बुलाये ॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा । धनमणि भूषण बसन अनूपा ॥
देत अशीष सकल नर नारी । जाहिं भवन उर आनँद भारी ॥
पुर नर नारि मुदित यहिभांती । जनु चातक पायो जलस्वाती ॥
विविध भांति बाजहिं बहुबाजा । लगे सजन सब मंगलसाजा ॥
रामसीय कर ब्याह सुहावा । सुनिसुनि नगरलोग सुखपावा ॥
लागे घरघर होन बधाये । मंगल मे सब सदन सजाये ॥
ध्वज पताक पट चामर भूरी । रचे सकल रचना अतिरूरी ॥
पुरशोभा किमि कहौं बखानी । जहँ अवतरे राम छविखानी ॥
अमित उछाह अवध पुर होई । परमानन्द मगन नरलोई ॥
सजि नवसप्त शृंगार सुवामा । मंगल गान करहिं अभिरामा ॥
भूपभवन शोभा अधिकाई । शेष सहसमुख सकहिं न गाई ॥
अति सुन्दर शुभ रच्यो विताना । मंगल वस्तु सोह विधि नाना ॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये । विरदावलि बंदीजन गाये ॥
करहिं वेदध्वनि भूसुर भूरी । जयजय शब्द लोक तिहुँपूरी ॥

हुत उछाह कहां लगि गावो। बाढे ग्रन्थ न पारनहिं पावो॥
भूपति बोलि भरत तब लीन्हो। सजहु बरात सुआयसु दीन्हा॥
शिरधरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना॥
आयतुरत सादर शिरनाये। पाय भरत आयसु सबधाये॥
समव्याह हित अति अनुरागे। रथ गज बाजि सवांरन लागे॥
छपै॥ खिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलखी। श्यामक-
रण गुल्दार नकुल गरारु सुरुखी॥ कुल्ला स्याह सुचीतिजर्दबादामि
सुरंगा। मुश्की पंचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा॥ बहुबरण बरण
राजत तुरंग बरणिसकै को नाम कवि। जगमगत जीन अङ्गनि
सुभग कहि न जाय सो भरिछवि॥ कवित्त॥ साजि अङ्ग बाजिन
विचित्र चारु नीलधारि हेमहीर आदिकै जटित रङ्गरंगनै। नोकता
अनूपदै लगाम हेम बागपाट गूंथिआल चोटि शीशबांधि ग्रीवाअ-
ङ्गनै॥ दूमची विशाल मंजु कंचन रकाब सोह लायके सुजेरबन्द
खैंचि पुष्टि तंगनै। भाग्यवन्त कौनभांति भाऊं मै सुशोभजाल ज-
गमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारमै
अपार भीर बाजिन समाजकी बखानि जोत जातहै। मारत उछाट
एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि भूमि बारबार हिंहिनातहै॥ जमत
जिकंदि एक फाकि तुरायबाग मारिहीस जोरधाय सौंह दाबिजात
है। पाछे डोरि धारिकै सहीस बांधिबागडोरि लावही सक्रोधते न
भूमि ठहरातहै॥ टापत सक्रोध ओर आरिहू सुताकि ताकि दर्दसाग
दन्तन लगाम जोर लावही। बारबार भूमिपै पटकि पांव घूमि घूमि
फेरिफेर करत सुबंधनै तुरावहीं॥ जातझुकि पांवचारि शांकदीन्वाय
डाटि तानिकै कनौटिकाढि अश्वनै नचावहीं। भाग्यवन्त जोरदार
बाजिन कि फेरफेरी देखि देखि राज पुत्र आलमोद पावही॥ साजि

त्योंही सब सुख सम्पदा धर्मवानपै जाहिं॥
अस बिचारि मन भूपमणि सजि बरात सानन्द॥
नैनलाभ चलि लूटिये रामब्याह सुखकन्द॥
सुनि गुरुशासन भूप तब चलन सुथल टिकाय॥
आपु गये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय॥
बाँचि सुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात॥
भईं सुनत रानी मुदित प्रेम न हृदै समात॥
रानिन विप्रन बोलिकै दीन विविध विधि दान॥
त्यहि क्षणको भगवन्त मुद कोकवि करै बखान॥

पुनि महिपाल द्वार चलि आये। सादर याचक वृन्द बुलाये॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा। धनमणि भूषण बसन अनूपा॥
देत अशीष सकल नर नारी। जाहिं भवन उर आनँद भारी॥
पुर नर नारि मुदित यहि भाँती। जनु चातक पायो जल स्वाती॥
विविध भाँति बाजहिं बहु बाजा। लगे सजन सब मंगल साजा॥
रामसीय कर ब्याह सुहावा। सुनि सुनि नगर लोग सुख पावा॥
लागे घरघर होन बधाये। मंगल मै सब सदन सजाये॥
ध्वज पताक पट चामर भूरी। रचे सकल रचना अति रूरी॥
पुरशोभा किमि कहौं बखानी। जहँ अवतरे राम छबिखानी॥
अमित उछाह अवध पुर होई। परमानन्द मगन नरलोई॥
सजि नवसप्त शृँगार सुबामा। मंगल गान करहिं अभिरामा॥
भूपभवन शोभा अधिकाई। शेष सहसमुख सकहिं न गाई॥
अति सुन्दर शुभ रच्यो विताना। मंगल बस्तु सोह विधि नाना॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये। विरदावलि बंदीजन गाये॥
करहिं वेदध्वनि भूसुर भूरी। जयजय शब्द लोक तिहुँ पूरी॥

बहुत उछाह कहां लगि गावो । बाढै ग्रन्थ पार नहिं पावो ॥ भूपति बोलि भरत तब लीन्हो । सजहु बरात सुआयसु दीन्हो ॥ शिर धरि आयसु भरत सुजाना । पठये बोलि साहनी नाना ॥ आय तुरत सादर शिर नाये । पाय भरत आयसु सब धाये ॥ रामब्याह हित अति अनुरागे । रथ गज बाजि सवाँरन लागे ॥ छप्पै ॥ सिरगा समुद कपूरि सेत सब्जा अबलक्खी । स्यामकर्ण सुल्दार नकुल गररु सुरक्खी ॥ कुल्ला स्याह सुचीति जर्देवादामि सुरंगा । मुस्की पंचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा ॥ बहुवर्ण बरण राजत तुरँग बरणि सकै को नाम कति । जगमगत जीन अकाति सुभग कहि न जाय सो भूरि छबि ॥ कवित्त ॥ साजि अङ्ग बाजिन विचित्र चारु जीन धारि हेम हीर आदि पै जटित रत्न रंगनै । नोकदार उनपै लगाम हेम बागपाट गूंथि आल छोटि शीश बांधि श्रीवरांगने ॥ दूमची विशाल मंजु कंचन रकाब सोह लायकै सुजेरबन्द खैंचि पुष्टि तंगनै । भाग्यवन्त कौनभांति गावै मैं सुशोभजाल जगमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै ॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वार भै अपार भीर बाजिन समाज की बखानि जोन जाति है । मारत उछाह एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि भूमि बारबार हिंहिनात हैं ॥ उमत्त उकंदि एक फ़फकि तुरन्त बाग मारि हींस जोर धाय सौंह दावि जात हैं । पाछे दौरि धाय कै सहीस बाँधि बागडोरि लावहीं सकोध ते भूमि खूंदत है ॥ टापत सक्रोध ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दसाय दन्तन लगाम जोर चावहीं । बारबार भूमि पै पटकि पांव घूमि घूमि फर्फरै करत सुबंधने तुरावहीं ॥ जात झुकि पांव टारि लंकहीं नवाय डाटि तानिकै कनौटिकादि अक्षनै तकावहीं । भाग्यवन्त जोरदार बाजिन कि पेटमुरि देखि देखि राज पुत्र जाल मोद पावहीं ॥ साजि

त्योंही सब सुख सम्पदा धर्मवानपे जाहिं॥
अस विचारि मन भूपमणि सजिवरात सानन्द॥
नैनलाभ चलि लूटिये रामव्याह सुखकन्द॥
सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुथल टिकाय॥
आपुगये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय॥
वाचिसुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात॥
भईसुनत रानी मुदित प्रेम न हृदे समात॥
रानिन विप्रन बोलिके दीनविविध विधिदान॥
त्यहिक्षणको भगवन्त मुद कोकवि करैवखान॥

पुनि महिपाल द्वार चलिआये। सादर याचक वृन्द बुलाये॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा। धनमणि भूषण वसन अनूपा॥
देत अशीष सकल नर नारी। जाहिं भवन उर आनँद भारी॥
पुर नर नारि मुदित यहिभाँती। जनु चातक पायो जलस्वाती॥
विविध भाँति बाजहिं बहुवाजा। लगे सजन सब मंगलसाजा॥
रामसीय कर व्याह सुहावा। सुनिसुनि नगरलोग सुखपावा॥
लागे घरघर होन बधाये। मंगल भे सब सदन सजाये॥
ध्वज पताक पट चामरभूरी। रचे सकल रचना अतिरूरी॥
पुरशोभा किमिकहौं वखानी। जहँ अवतरे राम छविखानी॥
अमित उछाह अवध पुरहोई। परमानन्द मगन नरलोई॥
सजि नवसप्त शृँगार सुवामा। मंगल गानकरहिं अभिरामा॥
भूपभवन शोभा अधिकाई। शेष सहसमुख सकहिं न गाई॥
अति सुन्दर शुभरच्यो विताना। मंगल वस्तु सोह विधिनाना॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये। विरदावलि बंदीजन गाये॥
करहिं वेदध्वनि भूसुर भूरी। जयजय शब्द लोक तिहुँपूरी॥

बहुत उछाह कहां लगि गावो। बाढ़ै ग्रन्थ पार नहिं पावो॥
भूपति बोलि भरत तब लीन्हा। सजहु बरात सुआयसु दीन्हा॥
शिर धरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना॥
आय तुरत सादर शिर नाये। पाय भरत आयसु सब धाये॥
राम ब्याह हित अति अनुरागे। रथ गज बाजि सवाँरन लागे॥

छप्पै॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलक्खी। स्यामकरण गुल्दार नकुल गर्रा सुरक्खी॥ कुल्ला स्याह सुनीति जर्दे बादामि सुरंगा। मुश्की पंचकल्यान नील कुम्मैत पिलंगा॥ बहुबरण बरण राजत तुरँग बरणि सकै को नाम कवि। जगमगत जीन अक्रांति सुभग कहि न जाय सो भूरि छवि॥

कवित्त॥ साजि अङ्ग बाजिन विचित्र चारु जीन धारि हेम हीर आदि दै जटित रङ्ग रंगनै। नोकता अनूप दै लगाम हेम तागपाट गूंधि आन ओंठि शीश बांधि औ वगंडनै॥ दुमची विशाल मंजु कंचन रकाब सोह लायकै सुजेरबन्द खैंचि पृष्ठि तंगनै। भाग्यवन्त कौन भाँति गावै मै सुशोभ जाल जगमगात ज्योतिपुंज भूषण तुरंगनै॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारमै अपार भीर बाजिन समाजकी बखानि जोत जातहै। मारत उछाह एक पुस्तक सहाय फेरि घूमि घूमि झूमि बारबार हिंहिनातहै॥ जमत जकंदि एक फफक्ति तुराय बाग भारि हीस जोरखाय सौंहदा बिलात है। पाछे दौरि धारिकै सहीस बाँधि ताग डोरि लावही सकोध ते जु भूमि बहरात है॥ टापत सकोप ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दसन दन्तन लगाम जोर चावही। बारबार भूमिपै पटकि पाव घूमि घूमि फेरिफेरि करत सुबंधनै छुरावही॥ जात झूकि पाव चारि लंकही नवाय डायि तानिकै कनौ टिकाढ़ि अश्व नै तकावहीं। भाग्यवन्त जोरदार बाजिन कि गेंदमुर्रे देखि देखि राजपुत्र ज्ञानमोद पावहीं॥ साजि

त्योंही सब सुख सम्पदा धर्मवानपै जाहिं॥
अस विचारि मन भूपमणि सजिवरात सानन्द॥
नैनलाभ चलि लूटिये रामव्याह सुखकन्द॥
सुनि गुरुशासन भूपतव दूतन सुथल टिकाय॥
आपुगये भीतर भवन रानिन निकट बुलाय॥
बाँचिसुनाई पत्रिका राम लषण कुशलात॥
भईसुनत रानी मुदित प्रेम न हृदै समात॥
रानिन विप्रन बोलिकै दीनविविध विधिदान॥
यहिक्षणको भगवन्त मुद कोकवि करैबखान॥

पुनि महिपाल द्वार चलिआये। सादर याचक वृन्द बुलाये॥
बहुविधि दीन्ह निछावरि भूपा। धनमणि भूषण वसन अनूपा॥
देत अशीष सकल नर नारी। जाहिं भवन उर आनँद भारी॥
पुर नर नारि मुदित यहिभाँती। जनु चातक पायो जलस्वाती॥
विविध भाँति बाजहि बहुबाजा। लगे सजन सब मंगलसाजा॥
रामसीय कर व्याह सुहावा। सुनिसुनि नगरलोग सुखपावा॥
लागे घरघर होन बधाये। मंगल मै सब सदन सजाये॥
ध्वज पताक पट चामरभूरी। रचे सकल रचना अतिरूरी॥
पुरशोभा किमिकहौं बखानी। जहँ अवतरे राम छविखानी॥
अमित उछाह अवध पुरहोई। परमानन्द मगन नरलोई॥
सजि नवसप्त शृँगार सुबामा। मंगल गानकरहि अभिरामा॥
भूपभवन शोभा अधिकाई। शेष सहसमुख सकहिं न गाई॥
अति सुन्दर शुभ्र रच्यो विताना। मंगल वस्तु सोह विधिनाना॥
बाजहिं बाजन द्वार सुहाये। विरदावलि वंदीजन गाये॥
करहि वेदध्वनि भूसुर भूरी। जयजय शब्द लोक तिहुँपूरी॥

हुत उछाह कहां लगि गावे। बाढे ग्रन्थ पार नहिं पावो ॥
भूपति बोलि भरतु तव लीन्ही। सजहु बरात सुआयसु दीन्हा ॥
शिरधरि आयसु भरत सुजाना। पठये बोलि साहनी नाना ॥
आयतुरत सादर शिरनाये। पाय भरत आयसु सब धाये ॥
रामव्याह हित अति अनुरागे। रथ गज वाजि सवारन लागे ॥
छपै ॥ सिरगा समुद कपूरि सेतसब्जा अबलक्खी। श्यामकु-
रण गुल्दार नकुल गर्रा सुरक्खी ॥ कुल्ला स्याह सुचीतिजर्दबादामि
सुरंगा। सुरकी पंचकल्यान नील कुम्मेत पिलंगा ॥ बहुबरण बरण
राजत तुरग बरणिसकै को नाम कवि। जगमगत जीन अङ्गनि
सुखण कहि न जाय सो भूरिछवि ॥ कवित्त ॥ साजि अङ्ग बाजिन
विचित्र चारु जीनधारि हेमहीर आदिमे जटित रङ्ग रंगने। नोक्ता
अलपदे लगाम हेम बागपाट गूंथिआल छोंटि शीशबांधि ग्रीवाबं-
दने ॥ दुमची विशाल मंजु कंचन रकाब सोह खासके सुजेरबंद
खैचि पुष्टि तंगने। भाग्यवन्त कौनभाँति गावें मे सुशोभजाल ज-
गमगाति ज्योतिपुंज भूषण तुरंगने ॥ भाग्यवन्त कौशलेश द्वारमे
अपार भीर बाजिन समाजकी खानि जोत जातहे। मारत उछाह
एक पुस्तक बहाय फेरि घूमि घूमि झूमि बारबार हिहिनातहे ॥ जमत
जिकंदि एक फफकि तुरायबाग मारिहीस जोश्याय सोंह दाबिजात
है। पाके दौरिधारिकै सहीस बाँधिबागडोरि लावहीं सकोचते न
भूमि ठहरातहे ॥ टापत सकोध ओर चारिहू सुताकि ताकि दर्दरात
दन्तन लगाम जोर चावहीं। बारबार भूमिमे पटकि पांव घूमि घूमि
फरफेर करत सुबंधने तुरावहीं ॥ जातझाकि पांवचारि लंकही नवाय
डाटि तानिके कनौटिकाढि अगने नकावहीं। भाग्यवन्त जोरदार
बाजिन कि ऐश्वर्य देखि देखि राजपुत्र जालमोद पावहीं ॥ आनि

अङ्गचीर ऊन रेशमी अमोल चारु जरी जरवफ्त आदि सोहै हैं। धारि शीशपाग मंजु कलँगी विराजमान कुण्डल सकान गजमणि हारहैं॥ भूषण अपार अङ्ग अङ्गनै सवाँरि दिव्य दुशाल लंक तून बानभारहैं। डावमें कृपानलाय धारिचाप व भाग्यवन्त राजपुत्र साजिभे तयारहैं॥ अतर लगाय पट केवड़ा गुलाब खसमोतिया हिनादिजे अनूप गन्धदारहैं। खायपान व इलाइची मिलाय चारु हाथले रुमालनव्य भाँतिगुच्छ वारहैं॥ पाद त्राण पैन्हिपाँव छरेछैल रूपवन्त मंद मंदजात अङ्कवार कोटि मार हैं। भाग्यवंत राजपुत्र भरत समानवीर शत्रुहन आदि फाँदि बाजि भे सवारहैं॥ बैठिगाठि आसनै दबायरान साधिवाग बाजिन लगाय ढंग संगएक धावहीं। जावत रुहाल कोइ दूलकी दुगामपोइ साहराम चालकेकदम्मको बढ़ावहीं॥ ठाढ़े एकडाटे बाजिउमागि उछाटे एक मारिसरपट्ट नालि झट्टफांदि जावहीं। भाग्यवंत देखि जाल अश्वन कलोल चाल राजपुत्र सासमाज मोदपुंज पावहीं॥ सोहत विशाल झुंड झुंडन गयन्दजाल अंग अंग पुष्टश्याम दीरघदतार हैं। जातरूप हीर मे अँबारी चारु ज्योतिवन्त पन्नन प्रकाशपुंज झूल कामदारहैं॥ राजतउहार दिव्य ऊपर झलक्कदार कञ्चनजंजीर स्वच्छ झूम चारिवार हैं। भाग्यवन्त साजि अङ्ग भूषणास्त्र चीर चारु भये रघुवंशी लोग बारण सवारहैं॥ चारिओर गाजत गयन्दमस्त घोर नाद होत ज्यों अपार व्योम घनघहरात हैं। घण्ट घंटि शब्द जाल दीरघ अनूप सोह मन्दमन्द चाल देखि मैन बलिजात हैं॥ बाजत निशान भाँति भाँतिनै अमोदकार झुण्डन कतार बाँधिचले पील जातहैं। भाग्यवन्त कौन भाँति गावै सो अपार शोभ देखत प्रभाव पुञ्ज शक्रहू सिहातहैं॥ साँड़िया समाज ना बखानिजात भाग्यवंत

राजत सवार पीठि शोभ जालदैरहे । कठिन प्रकाश पुञ्ज हीरन कि ज्योतिहोत मखमली उहार नव्यमोति गुच्छेरहे ॥ माणिकस-जातरूप जटित नकेल स्वच्छ पावन अनूप शब्द घूंघुरू मचैरहे । छम्मछम्म चलंत कदम्मन बढ़ाय संग सुतुर सवार पंथकेलि कोटिकै रहे ॥ हेममणि रचित प्रकाशमान तेजवन्त अमल बिछावने वि-छाय रङ्गरङ्गहैं। चामर पताक ध्वज किंकिणी विराजमान झालरै समोति गुच्छटांकि चौअलंग है ॥ सोहत उहार दिव्य ऊपर सु-कामदार सूखमा अपार देखि लाजत अनंगहैं। श्यामकर्ण पौनहूते वेगवन्त साजि अंग लायेतारथन माहिं सारथी तुरंगहैं ॥ भूपण व-सन अंग साजि अस्त्रशस्त्र धारि रथन सवार चले रथी शोभकन्दहैं। बाजत निशान अग्र सोहत अतीव यान देखत अनूप शोभ भानु यानमन्दहै ॥ शीविका सुखासन अनेक भांति भांति साजि तामर सवार ह्वै सुचले विप्र वृन्दहे । भाग्यवन्त सूखमा अपार ना बखानि जाति धरेतनु चलेजात मानो श्रुतीछन्दहैं॥ बेसराशकट ऊंट भारन लदाय जाल तम्बूसाकनात छोलदारी सामियानही, । डोरी चोबें बादरसों मेखन के भारभूरि दरीदरा जाजिमै सुनारखानि खानही ॥ रेशमीसऊन सूति कोमल कलीन जाल तोसकै सुगिरदा अनेकन विधानही। कुरसीसमोढ़ का पलंगन तखत चौकि अमित धराय वस्तुपारको बखानही ॥ अमित विधान पकवान को बखान नाम छरस सुधासों भरे पात्रन अपारहैं । मेवासा मिठान भांति भांतिनै भराय जालचले लैअपार भार कांवरे कहारहैं ॥ भूपण बसन हेम-हीर आदि मालधन शकट लदायकै संदूखन संभारहैं। भाग्यवन्त सौज और जावत बरात योग्य चलीसो अपार कौन पावै गनिपार है॥ साजितौसुमंत आनि यानद्वै अनूपचारु सूखमानिधान कोटि

भानु तेज भ्राजहै । राजसाज साजि एक दूसरो सुतेजवन्त जग मग ज्योतिहोत देखि मैन लाजहै ॥ तापर सवारकै वशिष्ठको हरषि आपुचढ़े रथ भूपमणि वंदे गनराजहै । भाग्यवन्त सहित वशिष्ठ सोह भूपकेस मानो देवगुरुसंगराजै सुरराजहै ॥ देखिकै वरात साज भूप कुल वेदरीति करिकै वजाय शङ्ख कीनतो पयानहै । भाग्यवन्त आनंद अपार ना वखानिजात वर्षही प्रसून देव व्योमछै विमान है ॥ वाजत निशानजाल वदत विरदवंदि मंगल कलापगान ग्राम तीयठानहै । छायो धूमधाम लोकतीनिहू प्रमोद होत सगुन अपारभये मंगल निधानहै ॥ चाराचाखु वाम अंगलेत हैं सुमोदकन्द दाहिने सुखेत काग सिद्धिदा सुहायो है । सघटसवाल आवनारि अग्रधेनु वृच्छ प्यावत कुरङ्गसाल फेरि दाहिनायो है ॥ सानुकूल त्रिविध समीर डोल श्यामावाम सुतरु विराज दर्श नकुल दिखायो है । मीनदक्षिआयो अग्रपुस्तकी सविप्रदोय दीनदर्शलोवा क्षेमकरी क्षेमगायो है ॥ चाखुशक्र धर्म्मराज वायस सरयू कुम्भ भागीरथ वालदेवरारी दिव्यवामहै । धेनुभूमि मालमृग देवगन शोभवन्त प्रवल त्रिदेव आवपौन अभिरामहै ॥ श्यामा अद्रिजाई संजुनकुल धनेश जानि मीनसरिजाल सिन्धुदधि शुभधाम है । विप्रशुक्र वृस्पति सुपुस्तक विशाल वेदलोवा औध क्षेमकरी देवि दानिकाम है ॥ मंगलको खानि फल चारिहूको दानि हारकलुष गलानि मोदकंद सुखसारहे । धर्मको अगार भक्ति मुक्तिको भंडार चारु संतन अधार लोकजीवन उधारहे ॥ भक्तनकोप्रान खलवृन्दन को त्रान मोहरातिको विहान ऋद्धि सिद्धिको सुद्धारहे । ऐसोराम सीयव्याह जानिकै सगुन सव सांचे होनकाज आनिभये एकवार हैं ॥ डंकनादहोत अग्र चली सुवरातसाजि आनँद अपारदेव फू-

लमालि बरषत ।। बाजत निशान भेरि दुन्दुभी पणव झांझ शब्द साहनाइन्ही किचारुमेल करपत ।। आसपास झूमत मतंगनकेझुंड जात बीचरथ सूखमा दिनेशयान धरपत । चारिओर बाजिनसमाज पादचार सोह भाग्यवन्त कौशलेश देखिशोभ हरपत ।। नाचनटी करैंनाच कौतुक विदूषके मुटेरत नकीब फेर तूपकान चमकत । बेरख अनेक रंगरंग फहरात व्योम झण्डीबरदार ऊंचिकुंत फोक चमकत ।। खेलत अनेक खेल फरीगदा बांक सैफ बाने पटेबाज पंथ नांतिचले झमकत ।। करैंनटकला कोटिआनँद अपारहोत हाथी पै निशान अग्रजात चोब धमकत ।। ऊंटजाति बेसरा शकट वृन्दवृन्द सोहपीनस कहार कंधलियेजात मटकत । सेवक समाजभूरि चोबदार सजे साज चलेजात पागशीश छोर मीठिलटकत ।। बाजिवृन्द फेरत उमंगि वीरभरतादि सांड़िया सवारजात अग्रदेह झटकत । भाग्यवन्त सूखमा बरातकी बखान कोनदेखि विभु कौशलेश देवराजभटकत ।।

सवैया ।। जातनचावत पन्थ तुरंगन रंगन रंग चलावत चालें । बागन तंगकिये असवार जमावत ठेकन ठोकत आलें ।। फेंकत पैंड़ कदम्मनके दमकें द्युतिदामिनि ज्यों पगनालें । क्यो भगवन्तकहैं गतिबाजिन मैनहृदे छवि अद्भुत शालें ।। झमकें भमकें झपकें छपकें सुउमंगि फफन्दि जकन्दिचलें । झटकें लटकें मटकें अटकें सुटकें बलकें दलमाहिं रलें ।। भगरें धंगरें डगरें सगरें पकरें जकरें थँभते न थलें । जुरतें फुरतें सुरतें बहुतें बरतें चलतें मग कोटिकलें ।। झलकें मणिभूषण भूरिसजे अँग अंग अतीव प्रभा छलकें । छलकें छवि मारगमें चहुंबालरि राजकुमार हृदे ललकें ।। ललकें रविबाजि विलोकि गती सुरसंकुल जैजयके पुलकें । पुलकें कुलकें अवधेश हिये भगवन्त सुभाग उदै झलकें ।। खटकें कहुंपात जुबात लगे

चकि चौंकि चितै तनको झटकें। झटकें बलक्रोध फफन्दिउड़ैं नभ जातचले मगना अटकैं॥ अटकैं मन देवविलोकि प्रभा पुनिआवत भूमि कलापटकैं। पटकैं न समीर सकैं फुरती छविबाजिन मैन हृदै खटकैं॥ खन कूदत खूदत पंथधरा चुचकारि सवारन बागहने। झमकाय नचाय बढ़ायचले सब राजकुमार प्रमोदसने॥ भगवन्त कहै किमि भूरिप्रभा सुरदेखत व्योम विमान घने। बरषाय प्रसून सुदुंदुभिदै पुनि सानँद जैजय शब्द भने॥

दो० यहिविधि सुभग बरातसजि सकलराज अवतंस।
चलेजात सानंद मग को कबिकरै प्रशंस॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवतीसिंहविरचितायामभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्री जनकदूतअयोध्याआगमनश्रीदशरथमहाराजप्रतिदूतवार्ताश्रीरामचन्द्र ब्याहहेतनृपबरातसज्जितगमनवर्णनोनामएकादशोऽध्याय ११॥

सो० वन्दौरघुपति पांय सुखदायक भञ्जन विपति।
पुनि पुनि शीश नवाय कहौं कथा भौभयहरणि॥

जब सबरात चलन नृप लागे। दूतन दीन विदा करि आगे॥
लै पत्रिका प्रथमते आये। जनकराज कहँ खबरि जनाये॥
सुनिनृप लीन बोलि निजपासा। जायदूत सब हाल प्रकासा॥
नृप दशरथकर पत्र विशाला। दीन हर्षि लीन्ह्यो महिपाला॥
सभा समेत राउ सुखपागे। प्रेमस खोलि पढ़न पुनि लागे॥

दो० स्वतिश्री सर्व्वोत्तमो पमायोग्य मिथिलेश।
गुणगण मंडित ज्ञाननिधि विदितकीर्त्ति सबदेश॥
पहुँचे शुभ दशरत्थकी सादर विविध प्रणाम।
कुशल अत्र सब क्षेम तव राखै चन्द्रललाम॥

भुजंगप्रयातछन्द॥ लिखी हस्तभूपाल तव पत्रिआई। कहौं क्या प्रभापुञ्ज आनन्द दाई॥ भयो मोद बांचे हृदय बीच भारी।

सुनेसो सभालोग ह्वैगे सुखारी। लिखा हाल जो आपु सो सर्व्व जाना। कृपाकौशिकैकी सवै सिद्धि माना॥ लिख्यो जोकि आवो इतै लै वराता। हुवै ब्याह राघौ जुरै नेहनाता॥ भलीवातें सोहैसवे हीय भायो। पुनः पत्रिलै सो वशिष्ठै सुनायो॥ भये सो प्रसन्नाति दीन्हे नियोगू। चलौलै वराता सुनीकोसँयोगू॥

दो० सोमै सादर शीश धरि सुनिये नृप मिथिलेश।
आवत सहित वरात हौं सद्य तुम्हारे देश॥

वांचिपत्र नृप सवहिं सुनावा। सुनि सव सभापरम सुखपावा॥
आवत जानि नगर अवधेशू। परमानन्द मगन मिथिलेशू॥
मारग जहँ जहँ वास रहाये। तहँ तहँ सकल सुपास वनाये॥
इहां भूप सव सहित वराता। करत निवास पंथ सुखदाता॥
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि काही। पँचये दिवस जनकपुर माही॥
पहुंचे सुनि आगमन वराते। नृप मिथिलेश हृदै हरषाते॥
अगवानी कर साज्यो साजा। विविध भाँति वाजहिवहुवाजा॥
तुरग नाग रथ पदचर नाना। सजिसजि लेनचले अगवाना॥

दो० अशन वसन भूषण विविध दधिच्यूरा सुखकन्द।
भरिभरि कंचन भाजनन पठयदीन सानन्द॥
अगवानिन देख्यो जवहि आवत सुभग वरात।
चले वजाय निशानवर हर्ष न हृदै समात॥
करिसादर अगवान वर वहुविधि मोद वढाय।
वहुरि परस्पर एकमहँ भये दोउदल आय॥
सादर भूपहिं भेटदै करिसन्मान वढ़ाय।
अतिसुन्दर जनवासलै दीन्हो सवहिं टिकाय॥

त्रोटकछन्द॥ पुरआइ वरात सुजानि सिया। महिमाकछु आप

प्रसिद्धि किया॥ तुरतै सब सिद्धिन बोलिलिया। प्रथमै अणिमा महिमा द्वितिया॥ तृतिया गरिमा लघिमाचतुरी। पँचई कहि पति सिद्धिफुरी॥ छठि कामवसी करणी सतई। अरुईशत नाम कहे अठई॥ तिनको इमि आयसु सीय दियो। पहुनाइ महीपकरो सवियो॥ सुनि सानंद सिद्धिगई तहवाँ। जनवास अनूपरही जहवाँ॥ सुरलोक जुभोग विलास सबै। क्षण में कारिपूरण दीन तबै। प्रभुता सिय काहुन जानिपरो। जनकैकि प्रशंसकरै सगरो॥

॥ दो० ॥ सिय महिमा रघुनाथजी गये तुरत सब जानि।

॥ ॥ भये परम आनन्द प्रभु हृदै हेतु पहिचानि॥

॥ ॥ सुनि श्रवणन पितुआगमन राम लषण मुनिसाथ।

॥ ॥ चले मनहु सरवर निरखि तृपावन्त हित पाथ॥

॥ कुंडलिया ॥ कीन्ह्यो मुनिहि प्रणाम नृप नृपहि लषण रघुराय। सानुज पुनि भेटेभरत रघुपति पद शिरनाय॥ रघुपति पद शिर नाय वशिष्ठहि सानुज वन्दे। पुरजन भेटेराम निरखि छविधाम अनन्दे॥ आनन्दे सुरवृन्द सुमन झरि दुन्दुभि दीन्ह्यो। गाय सुयश भगवन्त सफल जीवन जगकीन्ह्यो॥

दो० कोशलपाल कृपाल ढिग राजत सुवन सुचारि।
जनु सुन्दरफल चारिहू सोहत नरतनुधारि॥
दक्षिण रघुपति मोक्षफल भरतधर्म अभिराम।
लषणकाम रिपुहन अरथ राजत नृपदिशिवाम॥

पुर नर नारि देखि अति शोभा। परमानन्द मगन मनलोभा॥ कहहिं परस्पर सहित उछाहू। बड़भागी दशरथ नरनाहू॥ जिन ऐसे सुत सुन्दर पाये। सब गुणधाम सुशील सुहाये॥ जिनके दरशन पाय अनूपा। हम सब भये कृतारथ रूपा॥

न्य धन्य श्रीजनक सुनैना। होइहि व्याह इनहिं जिन ऐना॥
हुँ धन्य देखब उतसाहू। राय सियाकर सुन्दर व्याहू॥
हिविधि सन्नमन करहि विचारा। कोकहि सकै प्रमोद अपारा॥
हुँ कहुँ नारिवृन्द मिलिसंगा। कहहिवचन इमिसहितउमंगा॥
सवैया॥ संखिभूपति संग सुओर अहैं गुणसागर नागर बालक
। लपने अनुहारि जुगोर अहै तनश्याम मनो धुवरामहिं स्वै॥
व वैसहि अंगमनोहरहे उनसो कहुँ रंचक फेरनके। भगवन्त
लात्त करे छवि ते लखिआय उन्हे निज नैनन ज्वै॥
सहि विधु आनन छवि ऐना। वैसहि अमल कमलदल नैना॥
सहिं भाल तिलक छविछाजें। वैसेहि कानन कुण्डल भ्राजे॥
सहि अधर दशन द्युतिकारी। वैसहि मृदुमुसक्यानि पियारी॥
सहि वसन लसत सुठिअंगा। वैसहि कर धृत शर शारंगा॥
सहि मनमोहनि शुभचाली। वैसहि सकल ढंगहे आली॥
सहि शील सुभावहु वैसा। वैसहि वैस प्रतापहु वैसा॥
सहि अंग अंग छविधामा। भरत शत्रुसूदन शुभ नामा॥
सहि प्रीति रीति इनकेरी। कहहिं सखी जिन नैननहेरी॥
सहि ये सबके मन भावत। वैसहि अंग सुलक्षण जावत॥
सबके हृदै लालसा येहू। जो सखि समुझै मनहि विदेहू॥
॥ सवैया॥ जो समुझै मिथिलेश हिये तो देहि सु व्याहि इहैं चहुँ
भ्राते। ज्योहि कुमारि कुमार तथा मिलयो यह योग सुकैस बि-
धाते॥ को सुकृती मिथिलाधिप सो शिवदीन जिन्हें इनसो करि
नाते। यों भगवन्त सप्रेमरही बनितागन आपसमें करिबाते॥
हैहहि व्याह इतै इनके जब मानि सुनात कबों पुर ऐहै। कैकछुकाल
निवास इहाँ पुनि पायविदा निजधामहि जैहै॥ ऐहहि आनन

फेरि कबौं जब भूप कुमारिन बोलिपठै हैं। या विधि चारिहु राज कुमार सदा पुर आवत जातहि रैहै ॥ आवहिंगे ससुरारि जबै चहुँ राजकुमार महा छविऐना। श्यामलगौर किशोरधरे भ्रुव चाप कटाक्ष सजे शरपैना ॥ लेव तबै मनभाव सुखे भगवंत विलोकि इन्हैं भरिनैना। है हहिं तृप्त सबै पुरनारि सप्रेमकहैं इमि सुंदरबैना। सुकृती हमसों जग कौन बियो मिथिलापुरमें लिय जन्महिज्वै अरु जानकिराम निहारिप्रभा सुकृतारथरूप गये सबहै ॥ पुनि दे खब व्याह उछाह अबै भगवन्त महानंददायक स्वै। परमोत्तमहै य व्याह सखी मनभावत लाहु लहै सबकै॥ किरीटछन्द॥ राजकुम उदार चहूंछवि कोटि मनोज निछावरिगातन। व्याहहिं जो मि लापुर ये हम मंगलगाय करै सफलातन ॥ जन्म जहां भगव मिलै वश कर्म छुटै इनसों तहँनातन। होय सखी जबपुण्य ब पुरबै करतार तबै इनबातन॥

दो० यहिविधि पुर नरनारिसब कहहिं मनायपुरारि।
करिये प्रभुपूरण सकल मनअभिलाष हमारि॥
एक मास अरु सप्तदिन लग्नते प्रथमबरात।
आवतभे ताते अधिक पुरप्रमोद सरसात॥

छप्पै॥ यहिप्रकार सानंद सबहि कछुदिवस बितायो। हिमऋतु अगहनमास लग्न दिन सुंदरआयो॥ ग्रह तिथि नखत सुवारयोग शुभमूल सुहायो। तुरत देवऋषि हाथ शोधि विधि लग्न पठायो॥ ज्वइ गनी जनकगनकन इहांपठायो लिखि स्वइ सकलविधि। सुनि भयेमुदित पुरजन परम लगन सुमंगल मोदनिधि॥ तब प्रोहितकँ दीन्ह मुदित आयसु मिथिलेशू। साजि सुमंगलसाज वेगि लावहु अवधेशू॥ सुनत साजिसब साज शतानंद तुरत सिधाये। बाज

विपुलनिशान भूप जनवासहि आये॥ लखि अवधनाथकर विभव बड़ लाग तिनहिं लघु अमरपति। वचन सप्रेम विनीत कह समय पावँधारिय नृपति॥ सुनि दशरथ सानंद गुरुहिं अनुशासन लीन्हों। करि कुलरीति समाज गमन सादर नृपकीन्हो॥ मंगल समय विचारि देवफूलन झरिलाये। चढ़िचढ़ि सुभग विमान ब्याह देखन सब धाये॥ मिथिलेश नगर शोभा निरखि लागिलोक निज लघुसवहिं। सो विधिहि परम अचरजकतहुँ लख्यो न निज करणी जवहिं॥ तवशंकर बहुभांति सकल देवन समुझाये। त्रिभुवनपति ज्वड स्वामि जासुयश वेदनगाये॥ सुमिरत जाकरनाम तरहि भवसागर प्राणी। करुणासिधु उदार भवनमंगल गुणखानी॥ सोइ रामसियाकर ब्याहु शुभ दायक सब मन कामफल। जनिकरहु हृदै आचरज धरि धीर देव देखौ सकल॥ सुनि मृदु शंकर वैन सकल सुरगण मनहरषे। पुनि पुनि जैजैभाखि सुमन संकुल महिवरषे॥ दशरथ सहित समाज जातपथ सोहत कैसे। सुरवृन्दन के मध्य अमरपति राजत जैसे॥ श्रीराम लषण रिपुहन भरत जात नचावत तुरंगवर। भगवन्त परम शोभा निरखि उमासहित आनन्द हर॥ ज्यहि सुंदरवर वाजिराम असवार विराजे। देखि सुभग गति तासु हृदै खगनायक लाजै॥ कहि न जाय छविजाल मनो रघुनायक काजैं। धरयो मनोहर वेषवाजि कर ज्यों रति राजे॥ मणिजटित जीन जगमगित द्युति लसत विभूषण भूरितन। निजरूप गुण वय वपुपसन लिय मोहि सो त्रिभुवन सवन॥ सवैया॥ चलते छवि पावतवाजि महा उपमा क्यहि भांति कहै कवि कै। तन राघवश्याम पयोद मनोपटपीत लसै इति दामिनि स्वै॥ नगभूपण भूरि नक्षत्र सजै वरहीवर वाजि विलोकतज्वै। अति आनन्द नाचत प्रेम मनो

लखिकै न गयो छवि मोहितहै ॥ गीतकाछन्द ॥ लखि रामरूप अनूप शङ्कर परमआनन्दमें पगे । कहि जाय नहिं सुख एकमुख अति नैनपन्द्रह प्रिय लगे ॥ हरषे विरञ्चि विलोकि पै पछितानि दृग आठैभये । मुदपुञ्ज छ नन हृदय विधिते लाहुहम डेवढे लये ॥ सुरराज रामहिं देखि नखशिख मुदित मन हुलस्यो हियो । हित परममान्यो ताहि करि जो शाप ऋषिगौतम दियो ॥ श्रीराम शोभा धाम लखि सुर वृन्द आनन्द पायऊ । भगवन्त जैजै भाषि शङ्कुल सुमन महि वरषायऊ ॥

दो० श्रीरघुनन्दन रूप छवि नखशिख सादर जोहि ।
रमासहित श्रीविष्णुकर गयो सद्यमनमोहि ॥

सवैया ॥ राघवश्याम शरीर अनूपम सोहत यो अतिपीतपटा हैं । ज्यो नवनील पयोद विषे सुप्रकाशित मंजुल ज्योति छटा है ॥ व्याह विभूषण भूरि सजे छवि देखत मैन कमान हटा हैं । यों भगवन्त विलोकि प्रभा मिथिलापुरके नर नारि कटाहैं ॥ होत महानंद मारग मे छवि भाषत सो मुख एक बनैना । बाजत जाल निशानबदे विरदावलि वंदि हृदय सुखदैना ॥ आवत जानि बरात भली भगवन्त लह्यो मनमें अतिचैना । मंगलसाज सजे सुसवै परछें हित दूलहरानि सुनैना ॥ कवित्त ॥ मंगल सँवारि भूरि धूप दीप फूलमाल दूब दधि रोचना कनकथार भारिकै । मत्तगज गामिनी सुभामिनी शुभगजाल भूषण वसन अँग अंगन सवाँरिकै ॥ शची रमा शारदा सगौरि जे अमर तीय मिली रनिवास आनिवप वरनारिकै । गावत सुराग दिव्य मंगलीक वृन्दवृन्द चलीवारि आरती सरोज पाणि धारिकै ॥ आनन्द अपारहोत बाजत निशानजाल सुखमा कलाप मा [illegible] सो [illegible] त । सुन्दर अनूप देखि दू

लह सुवेषराम-नारि वृन्द मोदपुञ्ज हीयमध्य पावती ॥ भाग्यवन्त द्वारचार पछिके सकल रीति आरती उतारि वारवार प्रेम छावती। देत पटपावड़े लवाय लाय मण्डपै सुआसन पधारि दिव्य नारि गीत गावती ॥ चौपैयाछन्द ॥ लखि राम स्वरूपा परमअनूपा नखशिख सुभग सुहैना। भरिनैन निहारी अमित सुखारी भइमनसा सुसुनैना ॥ तनमन वलिहारी अरति उतारी पुनि पुनि प्रभुहिं विलोकी। अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा रहति प्रीति नहिंरोकी ॥

दो० - मिले जनक दशरथ नृपहिं सादर प्रीति समेत।
चले लिवाय सुमण्ड पहि अर्घ पाँवड़े देत ॥

सवैया ॥ निजपाणि सुजान विदेह सवैहित वैठन आसन लायदये। सनमानि विठाय वरासनपै पुनि पूजत प्रेम वढाय भये ॥ भगवन्त विनै वहुभांतिन के सुखशंकुल आशिषपायलये। रघुनन्दन आननचन्द्र प्रभालखि आनन्दही समुदाय छये ॥

दो० जानि सुऔसर प्रोहितहि मुनिवर कह्यो बुलाय।
भयो सभै अवकुँवरि इत लावहु वेगि लिवाय ॥

छन्दत्रिभंगी ॥ आयसु मुनिपाये तुरत सिधाये खवरि जनाये रनिवासे। सुनि प्रोहित वैना अति सुखदैना मातु सुनैना सहुलासे ॥ करि सकल शृंगारा सियहिं सँवारा विविधप्रकारा शोभभली। संग सखीसयानी छविगुण खानी लै महरानी वेगिचली ॥ सुखमा सरसाती वरणि न जाती निरखि वराती सिय आवत। अवधेश समेता सव मन जेता हरपनतेता कहिजावत ॥ यहिविधि नृपजाई मण्डप आई वरणि न जाई छविभूरी। मुनिवर वहुभांती द्विजवेदांती पढ़हिं सुसांती श्रुतिपूरी ॥

दो० कुलविचार व्योहार करि गणपति गौरि पुजाय।

पुनि सादर श्रीजानकिहिं दीन्हें आसन आय ॥
कनककलश मणि कोपरन भरि सुन्दरशुचिपानि ।
लागे धोवन रामपद मुदित राउ अरु रानि ॥

कवित्त ॥ जेई पदपङ्कज महेश हीय मान सर सन्तत निवास ध्यान योगी जन धारहीं । जेई पद पंकज परसि नारि गौतम कि पाई गति पावन समान पाप भारहीं ॥ जेई पद पंकज सो शम्भव सरित दिव्यपावन करणि लोक जीवन उधारहीं । भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाके तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥ जेई पद पंकज भवाब्धि घोर पोतचारु जेई पद पंकज कृतांत त्रास हारहीं । जेई पदपंकज करन पाप ताप नाश जेई पदपंकज हरत भूमि भारहीं ॥ जेई पदपंकज मुनीन्द्र मनभृंग बास बदत प्रभाय वेद पावत न पारहीं । भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाके तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥ जेई पदपङ्कज विरञ्चि ध्याय रचै लोक जेई पदपद्म सेइ शङ्कर सँहारहीं । जेई पद पंकज सुमिरि विष्णु करै त्रात जेई पदपद्म ध्याय शेषभूमि धारहीं ॥ जेई पदपंकज पुनीत सेइ भक्तजन पावत अमल भक्ति दानिफल चारहीं । भाग्यवन्त भाग धन्य जनक सुनैनिकाके तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥ जेई पदपंकज पुनीत कैसकृत ध्यानभये मुक्तपातकी निलंद वेशमारहीं । जेई पदपद्म चारु लोकन प्रकाश कार सेवत सुभाय दानि वैभवअपारहीं ॥ जेई पदपंकज अधार सुर सिद्धि जालदीनन उद्धारखानि वेद जा पुकारहीं । भाग्यवन्त भाग धन्य जनकसुनैनिकाके तेई पांय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥ जेई पदपंकज अनूपचारु मंगलीक ध्यावत शमन कोटि विघ्न पाप हारहीं । जेई पदपंकज सकल जग वन्दनीय विसित त्रिलोक पुज

कीरति उदारहीं ॥ कौनभांति गावै कवि उपमा न आवै फवि सू-
खमा निधान जे सुलभ जीव तारहीं। भाग्यवन्त भाग धन्य जनक
सुनैनिका के तेई पाय पंकज स्वपाणि जे पखारहीं ॥

दो० जे पदपावन देवतन दुर्लभ कोटि उपाय।
तें पदपद्म पखारहीं धनि रानी धनि राय॥

पुनि कर तल वर कुँवरि जुराई। शाखोचार कीन्ह मुनिराई॥
पाणिग्रहण होत पुनि भयऊ। मुदित देवगण दुंदुभि दयऊ॥
सुखद मूलवर कुँवरि निहारी। रानी राय लहे सुख भारी॥
लोक वेद विधि सादर कीन्हा। कन्यादान भूप वर दीन्हा॥
पुनि करि होम सुगांठि जुराई। होनलगीं भँवरी सुखदाई॥
निरखि कुँवरि वर आनँद मूला। मुदित देवगण वरषहिं फूला॥
वेरद बदहिं बंदीजन भूरी। परमानन्द नगर नभ पूरी॥
भाँवरि देत कुँवरि वर दोऊ। निरखि निहाल होत सबकोऊ॥

दो० झलकत मणि खम्भन शुभग सियरघुपति प्रतिछाहिं।
जनु तनु धरि रति काम बहु देखत सुन्दर ब्याहि॥

यहि प्रकार शुभ भाँवरि फेरी। भये सब मुदित जाल छवि हेरी॥
त्यहि अवसर मुनि आयसु पाई। सिय शिर सेंदुर राम लगाई॥
कहिनजाय छबि सो रजलाला। भूपितकिरणशशिहिजनुब्याला॥
पुनिमुनिशासनलहिसियरामा। एकासन बैठे सुखधामा॥
निरखि परम शोभा सुखदाई। दशरथ हृदय न हर्ष समाई॥
रामब्याह सुखमा अधिकाई। कवन प्रकार कहाें मैं गाई॥
सकल भुवन भरिरहा उछाहू। कहि न सकै शारद अहिनाहू॥
कहै भगवन्त धन्य ते प्रानी। जिन सिय रामचरण रतिमानी॥

॥ दो० तब विदेह नृपसन कह्यो मुनि वशिष्ठ सचुपाय।

पुनीतभये ज्यहि खायलही जगजाल बड़ाई।तासुख सोय जुओ
जूँठ सुमिष्ठदियो मधुपर्क खवाई॥कानसुने यशचाह चढयो चि
बाग अँभ्कारि विलोकि अघाई।पूजन पारवतीके किह्यो बहु अ
शिरवाद लह्यो मनभाई॥ पूर मनोरथ आजुभयो सब क्यों भग
न सनेह सगाई। कौसियजू करकंज दियो रघुनन्द मुखे मधुप
खवाई॥ ये गुणधाम प्रवीनकला श्रुति पण्डवली रणशम्भु दहे
पावन पांशुछुवाय किये पविनारि सुकीर्त्ति कदम्बलहे हैं॥ बाल
नान कढीघरते तुव घूमिय कौशिक संगरहे हैं। चूक्योहुखेल
ओरि सिया तुम चातुरता रघुबीर गहे हैं॥ बालपना सखि वृन्द
संग य केलिअहे न गुणी गुणवासी। लाघवताकर कामअहै भग
वन्त मिलै ज्यहिं जैति हुलासी॥ हारहुगी सिय जो इनके संगतं
हित राउरि बात न खासी। देहहिगारि तुम्हे यअलिन करि हैं पुर नां
सबै सुनि हाँसी॥ कै यहिभाँति विनोदमहा सुखमा मुख एक परे
बखानी। राम सियाछवि देखिभली अलिवृन्द सबै बिनमोल बि
कानी॥ प्रीतिकिरीति अपारअहै भगवन्तसकै ज्यहि सो न्नरजानी
जाउर भूरि कृपाकरिकै नितवासकरैं प्रभु शारँगपानी॥ एकसखी
पदत्रानहिलै पटअन्तर मूँदि कह्यो मुसकाई।गुप्तअहै यह देबिलला
बैठी मुखमूँदि लगौ यहिपांई॥ याकुलमें बर आवत जो इन पूजत
सो दल फूलचढाई। पावहुगे मनभाय फलै करिहौ इन पूजन जो
चितलाई॥ यो रचना युत बैनसखी सुनिराम मने हँसि बानि प्र
कासी। पूजितहै यह देवितुम्हें हमरेपद यासम कोटिनदासी॥ यो

माधुरि मूरति ना तजिजातैं ॥ याविधि हास बिलासहिमें सुख संयुत बीतिगई बहुरातैं। ले सुविदा सबभूटिनके जनवासे पयान किये ढिगतातैं॥

दो० जनवासहिं पहुंचायके लोकरीति करवाय।
बहुरि सखी सब कन्यकन लाई भवन लिवाय॥

कवित्त॥ कीनज्यवनार पुनि भूपति बरातबोलि प्रेमसों पखारि पांव पीठने बिठायके। हेमघट आनि भरि पूरिकै सुवारिपात्र दिये पनवार फेरि सूपकार आयके॥ षटरस चारि भांति व्यंजन सँवारि दिव्य सरिसगुधा कु स्वादगये परसिलायके। करि पंचकौर लागे जेंवन सुमोदधारि कहै भाग्यवन्त कौनभांति शोभ गायके॥

दो० मीठा खट्टा तिक्त कटु अम्लक अरु नमकीन।
येई षटरस जानिये भाखत सुकवि प्रवीन॥
भक्ष्यभोज्य अरुलेह्य पुनिचोष्य चतुर्विधि जान।
प्रकुप्रकर्म पुनि भेद बहु सो कछु करौं बखान॥
बोंदी मोदक खूरमा खाभादिक बहुखान।
खनवत रूखे जवन भक्ष्य भेद सो जान॥
दालि भात अरु खीचरी मालपुवादिक खान।
सरसरुखाई रहत जिन भोज्य भेद सो जान॥
दूधदही अरु रावड़ी हलवादिक जो खान।
अधिक रसीले होतजे लेह्य भेद सो जान॥
सालन सब तरकारिका चटनी और अँचार।
चोष्य भेद सो जानिये बुधजन कीन विचार॥
जेंवत जानि बरातवर नारि वृन्द हरषाय।
लगीं देन गारी मधुर एकन एक लगाय॥

सुमय सुहावनि गारि सुनि हरषत नृपसत्रात।
जेंवत भयो प्रमोद जो सो नहिं वरणि सिरात॥
करि भोजन लै आचमन पाय पान सनमान।
जनवासहि आये मुदितसहसमाज दशयान॥
राम व्याह उत्सव परम पाव न पारअनन्त।
गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कछुक भगवन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे श्रीरामजानकीविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

सवैया॥ रामसिया सुखदानि सदासुमिरैं सिधिदायकहैं ज जेऊ। मंगल मोदमई युग मूरति आगम वेद न जानत भेऊ॥ ध्य वत शम्भु विरंचि नितै कहिनेति बखानतहैं जिनतेऊ। तापदवंद के भगवन्त कहै कछु गायु सुरामकलेऊ॥

कीन्ह सैन पुनि सहित समाजा। उठि प्रभात कोशल पुरराजा।
प्रात क्रियाकरि पाय सुपासा। नृपमणिगये मुदित गुरुपासा।
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। वैठे नृप आसन हरपाई।
बोले नृप मुनि कृपा तुम्हारी। भयउ पूर्ण अभिलाप हमारी।
एक मनोरथ अव मनजागा। पूरण करहु सुकरि अनुरागा।
विप्र वृन्द अव लेहु वुलाई। तिनहिं देहु वहुविधिसजिगाई।
सुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये। आये लखि नृप पदशिरनाये।
करि सन्मान सुधेनु मँगाई। सकलप्रकार सुसाज सजाई।
दो० दीन्हे नृप सादर द्विजन वहुविधि विनय सुनाय।
भये मुदित मनभावती द्विज मुख आशिषपाय॥
पुनि याचकन बोलि नृप लीन्हा। मनभावतो दान तिनदीन्हा।
भये मुदितमन सुखन समाई। रुचि अनुहारि दान वर पाई।

जयजय करहिं कुलाहल होई । अतिआनन्द मगनसबकोई ॥
इहां जनक निज सुवन बुलाये । सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये॥
कीन्ह प्रणाम चरण शिर नाई । बोले नृप लखि गिरासुहाई ॥
तात बेगि जनवासहि जाहू । राजत जहँ दशरथ नरनाहू ॥
विनय सुनाय रजायसु पाई । करन कलेऊ हित सुखदाई ॥
लावहु चारिहु कुँवर लिवाई । सुनि लक्ष्मीनिधिपदशिरनाई ॥
॥ दो० ॥ सादर सखन समेत तब है बाजिन असवार ।
॥ ॥ चले तुरतसानंदमग कौतुक करत अपार ॥
आये जहँ जनवास विराजा । बैठेदशरथ सहित समाजा ॥
विभव अपार बरणि नहिं जाई । देखि जाहि सुरराज सिहाई ॥
उतरि तुरँग ले सखन समेता । कहिनजाय उर आनँद जेता ॥
अवधनाथ कहँ जाय जुहारे । सखन सहित मिथिलाधिपबारे ॥
नृप गहिपाणि निकट बैठाये । लखिछवि सकलसभासुखपाये ॥
तब श्रीनिधि भूपति रुखजानी । जोरिपाणि बोले मृदुबानी ॥
चारिहु कुँवर सुभाय सुहाये । करन कलेऊ भूप बुलाये ॥
सो मम विनय मानि अब लीजै । राजकुमारन आयसु दीजै ॥
॥ दो० ॥ सुनिलक्ष्मीनिधि बैनमृदु सादर सुतन बुलाय ।
॥ ॥ जाहु कलेऊ करन हित कहेउभूप हरषाय ॥
सुनि पितुआयसु चारिहु भाई । सखन समेत उठे हरषाई ॥
भूषण बसन सकल तनसाजे । छविअवलोकि मदनशतलाजे ॥
बाजिन फांदि भये असवारा । सानुज सब रघुवंश कुमारा ॥
ज्यहि तुरङ्गपर राम सवारा । त्यहि छविकहैं कौनकविपारा ॥
मणिमय भूषण अमित विराजे । हरि हरि छबिलखिहरि हरिलाजे॥
चलत कलामग कोटिन करई । जलथलअनलअनिलनहिडरई॥

समय सुहावनि गारि सुनि, हरषत नृपसज्जरात।
जेंवत भयो प्रमोद जो, सो नहिं वरणि सिरात॥
करि भोजन लै आचमन पाय पान सनमान।
जनवासहि आये मुदितसहसमाज दशयान॥
राम व्याह उत्सव परम पाव न पारअनन्त।
गिरा सुपावन हेत निज कह्यो कछुक भगवन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिद्धवर्मात्मजसगयन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे,
श्रीरामजानकीविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

सवैया॥ रामसिया सुखदानि सदा सुमिरैं सिधिदायकहैं जग जेऊ। मंगल मोदमई युग मूरति आगम वेद न जानत भेऊ॥ ध्यावत शम्भु विरञ्चि नितै कहिनेति वखानतहैं जिनतेऊ। तापदवंदन कै भगवन्त कहै कछु गाय सुरामकलेऊ॥

कीन्ह सैन पुनि सहित समाजा। उठि प्रभात कोशल पुर राजा॥
प्रात क्रियाकरि पाय सुपासा। नृपमणिगये मुदित गुरुपासा॥
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई। वैठे नृप आसन हरषाई॥
बोले नृप मुनि कृपा तुम्हारी। भयउ पूर्ण अभिलाष हमारी॥
एक मनोरथ अब मनजागा। पूरण करहु सुकरि अनुरागा॥
विप्र वृन्द अब लेहु बुलाई। तिनहि देहु बहुविधिसाजिगाई॥
सुनि मुनीश द्विज वृन्द बुलाये। आये लखि नृप पदशिरनाये॥
करि सन्मान सुधेनु मँगाई। सकलप्रकार सुसाज सजाई॥

दो० दीन्हे नृप सादर द्विजन बहुविधि विनय सुनाय।
भये मुदित मनभावती द्विज मुख आशिषपाय॥

पुनि याचकन बोलि नृप लीन्हा। मनभावतो दान तिनंदीन्हा॥
भये मुदितमन सुखन समाई। रुचि अनुहारि दान वर पाई॥

जयजय करहिं कुलाहल होई। अतिआनन्द मगनसबकोई॥
इहां जनक निज सुवन बुलाये। सहित सखनलक्ष्मीनिधिआये॥
कीन्ह प्रणाम चरण शिर नाई। बोले नृप लखि गिरासुहाई॥
तात वेगि जनवासहि जाहू। राजत जहँ दशरथ नरनाहू॥
विनय सुनाय रजायसु पाई। करन कलेऊ हित सुखदाई॥
लावहु चारिहु कुँवर लिवाई। सुनि लक्ष्मीनिधिपद शिरनाई॥
॥ दो० सादर सखन समेत तब ह्वै बाजिन असवार।
॥ चले तुरत सानंदमग कौतुक करत अपार॥
आये जहँ जनवास विराजा। बैठे दशरथ सहित समाजा॥
विभव अपार वरणि नहिं जाई। देखि जाहि सुरराज सिहाई॥
उतरि तुरँग ते सखन समेता। कहिं न जाय उर आनँद जेता॥
अवधनाथ कहँ जाय जुहारे। सखन सहित मिथिलाधिपवारे॥
नृप गहिपाणि निकट बैठाये। लखिछबि सकलसभासुखपाये॥
तब श्रीनिधि भूपति रुखजानी। जोरिपाणि बोले मृदुबानी॥
चारिहु कुँवर सुभाय सुहाये। करन कलेऊ भूप बुलाये॥
सो मम विनय मानि अब लीजै। राजकुमारन आयसु दीजै॥
॥ दो० सुनिलक्ष्मीनिधि वैनमृदु सादर सुतन बुलाय।
॥ जाहु कलेऊ करन हित कहेउभूप हरषाय॥
सुनि पितुआयसु चारिहु भाई। सखन समेत उठे हरषाई॥
भूषण वसन सुकल तन साजे। छविअवलोकि मदनशतलाजे॥
बाजिन फांदि भये असवारा। सानुज सब रघुवंश कुमारा॥
ज्यहि तुरङ्गपर राम सवारा। त्यहि छविकहै कौनकविपारा॥
मणिमय भूषण अमित विराजैं। हरि हरि छविलखिहरि हरिलाजैं॥
चलत कलामग कोटिन करई। जलथलअनलअनिलनहिडरई॥

कबहूँ उड़ि - अकाश को जोवै। निजशोभा सब सुरनछकावै॥
वेग अपार मरुतगति हारे। चलत चरण जनुभूमि न धारे॥
॥ दो० जगवन्दन रघुनन्द को वाजि मनोहर देखि।
॥ अमर नाग नर सिद्ध मुनि मोहित भये विशेखि॥
भरतबाजि छवि बरणि न जाई। समद सुमुद सब लोगनदाई॥
चञ्चल सुभग जासुवर चाली। करत निहाल सकलसुर आली॥
झमकिझमकि जबचलतउताले। पटल प्रभासम चमकहिंनाले।
अमित कलोल करत मगमाहीं। वनत एकमुख वरणत नाहीं।
रिपुसूदन करवाजि विशाला। चम्पानाम ललित बलजाला॥
त्यहि छविसकल सभासहँन्यारी। चलतचालु लागत अतिप्यारी॥
लषण लालकर लकवी घोड़ा। जगमहँ जासु आननहिं जोड़ा॥
अति बाँकुरो चलत छवि देवै। सुर मुनि जनन चोरि चितलेवै॥
॥ दो० लषणलालको बाजिवर अनुपम कला दिखाव।
॥ ज्यो पावस घनघोर लखि नाचत मोरि सचाव॥
अपर जिते रघुवंश कुमारा। ते वर बाजिन सकल सवारा॥
कौतुक अमित करत मगमाहीं। सहित प्रमोद चले सबजाहीं॥
राम वाम लक्ष्मीनिधि राजे। लिये संग निज सखासमाजे॥
छविअवलोकि अमित सुरहरषैं। जै जै करत सुमन वहुवरषैं॥
यहिविधिसखन सहितरघुनन्दन। पहुँचे जनकनगर जगवन्दन॥
पुरतिय निरखि रामछवि ऐना। श्याम शरीर सुजन सुखदैना॥
सोहत शीश मौर अभिरामा। भालतिलक मंजुल छविधामा॥
अलकझलककलखिपलकन परई। आननप्रभा चन्द्रद्युति हरई॥
॥ दो० नवपंकज लोचन अमल भृकुटी कुटिलविशाल।
॥ श्रुति कुंडल नासारुचिर दशनओष्ठ छविशाल॥

मृदुल हासवर सुन्दर बोला। सोहत उर मणिमाल अमोला॥
ब्याह विभूषण सकल सुहाये। अङ्ग अङ्ग प्रति अति छविछाये॥
नारिवृन्द नख शिख लखि शोभा। प्रेमविवश तन मन छविलोभा॥
लाज काज गृह सकल बिहाई॥ निरखहिं रामरूप सब धाई॥
प्रभु मुख देखि परमसुख पावैं। तन धन प्राण सकल निउछावैं॥
बोली कउ ये दशरथ वारे। क्यहि कारण इत जात सिधारे॥
यह सुनि अपर कह्यो मृदुबानी। पठये बोलि इनहि नृप ज्ञानी॥
करन अकलेऊ हेतु बुलाये॥ लच्छमीनिधि सँग जात लिवाये॥
॥ दो० ॥ धनि धनि सजनी भागबड़ हमसबकर यहआज।
॥ ०६ ॥ जो भरिनैनन दीख छवि रघुकुल मणि शिरताज॥
क्यहि कारण मुनिजन समुदाई। नानासुख सब भोग बिहाई॥
करहिं कठिन तप योगहि साधे। निशिदिन हृदय रूप अवराधे॥
सन्तत जाहि शम्भु उर धरहीं। ब्रह्मादिक सुर सुमिरण करहीं॥
आगम निगम जासु यश गावैं। अगजगमय कउ पार न पावै॥
सो प्रभु कृपासिंधु रघुनायक। निज भक्तन सन्तत सुखदायक॥
हमसब सादर नयनन देखी। भयनि कृतारथ रूप विशेखी॥
धन्यभाग्य मिथिलाधिप बेटी। जो मिलिहैं इन भुजन समेटी॥
सुनि इमि वचन श्रवण सुखदाई। बोली अपर सखीसचुपाई॥
॥ दो० ॥ भलो बनो संयोग यह चलिये भूपति ऐन।
॥ ०७ ॥ हंसि हँसाय अवलोकि छवि सफलकीजिये नैन॥
यहिप्रकार सब मनहिं दृढाई। चली मुदित नृप भवनसिधाई॥
सखा अनुज युत इत श्रीरामा। पहुँचे भूप द्वार अभिरामा॥
सुनि सिय मातु परमसुख मानी। बोलि सुवासिन तुरत सयानी॥
सजि आरती अनेकप्रकारा। विविध भांति मंगल भरिथारा॥

मंगल गान करत समुदाई। परिछन करन चलीं हरषाई॥
जाय निकट रघुवर छवि देखी। भईं सकल वसप्रेम विशेखी॥
सासु हृदय सुख भयउ अपारा। निरखिरूप दूलह सुखसारा॥
करि आरती सुमंगल गाई। परिछन कीन कुंवर सुखदाई॥
॥दो० तब लक्ष्मीनिधि तुरंगते उतरि सहित आनन्द॥
सखनसमेत उतारेउ सानुज रघुकुलचन्द॥
चले लिवाय मुदित निजसाथा। सहितसभा जहँतिरहुति नाथा॥
रामहिं देखि अनुजयुत आवत। उठे तुरत निमिवंशी यावत॥
अनुज सखन युत अवध दुलारे। जनकराय कहँ जाय जुहारे॥
करि आदरबहुविधि अधिकाई। भूपति लिये निकट बैठाई॥
नखशिख रामरूप छवि देखी। सभासहितनृप मुदित विशेखी॥
कछुक देर बैठे नृप पासा। पुनि लक्ष्मीनिधिआयप्रकासा॥
भीतर चलहु बुलावहिं रानी। करन कलेऊ हित सुखदानी॥
सुनत वचन नृप आयसु पाई। सखन समेत चले चहुँ भाई॥
॥ दो० आवत राजकुमार लखि उठी रानि हरषाय॥
करि सन्मान अनेकविधि लाईभवन लिवाय॥
चारि सिंहासन मंजु सुहाये। वरणि न जाहिंअमितछविछाये॥
तिनमहँ चारिहु कुँवर अनूपा। बैठाये गहि कर सुखरूपा॥
आसन अपर अनूपम आनी। दीन्हे सखन सहित सुदरानी॥
राम श्याम तन लखि छविऐना। प्रेम विवशभई सासुसुनैना॥
यकटक चितवत प्रभु मुख ओरी। ज्यों दिशि पूरणचन्द्र चकोरी॥
प्रेममगन तन दशा भुलानी। गदगद कंठ नैन दरु मानी॥
पुनि धरिधीर सुनैना रानी। कंचनकलश वारि शुचिआनी॥
मुख कर पाद पंखालन कीन्हीं॥ लै पटअमलपोछि पुनिलीन्हीं॥

दो० । तब सप्रेम बानी मधुर कह्यो सुनैनासासु ।
उठहु कलेऊ कीजिये जो रुचिहोवै आसु ॥
सुनि प्रिय वचन सुराम कृपाला । उठे सखानुज सह ततकाला ॥
मुदित रानि सँगचली लिवाई । अति सुन्दर पीढ़न बैठाई ॥
सहित प्रीतिलै कंचन थारी । षटरस व्यंजन विविध सवाँरी ॥
अति आदर परस्यो सबकाहू । प्रभुआगे धरि सहित उछाहू ॥
बोली सासु मधुर मृदुबैना । जेंवहु मैं बलि राजिवनैना ॥
नेग विचारि हर्ष हियभारी । मणि मुक्ताधरि सबहिनथारी ॥
नेगपाय निज कृपानिकेता । सहितअनुज सबसखनसमेता ॥
जेंवनलगे कुवँर वर चारी । सखि सब देनलगीं मृदुगारी ॥
दो० जेंवतजानि कुमारवर सखिन हर्ष हियधारि ।
लगींदेन श्रीरामको व्यंगवचनमें गारि ॥
गारी छन्दहरिपद ॥ जेंवत राजकुमार चारिहु निरखि अली अनुरागीं । हासविलासभरे मृदुबैनन गारिदेन सबलागीं ॥ सुनिये राजकुवँर रघुनन्दन बहिनि तुम्हारी कैसी । शृङ्गीऋषिहि ब्याहि ज्यहिं दीन्ह्यो कहो बात फुरि जैसी ॥ करत ब्याह निजजाति माहिं सब यह अयोग्य रघुनाथा । कै मुनिराज भगे लै उनको धौं लागीं वै साथा ॥ बोले लषणलाल तब हँसिकै सुनहु बैन मर्मप्यारी । कर्मलिखा कइ मेटिसकैना देखहु आपु विचारी ॥ जनकविरक्त जक्त सबजानै हमहानि राजकुमारा । तिनके भवन ब्याहभे हमरे तबकहँ रह्यो विचारा ॥ सुनिलजाय मुसकाय नवेली बोली अपर सुबानी । और सुनी यकबात लालजी कहो सत्य सुखदानी ॥ तुम्हरे कुल कोउ भूपरूप नर गर्भधर्यो उरमाहीं । जायो सुवन मानधाता जिन सोचुअहै की नाहीं ॥ औरो सुनि यकबात लालजी हँसी हमारे

आवै। तुम्हरे देश, खाय निय पायस सुवन अनूपम जावै॥ प्रति संयोग तनको नहिं चाहत कहौ बात किमिआहे। सुनत सखीके बैन चैनधरि कह्यो विहँसि सियनाहे॥ मातु पिता बिनु कोउन जन्मै जगप्रसिद्ध श्रुतिगावै। तुम्हरे तौ यहरीति अनोखी महिते सब उपजावै॥ सुनि उत्तर मुसक्याय पाय संचु अपरसखी पुनि वोली। रघुराजाकी सुता लालजी कुउ यकरही अमोली॥ चन्द्रावति शुभनाम तासुको विदित अहे सबठायो। विनव्याही तिन गर्भधरी उर नाशकेतु सुतजायो॥ इमि तुम्हरे कुल रीति रावरे और सुनौ यकवाता। तात मात द्वउ गौर तुम्हारे तुमकस श्यामलगाता॥ अतिसुन्दर यहरूप आपु किमि कहौ लाल कहँ पायो। कै तव मातु कामपति केकै तुमहिं अनूपम जायो॥ सुनत वचन बोले रघुनायक जो जैसो है ताको। तैसहिं परे विलोकि सकलजग ज्यों सावन अन्धाको॥ सुनिवोली कउ सखी लालजी रह्यो मुनिनके साथा। इमि बातैं फरफन्दभरी किमि गईं आइ तवहाथा॥ कह्यो भरत तुम अवै कुमारी कहाँसिख्यो इमिवातें। घरहीमाहिं अनुज संगपरिकै पढ्यो चतुरताघातें॥ एककह्यो इन रूप अनूपम निरखि परम मनुहारी। ह्वै मोहित वशकाम पास इन गई ताडुकानारी॥ सपरयो नहीं काज कछु इनते विवश लाज त्यहिमारी। कह्यो शत्रुसूदन हे प्यारी सुनिये बात हमारी॥ जो तुम्हरे मनहोइ संदेहू जनि पछितावन कीजे। हम सब बैठे सदन तुम्हारे लै सुपरीक्षा लीजे॥ सुनि रिपुहनकी बैन चातुरी बोली सखि मुसकाई। पिता तुम्हारे सूध लाड़िले सूधि सुमित्रामाई॥ तुम चातुर क्यहि भाँति भयो है यह कछु फेर अहावे। हमै जानि असपरत मातु तौ किये चतुर असनावे॥ यहि विधि देहिं वचन मृदुगारी सुनहिं सकल

चुपाये ॥ करिकै अशन अँचै पुनि सानँद निज निज आसन
ायें ॥ तब उठि सखिन प्रेम उरभरिकै सादर पानखवाये। भाग्य
न्त लखिरूप रामको जीवन फलसब पाये ॥

दो० रामचन्द्र मुखचन्द्र वर सखिजन सरिस चकोरि ।
यकटक रहीं विलोकि छवि हृदय प्रीति नहिं थोरि ॥

पहि अवसर श्रीनिधि की नारी । सिद्धिनाम पति प्राण पियारी ॥
गो सरहज रघुनायक केरी । सब गुणधाम रूप में हेरी ॥
भलवेली नहिं जाय बखानी । प्रीति रीति महँ परम सयानी ॥
सखिन समेत तहाँ सो आई । भरी उमंग अंग समुदाई ॥
नेरखि राममुख पंकज शोभा । प्रेम भरा मन अलि रसलोभा ॥
स्वकर पाणि धरि राजिव नैना । गई ल्यवाय मुदित निज ऐना ॥
अति सुन्दर आसन बैठाई । विविध भाँति कीन्ही सेवकाई ॥
सखिगण निरखि राम सुखभरहीं । निज निज रुचि सेवा सबकरहीं ॥

दो० औरहु जे नृप कन्यका आईं न्यवत विवाह ।
सिद्धि सदन गमनीं सकल राम मिलनकी चाह ॥

रामहि नखशिख जाय निहारी । भई प्रेम वश सब सुकुमारी ॥
हरि सनेह अनुरागिनि जानी । सादर सिद्धि सबहिं सनमानी ॥
बैठी मुदित प्रेम रस पागी । निरखहिं रामरूप अनुरागी ॥
ज्यहिदिशिप्रभुचितवहिंमुसकाई । भृकुटी कुटिल सुचाप चढाई ॥
वाण कटाक्ष ताकि हनिमारें । निकसे काढि हियो वहियारें ॥
घायल गात विकल ह्वै जाहीं । रहत सँभार देह कछु नाहीं ॥
प्रेम सु विष व्याप्यो सब जामा । छूट्यो लाज काज धन धामा ॥
यह न कछू प्रभुता बड़िगाई । मोहन विश्वरूप रघुराई ॥

दो० पुनि धीरज धरिकै सकल सादर भरीं हुलास ।

प्रेम उमगि श्री रामसों करन लगीं अलिहास ॥
बोली कोउ यक सखी सयानी। सुनहु राम दुलह छविखानी॥
सुनियत तुम्हरे कुल कोउ भूपा। भयो पुरुष ते नारि अनूपा॥
भोग कीन तिन सँग निशिराई। तिनयक पुत्र अनूपम जाई॥
कहिये साँचु अहै यह ताता। सुनि तिय अपर कहे मृदुवाता॥
हमहूं एक बात सुनि पाई। ब्याहन समय तुम्हारी माई॥
लै भाग्यो दशमुख निशिचारी। लोलुप नीच निरत परनारी॥
त्यहि पुनि पिता तुम्हारे ब्याही। कहिये साँचु अहै की नाही॥
और बात यक जगत प्रकाशी। केकै सुता परम छबिराशी॥
॥दो० नारद मुख सुनि तात तव विवश काम अकुलाय।
॥ ब्याहे त्यहिं करि छल अमित कालीदेव पठाय॥
यहिविधि अमित हास मे बाता। भई तुम्हारे घरमें ताता॥
सुनियत दशरथ रानि सुमित्रा। जन्मी यकसँग द्विसुत विचित्रा॥
यकसुत जन्मत गति जो होई। कहे कौन जाने तिय सोई॥
द्वै सुत एक संग तिन जायो। प्रसव बाट उन कितिक बढ़ायो॥
यहिविधि करहिं हास सबबाला। विलग न मानहिं रामकृपाला॥
तिन्हकी रुचि राखनके हेता। देहिं उतर नहिं कृपानिकेता॥
निरखि निरखि रघुवीर सुभाऊ। सखिसब लहहिंपरम मनचाऊ॥
ज्यहिउर रही लालसा जैसी। प्रभुसन किये भावना तैसी॥
॥ दो० रसिकराज रघुवंशमणि। प्रीतिपाल छवि ऐन।
॥ राखी रुचि सब तियनकी कृपासिन्धु सुख दैन॥
सब तिय राम प्रेमरस पागी। परवश भई देहसुधि भागी॥
सिद्धि कुँवरि बोली मृदु बैना। सुनहु बचन मम राजिवनैना॥
हम निज ननँद मिलावातुमको। देहु नेग मनभावत हमको॥

तरु जन्मभरि बनिये दासा । सुनि राघव मृदु वचन प्रकासा ॥
म क्षत्री सेवा नहिं कीन्हा । औरनते निज कारज लीन्हा ॥
निहैं सो न करत सुकुमारी । देवनेग रुचि जवन तुम्हारी ॥
निज मन भावत लीजे मांगी । बोली सिद्धि कुँवरि अनुरागी ॥
राजकुँवर सुन्दर सुरत्राता । देहुनेग यह म्वहिं सुखदाता ॥
सवैया ॥ प्रव प्राणप्रिया सुखधामसदा जन रञ्जन सन्तत भक्त
हितै । विन कारण दीनदयाल प्रभो दुख दासन मेटत कोर चितै ॥
गुण पुञ्ज सुपावत पार न वेद बखानत कोटिन कल्प बितै । यह
रूपत्रसो भगवन्त हिये ससमाज कृपाकरि रामनितै ॥
दो० एवमस्तु कहि वचन मृदु बोले राम सुजान ।
देहु बिदा प्यारी हमै ह्वैहहिं अवध पयान ॥
सुनि प्रभु वचन विरह रस पागे । बाण समान तियन उर लागे ॥
विवरण दशा कहत नहिं बानी । सहमि सुखिगइँ सकल सयानी ॥
समय विचारि धीर धरि भारी । बोली वचन सिद्धिसुकुमारी ॥
राजकुँवर रघुवर चित चोरा । सुर मुनि वनज बदन रविभोरा ॥
प्रथम प्रीतिके वश करिलीन्हा । अवक्यहिकाजदयातजिदीन्हा ॥
हम तजि आपु अवध जो जैहैं । तो क्यहिभांति प्राण मम रैहैं ॥
लोकलाज कुलकानि बड़ाई । सबतजि तुमहि प्रीति हमलाई ॥
सो न तजब तजबै बरु देहा । सुनहु राम मम प्रण दृढ़ येहा ॥
दो० कठिन प्रीतिकी रीति है ताहि न करिये काहु ।
जो करिये तौ जन्मभरि चहिये करन निबाहु ॥
अहै कठिन अतिप्रीति कि रीती । स्वइ जानै ज्यहि ऊपर बीती ॥
अपर कहा कउ जानै हाला । जिमिदुख प्रसव बांझवखाला ॥
ज्यहिसनजाहि प्रीति लगिजावै । ...

आठोपहर मीतकी मूरति। भूलतिनहिं त्यहिरहताबसूरति।
बिनु देखे मित्रहि निज नैना। एकौ क्षण न लहत मनचैना।
तनते अधिक मित्रहै प्यारा। त्यहिकिमिकहौ करैकोउन्यारा।
वैसाहि कऊ अदरदी होवै। मित्र विरह जो सुख सों सोवै।
त्यहिते राजकुँवर सुनि लीजे। विरह वियोगहमहिं जनि दीजे॥
दो० प्रीति कठिन संसार में जो दीजै करतार।
तौ न्यारो जनि कीजिये आपन प्रीतम यार॥
सवैया॥ जाय वसे वरु काननमें तजि भोग विषै जगको सुख सारो। ज्वाल त्रिताप जरै वरुआप कलापसहै दुख दारिद भारो॥ जीवनते वरु मृत्यु मिलै तजि स्वर्ग परै चहु नर्क मँझारो। पै भगवन्त करै करता न कबौं प्रियप्रीतम आपनन्यारो॥ लाजहु काज छुटै धनधाम अराम वहै कुलकानिहु टूटै। धर्म्महु कर्म्म तजै सगरे दुख भूरिसहै यम किङ्कर कूटै॥ योगहु ध्यान विराग छुटै ठग मोह मदादिकते धन लूटै। पै करतार कृपा करिदे भगवन्त कबौं निज मित्र न छूटै॥ त्यागिसुखै सब प्रेम मदांध फिरै जगमाहिं सहैबहु सोगू। आदर मान घटै सब ठांवरु शत्रु बनैं सगरे गुरुलोगू॥ जातिहु पांति सुजाति रहै घर नीचन मांगि करै वरुभोगू। पै भगवंत न दे करतार कबौं निज प्रीतम यार वियोगू॥ होत सुखौ दुख मूल सबै क्षणएक लहै कहुँ चित्त न चैना। खानहु पान रुचै न कछू जितहेरि तितै निज हित्त लगैना॥ झूलतिअन्तर मीत कि मूरति सूरति नैननते सुखदैना। ताहि कबौं सुख स्वप्न नहीं बिछुरै ज्यहि मित्र प्रिया सुख दैना॥ ऊँचहु नीच बिचार नहीं कछु प्रीति गई ज्यहिसों जब लागी। तारँगमें रँगिजात स्वई रहिजात नहीं पुनि अन्त दुजागी॥ भावतहै मन वाहिसदा भगवन्त रहै मतिस्वै रति

गी। तासु वियोगकरे विधि जो वसुधामें दहै खलु सो विरहागी॥
दो॰ ताते हम विरहीन को सुनिये राजकिशोर।
विरहानल जनि दाहिये प्रीतिपाल बरजोर॥

सवैया॥ करिप्रीति स्वछन्द कियो प्रहिले अब प्रेम कि ग्रन्थि छोरियना। अभिलाष अमीरसे प्यायलला सुवियोग हलाहल ोरियना॥ दये बांह निबाहन पारचही भैंभधारहिमें हरिबोरियना। गवन्त प्रदाय सनेह लला प्रतिपालकरो त्यहितोरियना॥ हम चां क स्वाति पयोद सदा सुख चन्दनते मुख मोरियना। अबलाकरि ोरि अजोरि लिह्यो चितजोरि मरोरि सतोरियना॥ यह प्रेमकफंद अनन्द मई गरडारि लला झकझोरियना। भगवन्त हमें सुखदै करि कै पुनि निर्दय ह्वै त्यहि छोरियना॥ यह प्रीति कि बाग लगाय भली सरसाइयु सींचि सु तोरियना। प्रतिपालक प्रीति सुनी तुमको त्यहि जोरि भली विधि फोरियना॥ भगवन्त प्रभानन चन्द अमी रस नैनन प्याय अजोरियना। अबला बलहीन विचारि हमें हरि प्रेम पयोनिधि बोरियना॥

दो॰ लगन लगी तो लगिगई अब नहि छूटत हार।
त्यहि त्यहि विधि निरवाहिये सुनिये राजकुमार॥
रसिकशिरोमणि रावरो भक्त कुमुद वन चन्द।
कबहुँन सुरति बिसारिये हम अबला मतिमन्द॥
सिद्धि आदि सबतियनकी बरणि सकैको भागि।
ऐसे प्रभुसन नेह जिन किये कपट छल त्यागि॥
नेह सरिस संसार में नहिं दूजो कछु आन।
बिना नेह नहिं मिलत हैं कृपासिंधु भगवान॥
नेह तो ऐसो चाहिये ज्यों पानी अरु क्षीर।

जहाँ बिकै तहँ आपने भाव बिकावै नीर॥
पावक जब जारन लगै प्रबल कोप करि क्षीर।
निज प्रीतम दुख देखिकै आपु जरावै नीर॥
नीरहि जरत बिलोकिकै पुनि पुनि पै उफलाय।
ऐसी जलपै प्रीति लखि नेहीजन बलिजाय॥
बिना नेह निर्छल किये कबहुं मिले नहिं पीव।
पीव मिले भगवन्त बिनु सुख न लहै यह जीव॥
तातें सब छल त्यागिकै हरिसन करिये सनेह।
धरिये उर मूरति स्वई जिन दीन्ही यह देह॥

सुनि इमि आरत बनितन बानी। सरल सनेह प्रेम रससानी॥
कृपासिन्धु रघुपति सुर रञ्जन। बोले बचन भक्त भय भञ्जन॥
सुनहु प्रियहु निज कहौं सुभाऊ। नहिं राखौं कछु तुमहिं दुराऊ॥
मोसन प्रीति करै जो कोई। ऊँच नीच चाहै सो होई॥
प्राण सरिस राखौं सो मानी। गहौं सुगुण सब अवगुण भानी॥
यह हमारि संतत है रीती। जानहिं ते जिन कीन्हीं प्रीती॥
जो हमसन दृढ़ प्रीति लगावै। स्वप्नेहु सो न तनक दुखपावै॥
अपर जिते प्रेमी जगमाहीं। निर्छल प्रीति काहुमें नाहीं॥

दो० सूर कमल अरु चातकी स्वाती चंद चकोर।
अम्बुमीन अरु पाँखियाँ दीप शिखा घनमोर॥

मित्र मित्र पंकज प्रिय अहई। जबत्यहिं समय पाय हिमिदहई॥
तासु पीर रवि तनक न जानै। इमि प्रीतम कर को यशभानै॥
चातक पीव पीव रटलावै। पीव बिरह निज प्राण गँवावै॥
पीव न जीव दया कछु धरई। ऐसी प्रीति दैव जनि करई॥
चितवत शशिहि [illegible] सब सुधि बिसरावै॥

तासु प्रीति नहिं चंद्र विचारै। अपनी विरह ताहि नित जारै॥
बिछुरत जलहिं मीन मरिजावै। तद्यपि जल उर दरद न आवै॥
जरत पतंग प्रेम वशदीपै। जारत सो न दया धर जीपै॥

दो० निज प्रीतम घन मोद लखि नाचत कानन-मोर।
सो नहि हेरत तासु दिशि मारत पाहन घोर॥
प्रीतिवंत ऐसे बहुत हम देखे संसार।
यक तौ तनमन दै रह्यो एक दया नहिंधार॥

हमरी प्रीति अहै असिनाहीं। जैसी कह्यु इन प्रेमिन माहीं॥
हमसन प्रीति रीति जे करहीं। एकौ क्षण न ताहि परिहरहीं॥
मम मित्रहि दुख देन जु चाहै। सोदुख वेह खल आपहि साहै॥
तजि सब आश हमहिं रति लावै। ब्रह्मादिक त्यहि शीश नवावै॥
निज तन तातन भेद न राखै। त्यहितजि एकप्रासनहिंचाखै॥
तन धन अरु त्रिभुवन सुखसारे। येनहिं लागहिं म्वहितसप्यारे॥
जैसकछुम्वहिं निज प्रियासनेही। म्वहितजिनाहिंआनगतिजेही॥
अस प्राणी म्वहिं विसरत नाहीं। बसत सदा सो मम उरमाहीं॥

॥दो० जप तप योग मखादिते मोहिं सकै नहिं पाय।
पर यक प्रेमी जननते चलत न मोर उपाय॥

तुम सब प्रिया प्रेमकी मूरति। धनि धनि धन्य तुम्हारीसूरति॥
प्राण समान हमहिं तुम प्यारी। कबहुँ न होहु मोसन न्यारी॥
सदा बसैं हम तुम्हरे पासा। मानहु प्रिया वचन विश्वासा॥
स्वर्ग पताल भूमि दिशि चारौ। करि मनथिरज्यहिओर निहारौ॥
अग जग मैं त्रिभुवन सब ठांई। केवल हमरहि रूप दिखाई॥
सुनि प्रभु वचन ध्यान उरआनी। सिद्धिआदिसब कुँवरिसयानी॥
बढ्यो प्रेम मन धीरज कीन्हा। रामश्याम छवि उरधरिलीन्हा॥

यहु विधि करि रघुवीर बड़ाई । पुनि बोलीं सब अलि शचुपाई ॥

दो० धन्य धन्य रघुनाथ हम आपु कृपा बड़ि कीन ।
बूड़त सागर जगत में राखि बाँह गहि लीन ॥
हम अबला संतत अबलि करि न सकैं उपकार ।
रवि सम कबहुँ कि होवहीं जुरै जु दीप हजार ॥

सवैया ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि विषे वश कर्म विरश्चि कृपा करि देही ॥ आनि परै दुखहू सुख जो हित मानि सबै शिर सोस हि लेही ॥ और कछू चित चाह नहीं भगवन्त उरास अहैं यक येही । राजिव लोचन राम मिलौ तुमही तहँ आपने प्राण सनेही ॥ लागि सदा तुम सों रतिहै गतिहै उर अंतर औरन केही । जानिलहौ स ज्ञानशिरोमणि ध्यानधरो बिनती मम येही ॥ कर्म प्रभाव जह भगवन्त लेहौ जग जन्म तहाँ तनतेही । राजकुमार मिलौ तुमहि नित राजिवलोचन राम सनेही ॥ ज्वैकरतार दियो करि छोह मह मह मोद पिये भरि घूँटै । दुर्लभ देवन रूप जहाई त्यहि नैन निहारि हिये सुख लूटै ॥ स्वैकरतार कृपा करिदे जग जार चेहैं तित यातन छूटै । पैप्रभु सों यह लागि लगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न टूटै ॥

दो० । सुनि सप्रेम बाणी मधुर रामकृपा सुख ऐन ।
सन्माने बहु विधि सबहि कहि प्रिय सुन्दर बैन ॥
पाय बिदा सब सों बहुरि आये सासु समीप ।
बन्दि चरण लहि आशिषा गमने रघुकुल दीप ॥
द्वार आय मिथिलाधिपहि बन्दि रजायसु पाय ।
जनवासे गमने मुदित सहित सखन चहुँभाय ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ चहुँ बन्धु सानँद सखन युत असवार वाजिन भये । मग देत लोचन लाहु सबको आइ जनवासहि गये ॥

शिरनाय कीन्ह प्रणाम भूपहि निरखि नृप सुख पायऊ॥ भगवान्
दै आशीश बहुविधि हरषि ढिगै बयठायऊ॥
॥ दो० ॥ रामचरित अद्भुत अमित अमित कहत श्रुति सन्त॥
॥ ॥ बरणि सकै सो कौन विधि अति मति लघु भगवंत॥
॥ इतिश्रीमद्रामायणे सिद्धधर्मात्मजभगवतासिंहविरचिते ... शिरोमणिग्रंथी
॥ ॥ रामचन्द्रकलेवा कर्णवर्णनोनाम त्रयोदशोध्याय १३॥ ॥
॥ सो० ॥ सवन कंद तन श्याम चन्द्रानन पंकज नयन।
॥ ॥ त्यहिपद करौं प्रणाम भवभय भंजन नाम ज्यहि॥
॥ ॥ दलन मोह तम घोर दानि मुदासुर सुर सुजन।
॥ ॥ दशरथ राज किशोर वन्दौं पुनि पुनि नायशिर॥
॥ दो० ॥ नित नव आदर सहस विधि करै भूप मिथिलेश।
॥ ॥ प्रेम विवश अवधेश को जान देत नहिं देश॥
॥ सवैया ॥ मांगहि राउ विदा उठिकै नित राखहिं भूप समेत स-
नेहू॥ भूरि उछाह बढ्यो मिथिलापुर राजन गौन सुहाय न केहू॥
जाय सतानंद कौशिक तौ समुझाय कहे बहुभांति विदेहू। बीति
गये बहुवार इतै अब कौशलपालहि आयसु देहू ४॥
॥ दो० ॥ भलेहिनाथ कहि जनकनृप सचिवहि कह्यो बुलाय।
॥ ॥ कौशलपति चाहत चलन भीतर देहु जनाय॥
॥ ॥ सत्यगमन सुनि अवधपति मिथिलापुर नरनारि।
॥ ॥ भये विकल पंकज यथा बिछुरत सांझ तमारि॥
॥ ॥ तीनिमास मिथिला नगर दशरथ कीन निवास।
॥ ॥ ताते दुउ दिशि सकलजन फँसे प्रेमकी फांस॥
॥ ॥ आवत पथ बरातवर जहँ जहँ कीन्ह निवास।
॥ ॥ पठै दीन तहँ तहँ जनक बहुविधि भोग विलास॥

बहु विधि करि रघुवीर बड़ाई । पुनि बोलीं सब अलि सुखपाई ॥

दो० धन्य धन्य रघुनाथ हम आपु कृपा निज कीन ।
बूड़त सागर जगत से राखि बाँह गहि लीन ॥
हम अबला संतत अबल करि न सकैं उपकार ।
रवि सम कबहुँ कि होवहीं जुरै जु दीप हजार ॥

सवैया ॥ जन्म जहां ज्यहि योनि विषे बस कर्म विरञ्चि कृपा करि देही ॥ आति परै दुख सुख जो हित मानि सबै शिर सो सहि लेही ॥ और कछू चितचाह नहीं भगवन्त उरास अहै यक येही । राजिव लोचन राम मिलौ तुमही तहँ आपन प्राण सनेही ॥ त्यों सदा तुम सों रति है गति है उर अंतर औरन केही । जानतहौ स जानशिरोमणि कानधरौ बिनती मम येही ॥ कर्म प्रभाव जहै भगवन्त लहौ जग जन्म तहाँ तन तेही । राजकुमार मिलौ तुमही नित राजिवलोचन राम सनेही ॥ ज्यैकरतार दियो करि छोह महा महमोद पिये भरि घूटै । दुर्लभ देवन रूप जुई त्यहि नैन निहारि हिये सुख लूटै ॥ त्यैकरतार कृपा करिदे जयज्ञार चहै तित यातन छूटै । पै प्रभु सों यह लागि लगी भगवन्त सु कौन्यहु जन्म न छूटै ॥

दो० सुनि सप्रेम बाणी मधुर रामकृपा सुख ऐन ।
सन्माने बहुविधि सबहि कहि प्रिय सुन्दर बैन ॥
पाय बिदा सब सों बहुरि आये सासु समीप ।
बन्दि चरण लहि आशिषा गमने रघुकुल दीप ॥
द्वार आय मिथिलाधिपहि बन्दि रजायसु पाय ।
जनवासे गमने मुदित सहित सखन चहुँभाय ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ चहुँ बन्धु सानँद सखन युत असवार बाजिन भये । मग देत लोचन लाहु सबको आइ जनवासहि गये ॥

कांफूलै। पटुता मिस्सी लाय खाय आनन ताम्बूलै॥ इतिसाजि
नोहर नवलतन षोडश विधि शृंगारकल। भईचढ़त मुदित शि-
र्कन सुभग प्रियदासी सियकी सकल॥
क्षौ॥ सवाउक पिंजर साजे। कनकखचित अति रुचिरविराजे॥
नमहँ विहँग अनेक सुहाये। जिनहिंसीय सुखमानि जियाये॥
ये किरन सेवक समुदाई। जेरत संतत सिय सेवकाई॥
हिर सब मंजुरी समाजा। पाव न वरणि पारे अहिराजा॥
नि पट भूषण मणि लाला। दायजुदीन अमित महिपाला॥
सिवैया॥ दायजु जाल दियो महिपाल वहोरि समोद सुको-
हि राजहि। क्यों भगवन्त बखान करै न विखानन योग सुहै
हेराजहि॥ सम्पति सो अवलोकि सबै लघु लागत लोकनि
पुरराजहि। है न कछू विभु भूरि यतो जहँ दुल्लह आपु बनै
राजहि॥
दो॰ सुनत बरात पयान सब रानिन सुता सवाँरि॥
लगीदेन शिख आशिषा लय लय गोद दुलारि॥
कवित्त॥ सेयहु सुभाय सासु स्वसुर चरण चारु भोरयहू सदैव
ह आयसुन पेल्यहू॥ राखिरख स्वामि काज करव सकल नित्त
दहू सुमोद अवि सँग तासु भेल्यहू॥ धारि दृढ धर्म्म पतिव्रतहि
नीत यश कीरति विशाल लोक लोकनै सकेल्यहू। भाग्य-
ते होहु पीव सन्तत पतिन पुत्रि जानि भल वैन माल गूँथि
एठे मेल्यहू॥
दो॰ अति सनेह सब कन्यकन सखिन तियन सुखदैन॥
सो॰ नारि धरम सिखवहि मुदित कहि प्रियकोमल बैन॥
तिव्रत निरत सदा जे वामा। तिनकर यह सुधर्म अभिरामा॥

पुनि सानन्द जनक महराजा। विविधभांति दायजु बहुसाजा॥
दिग्गज सहस पचास सजाये। जिनहिदेखिदिशि नागलजाये॥
श्यामल अंग पुष्ट दंतारे। दीरघ मत्त पुंज बलभारे॥
कसी जरकसी मंजु अँवारी। भूलि रहीं भूलें छविकारी॥
मणि मुक्ता मै भालरि राजे। वरणि न जाहिं करिणकीसाजें॥
गाजहिं गज घंटा घहराही। रहीपूरि रव त्रिभुवन माहीं॥
तुरँग लाख दश नखशिखसाजे। रथ वाजिन ते अधिक विराजे॥
चंचल नवल वपुस निरदूषण। भूषण द्युति किरणी जनु पूषण॥
मन मारुत ते वेग अपारा। वरण वरण वरणै को पारा॥
अरुण पीत सित नील गुलाबी। लक्खी हरित सुऊदी आबी॥
दश हजार स्यंदन सजवाये। भानु यान उपमा नहि पाये॥
वृषभ बृन्द दशलाख सँवारे। अति सुन्दर सब गुणगण भारे॥
महिषी लाख सत्तानबे साजी। देखत जिनहिं होत मन राजी॥
मनहुँ श्याम घन सुवन सुहाये। नभते उतरि चरन महि आये॥
कंचन मढ़ित शृंग छवि जारा। सोहत कण्ठ मणिन के हारा॥
शिशु सुकुमार लिये सँग प्यावैं। दूध धार धरणी धसि जावें॥
यककरोरि चौरासी लक्षा। सजीं धेनु सोहत सँग वक्षा॥
कामधेनु सम सब फलदानी। सूधी परम दूध की खानी॥
सबहिन सुवरण शृंग मढ़ाई। मुक्ता पूँछ रजत खुर लाई॥
अंग अलंकृत सकल विशेखी। को छवि कहै ज्ञान जिन देखी॥
लक्ष बहत्तरि शिविका साजीं। तिनपर सियदासी सब राजीं॥
भइजनु काम वाम असवारा। सबतन करि षोडश शृंगारा॥
छप्पै॥ उबटन मंजन चीर चरण जावक सजिवारे। लेपन म
सिंदुर मेहँदी बेसरि धारे॥ अरगजारु शुभ गन्ध नयन अंज

फूलै। पढ़ता मिस्सी लाय खाय आनन ताम्बूलै॥ इतिसाजि
ोहर नवलतन षोडश विधि शृंगारकल। भईचढ़त मुदित शि-
कन सुभग प्रियदासी सियकी सकल॥
क्ष सवाउक पिंजर साजे। कनकखचितअतिरुचिरविराजे॥
नमहँ विहँग अनेक सुहाये। जिनहिसीय सुखमानिजियाये॥
सेकरन सेवक समुदाई। जेरत संतत सिय सेवकाई॥
खीहिर सब जुरी समाजा। पाव न वरणि पार अहिराजा॥
र्चन पट भूषण मणि लाला। दायजुदीन अमित महिपाला॥
सवैया॥ दायजु जाल दियो महिपाल वहोरि समोद सुको-
राजहि। क्यों भगवन्त वखान करै न वखानन योग सुहै
राजहि॥ सम्पति सो अवलोकि सवै लघु लागत लोकनि
राजहि। है न कछू विभु भूरि यतो जहँ दुल्लह आपु वने
जिहि॥
सुनत वरात पयान सब रानिन सुता सँवारि॥
लगीदेन शिख आशिषा लय लय गोद दुलारि॥
कवित्त॥ सेयहु सुभाय सासु स्वसुर चरण चारु भोरयहू सदैव
आयसु न पेल्यहू॥ राखिरुख स्वामि काज करब सकल नित्त
हू सुमोद अवि सँग तासु मेल्यहू॥ धारि दृढ़ धर्म्म पतिव्रतहि
ोत यश कीरति विशाल लोक लोकनै सकेल्यहू। भाग्य-
ते होहु पीव सन्तत पतिन पुत्रि जानि भल बैन माल गूथि
ठि मेल्यहू॥
सो॰ अति सनेह सब कन्यकन सखिन तियन सुखदेन॥
नारि धरम सिखवहि मुदित कहि प्रियकोमल बैन॥
तव्रत निरत सदा जे बामा। तिनकर यह सुधर्म अभिरामा॥

प्रथम स्वपति भोजन करवावै। पाछे अशन आप सो पावै।
पतिहि सुताय सु सोवन लागे। पतिसों प्रथम आपु नितजागै।
संतत कर पति हित अनुरागी। छल विहीन जे तियवड़भागी।
बोलैं पति गृह काज विहाई। तुरत समोद [illegible]
जोरि पाणि युग करि सुप्रणामा। वदै [illegible]
कयहि कारण बोल्यो प्रभु मोही। आयसु होइ करौं तुर [illegible]
जो आज्ञा देवै पति ताही। करै तुरत [illegible]
स्वप्न स्वपति नित मूरति देखे। परपति दृष्टि कबहुं [illegible]
सो तिय उत्तम वेद बखानै। [illegible] पतित जु [illegible] आन
पितृ भ्रातृ सुतवत परनाहै। पश्य तिया सो मध्यम आहै
जो निज धर्म समुझि मनमाहीं। रहै निकृष्टा कथित ताहीं
पतिकुल त्रास न कर अघ जोई। पतिव्रता अधमा है सोई
प्रत्युत्तर जो पति सों ठानै। रहै सदा मन क्रोध समानै॥
शरमाग्राम कहै श्रुति ताही। कैपि शृगालिनि वनके आही॥
उच्चासन कबहुं नहिं सेवै। दुष्ट निकट पग भूलि न देवै॥
लज्जाकार वचन पतिपाहीं। रंचक कहै कबहुं तियनाहीं॥
नारि धरम यह जो मैं गावा। शिवपुराण महं सो सब पावा॥

दो॰ नारिधर्म यहिविधि सवहिं सादरसखिन सिखाय।
वारहिंवार सनेहवश लोहिं सकले उरलाय॥

सवैया। त्यहि औसर सानुज राम तहां सुविदा हित भूपति ऐन गये॥ लखि आवत राजकुमारन रानि समोद वरासन आनि दये॥ शिरनाय सुभाय प्रणाम सुकै लहिशासन आसन वैठिगये।

सुखवृन्द अनंदित कंद मनोज लजाये ॥ हित विदा नृपमंदिर में पयान किये दशरथनंदन जाये । निमिराज सुहाल विहाल कमील ताली सबै छवि देखन धाये ॥ कवित्त ॥ कहैं एक एकनसों बातें यों प्रथिजात नैनन निहारि आजु रूप यों सुलीजिये । कोशल कुमारलाल सुखमा विशालजाल पोचन सप्रेमकार क्षेम धाय पीजिये ॥ चाहत चलन आजु प्राणन अधार ए सुमूरति पुनीतमणि फणि मन कीजिये । भाग्यवंत धारि उर रूप ये अनंद धाम पूरण सुकाम पामआठ सुखभीजिये ॥ जाने कौन कौनधौं सुकृतभे सुलभ आनि रूपके अगार येकुमार चारु चारिहू । लेहु भरि नैनन निहारि लाहु जन्म जग चाहत चलनभूप कीनहे तयारिहू ॥ हतो यतनेइ योग इनको हमारे इत भयो सो व्यतीत अब बीच विधि डारिहू । कहत परसपर बातें इमि बारबार मगन पयोधि प्रेम सबै नर नारिहू ॥ सवैया ॥ लखि राघवरूप छटा अमली बश प्रेमभई गजगामिनियां । सुधिभोरि चकोरि सो गोरि सबै अवलोकि मुखै विधु यामिनियां ॥ ठगिसी रहिं चालत नाहिं पगे लखि दीपयथा मृग भामिनियां । धनप्राणन वारि निहारि पगी मिथिलापुरकी सब कामिनियां ॥ मिथिलापुरकी मिलि नारि सबै करि आपुस माहिं रहीं बतियाँ । हमको इन दर्शन ऐस भयो नरकीनर पाव यथा गतियाँ ॥ सुखजात कह्यो मुख एक नहीं अवलोकत शीतलभे छतियाँ । मन भावतहे कछु और नहीं इनके रसप्रेमपगी मतियाँ ॥ तनत्याग समै जिमि पावि कऊ रसअमृत त्यों हमको अलियाँ । इन दर्शन आनँद दानि भयो जगजीवन लाहु लह्यो भलियाँ ॥ मनमोदि महा यश पाय भली जलजात कली भ्रमरावलियां । भगवन्त निछावरि प्राण करैं लखि रूप नखशिख माथलियां ॥ अति सुन्दर श्याम

प्रथम स्वपति भोजन करवावै। पाछे अशन आप सो पावै॥
पतिहि सुलाय सु सोवन लागै। पतिसों प्रथम आपु नितजागै॥
संतत कर पति हित अनुरागी।
बोलैं पति गृह कारज विहाई।
जोरि पाणि युग करि सुप्रणामा। वदै वचन ऊर्मि तिय
क्यहि कारण बोल्यो प्रभु मोही। आयसु होइ करौं
जो आज्ञा देवै पति ताही। करै तुरत
स्वप्न स्वपति नित मूरति देखै। परपति
सो तिय उत्तम वेद बखाने। निजपतितजि
पितु भ्रातृ सुतवत परनाहै। पश्या तिया सा मध्यम आहै॥
जो निज धर्म समुझि मनमाहीं। रहै
पतिकुल त्रास न कर अघ जोई। पतिव्रता अधमा है सोई॥
प्रत्युत्तर जो पति सों ठानै। रहै सदा मन क्रोध समानै॥
शरमाग्रास कहै श्रुति ताही। कैपि शृगालिनि वनकै आहीं॥
उच्चासन कबहूं नहिं सेवै। इष्ट निकट प्रेम भूलि न देवै॥
लज्जाकार वचन प्रतिपाही। रंचक कहै कबहुँ तियनाहीं॥
नारि धरम यह जो मैं गावा। शिवपुराण महँ सो सब पावा॥

दो०। नारिधर्म यहिविधि सबहिं सादरसखिन सिखाय।
बारहिंबार सनेहवश लेहिं सकल उरलाय॥

सवैया। त्यहि औसर सानुज राम तहां सुविदा हित भूपति ऐन गये॥ लखि आवत राजकुमारन रानि समोद वरासन आनि दये॥ शिरनाय सुभाय प्रणाम सुकै लहिशासन आसन बैठिगये। भगवंत नृपाजिर मध्य मनो सुउदै विधुपूरण चारि भये॥ चारिहु भाय सुभाय मनोहर श्यामलगोरि महाछबिछाये। आननचंदप्रभ

छन्द अनंदित कंद मनोज लजाये ॥ हित बिदा नृपमंदिर में प्रयान किये दशरथनंदन जाये ॥ पाय सुहाल बिहाल कमाल नालि सबै छवि देखन धाये ॥ कवित्त ॥ कहैं एक एकनसों बातें यों पिथजात नैनन निहारि आजु रूप यों सुलीजिये । कोशल कुमारलाल सुखमा बिशाल जाल पावन सप्रेम कार क्षेम धाय पीजिये ॥ चाहत चलन आजु प्राणन अधार ए सुमूरति पुनीतमणि गणि मन क्रीजिये । भाग्यवंत धारि उर रूप ये अनंद धाम पूरण सुकाम धामआठ सुखभीजिये ॥ जानै कौन कौनधौं सुकृतभे सुलभ आनि रूपके अगार येकुमार चारु चारिहू । लेहु भरि नैनन निहारि लाहु जन्म जग चाहत चलनभूप कीनहे तयारिहू ॥ हतो एतनेई योग इनको हमार इत भयो सो व्यतीत अब बीच विधि डारिहू । कहत परस्पर बातें इमि बारबार मगन पयोधि प्रेम सबै नरनारिहू ॥ सवैया ॥ लखि राघवरूप छटा अमली वश प्रेममई गजगामिनियां । सुधिभोरि चकोरि सो गोरि सबै अवलोकि मुखै विधु यामिनियां ॥ ठगिसी रहिं चालत नाहिं पगे लखि दीपयथा मृग भामिनियां । धन प्राणन वारि निहारि पगी मिथिलापुरकी सब कामिनियां ॥ मिथिलापुरकी मिलि नारि सबै करि आपुस माहिं रहीं बतियाँ । हमको इन दर्शन ऐस भयो नरकीनर पाव यथा गतियाँ ॥ सुखजात कह्यो मुख एक नहीं अवलोकत शीतलभे छतियाँ । मन भावतहे कछु और नहीं इनके रसप्रेमपगी मतियाँ ॥ तनत्याग समै जिमि पावे कऊ रसअमृत त्यो हमको अखियां । इन दर्शन आनँद दानि भयो जगजीवन लाहु लह्यो भलियां ॥ मनमोद महा यश पाय भली जलजात कली भ्रमरावलियां । भगवन्त निछावरि प्राण करें लखि रूप नलीशिख माथलियां ॥ अति सुन्दर श्याम

स्वरूप सुदाकर देखतही सुख धामिनियाँ। तन लाजभगी मति पगी रँगराम रँगी सब कामिनियाँ। जगआश जिती मनभ तिती छन ताहि वितीन सुहाविनियां। भगवन्तमनाव वि हिये यह रूपवसो दिन यामिनियाँ॥ नहिं आश हिये ऋधिसि किये फल चारिहु चाह नहीं रखिया। परवाह नहीं कछु औ जगजाल सुतो हित ना भखिया॥ अरु शंक नही गुरु लोग मन लुब्धभयो अव तो सखियां। निवहे परटेक सुएकयही विल नहीं इनसों अँखियां॥

दो॰ यहिविधि पुरनरनारि सब बन्धन समेत सनेह। कहहिं परस्पर प्रेमवश विसस्यो तन धन गेह॥

चामरछन्द॥ रूपसिंधु बन्धुचारु चारिहू निहारिकै। आ उतारहीं समोद सासु वारिकै॥ प्रेमपुंज छायहीय नैननीर धार रामरूप माधुरी विलोकि प्राण वारही॥ लाजही रही न नेकु प्री भूरि छायऊ। पावना सनेह तासमैक भाखि नायऊ॥ चारिहू सु इनै उवट्टिकै न्हवायऊ। भांति चारि भोजनानि प्रेमसो जेंवायऊ जेय पाय पान वैठि हर्षि आसनायकै। प्रेवही प्रभास प्रेम सासु यँ चायकै॥ चंचरीकछन्द॥ जानि औसर राम तौ मृदुवैन वोल सासुसों। राउ चाहत जान औधहि देहु आयसु आसुसों॥ मो आपने जानि वालक मातु छाँड़व नेहना। पीवहै जस नेह मोव भाव तो तस देहना॥ वानि कोमल राम यों अभिराम सानि स हकी। रानिनै सुनि शोकभो वहुभूलिगै सुधि देहकी॥ लीनल कुमारि चारिहु प्रेमसों सवनै हिये। वार वारहि भेंटि सादर सौंपिकै पतिनै दिये॥

दो॰ पतिन सौंपि सब कन्यकन बहुविधि विनै सुनाय।

सो॰ जोरिपाणि पुनि वचन मृदु कहत सुनैना माय ॥

तोटक छन्द ॥ सुनिये सुत जीवनप्राण मया । बिनती इतनी करि सूरिदया ॥ परिवारहि राजहि मो समजा । सम प्राणप्रिया नित ये तनुजा ॥ तिहिं तातिबयारि लगी कबहूं । पुतरी दृगसों रखती सबहूं ॥ कर आपु निवाह अहै तिनको । नहिं रक्षक आन बियो तिनको ॥ निज किंकरि मानव तात इन्हें । तजि आपुगती नहि आन जिन्हें ॥ बहुभाँति बुझाय न तात कहौं । बलिजाउँ सबै तुम जानतहौ ॥ यहि भाँति बिनै बहु रानिकरी । गहि राघव पंकज पांयपरी ॥ मुख आवत बानि न प्रेम फँसी । लखि राम प्रभानन पूर्ण शसी ॥ शंखनारी छन्द ॥ इदं सासुवानी । सुप्रेमाम्बु सानी ॥ सुनी राम ज्योंहीं । कृपासिंधु त्योंही ॥ चतुरंसा छन्द ॥ कहि मृदुबानी । प्रभु सुखदानी ॥ बहुशिख दीन्हें । चित थिरकीन्हें ॥ तब रघुबीरा । अति मति धीरा ॥ जन-भख नीरा । परम गँभीरा ॥ युग कर जोरी । सुख रस बोरी ॥ कहत सुबानी । अब म्वहिं रानी ॥ शंखनारी छन्द ॥ विदा बेगि दीजै । कृपादृष्टि कीजै ॥ इदं भाखिरामा । उठिकै प्रणामा ॥

दो॰ पायविदा आशिष अमित पुनि पुनि शीशनवाय ।
पितु समीप गमने मुदित सहित अनुज रघुराय ॥
कमल नैन श्रीराम छवि मंजु मधुर उर आनि ।
प्रेमविवश मनतन शिथिल अतिसनेह सनरानि ॥

शुभगीत छन्द ॥ पुनि धीर धरि सब कुँवरि सादर मातु लई हँकारिकै । मणि बसन भूषण भूरि नखशिख सखिन सजे सँवारिकै ॥ पुनि चलन तर मन लहत दुख सब विकल जननी ...

उरलाय पुत्रिन्ह बारबारहि प्रेमवश मुख जोवहीं ॥ पहुँचाय पुनि फिरि मिलहिं भरि भरि अङ्क जल नैनन बहे। त्यहि समय प्रीति कि रीति अति भगवन्त भयो नैनन कहे ॥ सवैया ॥ प्रेम पयोनिधि मग्न सबै नरनारि समेत सखी रनिवासू। रोवहिं पुत्रिन लाय हिये पट भीजि गये दृगधारिन आँसू ॥ देखि विलाप कलाप समय अस कौन भयो उर जासु हरासू। मानहु श्रीमिथिलेश पुरै करुणा विरहानि कियो सुनिवासू ॥

दो० जे शुक सारिक जानकी कनक पींजरन राखि।
पालि पढ़ाये विकलसे रहे सकल अस भाखि ॥
हाय प्राण प्रीतम सिया कित गई तजि मोहिं।
सुनि वाणी सानी विरह तजे न धीरज कोहिं ॥
जहां दशा असि जड़नकी कहै सचेतन कौन।
समय समाज विषाद बड़ कहत बनै नहिं तौन ॥

कुण्डलिया ॥ ताही अवसर बंधुयुत आये तिरहुतिराय। प्रेम उमंगि जल नैन भरि लीन सियहि उरलाय ॥ लीन सियहि उरलाय ज्ञान गुण ध्यान पराने। प्रबल रामसिय नेहजानि मन सकल डराने ॥ आनेजिव रिपु मोह भयाप सहायक ताही। निरखि सहायक सबल तेपि गवने तुरताही ॥

दो० समुझाये सब सचिव मिलि कुसमय जानि नरेश।
धरि धीरज दीन्ह्यो बहुरि मंत्रिहि बोलि निदेश ॥
साजि मनोहर पालकी वेगि लयावहु जाय।
मुनिशासन आने तुरत शिविका दिव्य सजाय ॥

॥ कवित्त ॥ पौष शुक्ल शोभ दशमी लगन मीन रेवती नक्षत्र

चंद्र दाहिने तुमानिके। प्रेमवश भूप सब सहित समाज हर्षि बंदि गणराज देव साधु सन्तमानिके॥ सादर कुमारिकान पालकी चढ़ाय फेरि दीन सीख भांति भूरि नारि धर्म भानिकै। कीनयों पयान सीय सगुन अनेक होत वर्षहीं प्रसून व्योम देवगण आनिकै॥ सीयके चलत सब व्याकुल नगर लोग रोदन अपार के सुशोच वश ह्वैरहे। सचिव समाज साथ चले तीरहुतिनाथ पुत्रिन पठावने सुनैन जल च्वैरहे॥ रोवत बिचारि भूप सकल कुमारिकान धीरज कलाप मृदुबैनन सो दै रहे। रोवहू न पुत्रिवेगि लेवहों मँगाय तुम थोरही दिवस माहिं तोपयोहि कैरहे॥ रोलाछन्द॥ बाजहिं विपुल निशान नगर नभ आनँदभारी। रथ वाजिन गज साजि बरातिन किये तयारी॥ दशरथ मुदित बुलाय सकल द्विज वृन्दन लीन्हे। दान मान करि विनय तिन्हहिं परि पूरण कीन्हे॥ वारवार शिरनाय चरण रज नैनन लाई। पाय अशीश महीश मुदित मन सुख न समाई॥ तब दशरथ मनमाहि सुमिरि सादर गणराजै। कीन्हे अवध पयान सहित निज सकल समाजै॥ मंगलमूल अपार सगुन सुंदर मग पाये। बरषहिं विपुल प्रसून देव नभ संकुल छाये॥ पुनि याचकजन बोलि अवधपति सादर लीन्हे। धनमणि भूषण बसन बाजि गजरथ बहुदीन्हे॥ भे परिपूरण काम सकल विरदा-वलि भाखी। चले मुदित फिरिमौन हृदय निज रामहिं राखी॥ पुनि पुनि कहत महीप पलटि मिथिलाधिप जाहू। तदपि प्रेमवश फिरव चहत नाहिंन नरनाहू॥ तब ठाढ़े भय उतरि भूप लोचन जल छाये। कहत जाहु फिरि जनक दूरि बढ़िलों चलि आये॥ तब सादर शिरनाय जोरि युग पंकजपानी। कहत जनक मृदुबानि मनहु रस अमृतसानी॥ महाराज क्यहिं भांति कहों मैं बि-

नय सुनाई ।। जानि नाथ निजदास दीन म्वहिं विपुल बड़ाई। सुनत सरल मृदुवैन अवधपति अति सुखमाने। वहु निधि सहित सनेह जनक समधिहि सनमाने ।। तब नृपते ह्वै विदा जनकसु निगन शिरनाये। आशिर्वाद सुपाय हरष नहिं हृदयसमाये पुनि सादर जामात सकल भेटे नृपजाई। छविसागर चहुँ बंधु नि रखिमन सुख न समाई ।। गौरस्याम अभिराम कोटि मनसिज म मोचन। आनन चन्द प्रकाश अमल पंकज नव लोचन ।। सहि प्रीति करजोरि कहत मंजुल मृदुवानी। रामकरौं क्यहिभांति विन त्रिभुवन सुखदानी ।। छंद तोटक ।। क्यहि भांति प्रशंस करों प्र मैं । तव व्यापक रूप चराचर मैं ।। सुखसिंधु गुणालय धामपरे ज्यहिं ध्यावत शंकर ध्यानधरे ।। परतन्त्र नहीं निज तंत्रसदा। ज्य हिनेति निरंतर वेदवदा ।। रस एक ज्वई तिहुँकाल रहे । महिमा ज्यहि वेद न पार लहे ।। जन योगि सदा ज्यहि लागि करें। तपका नन आनन नाम रैं ।। गुणगावत नारद व्यास सदा। नहिं पावत पार अनंत जदा ।। जनसंसृत मोचन दीनहितं । सतचेतन आ नंद रूपनितं ।। त्रयताप निवारण भो शमनं । सुररंजन दुष्ट दल दमनं ।। तवरूप अनूपम वेदपरे। गुण शीलक्षमादि अनेक भरे।। मुनि सिद्ध सदा यश गावतहे। चतुरानन ध्यानन पावतहैं।। करु णालय रामकृपाल स्वई। ज्यहि थाह न पावत पार कई।। मम नैन विषै स्वइ आनिभयो। करि भूरिकृपा सुख पूरिदयो।।गुरुतातिहु सव भांति दिये। जन जानि सदा अपनाय लिये।। मुख एककहै यशभानि कहा। पुरयो अभिलाष यथाहि रहा।। शुक शारदनार शेषहु जो। शत कल्पकरैं मिलि लेखहु जो।। मम भाग गुणोत आपु जिते। न सिराहिं कहे तिनसो पि तिते।। अवकै सुकृपा वर ए

दियो। भगवंत जुपाय प्रसन्न हियो॥ सवैया॥ जे पदपंकज चारु सदा मनमानस शंभु धरेअनुरागैं। जे पदसेवत देव सबैमुनि सिद्धकरैं लगि जा जपजागैं॥ जे पदपंकज सो भ्रकुटी सारि देव विलोकत ज्वै अघभागैं। ते पदपंकज शोभमई भगवंत कवौं मन मो नाहि त्यागै॥

दो० सुनत प्रेममै वचनवर रामकृपा सुखऐन।
सन्माने बहुविधिश्वसुर करि विनती मृदुवैन॥

पुनि नृप जाय भरतकहँ भेटे। लीन लगाय हरषि निज पेटे॥
बहुप्रकार नृप आशिष दयऊ। भरत प्रणाम करत तव भयऊ॥
पुनि नृप मुदित लषणरिपुहाई। भेटे अधिक सनेह बढाई॥
दीन अशीश मुदित दुहु भाइन। समय सनेह बरणि सुख जाइन॥
बारहिबार नृपहि शिर नाई। भाइन सहित चले रघुराई॥
तव नृप कौशिक पदशिरनायो। जोरि पाणि बहुविनयसुनायो॥
नाथ कृपा तव हे मुनि राजू। भये सकल मम पूरण काजू॥
अस कहि नृप नायो पद माथा। दीनअशीश मुदित मुनिनाथा॥

दो० पाय अशीश महीश तव हृदय राखि सियराम।
फिरे सहित पुरजन सकल आये निज निज धाम॥

कवित्त॥ बाजत निशान भूरि चली बरातपुरि आनंदअपार छायरह्यो आकाशही। गगन मगनदेव सुमनकरत वृष्टि गावत सुयश चारु जोतिजे प्रकाशही॥ देत नैनलाहु मग लोगन सकल राज बीच बीच वासवर करत निवासही। पोषशुक्ल पूनव पुनीत रविवारको सु पहुंची बरातआनि दिव्य औधपासही॥

दो० जहँतहँ लोगन मुदितमन गहगहे हने निशान।

सुर प्रसूनवरषहिं हरषि, शोभित विपुल विमान ॥

इतिश्रीमद्गोस्वामिगोसाइंकमात्मजभगवन्तदाससहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रबरातअयोध्याप्रवेशवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्याय. १४ ॥

कवित्त. ॥ पालन निगमरीति घालन सुजनभीति दालन कुरीति रीति वेदगानकी । आकर सुबुद्धिके प्रभाकर सुनक्र मकाकर अदेव हार भीति देवतानकी ॥ पावन त्रिलोकक्कार महीकुमार जीवन उदारकीर्त्ति हार पीरप्रानकी । भाग्यवन्त कृपालपाल भक्तबानि जानि दास दीनपै द्रवौसु राम जानकी ॥ छप्पै ॥ आवत अकनि बरात सकलपुर नर अरु नारी । पुलकग, सरसात प्रेम उर आनँदभारी ॥ निजनिज सुन्दर सदन सबन बहु भाँति सँवारे । हाटबाट सरिघाट सुभग चौहट पुरद्वारे ॥ बहुभाँति सुमंगल साजसजि कलश द्वारथापे मुदित । जगमगत ज्योति मानहु नगर द्वारद्वारप्रति रविउदित ॥ भूपधाम अभिराम सभै त्यहि वरणि न जाई । रचना अमित अनूप देखि मन मदनलुभाई ॥ मंगल मोद उछाह अधिक सुखसम्पति छायो । जनु कोशलपति सदन सकल धरि धरि तनु आयो ॥ सिय रामरूप शोभाअवधि वरणिसकै नहिं शेषत्यहि । भगवन्त सुछवि देखन हृदय कहहु लालसाहोन क्यहि ॥ कवित्त ॥ कौशिलादि मातु सब शिथिल सनेहगात परम प्रमोद प्रेम देहना सभारती । पछैनार्थ राम सीय सकल मुदित रानि मंगल अनेक भाँति भाँतिनै सँवारती ॥ दूब दधि रोचना तंदुलदल फूल गन्ध कंचन सुथारधारि वारि मंजु आरती । चलीं गानकरत प्रमोद सालिवृन्दरानि सुखमाअपार ज्यों सुवेष भूरिभारती ॥ जानिकै सभै सुदीन शासन मुनीश उत कीन तौ अवेशपुर सानँद महीपमनि । मागध सवन्दित सूत गावत सुयश चारु बर्षही प्रसून

दुन्दुभी सुव्योमहानि ॥ वाजत निशान जाल नाचत अमर
रि। पूरित प्रमोद विप्रवृन्द रहे वेदभनि । भाग्यवन्त आनँदअपार
वखान कौन मंगलकलाप भास रहे ठौर ठौर ठनि ॥ डगर डगर
व नगर अनन्द होत नृत्यगान वाद्यशब्द लोकत्रै मचैरहीं। दूलह
मदेखि मुदित सकल मात पुलक प्रफुल्लगात आरती सुकैरहीं ॥
रिवृन्द गावहीं सुमंगल उमंगि मोद भूषण वसनवारि थोचकनु
हीं। बधुनसमेत पर्छि पुत्रन लिवाय संग चली देत पाँवड़े अरघ
दैरहीं ॥ मन्दिरल्यवाय लाय चारिसू सिंहासनानि तापर कुमार
औ कुमारि चौपधारयऊ । सादर पखारि पाँय धूपदै सु हेमथार औ
सँवारि माय चारसों उतारयऊ ॥ लाय नयवेद्य चारु विटिका
वाय फेरि वस्तुलै अपार भाँति भाँतिनै सुवारयऊ। रूपशील सिंधु
धु चारिहू वधून युक्त प्रेमसों निहारि माय मोद पुंज भारयऊ॥ स-
गं॥ नैन लह्यो नर अन्धयथा अरु रंक महाजिमि पारस पायो ।
लह्यो जय ज्यों रणमे अरु मूकमुखे जनु शारद आयो ॥ पाय
खी रुजवन्त अमी जस शीतल छाँह नृआतपतायो । मासुखते
तिकोटि गुणे भगवन्त हृदै सुदमातन छायो ॥
दो॰ पूजि पितर सुर विविध विधि मांगहि वर शिरनाय ।
रहहि कुशल आनन्द नित सहित वधुन सव भाय॥
अन्तरहित सुरगण सकल अति हित आशिष देहि।
सादरसो भरि अंचलन मुदित मातु सव लेहिं॥
तव नृप सादर मुदित मन वोलि वरातिन लीन ।
पट भूषण रथ वाजिगन तिनहि विविधविधि दीन ॥
पाय रजायसु नायशिर राखि हृदय श्रीराम ।
वहुविधि नृपहिं सराँम करि चले सकल निजधाम ॥

॥ हरिपद छन्द ॥ तव सादर सानन्द अवधपति बोलि नगर न
नारी । पट भूषण पहिराय भाँति बहु कीन्हे तिनहिं सुखारी ॥ या
चक जन यांच्यो ज्यइ जोई मुदित भूप स्वइ दीन्हे । परमानन्द पा
मन भाग्नत गवन भवन सब कीन्हे ॥ तव गुरु विप्रन सहित अव
पति भीतर भवन सिधाये । मुनि वशिष्ठ अनुशासन सादर ज
श्रुतिरीति कराये ॥ पुनि प्रक्षालि पाँय नृप विप्रन शुचिजल आ
न्हवाये । षोड़श भाँति पूजि अति आदर षटरस अशन ज्यँवाये
दान मान बहु भाँति विनय करि पुनि पुनि शीश नवाये ॥ देत उ
शीश मुदित सब भूसुर निज निज भवन सिधाये ॥ पुनि कौशि
कहिं पूजि बहु भाँतिन चरण धूरि शिर लाई ॥ दीन्हे वास भव
भीतर लै करि बहु विनै बड़ाई ॥ पुनि पूजे गुरु पाँय प्रेमसों भूप
सुत सब रानी । सुत सम्पदा राखि बहु आगे विनै कीन्ह सनम्रा
नी ॥ नेग मांगि लीन्ह्यो मुनिनायक सुखदायक मन भायो ॥ दै
अशीश धरि उर सियरामै हरषित भवन सिधायो ॥ पुनि महिपाल
मुदित प्रिय पाहुन विदा किये सनमाने । सुरन हरषि यशगाय ह
मन भरि चले सकल निजथाने ॥ श्रीरघुवीर विवाह मोद भै र
सकल जग छाई । शेष गणेश शम्भु शुक नारद शारद वरणि
पाई ॥ तव भूपाल सहित उर आनँद गये जहां रनिवासू । सहि
वधुन सुत निरखि चारिहु भयमन परम हुलासू ॥ ज्यहि विधि भ
ब्याह चहुँ भाइन भूपति सकल सुनाई । सुनि रनिवास लह्यो सु
संकुल उर आनंद न समाई ॥ जनकराज गुण शील सम्पदा प्री
सुरीति बड़ाई । भाट सरिस उपमामित दै दै बहुविधि भूपति गाई
सवैया ॥ भूमि क्षमाब्धि गँभीर प्रभाकर तेज निशाकर सो य
छायो । धर्म धुरीण धराधरसो सनकादिक के सम शुद्ध सुहायो

राज सुरेश सों मेरुगरू जिमि भक्त ध्रुवाचल ज्यों जगजायो। भापत रानिन सों अवधेश विदेह गुणामित जाहि न गायो ॥

दो० सुनि प्रमुदित रानी सकल जनकराज गुण जाल।
। तब सादर सब सुतन युत मज्जन कीन भुवाल ॥

कवित्त ॥ बोलि विप्र ज्ञाति गुरु भाइन समेत भूप भोजनसुकीन भाँति षटरस चायकै। अँचे पान प्राय सब सादर विलोकि राम पाय कै रजाय राउ चले मोद छायकै ॥ समय प्रमोद प्रेम बरणि सिरात सो न अगम लखात शेष शम्भु गणनायकै । भाग्यवन्त गमे न विरञ्चि वेद शारदाहु कौनभाँति अल्प बुद्धि कहौं मैं सुगायकै ॥ सवैया ॥ तब रानिन बोलि महीप कह्यो लरिका श्रम सों बश नींद भये। अब शैन करावहु जाय इन्हे कहिकै नृप यों गृह शैन गये ॥ नृप आयसु लै मणिहेममई पलँगा कल सेज डसायदये। भगवन्त कहौ किमि सो सुखमा लखि मैनहुं मान हृदै रितये ॥

दो० तब सादर सब सुवन लै दीन सेज पौढ़ाय।
प्रेम विवश पुनि मातसब बैठीं प्रभु ढिग आय ॥

तोमर छन्द ॥ लखि राम श्यामल गात। वशप्रेम ह्वै सब मात ॥ मृदुमंजु पूंछहिं बैन। कहिये कृपा सुखदैन ॥ मगजात पातक पीन। किमि ताड़का वध कीन ॥ खल वृन्द क्यों युत सैन। वधकीन राजिव नैन ॥ क्यहि भाँति गौतम नारि। पदछाय दीन्हउ तारि ॥ किमि घोर शंकर दण्ड। करकंज कीन्हउ खण्ड ॥ भृगुनन्द गर्व्व नवाय। जगजैति जननाकै पाय ॥ भयसिद्ध जो सब काज। अतिशयकृपा मुनिराज ॥ गीतिका छन्द ॥ बलिजायँ जननी अजनपर

भक्तिशिरोमणि अयोध्याकाण्ड

छप्पै ॥ सिद्धिसदन शोभाढ्य कदन दुखदोष अपारं।
जातिजवेश्मि सुगुण विघ्नौघ निवारं॥ शुद्ध सुधी
नागास्य विशालं। नित्यानंद गणाधिप भजतारति जनदालं।
कृत सुमनस नरनागादिसव शारंगांघ्रि वंदनसतत।
कर नाये शिर मन वच क्रम गणपति नमत
मल अम्बु धराभतनु पटपीत धृतामल जालद्युतौ।
तमीश मुखं धृतपाणि शिलीमुख चापयुतौ॥ जनकात्मजसा क
रुणाम्बुनिधे मखरक्षनितावध नाथसुतौ। ममगातस मासु निवार
करौ भगवंत सदा जलजांघ्रिनुतौ॥

दो० श्री गुरु पद पाथोज रज शिर धरि नयन लगाय।
सीयराम पावन सुयश कहौं सो मतिसम गाय॥
जबते राम विवाहि घर आये कोशलराय।
तब ते मुदमंगल अवध नितनूतन सरसाय॥
कोशलपाल कृपाल को भाग बखानै कौन।
वेद तत्त्व पुरुषोत्तमहि करि पाये सुत जौन॥
कोशलपुर नर नारि सब निरखि राममुख चंद।
सुकृत सुभाग सराहि निज लहहिं परम आनंद॥
केकै नृप सुत वारयक नाम युधाजित जासु।
अवध आय नृपसन विनय कीन्हे सहितहुलासु॥

करि बहु विनय जोरि युगपानी। सहित प्रीति पुनि कहमृदुबानी॥
नाथ हमारे पुर चहुँ पासा। करत अहैं बहु दुष्ट निवासा॥

म सबल तें जीति न जावें। तिन ते हमसब अति दुखपावैं॥
हि हित आयन याचन तुमहीं। देहु भरत रिपुसूदन हमहीं॥
चलि सकल दुष्ट संहारे। हम सबकर दुख दुसह निवारें॥
म नृप सकल लोक हितकारी। धर्म धुरीण दीन दुख हारी॥
ानि सभीत कृपा अब कीजे। दीजे सुवन सुयश जगलीजे॥
निहु बहुत विधि नृपहिंबुझाये॥ तबनृप सादर सुवन बुलाये॥
दो० सादर सुवन बुलाय तव दीन्ह्यों भूप रजाय।
सुनत भरत रिपुहन मुदित चले नृपहि शिरनाय॥
ातु पदबंदि बहुरि दोउ भाई। रामचरण पंकज शिरनाई॥
भुमन विदा पाय दोउभ्राता। बंदि मातु गुरुपद जलजाता॥
लै सुभट सेना सँग लीन्हे। प्रभुपद कमल मधुपमनकीन्हे॥
हि विधि भरत समेत सहाई। कैकै नृपपुर पहुँचे जाई॥
ृप आय आगे लै लीन्हा। भवनआनि अतिआदरकीन्हा॥
नि नृप द्विजन बोलि अनुरागे। सादर यज्ञकरन तहँ लागे॥
ानि खरसुख लै सैनसमूहा। आयउ धाइ तहां करि हूहा॥
रत समर सब असुर सँहारे। विगत त्रास सब भये सुखारे॥
दो० तब तहँ पुनि सानुज भरत लखि सनेह अधिकार।
लगे रहन मातुल भवन बाढी प्रीति अपार॥
ह कछु चरित कहा मैं गाई। अपर कथा अब सुनहु सुहाई॥
ोशलपुर यकबार सुभाये। विधि सँदेश लै नारद आये॥
ाति हित रामचरित जिन केरे। राम प्रेम भाजन मुनि हेरे॥
ुनिहि विलोकि मुदित रघुनाथा। उठि करजोरि चरण धरिमाथा॥
ीन अशीश हरषि मुनि राई। प्रभु आसन बैठारिन्हि लाई॥
ेविधभांति पुनि पूजन करिकै। बोले रामचरण शिर धरिकै॥

क्यहि कारण आगमन कृपाला। कहहु मुनीश वरणि सो हाला॥
सुनि प्रभुवचन मुदित मुनिराई। विधिसँदेश कहि सकल सुनाई॥
॥दो॰ दशकन्धर अतिकृत अन्हत त्यहिभय दुखित त्रिलोक।
॥ शीघ्रसदल खलमारि प्रभु करिये सवहिं विशोक॥
सुनत वचन बोले रघुवीरा। ऐसइ करव झटित मुनिधीरा॥
सत्यसन्ध मुनि रामहि जानी। दृढ़ विश्वास हृदै निजआनी॥
पुनि नारद विधिलोक सिधाये। रामस्वमाया प्रकटि जनाये॥
अस अभिलाप भयउ सवकाहू। आपु अछत सानँद नरनाहू॥
देहिं रामकहँ करि युवराजू। होहि सफल सवकर सुखसाजू॥
यहिविधि सकल अवध नर नारी। सादर कहहिं मनाय पुरारी॥
कृपासिन्धु शिव अवढर दानी। पुरवहु आस दास निजजानी॥
भूप हृदय मति प्रेरहु तैसी। हम सवहिन उर निवसी जैसी॥
॥दो॰ रामराजसम स्वातिजल चातक पुर नर नारि।
॥ तृपित सपदि पावनचहत त्यहिविनु निपटदुखारि॥

॥ इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिप्र भरतशत्रुघ्नयोर्गमननारदआगमन विधिसँदेशश्रीरामप्रतिकथन वर्णनोनामप्रथमोऽध्याय १॥

दो॰ वन्दनकरि सिय रामपद वारवार शिरनाय।
कहौं कथा पावनकरणि जो सुनि कलुप नशाय॥

॥ चकोरछन्द ॥ एकसमै ससमाज सवै सुखराजत राजसभा वधेश। आरसिराय सुभाय लिये कर कानसमीप लख्यो सितकेश मानहु सो पुन चौथअहै लगि कानरह्यो करियो उपदेश। जी को फल लिहुन क्यों रघुनाथहि दै युवराज नरेश॥ कवित्त ॥ मनआनि भूप ध्वीकरि विचार चारु चैत्रकृष्ण वार गुरु तृतिय पायकै। परम प्रमोद प्रेम पुलक प्रफुल्लगात सानँद महीप

नि गुरुजायके ॥ जोरि पाणि सादर नवाय पदपद्ममाथ वारवार
ोहि सुख चन्दवृन्द चायकै। भाग्यवन्त भूप आपु अन्तर विचार
ोपि भाखत वशिष्ठ सो वचन मनकायकै॥ नाथ रामचन्द्र भये
ायक सकल काज नीतिधर्म वीरतादि पूरण उदारहै। आपुसम
ोह सब राखत संततनाथ रामपै सुविप्रवृन्द सौख्यपरिवारहैं॥ से-
क समाज सब सचिव नगरलोग शत्रु मित्र वर्गयत्र यावत ह-
ारहे। मोहिंसम रसिसब काहूको लगत भीव रावरे अशीश जनु
ोही तनुधारहैं॥

दो॰ नाथकृपा तव दासके भये सिद्ध सबकाज।
अब अभिलाषा एक उर है मेरे मुनिराज॥
राजतिलक रघुनाथ कहँ करिय जु आयसु होय।
हमहिं अछत आनन्द यह ज्यहि देखै सबकोय॥
जियत मरणकर शोच पुनि रहैन मोमन माहिं।
प्रभुप्रसाद अभिलाष यह जो पूरण ह्वै जाहिं॥

ुनि नृपवचन कह्यउ मुनिराजू। करियन बिलँब सजियसबसाजू॥
ंगलमोद सुदिन सब तबही। रामराज बैठहिं नृप जबहीं॥
ानि न जाय ईशगति राई। त्यहिहितकरि निश्चयनहिंगाई॥
ब महिपाल भवन निजआये। बोलि सुमन्त सुवचन सुनाये॥
ागिसजहु अभिषेक समाजू। रामहिं करनचहौं युवराजू॥
ृपवचन सबके मनभाये। मनहु रंक मणि पारस पाये॥
ुयजय करि मुनि आयसुपाई। सेवक सचिव चले सबधाई॥
ल दल चंदन अक्षत फूला। पान पुंगफल औषधि मूला॥
ौरहु जो मुनि नाम गनाये। खोजि सु वस्तु सचिवसबलाये॥
ंगल मे सब नगर सजाये। विपुलवितानविविधविधिछाये॥

ध्वज पताक तोरण बहु सोहैं। गज मणि मे चौकैं मन मोहैं॥ बाजहिं अमित सुमंगल बाजा। बरणि न जाइ नगरकर साजा॥

रोलाछंद॥ कन्या तोरण चौक कलश बर विप्र समाजै। बंदनवार पताक केतु ध्वज चमर विराजै॥ नृत्यगान बरवाद्य दूब दध्यक्षत हरदी। धूप दीप फल फूल सूत मागध अरु बंदी॥ वेद नाद ससान्न सुरभि रम्भा रसि चित्रम। अंकुर रोपण पात्र व्यजन पट घृत छत्रम॥ चतुरंगिणी सुसेन बारमुख्या रुवितानाः। मंगल चालीस नाम इति वेद बखाना॥

दो० ये सब मंगल अवध पुर साजे सबहि बनाय।
शोभा असित विलोकि ज्यहि अमरावती लजाय॥

मुदित सकलपुर लोग लुगाई। जहँ तहँ नृपकै करहिं बड़ाई॥ धन्य भूप सुकृती जग चीन्हा। लोचनलाभ सबहिं जिन दीन्हा॥ यहि विधि अवध महानँद होई। बरणि न जाइ एक मुख सोई॥ होहिं सगुण शुभ सिय रघुवीरे। कहहिं सप्रेम वचन धरि धीरे॥ भरत सबन्धु मनहुँ पुर आवत। असम्बहिं शकुन प्रभाव जनावत॥ मोहिं भरत प्रिय प्राण समाना। मिलन चहत अस शकुन बखाना॥

दो० इहां मुनिहि नृप बोलिकै पठये रघुपति ऐन।
नेम क्रिया व्रत धर्म सब सादर प्रभु शिख दैन॥

॥ सवैया ॥ मुनि राजहि आवत रामसुने उठि द्वारहि आनि प्रणाम किये। दय अर्घ सआदर आनि निलै करि पूजन आसन दिव्य दिये॥ करजोरि बहोरि ससीय विनै करि पूछति पूरण प्रेम हिये। क्यहि कारण स्वामि पयान किये गृह सेवक भूरि कृपा हि लिये॥ मंदिर सेवक आगम स्वामि सुमंगल मूल अमंगलहारी। यद्यपि नाथ उचित्तरहै अस प्रीति समेत स्वदास हँकारी॥ सोपि

राज यह नीति कही प्रभुता तजि पै प्रभुनेह सँभारी। सो भगवन्त नीत भयो गृह सेवक आजु सुभाग्य हमारी॥

दो० होय जु आयसु नाथ तव, वेगि करौं स्वइ काज।
शुचि सनेह साने वचन सुनि बोले मुनिराज॥

सवैया॥ राउ सज्यो अभिषेक समाज सु चाहत देन तुम्हैं युवराजू। ताहित मोहिं इतै पठये रघुनायक देन तुम्हे शिखराजू॥ सो सिय संयुत राम करौ व्रतनेम क्रियादिक संयम आजू। जो भगवंत प्रभात करै कुशलात विरंचि निवाहन काजू॥

दो० यहि प्रकार गुरु शीख दै गये राउके गेह।
शीलसिंधु रघुवरहृदै भयो अधिक संदेह॥

सवैया॥ जन्म लिये सब बंधु यकैसँग भोजन केलि सुबाल विनेकू। कर्ण सुवेध भयो उपवीत विवाहन संग उमंग अनेकू॥ प्रान हंसयं वंश विषे अनुचित्त सु होत अहै यह ग्रेकू। ते प्रिय बन्धु बिहाय कियो अब चाहत भूप बड़े अभिषेकू॥

दो० इति सप्रेम पछितानि प्रभु, हरणि भक्त मन वंक।
लषणलाल आये तवहिं सानँद सहज अशंक॥
प्रेम सँपुट करि पानि युग नाये पद रज भाल।
अति आदर राखे निकट रघुपति राम कृपाल॥

तोटकछंद॥ पुर बाजि निशान रहे बहुते। अति आनँद जात न सो कहुते॥ घर बाट सहाट अथाइनमें। चरचा इमि लोग लुगाइन में॥ वह लग्न सुमंगल मूलकबै। पुजिहै विधि सो अभिलाप जबै॥ गुरु आहुत मंजु सिंहासनपै। करुणाकरि भूरि स्वदासनपै॥ बैठे सिय संयुतराम जबै। सब पुरमनोरथ होइ तबै॥ भरतागम सर्वम-नाय कहै। फल लोचनते इत आपलहै॥ यहिभाँति प्रमोद सुधायर-

ह्यो । भगवन्त मुखेक न जाय कह्यो ।। छप्पै ।। रामराज पुरसाज निरखि देवन मनशोचे । को हरि है दुखजाल शमनकरि हैं खलपोंचे ।। ना हतहोन अकाज अवशिमन मंत्र दृढ़ाई । शारद सुमिरि सप्रेम बोलि बहु विनय सुनाई ।। करि विनय कहत पुनि पुनि अमर मातु करहु स्वइजतन अब । वनजाहिंराम तजिराजि ज्यहिं होइ सिद्धि सुरकाज सब ।। देव विनय सुनि देवि शोचमन कृत अधिकारी । कोशलपुर स रपद्मविपिन मोदित नरनारी ।। तिनहिं देनदुख हेतुभइउं मैं हिमि मैं राती । इति अपराध विचारि देवि मनमें पछिताती ।। लखि कहत देव करजोरि पुनि मातु तुमहिं कछु खोरि नहिं । प्रभु रहित हर विसमै स्ववश जानहु तुम सब विधि उनहिं ।। कवित्त ।। घृग घृग देवन बखानि देविचली आपु आगिल विचारि काज मोद मन धारि कै । आई औध मध्य जहाँ रानिन निवास चारु दीख सवभाँति बुद्धि पौरुष सँभारिकै ।। पायो न प्रवेश तत्र वैठि फेरि कंठ आनि मंथरा कि चेरि पीव केकई विचारिकै । दीनफेरि तासुमति शारदा प्रवीन बुद्धि दानि दुख पुंज ताहि अयश पसारिकै ।।

दो० यह बैरोचन कन्यका रही परम बलवान ।
मारें त्यहिं सुरपतिस्वकर लहिआयसु भगवान ।।
इति विरोध राखेहृदय चाहत भगवन सोय ।
यह सत्योपाख्यानमें विदित कथा नहिं गोय ।।

सवैया ।। चेरिलख्यो पुर मङ्गलसाज सुवाज बधाव अनन्त उछाहै । पूछिसि लोगन मोद कहा सुनि राम सुराज भयो उरदाहै ।। नीच कुबुद्धि विचारकरै किमिरातिहि होइ अकाज महाहै । ज्यों मधुलागि विलोकत भिल्लिनि ताकति गो त्यहिं लेन सुचाहै ।।

दो० यहिविधि करत विचार [illegible] रतम पईजाय ।

नैनसजल व्याकुल तिलखि बोली बचन बनाय ॥
जौ स्वामिनि मानहु फुरवानी। तौ कछु कहौं तुमहिं हितजानी॥
मोहिं शोच उर भयो अपारा। निरखि न अनभलजायतुम्हारा॥
यहिते बिनुपूछे कछुनाता। कहौं निरखि तवकाज नशाता॥
जो जोकर हितहोयि विशेखी। सो ताकर दुख सकत न देखी॥
मनहित तासु होत जो जानै। पूछेहु बिन बै निडर बखानै॥
ते ठौर स्वामि सो दासा। बिनु पूछे बच करै प्रकासा॥
छप्पै ॥ सर्प त्रास जित होय शत्रु शिरपर चढि आवै। अस्त्रा-
दिक लखि निकट देत विष प्रभुहिं जनावै॥ मारुताग्नि भय होय
दुखद मग कंटक जानौ। पथ्यापथ्य अहार दानि दुख लाभरुहानी॥
इति ठवर दास पूछेहु बिना कहै स्वामि रुखपायके। नहिं लगत
ताहि पातक लनक कहत इमपि श्रुति गायके॥ गीतिकाछंद॥
उतपात एक सुनि समुझि भामिनि मोहिं मनअति दुखभयो। अ-
भिषेक होइहि कालिह रामहिं रानि नृप असमत ठयो॥ परदेश प-
ठये सुवन तुम्हरे सून लखि इत यहकियो। सो सुखद सबकहँ तुमहिं
भरतहि शोकसुठि चाहतदियो॥
दो॰ ताते मैं पूछे बिना कीन्हे तुमहिं जनाव॥
कौशल्याहित रावरे कीन सुकठिन उपाव॥
कौशल्याहित रौरेहि लागी। बिपति बीज बोयो अनुरागी॥
भूप हृदय ऋतुपावस पाई। राजमनोर्थ सघन जलदाई॥
आयसुवारि अवध थल चारू। पुत्रराज्य बलपाय अपारू॥
बिपतिबीज तुम लगि उन बयऊ। पायसहाय सुजामत भयऊ॥
चारिदिवस बीते सुनु रानी। बिपति हाल परिहै तुव जानी॥
सुनत चेरि बानी केकेई। जानि मलिन मन उत्तर देई॥

कहसिकहा घर फोरनि बानी। रामराज मम होइ न हानी॥
रामभरत म्वहिं प्रिय सम दोऊ। भलम्वहिं रामराज जो होऊ॥
रामहिं राज काल्हि जो होई। देहौं त्वहिं मनभाइहि जोई॥
कौशल्यासम रघुपति मोहीं। जानत चेरि कहौं ध्रुव तोहीं॥
तदपि प्रीति राखत बहु मोते। [illegible]
ऐसे सुतहि तिलकतैं होते। कुमति कुचालि उपद्रव जोते॥
दो० जो देवै विधिजक्रमें जन्मभूरि करिछोह।
तौ देवै सियराम सम सुन्दर पूत पतोह॥
तातें सत्यकहसि किन मोहीं। कवनहेतु उपजा दुख तोहीं॥
बोली चेरि वचन मनमारी। तुमहिं नहीं परतीत हमारी॥
निरखि तुम्हार अहित मै माई। साँचिबात कहि तुमहिं जनाई॥
सोरौरहि नहिं तनक सुहान्यो। घर फोरनिकहि मोहिं बखान्यो॥
त्यहिते बहुरि कही अबकाहा। पायनफल कहिजसकछुचाहा॥
हमहिं नही कछु लाभ न हानी। तव दुख निरखि कहा मैं रानी॥
तुम जो कहहु राम प्रिय मोही। सो सब सत्य झूठ नहिं ओही॥
पर यह बात जान सबकोई। असमय परे सुहृद रिपु होई॥
सवैया॥ पङ्कजको पितु वारिधि है विष चन्द्रसुधा ज्यहि बन्धुसगोई। मित्रप्रियारविलक्ष्यनु जासु विरञ्चि तनै हरि है बहनोई॥ यों परिवार भरो ज्यहिको न सहायक कै हिमिजारत सोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सुविपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ है जबलौं दिन आपभले तबलौं हितहै सकलौ अपनोई। देव अदेव प्रसन्नसबै नहिं तौसन आपन तौ हितहोई॥ ते दिन ज्यो विपरीत भये विपरीत भये तुरतै हितसोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ वास अकाश प्रकाश महा निशि नायक दायक

शीतल जोई॥ कल्पद्रुम औ तुज काम दुहा भगनी प्रिय आपु सुधा-धर सोई॥ यों विधु राहु ग्रसै जब आनि सहायक तासु न ह्वै तब कोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ कानन अग्नि प्रचंड दहै तब मारुत तासु सहायक होई। दीपशिखै लघु पेखि महालघु जानि बुझावत है त्यहि सोई॥ है यह संतत रीतिहु वै रिपु निर्बल में निज मित्रहु जोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ श्री मणि रम्भ हलाहल शंख अमी गजराज सुधाधर जोई। चाप धन्वंतर काम दुहा कल्पद्रुम बाजि सुराष्ट पटोई॥ रत्न दिये सरिनायक जो त्यहि गाढ़ सहाय भयो नहिं कोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सु विपत्तिम काहुक कोउ न होई॥

दो॰ विपति परे काहुक कछू होत नहीं संसार।
सुदिन जानि ताते अबहिं कीजे काज सँभार॥

सवैया॥ नाह सनेह त्वयाजर चाहत पुत्रहिकै नृप सौति उखारन। रूँधहु बारि बनाय घनी त्यहि राजसुते करि लावहु बारन॥ सोच सुहाग बलै न तुम्हैं करती कलहो निज काज सँभारन। शुद्ध सुभाव लखौ तुम क्यो मुख मीठ हिये हित तौ भरतारन॥ राम कि मातु प्रवीण बड़ी लहि बीच लिये निजकाज बनाई। रामहिं मातुम-तो इतिजानत जो भरतै उत भूप पठाई॥ भूपहिं प्रीति विशेष पितुम्है पर सौति सुभाव सकै न लखाई। साजि प्रपंच नृपै बशकै सुतराज हेतै उन लग्न धराई॥ सेवहिं सौति भले सब मोकहँ राखत कोउ प्रभावनजीके। गर्व लिये निज हीयरहै यक भर्त्त कि मातु सदै कलपीके॥ है कौशल्यहि शाल तुम्हार कपट्ट प्रवीण खुलै नाहिंनीके। सोइ उपाय कियो हितराउर डारहि सो विधि शीश वहीके॥

राज उचित्त अहै यहि वंश विषे रघुनंदनहीको। भावतहै सबको मतो अरु लागत मोहिंरहै सुठि नीको ॥ पै यहिं आगिलबात है चारि भयो दुखदाह महा ममहीको। सो दुख देउ विरंचि उन्हें अं नहित्त तक्यो जिन राउरजीको ॥

यहिविधि कहि कहि वचनबनाई। दिहिसि कुटिलपनहृदयदृढ़ाई॥ वहु सवतिनकी कथा बखानी। ज्यहि सुनि वैर बढै उररानी॥ चित्रकेतु नृप ज्यहि जग जानी। षोड़श सहस रही त्यहिं रानी॥ मुनि अङ्गिरा नृपहि यकवारा। मुक्तिहेतु शिख दीन्हा अपारा॥ पुत्रहीन नृप कीन न काना। तबमुनि हृदयअधिकदुखमाना॥ नारद मुनिसन जाय सुनाये। वहुरि देन वर द्वउजन आये॥ भूपहिं वर दीन्हे हरषाई। होइहि पुत्र तुम्हारे राई॥ दयवर द्वउ मुनि आश्रम गयऊ। लघुरानी सुत जन्मत भयऊ॥ पुनि नारद तहँ जाय सुभाये। रानिन अपर वहुत समझाये॥ तुमहिं न दीन पुत्र करतारा। लघुरानिहिं होइहि सुखसारा॥ सुनि तिन घात पाइ इकवारा। विषदै डारिनि मारि कुमारा॥ नृप रानिहि दुख भयो कलापा। पुनि नारद आये तहँ आपा॥ पुत्रहि जाय दीन वोलकारी। हरषे निरखि पिता महतारी॥ कहेउ सुवन स्वइ वचन अनूपा। हम पंचाल देशके भूपा॥ राजछोड़ि कानन तपकाजा। गयनरही तहँ तामस साजा॥ भिक्षाकरि यकवार सुभाये। यक स्त्रीके द्वारे आये॥ त्यहिसन कंडा माँगि वनावा। भोजन हरिहि अर्पि में पावा॥ उन कंडनमें चींटी रहेऊ। सोरहसहस सकलते दहेऊ॥ भईं आइ ते सव नृपरानी। कंडादीन हमहिं जो आनी॥ सो भइअड हमारी माता। पायनअशन अर्पि जगत्राता॥

यहि ते एकहि जन्ममझारा॥ गयउ हमार होइ उद्धारा॥
सोरहसहस जन्म नतु मोहीं॥ धरनपरत धरणी अघवोही॥
ताते को काको सुत आहे॥ सुनि इति भयो ज्ञान नरनाहे॥
तजि सवगयो विपिनहरिशरना। चित्रकेतु इतिहासय वरना॥
नृप उत्तानपाद जगजानी॥ सुरचि सुनीति रहीं द्वै रानी॥
उत्तम नाम सुरुचि सुत जाई। ध्रुव सुनीति जन्मी सुखदाई॥
सुरुचि नृपहि प्रिय रहै विशेखी। सवति सुखहि सो सकै न देखी॥
एकवार ध्रुव गोद मँझारा। लिये नृपति सो सुरुचि निहारा॥
ध्रुवहि दिहिसि उतराइ डराई। कहि कटु वचन वहुतखिसुवाई॥
तेहि गलानि ध्रुव वनहि सिधाये। इति सुनीति दुख दारुणपाये॥
कद्रू विनतहि दुख दियभारी। ये दोउ कश्यपकी नारी॥
कद्रू अहै अहिन के माता। विनता सुवन गरुड़ विख्याता॥
एके दिन दोउ वाद बढाई। कवनवरण कहिये निशिराई॥
कद्रू कह्यो श्याम विधु होई। विनता कह्यो श्वेत है सोई॥
तव इनहुन मिलि वाजी लाई। हारे जो सो करै सेवकाई॥
कद्रू तव निज सुतन पठाई। ते सव लिहिनि घेरि शशिजाई॥
त्यहि ते श्याम परेउ सो देखी। विनता गइ तव हारि विशेखी॥
आपु भई रानी सो दासी। वहुतकाल लगि कीनखवासी॥
पुनि यकवार गरुड़ निजमाता। निरखिदुखितअतिशैकृशगाता॥
पूंछेउ मातु दुखित अति तोहीं। देखत हो कहुकारण मोहीं॥
तव विनता कहि कथा सुनाई। सुनत वचन वोले खगराई॥
अव तें वाद करहु फिरि माई। श्वेतशशी हम देव दिखाई॥
सुनि विनता फिरि वादहिकीन्हा। खगपतिसकलभखिअहिलीन्हा॥
श्वेत विलोकि परेउ तव चंदा। गयउ छूटि विनतहि दुखफंदा॥

होत सवति यहि विधि दुखदाई। कहँलगि कहौं सवतिकुटिलाई॥
शरमिष्ठै दुख शुक्र कुमारी॥ दीन आपुभई पतिहिपियारी॥
यहिविधि वहु सवतिन कै करणी। वारहि वार कुमति सो वरणी॥
ज्यहि सुनि रानिहिं भा दुखगाढा। सवति स्वभाउ वैरउर वाढा॥
॥ शशीछंद॥ सुनी तासुवानी। सुकैकेइरानी॥ फिरीबुद्धितैसी। रही होनि जैसी॥ कहै सौंह राखी। कहौं सत्य भाखी॥ हुवै वा जैसी। सुनावो सुतैसी॥

॥ दो॰ कहैं चेरि पुनि पुनि कहा पूछति हौ म्वहिं सोय।
आपु हिताहित जानई पशु पक्षिहु सव कोय॥
पाख दिवस वैते सजत रामतिलक को साजु।
कह्यो न तुमसन सो कोऊ जान्यो मोसन आजु॥

॥ सवैया॥ सत्यकहो सुनु रानित्वया छलछांड़ि सवै करिकै विधि शाखी। रामहिं काल्हि जु होइहि राज परी दुखजाल तुम्हैं लखि आँखी॥ ह्वैहहि त्यों भगवन्त यहै दृढ़ रेख खचाय कहौं वलभाखी। पुत्र समेत कि सेवकरो नतु ह्वैहहु भामिनि दूध कि माखी॥

॥ दो॰ कपट प्रवीनी कूवरी हरि इच्छा वलपाय।
वचन धतूरा प्याय करि दीन्हेसि त्यहि वौराय॥

॥ इतिश्रीमन्श्रयोध्यासिंहषमोत्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रराजतिलकहेतुपुरमंगलसजनकैकेईप्रतिमंथराछलकथनवर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय २॥

॥ सवैया॥ शुभ अद्भुत जासु चरित्र सवै गुण गूढ़ सदा श्रुति गान करौ। गति जानन योग न योगिनहू कल कीरतिजा दुख दोष हरौ॥ भवफन्द निकन्दन आनँद कन्द सदा सुखवृन्द स्वछंद चरौ। करुणाकर स्वै सिय राघव के भगवन्त पदाम्बुज माथधरौ॥

कवित्त॥ मानि सत्य वानि तासु केकई सु बुद्धिहीन पूँछती सप्रेम ताहि भापुमो उपावरी। दाहिनी सु आँखि मोरि फर्कती सुभाय नित्य कीन ना जनाव तोहि याहि सो प्रभावरी॥ मित्रही समान मैं सुजानती सबैनकीन ईरषाहि सौति काहि कीन सो कुदाँवरी। कौन लाग एकवार देवदीन शोक जाल लोक में हितू हमारि तू हितौ लखावरी॥ नैहरे मँझार जन्म काटवे वरुकजाय जीवते न सेव मोहिं सौतिकी सुहोइहै। शत्रु वश्य राखिदैव ज्यावई जहान जाहि देवई सुमौतनीक जीवनो न सोइहै॥ मोर तौ सुभाव सूध जानहू न शत्रु मित्र कौशिलाय मोहि लागि कीन घात जोइहै। डारु ईश शीश ताहि खीसकै सुराज साज राख जो प्रतीत वाहि त्यं योन कोइहै॥

दो॰ यहिबिधि भापत केकई वचन अनेकन दीन।
सुनि करि माया कूवरी वोली कपट प्रवीन॥

बेगवतीछंद॥ यहि भाँति कहा तुम भाखो। वानि हमारि हिये धरि राखो॥ सुखमोद सुहाग तुम्हारो। दून दिने उर धीरज धारो॥ त्यहिं आपु अकाज तकाहै। स्वै फल पावहिं गोय पकाहै॥ जब तु अकाज सुनामैं। नींद न रैन न भूख दिनामैं॥ सवैया॥ पूँ- र्बयउँमैं शुनि लोगन सों यह वात कही तिन रेखहिं खाँची। है- हैं भर्त्त भुवाल सही परिहै इति वाक्य कवौं नहिं काची॥ सोय उपाउ करो अव भामिनि मानि हिये मम वानि सुसाँची। है तुम्हरी वशभूप अवै त्यहितें करिलेहु न क्यों मनराँची॥ छप्पै॥ परोकूप तव वचन सकौं पति पूतहि त्यागी। देखि मोर दुख कहसि करन काहेन हित लागी॥ केकेई वलि पशुहि चेरिकर कारि दृढ़ लीन्हीं। कपटरूप वरछूरि टेइ उर शिल खर कीन्हीं॥ दुख अमित आय शि-

स्पर गयो शानि अंयालि न ईमि लखत । तृण हरित निरखि बलि पशु यथा धाय लखिकै ताको चखत ॥ कुंडलिया ॥ बानी तासु कठोरि अति अंत सुनत दुखदानि । ज्यों माखन मधु एकमें कुमति खवावति आनि ॥ कुमति खवावति आनि माखि पुरजन समुदाई । रामराज मधुरूप देव दुख रोग नहाई ॥ माखन भरतहि राज मेलि कछु दीन्हेसि रानी । भई विधवा अप्सरी मेरे सूपति त्यहि बानी ॥

दो० कह्यो चेरि रानी सुनहु आपौं सरल उपाउ ।
राख्यो कहि मोसन चहत द्वै वर तुम्हरे राउ ॥
देवासुर संग्राम में भारी । सम्बरादि दैत्यन सों भारी ॥
इन्द्र सहाय करन के काजा । कीन्ह समर तिन सन बहुराजा ॥
तब तहँ घायल भयो नरेशू । देखि पतिहि तुम विवश कलेशू ॥
होंकि रथहिं निशि पतिहिं बचायो । मूरछा विगत भूप सचुपायो ॥
साहस निरखि तुम्हार सुजाला । द्वै वर देन कहे त्यहि काला ॥
सो थाती राख्यो ढिग राजा । लेव मांगि जब लागी काजा ॥
सवइ वर आजु भूपसन लीजै । सुतहि राज रामहिं बन दीजै ॥
दृढ़ अवलोकि कहब अति आली । ज्यहिं पुनि परै बचन नहिं खाली ॥

गीतिकाछंद ॥ जब राम जैहहि विपिन पैहहिं भरत पुरराजहि सही । तब तुमहिं होई सकल सुख अरु सवति उर यहिविधि दही । सुनि वचन तासु प्रतीति आई मानि शिख लीन्ही स्वई । भगवन्त निवस्यो आय उर श्रीराम मन चाह्यो ज्वई ॥

दो० दय आदर चेरिहि बहुत कोप भवन गइ रानि ।
डारी करि तन दुर्दशा देखि जो जाय बखानि ॥
भूषण पट सब धरिसि उतारी । छोरि बार दीन्हिसि लटकारी ॥
सब तन महि रज लेपन कीन्ही । फाटि पुराने पहिरि पट लीन्हीं ॥

भई कुरूप प्रराणि नहिं जाई। मनहुँ मृत्यु यमपुरते आई॥
भूप मरणकी दशा बनाई। निश्चय नृप जिव हरि लै जाई॥
जो सुभाय सौभागिनि वामा। पतिव्रत धर्म निरत वसु यामा॥
सब तन किये शृंगार न रहई। घटै नाह आयु श्रुति कहई॥
यह तो वेष विधवकर धारी। सत्यहि पति निजडरि है मारी॥
त्यहि पर नीच शिखहि उरआनी। ह्वैहहि अवशि काज यहिहानी॥

दो० बीज विपरीते कैकइ कुमति मही ऋतु पावसं घेरि।
छल जललहि अंकुर जम्यो वरदल फल दुखहेरि॥

छप्पै॥ कान करै वलवान कर्म क्यहि काल न खायो। काहि न व्याप्यो क्रोध काहि नहि मरत डगायो॥ तृष्णा ताप न तप्यो कौन क्यहि मोह न वाँध्यो। कोन भयो दुखदीन काहि शर मैन न साध्यो॥ क्यहि छल्यउ नाहि युवतीतरल चिन्ताहिनि नाहि क्यहि डस्यो॥ भगवन्त विचारहु सुजनजन काहि न मानस मदवस्यो॥

कवित्त॥ कौन जो कुचाल रानि भरटन हाल औध आनँदअपार धूमधाम धाम ह्वैरह्यो। बाजत निशान गाने मंगल प्रचार जाल कौशलेश द्वारपै सुभीर भूरि ह्वैरह्यो॥ दुन्दुभीविजाय व्योम गावत सुकीर्त्ति देव वर्षिके प्रसून आनि मोदको सचैरह्यो॥ भाग्यवन्त हैहि भूप रामवृन्द मोदरूप सर्वयाभिलापहीयग्रामलोग कै रह्यो॥

दो० बालसखा सुनि मुदितमन मिलि दशपांच सप्रेम।
जाहिं निकट प्रभु आदरहि पूँछि कुशल शुभक्षेम॥
पाय सुआयसु फिरहिं घर बहुविधि करत बड़ाइ।
मांगहि वर यह जोरिकर मन शशिमौलि मनाइ॥

सवैया॥ हे हरहारक दोरा दुखै सुखसारक कारक पूरणकामै। मारनमारक भारक धर्म उधारक दीन दयागुणधामै॥ देहुयहै

भगवन्त हमैं वर जन्मलहौं ज्यहियोनि जहाँ मैं नौ, होहिं तहां हम सेवक स्वामि मिलें सुखधाम सुजान अिरामै ॥ पालक नीति सु-प्रीति सदै प्रणतारति भंजन अन्तरयामी। औढरदानि सुभाय द्रवौ भवनाशकभौ भव शंकरनामी ॥ देहु यहै वर माँगतहैं भगवन्त सदा प्रभुतौ अनुगामी। जन्म जहाँ वश कर्मलहौं तहँ सेवकहौं रघुनायक स्वामी ॥

दो० यहिविधि मन अभिलाष सब करहिं समेत उछाहु।
केकयसुताहि दाहुअति ज्यों निशिपति हित राहु ॥

सवैया ॥ जाय सुराज्य न नीति जहाँ यशजाय हिये बहुलोभहि आये। जाय सखासन शोचसवै कुलजाय नशाय सुविप्रसताये ॥ जाय विमोह सुज्ञानभये अघजाय हरीहरके गुणगाये। जाय यती वश कामअपी सुमती तिमिजाय कुसंगति पाये ॥ साँझसमै सउछाह हिये नृपगौनकिये प्रिय केकइऐना। कोपनिलै सुनि भूप सक्यो मन भै वश अग्र सुपाँउपरैना ॥ जावल बाहु अभैसुरराज नराधिप आयसु मेटिसकैना। सो सुनि कम्पितभो तिय क्रोध मनोजवली शरहे इमि पैना ॥

अस बलवान काम जगमाही। ज्यहिवश अनुचितकियक्यहिनाहीं॥
भूप ययाति दिलीपमहेशू। मुनि कौशिक सुरराजनिशेशू।
इनकै गति मनलखहु विचारी। कामविवश अनुचितकियभारी।
भूप ययाति कामवश लागी। युवाअवस्था सुतसन माँगी।
नृप दिलीपकी यकदिन रानी। कीन्ही ऋतुस्नान सयानी।
त्यहि रतिदान देनके काजा। जातरहे वश कन्दर्पराजा।
मिली कामसुरभी मगमाहीं। कीन प्रणाम प्रदक्षिण नाहीं।
कामविवश नृपख्याल न कीन्हा। कामधेनु तब शापहि दीन्हा।

दो॰ तातें नृपति दिलीपके भयो न सुत सुखदानि।
बहुत कालसेयें सुरभि तब जन्मी सुतरानि ॥
रूप मोहनी हरिको देखी। कामविवश शिवभयो विशेखी॥
धारनको धायो शशि भाला। बीज पतित ह्वैगो त्यहि काला॥
विश्वामित्र रहे व्रत कीन्हे। करत तपस्या हरि मनु दीन्हे॥
तब तहँ एक अप्सरा आई। निरखि कामवश भे मुनिराई॥
तासु संग मुनि भोगै लीन्हा। काम विवश व्रत खंडन कीन्हा॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठानी। भई भगसहससकलजगजानी॥
चन्द्र कलंक विश्व सब चीन्हा। सुरगुरुतियनिजतियकरिलीन्हा॥
को समर्थ अस त्रिभुवन माही। कामवाण ज्यहि वेध्यो नाही॥
धरि नृप धीर गयो जहँ रानी। देखि दशा भइ विथकित वानी॥
दो॰ अरुण नयन सूखे अधर पट पुरान महि शैन।
कुमतिहि फवत कुवेपजनु भइ विधवा पतिहैन॥
ढिग जाइ पाणि गहि राजा। पूंछतरिस कीन्हेउक्यहिकाजा॥
परसत पाणि अधिक रिस ठानी। दीन्हेउ झटकि पकरिकररानी॥
जनिहुँ सक्रोध अहिनि विषभारी। विषम भाँतिरहि नृपहिं निहारी॥
भूमि स्थान भूप वपु डाटे। फन फनाय जनु चाहत काटे॥
दोउ वरदान वासना जोई। रसना उभय भुवंगिनि सोई॥
दसन द्विवरगत लालू जोई। जासु डसे नहि जीवनि होई॥
जीवन राम अपर द्विज ताके। भरतराज विषडसे न जाके॥
जानि नृप कहतवचन मृदु वोहीं। गजगामिनि कहुकारण मोहीं॥
दो॰ कवन हेतु कीन्हेउ रिसहिं कहहु प्रियासो मोहिं।
अर्थ धर्म्म कामादि फल मांगु देउँ सो तोहिं॥
नाराच छन्द॥ प्रिया अकाज ताक तोर कोनआजु जाहिको॥

राम तव भरत नहिं जासु तिलक सुनि उरदहा। संभारि बचन बो
ल्योंकसन प्रथम जु अंसमन छलरहा॥

दो० सत्यसंध जनि प्रथम म्वहिं देनकह्यो वरराज।
जान्यहु लेहै मांगि कहुं चरवन मूठीनाज॥
सुनत कटुक बानीनृपति चितयो आंखि उघारि।
कुमति खड़ी आगेमनहुं लिये क्रोध तरवारि॥

कवित्त॥ केकई कुबुद्धि मूठिधार निठुराई वासु कूबरी कुचा
तापै धरी खरसानहै। पेखि भूप कंपित कराल अनुमान मन स
कैकै सत्यकैधौं लेहै हठि प्रानहै॥ बोल्यो बैन सादर महीप मृदुमं
उर धीरधरि भूरिकरि वज्रके समानहै। कहत कुभांति कस बच
प्रतीत प्रीति त्यागि विनकाज मोहिं लावत तुफानहै॥ भरत सरा
नैन मेरे युग मानु सत्य कपट न राखिमन कहौं सतिभावहै। राम
न लोभ राज भरतहि बोलि प्रात करौं युवराज आजु धारुमन चा
है॥ छोट बड़ जानि मैं विचारि नृप नीतिकीन दीनमत्र कौशिल
न मोहिं कछु कावहै। एकही वचन मोहिं लाग दुखजाल सुनि राम
बनवास कीन कठिन कुघावहै॥ हरिपदछंद॥ तजि सब प्रिया रो
निज मनको कहहुराम अपराधू। सबकउ कहत सराहत तुमहुं राम
सहज सुठिसाधू॥ जिनकर शील सुभाव निरखि सुनि रहत अरिउ
अनुकूला। ते रघुनाथ कवनविधि करते मचनमातु प्रतिकूला॥ जो
प्रियहास कियो कछु होई तवतजि रोष कलापू। मांगु विचारि स
मुझि नहिं जाते परै दुसह संतापू॥ मणि विनु फणिक मीन भि
जलके जियै वरुक जगमाहीं। सत्यकहौं क्षणएक प्रियामें जियौं
रामविनु नाहीं॥

दो० अस विचारि मनसमुझि लखु वचनप्रिया परवीन।

कहौसत्य छलछांड़ि मम जिवन राम आधीन ॥
सुनत वचन मृदु कुमतिउर उठ्योक्रोध अधिकाय।
वरतअनल बाढ़त अधिक जिमिघृत आहुतिपाय ॥
बोली वचन कुमति दुखदाई। करहु कोटि किन भूप उपाई ॥
ये न वचन टरि है मम काऊ। मरौ आपु वरु उजरै गांऊ ॥
भाजन अयश मोहिं विधि करई। नाशै सुयश पाप शिर परई ॥
शीतल चन्द्र स्रवै वरु आगी। होइ वरुक झख वारि विरागी ॥
तपत भानु वरु शीतल होई। जलनिधि होइ विनाजलसोई ॥
अन होनी इति होवहि लाखा। टरहि न वचन जौन मैं भाखा ॥
त्यहिते भूप ससुझि मनमाहीं। आयसु देहु राम वन जाही ॥
नतरु मरण मम अपयश तुमहीं। देखहुनृपतिसमुझि निजमनही॥
दो० असकहि उठि ठाढी भई कुमति कुटिल दुख ऐन।
पकरि पाणि राखे निकट कह भूपति मृदु वैन ॥
सवैया॥ प्राणप्रिया रविवंशवनै जनि होसि विखण्डन रूप कुठारी। मांगसि माथ दियों अवहीं करु राम वियोग न मीचु हमारी॥ राखहु राम रहैं घर ज्यों परि है पुनि तोहि नतौ दुखभारी। राम नहीं सुत कानन योग विलोकु प्रिया मनमाहि विचारी ॥
दो० वहुत बुझाये भूप त्यहि सो न कान कछुकीन।
परेउ भूमि व्याकुल नृपति राम राम रटिलीन ॥
छप्पै॥ पुनि बोली कटु वचन कुमति नृपति दुखदाई। होहिं न इइ यक संग वनव दानी कृपणाई॥ देनकह्यो जनि देहु कितो धीरज उर धरिये। अवला इव विनुकाज नृपति कारन कत करियें॥ तनु तनय धाम धन वाम महि सत्यसंध कहँ तृणसरिस। दयदान वहुरि मॉगहु सुतजि लाजलोक वेदन महिस ॥ सुनिवोल्यो नर-

नाह दोष कछु नाहिन तोही । लाग्यो मोह पिशाच काल भय लेइहि मोही ॥ भरत सुधर्म निधान राज चाहत नहिं भोरे । मोहिं लागि दुख देन कुमति निवसी उर तोरे ॥ त्यहिं विवश आजु है धारि तैं विपति बेलि बोयेकुमति । गति अगमनारि नहि लखि परत कहत सत्य सज्जन सुमति ॥ सवैया ॥ ह्वैहहिं राम गये कछु काल भुत्राल बसी फिरि औध सुहाई । सादर बंधु सबै प्रभु के पदपंकजकै करि हैं सेवकाई ॥ पैहहि मोद सबै भगवंत तिहूंपुर ह्वैहहि राम बड़ाई । तोर कलंक भया पछिताव मिटी न सुयेहु कवौं नहिं जाई ॥ कवित्त ॥ ऐसही अनेकभांति भूपति बुझावताहि कुटिल कठोर कानि कीन सो न लेश है । परयो धुनि माथ हाथ रटत सुराम राम विकल भुवाल बिनु पंख ज्यों खगेश है ॥ मनहिं मनाव विधि होय ना दिवसजाय कहै रघुनाथसन कोऊ न सँदेश है । याही विधि शोचत भुवाल दुख दीनजाल विगत निशा यो वार उदित दिनेश है ।

दो० भूपद्वार आनँद परम बाजहिं विपुल निशान ।
करहिं भाट गुणगान सुनि नृपहि लगै जनुवान ॥
मंगल सकल नृपालही नहि सुहात यहिभांति ।
भूषण पट वनितहिं यथा मृतक स्वपति सँग जाति ॥
कहहि सुसेवक सचिवसव उदित विलोकि दिनेश ।
भयो कवन कारण अबहि जागे नहिं अवधेश ॥

इति श्रीमदयोध्यासिद्धवमात्मजभगवतीसहायविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रंथे कोपभवन कैकेयिवरदानदशरथकरुणावर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ३ ॥

वंदिराम सिय चरण सुहाये । जे हर मानस कमल दुराये ॥ कहों कथा भवसागर तरणी । पावनकरणि कलुषकलिहरणी ॥ नव वशिष्ठ अनुशासन पाई । चले सुमंत जगावन राई ॥

देखत भवन लाग भयकारी। अति डर सकत न करि पैठारी॥
धरि धीरज गृह कोप सिधाये। नृप गति देखि परम दुखपाये॥
पूंछि न सकहिं रहे चुपसाधी। बोली तब केकइ अपराधी॥
राजहिं नींद परी नहि राती। बिलपत बिकल रहे यहिभांती॥
सो कारण मैंहूं नहिंजाना। रामराम रटि कीन बिहाना॥

दो० जाहु बेगि रघुनाथही लावहु इहां लिवाय।
समाचार सब भूपकर पूंछेउ फिरि तुम आय॥

सवैया॥ राजनृ रुख जानिचले अनुमानि कुचाल करी कछु रानी। व्याकुल शोक सकै चलि ना नृप रामहि बोलि कहे कसि बानी॥ शोचत भांति सुमंत यही पहुँचे जहँ राम तहांतर आनी। भूप रजाय सुनाय लिवाय चले सँग आतुर शारँगपानी॥ राम बिलोक्यउ जाइनृपै दुख दीनदशा नहिं जाय बखानी। सूखहि ओठ जरै सब अंग भुवंग दुखी मणि भै जलुहानी॥ मीचुसमान निदान करैचह बैठिसरोप लख्यो ढिगरानी। धीरज धार हिये प्रभु मातहिं पूंछत सादर भे मृदुबानी॥ मातु कहौ दुखकारण तात करौ स्वइबात जु होइ निवारन। हे सब कारण रामयही तुम ऊपर राजहिं प्रीति अपारन॥ देनकह्यो वरदान हमै युग मॉग्यउँ सो सुनि शोच भु-वारन। संकटधर्म परयो इतही उत छांड़ि सकोच सकै सु तुम्हारन॥

दो० सत्यसंध रघुनाथ तुम पालक श्रुति मरयाद।
शिरधरि पितु आयसु करहु मेटहु बिषम बिषाद॥
निज करनी रघुनाथही कहेसि कुटिल सबगाय।
धर्मवान सुत सो वचन जो पालै पितुमाय॥
मातुवचन सुनि मुदितमन राम सहज सुखधाम।
अतिसनेह साने वचन बोले गुड़ अभिराम॥

सवैया॥ जननी सुनु सो सुत भागवली जगपावन कीरति तासु छई। वचपालहिं जो पितु मातु निते धरिआयसु शीश अनंदमई॥ जननी पितु पोषणहार तनै जग दुर्लभ काहु विरञ्चिदई। भगवंत अनंद हमैं नितही वन आयसु जो पितु मातुभई॥ वड़काज औ ममकानन में मिलिवो मुनिवृन्द विशेषितहां। पितु आयसु पालन धर्ममई जननी पुनि सम्मत तोर रहा॥ भगवंत सवैविधि सन्मुख आजु विरञ्चि दियो जस लाभचहा। वन ऐस्यहु काज न जाउँ गनौ प्रथमै म्वहिं मूढ़ समाज महा॥ शुद्धगा छंद॥ सुरौंका रूख जे त्यागा कुशाखी खड को सेवैं। सुधाको छांड़ि कै मांगी विषैसानंद जे लेवैं॥ त्यऊना पायकै ऐसो समै सुन्मातु चूकाहीं। मिलो है आनि मो तैसो विचारो माय मन्माहीं॥ हमारे शोच मो याही दुखारी देखिकै तातैं। सह्यो है क्लेश तन्माहीं जु थोरी लागिकै वातैं॥ भई है चूक मोसन्कै वड़ी सो जानि कै ताता। कहैना मोहिं सांची सँ कहै तू सौंह मो माता॥

सुनि सनेह सानी प्रभुवानी। वोली कुटिल कपटपन ठानी।
कारण अपर न कछु मैं जानी। भरत शपथ फुर कहौं वखानी।
तुम सर्वज्ञ धर्मरत ताता। धर्म छांड़ि कछु करव न वाता॥
त्यहि ते पितुहित धीरज दीजे। उचित विचारि काज स्वइकीजे॥
गइ मुरछा नृप करवँट लीन्हा। रामागमन सचिव कहिदीन्हा॥
राम प्रणाम पितहि तव कीन्हा। अतिसनेह नृप भरि उरलीन्हा॥
कहि न जाय उर हरष अभंगू। मनहुँ गई मणि लह्यो भुवंगू॥
यकटक चितय रहे प्रभु ओरा। लोचन सजल प्रेम नहिं थोरा॥
तव रघुनाथ जोरि युगपाणी। पितु पद गहि वोले मृदुवाणी॥
मंगल समय शोचजनि कीजे। तात मुदित म्वहिं आयसुदीजे॥

पाल्यो-वर जननी जो ताता। सो सबभाँति हमहिं सुखदाता॥ धन्य सुवन जननी पितुवैना। पालहि मुदित सकल सुखऐना॥ करि प्रमाण जननी पितुवानी। चरणकमल पुनि देखवआनी॥ अवशि जाव मैं काननराई। माँगि मातुसन आयसु लाई॥

दो॰ असकहि रघुपति नाय शिर गवने मातु समीप।
प्रेम विवश नहिं दीन्ह कछु उतर भानुकुलदीप॥

रोलाछन्द॥ नगर व्यापिगइ बात सुनत सब लोग लुगाई। भये विकल हिमत्रास यथा सरसिज कुम्हिलाई॥ कहहिं कीन करतार कहा कछु जानि न जाई। दीन्हेसि निपट विगारि बातसब प्रथम बनाई॥ कैकेइहि देगारि विविधविधि दूषणदेही। सकल सुखहि दुखरूप कुमति डारिसि करिजेहीं॥ विप्रवधू कुलमान्य प्रिया जे केकइ केरी। लगीं देन सिखभूरिजाय चारौदिशि घेरी॥ सदा कहहु तुम मोहिं रामसम भरत न प्यारे। आजुभये क्यहिकाज राम रिपुसरिस तुम्हारे। जो पठवहु वन राम देहु दुख सबहि कलापू। तुमहु सहव परिणाम समुझि मनमें संतापू॥ जो जैहैं वन राम लषण सिय तजव न संगू। भरत न करि हैं राज काज सब होइहि भंगू॥ तुमहिं अयश अकलङ्क समुझि मन देखहु रानी॥ देहु भरत कहँ राज राम वन गय बड़ि हानी॥ नतरु रहैं गुरुगेह राम जनि वनहिं पठावो। करहु वेगि स्वइ बात जाहि दुख दुसह न पावो॥ तुमहिं कही सुनि काह समुझि मनमे सब लोगू। रामसरिस अभिराम सुवन काननके योगू॥ सवैया॥ ज्यहि भाँतिन शोक कलङ्क नशाय उपायनकै कुल पालहि स्वै। हठि फेरसि रामहि जात वनै जनि वालहि दूसरि चालसि कै॥ जिमि भानु विना दिन प्राण विना तनु चंद्र विना जिमि यामिनि ज्वै।

तिमि औध बिना रघुनायकहै मन देखु विचारि सुभामिनि तै।
। दो०. बहुविधि सिखवन दीन तिन त्यहिं न कीन कछु कान ।
नीच प्रबोधी नारि पुनि, होनिहार बलवान ॥
॥ छप्पै ॥ राम जाय ढिग मातु चरणपंकज शिर नाये । निरखि
वदन सुखधाम हरपि जननी उर लाये ॥ दीन्ही मुदित अशीश
वसन भूपण धन वारी। बारबार मुख चूमि पुलकि लोचन भरि
वारी ॥ लिय राखि गोद सविनोद पुनि, स्रवत प्रेमरस पय थनहि
भगवन्त परम आनँद मनहुँ लहेउ रङ्क पदवी धनहिं ॥ बोली त
मृदु बैन तात जननी बलिहारी । कहहु कबहि वह लग्न सकल
मुद मंगलकारी ॥ चाहत ज्यहि नरनारि कबहि सुख संकुल लूटी
सिंहासन सियसहित निरखि नखशिख छवि जूटी ॥ सुख सुकृत
मूल अवशूल हर तात सुमुख स्वइ उच्चरहु । बलि जाउँ न्हाय भग-
वंत कछु धरे मधुर भोजन करहु ॥ तब जायहु पितु पाहिं बेर ला-
लन बड़ि भैली । बोले सुनि मृदुबानि राम जननी सुख दैली ॥
मातु दीन म्वहिं तात राज कानन सुखदाई । जहाँ मोर बड़काज
देहु आयसु म्वहिं माई ॥ ज्यहि कुशल जांय वन चारिदश बरष
पालि पितु शासनहि । पुनि आय पाँय देखब करहु मातु सुमनहि
उदास नहिं ॥ गीतिकाछंद ॥ सुनि राम बैन विनीत कोमल मातु
उर शरसम लगे । गइ सहमि सूखि जवास जिमि परि वारि पा-
वस मुद भगे ॥ कहि जाय नहि कछु हृदय दुखसुनि नाद केहरि
मृगि यथा । तन कंप लोचन सजल दारुण दाह उर अन्तर मथा ॥
शशिवदनाछंद ॥ तब महतारी । धरि धृति भारी ॥ गदगदबानी ।
रतिरस सानी ॥ प्रभुतन देखी । कहत विशेखी ॥ पितहि पियारे ।
तुम अति न्यारे ॥ निरखि तुम्हारे । चरित सुखारे ॥ रहहिं हमेशा ।

अवध नरेशा ॥ तिलकहि लागी। अति अनुरागी ॥ लगन शोधाई। सब सुखदाई ॥ क्यहि अपराधू। तुमसम साधू ॥ सुतहि पियारे। वनहि निकारे ॥ कहहु निदानू। क्यहि कुलभानू ॥ भयउ कृशानू। परम अयानू ॥ सुनि इति बानी। कह्यउ बखानी ॥ सचिव कुमारा। परम उदारा ॥ सकल हवाला। सुनत विहाला ॥ भइ महतारी। अधिक दुखारी ॥ कढत न बानी। विवरन रानी ॥

दो०. राखि सकै नहि कहि सकै राम वनहिं तुम जाहु।
दुविधावंश दारुण हृदय भा कौशल्यहि दाहु ॥

जो वन सुतहिं जान नहि देहूँ। बड़ अधर्म अरु फूटै गेहू ॥
अबहुँ वनहिं राम क्यहिं भांती। जिन्हहि निरखिजीवनदिनराती॥
पुनि मनमाहि कीन अनुमाना। पतिव्रत धर्म परम बलवाना ॥
भरत राम सम भेद न कोई। म्वहि भल भवन रहै सुत जोई ॥
धरि धीरज प्रभु वदन विलोकी। बोली बचन नैन जल रोकी ॥
तात किहेउ भल जस कछु चाही। यहि सम धर्म अपर जग नाही॥
पिता बचन जो पालन करई। सो जनु सकल धर्म धुर धरई ॥
यहिते जाउ मुदित वन ताता। जो आयसु दीन्हउ पितु माता॥
मोहिं शोच यक हृदय विशेखी। अति सुकुमार गात तव देखी ॥
क्यहिविधि तात धीर म्वहि आवै। पलकओट करि तुमहिं न जावै॥
जीवन प्राण लाल तुम मोरे। तुमबिन कछु न भाव म्वहिभोरे ॥
ते तुम जाहु वनहि अब रामा।क्यहिविधिकटिहिदिवसममधामा॥
तात मातु कर नात बिचारी। कबहुँ न भूल्यहु सुरति हमारी ॥
परम अभागिनि मैं जग माहीं। देखउँ बैठि सुवन वन जाहीं ॥
बड़भागी कानन रघुराऊ। जहँ तुम जाहु त्यागि गृह गाँऊ।
अवधि गये जो अवध न ऐहो। तौ पुनि मोहिं जियत नहि

त्यहिते करेहु सोई सुखऐना॥ जियत सवहि देखहुँ ज्यहि नैना॥
अस कहि परी चरण गहि माता। मोरि सुरति जनि भूल्यहु ताता॥
पद॥ सुरतिजनि भूल्यो राजिव नैन। करुणासिंधु कृपापरिपूरण
रूप शील गुण ऐन॥ पालक प्रीति रीति परमारथ विरद दीनहि
पैन। मातु पिता परिजन धन जीवन सुहृद सुजन सुख दैन
करि अनाथ रघुनाथ जाहु वन छोरि सकल सुख चैन॥ म्वहिं
मान अति नारि अभागिनि अपर जयो जगमें न॥ इमि भ
वन्त कहत कौशल्या करत वनत कछु हैन। अरि आये उप
जल लोचन सुनत मधुर मृदु वैन॥

दो० जननिहि राम उठाय तव लाये हृदय सप्रीति।
समुझाये वहुभाँति सों कहि मृदु वचन विनीति॥

त्यहि अवसर रघुपति वनवासू। सुनि सियमन अति भयउहरासू॥
व्याकुल परम सासु पहँ जाई। सादर चरण कमल शिर नाई॥
वैठि नमित शिर आशिप पाई। शोचत हृदय प्रीति अधिकाई॥
प्राणनाथ वन चहत सिधावा। होइ संग क्यहि सुकृत प्रभावा॥
जो न साथ लेहैं भगवाना। तौ तजि देह जाइहैं प्राना॥
यहिविधि शोचत अवनिकुमारी। नयन नलिन युग मोचतिवारी॥
वोली मातु मधुर मृदु वैना। सुनहु वचन मम राजिवनैना॥
अति सुकुमारि तात वैदेही। प्राणते अधिक प्रिया सबकेही॥

सवैया॥ पुतरी दृगसो करि प्रीति वड़ी सिय राख्यउँमें नि
प्राणन लाई। कल्पलता सम पालनकै वहु सींचि सनेह सुधासु
दाई॥ फल फूल समय विधि वामभयो परिणाम कहा कछु जा
न जाई। वन जावन चाहत है सियसो अव आयसु होत कहा
घुराई॥ कवित्त॥ मातु कलगोद मंजु ललित हिंडोरनैसु आँ

वेनोद कीन सीय बालपन में ॥ भई है सयानि जब पलँग पुनीत सेज कोमल बिहाय पग धरी न धरन में ॥ प्राणहू तें प्यारी मोहि जनकदुलारी भूलि आयसु न दीन दीपबातिहू टरन में ॥ भाग्यवन्त चाहत सो सीयवन जानि साथ आयसु है काह मोहिं शोच भूरि मन में ॥

कानन कठिन परम दुखदाई । निशिचर करि केहरि समुदाई ॥
फेरहिं विलोकि धीर डरि जाहीं । सिय सुकुमारि योग वन नाहीं ॥
मधुकर रसिक चकोरि कुमारी । रविकरदिशिकिमिसकैनिहारी ॥
कोल किरात भील तनुजाई । विपिन हेतु विधि चतुर बनाई ॥
सिय न सकी सहि वन दुखताता । वयकिशोरअति कोमलगाता ॥
कहहु समुझि मन जस रघुराई । तस मैं सियहि कहौं समुझाई ॥
मातु वचन सुनि प्रभु सुखमूला । बोले वचन समय अनुकूला ॥

॥ सवैया ॥ राजकुमारि सिखावन मो सुनिये हित लागि कहों जस चाही । आपन मोर चहौ भल जो मम बैन सुमानि रहौ गृह माहीं ॥ सेयहु सादर सासु सबैं नियधर्म्मपरे यहि सों जग नाहीं । भामिनि भौन भलो सबही विधि शोक लहै पितु मातु न जाही ॥

॥ दो० ॥ करि पितुवचन प्रमाण मै वेगि फिरब सुनु सीय ।
बार न लागिहि जात दिन धरहु सीख ममहीय ॥

रोलाछंद ॥ विपिन महा दुखदानि निरखि लागत भयभारी । व्याघ्र सिंह बृक व्याल फिरत निश्चरगण कारी ॥ अनिल अनल हिमि घाम परत कंटक मग माहीं । गड़ि गड़ि जावै पांव विपति सहि जात सुनाहीं ॥ पन्थ अगम दुखरूप मिलत सरिसर गिरिन्यारे । कन्दर खोह अपार जाय नहिं नयन निहारे ॥ अशन कन्द फलमूल शैन महि वल्कल चीरा । कानन कठिन कराल सुनत डरपहिं मन

धीरा॥ सवैया॥ मृगलोचनि कौसलराज अवै तुम काननके नहिं जोगै अहौ। सुनि देहहिं लोग सुखोरि हमैं तुमहूं बिनसंकट भूरि सहौ॥ असजानि प्रिया प्रसमाहि रहौ भलआपन जो हित मोर चहौ नतु पावहुगी परिणाम दुसै अथ प्रेम प्रिया हठ जोहि गहो॥

दो॰ प्रिया न करिबो हठभलो विदित अहै सबकाल।
। हठकरि दुखपाये अमित गालव नहुष भुवाल॥

गालव मुनि कौशिक के पासा। विद्या पढ़ि अस बचन प्रकासा॥ मांगहु मुनि गुरुदक्षिणा जोई। आजु देउँ मैं तुमकहँ सोई॥ यहि विधि हठकीन्हें त्रयबारा। है मुनि क्रोधित बचन उचारा॥ बसुशत श्यामकर्ण हय हिं आजी। देहु आनि तब होइ राजी॥ सुनि गालव दुख दुसह उठाये। ऐसे मिलोन्यन ढइ सौं पाये॥ इति हठ करि गालव दुख सहऊ। नहुष अयथ नृप सुकृती रहऊ॥ सुकृत प्रभाव इन्द्र पद लहऊ। इन्द्राणी सन भोगे चहऊ॥ कहेउ शची नहि रथ महि देऊ। आवो चढ़ि तब भोगै देऊ॥ सुनि नृप सप्तऋषिन रथ लाई। है आरूढ़ चलेउ हरषाई॥ सर्प सर्प चलिये नृप भाखा। मुनि अगस्त्य बोले करि माखा॥ होहु जाइ तुम सर्प भुवाला। इति हठ करि पायो दुखजाला॥

दो॰ ताते हठ जनि कीजिये रहहु प्रिया निज ऐन।
। सासु श्वशुर सेवन करहु मानि सुदित मम बैन॥

कवित्त॥ सुनि सीय बैन पति कोमल अमल चारु लोचन सजल पुंज प्रेम अत्र छायकै। जोरि कंजपाणि युग बोली बैन सुभ्रांति चारवरे पद्मपाये शीश आशु नायकै॥ दीन प्रति प्राण सो हि सीख जो सुहित भूरि दीखि सो विचारि पुनि हीय मैं बनायकै पति सुखियारा सम तियो न त्रिलोक इव भाग्यवन्त कृहत पु-

राण वेद गायकै। अमरावलि छन्द॥ कहि बैन इदं सिग राघव पाँय लगी। अमरावलिसी वन जानन प्रेम पगी॥ धरि धीर कह्यो करुणाकर मो कहँ जो प्रभु चाहहु ज्यावन तौ जनि भौन तजो॥ सवैया॥ मातु पिता भगिनी सुत सुन्दर धीर सुशील वचे सग भ्राते। मित्र पवित्र प्रिया परिवार जहाँ लगिहैं जग नेहरु नाते॥ सेवक स्वामि सखा हित सज्जन भूरि विरञ्चि दिये सुख दाते। नाह विहीन तिये सगरे प्रभु लागत हैं रविकुलन ताते॥ देह सुगेह धरा धन राज सुसाज सबै सुख शोक समाजू। भोग सबै सम रोग अहै कल भूषण भार धरे जनु गाजू॥ लोक सबै यम यातन सो सुख दानि लगै सगरे दुखदाजू। नाहविहीन तिये स्वपनै सुख है नहिं सत्य कहौ इति राजू॥ प्राण विना तनु सोह न ज्यों अरु सोह न ज्यों सरिता बिनु बारी॥ चन्द विना रजनी न सजै न सजै सर पंकजहीन तमारी॥ सोह न शूर विना रण ज्यों रसहीन यथा रस लुब्ध दुवारी। त्यों भगवन्त सुसत्य कहौ नहिं सोहत हैं बिनु पूरुष नारी॥ त्यहि ते नाथ साथ म्वहि लेहू। तुम बिनु म्वहिं सुहाइ न हि गेहू॥ प्रभु सँग म्वहिं वन खग मृग जाला। परिजन सम करिहैं प्रतिपाला॥ वलकल वसन अशन फल मूला। पर्णशाल म्वहिं सुखद समूला॥ नाथ साथ डर मोहि न कोऊ। रहय सुखी जहँ जहँ प्रभु जाऊ॥ क्षुधा तृषा निशा दुखित न ह्वैहों। प्रभु पद कमल निरखि सुख पैहों॥ मोहिं सकल सुख रौरेहि साथा। अस जिय जानि तजहु जनि नाथा॥ रोलाछन्द॥ रहै भानु बिनु दिवस रहै चाँदनि बिनु चन्दा। रहै वारि बिनु पात्र रहै भरि बिनु जल बृन्दा॥ रहै कमल बिनु पाथ रहै सेवक स्वच्छन्दा। मैं न रहौं क्षण एक नाथ तुम बिनु सुखकन्दा॥

दो० सुनि प्रमाण लखि प्रीति दृढ़ कह्यो निहँसि रघुनाथ।

त्यागि प्रिया मन शोच सब चलहु बेगि वन साथ ॥
सीय सहित रघुवंश-मणि मातु चरण शिरनाय।
बारम्बार कर जोरिकै चले सुआशिष पाय ॥
कुण्डलिया ॥ पाये लच्मण लाल जब राम गवन वन हाल
अति आतुर आये तहाँ बिलखत परम बिहाल ॥ बिलखत प
बिहाल धरे रघुपति पद माथा। कहि न सकत कछु बैन ग्रद जे
युगहाथा ॥ बन्धु बिकल अवलोकि राम बहु बिधि समुभाये। प्र
बियोग सुनि सहसि अधिक लच्मण दुख पाये ॥
पुनि प्रभु कह्यो वचन सुखदाई। धरहु धीर लखि अवसर भाई
जो मैं तुमहिं चलौं लै संगा। तौ पुर होइ काज सब भंगा
भरत शत्रुसूदन गृह नाहीं। दुखित मातु पितुमम दुखमाहीं
सबप्रकार असमंजस भ्राता। असजियजानि रहहुगृहभ्राता
ज्यहि नृप राज प्रजा दुख पावै। अवशि भूप सो नरकहि जावै
मातु पिता पद सेवन कीजै। लाभ लोक परलोकहु लीजै।
सुनि लच्मण बोले मृदु बैना। सुनहु कृपा करि राजिव नैना।
नाथ दियो सिखवन जो मोही। सो सब करन चाहिये वोही।
दो॰ जाहि सुगति कीरति बिभव प्रिया पुत्र पितु मात।
मोरे तौ सबभाँति यक तुमहींसों प्रभु नात ॥
॥ कवित्त ॥ मनवचकर्म छाँड़ि कपट सुसत्य भाय राखेरहि पाँयद
एक अनुरागिये। आपुहीसों काम नसुयाम अभिराम राम धाम धन
धीव है न प्रेम आपु पागिये ॥ आपुही भरोस आस दूसरो न जान
दास जीवको सुपास पास आपुहीके लागिये ।आगमवन्त जानि
सबभाँति मोहिं आपनो सुराखिये शरणस्वामि दासही नत्यागिये॥
दो॰ बन्धु वचन सुनि सरलशुचि कहेउ राम सचुपाय।

तात विदा ह्वै मातु सन वेगि चलहु वन आय ॥

छंदचौपैया ॥ सुनि रघुवरवानी अतिसुखदानी लषण मोद मन आयो। अतिहरष समेता मातु निकेता आय चरण शिर नायो ॥ लखि मलिन सुगाता पूछेउ माता कारण लषण बखानी। सुनि सहमि सुखानी धीरज आनी पुनि वोली मृदुवानी ॥ सुनिये सिख ताता तव पितु माता सीय राम सुख दैना। रघुपति जहँ जाही अवध सुताहीं तहँ तुमहिं सुख चैना ॥ सिय राम जु जाहीं वन घर माहीं काज कवन तव ताता। त्यहिते सँग जाहू जीवनलाहू लेहु सफल करि गाता ॥ सुत मोहिं समेता भाग निकेता भयो लाल वलिजाऊँ। जो छल तजि सारे चित्त तुम्हारे किह्यो रामपद ठाऊँ ॥

सवैया ॥ पुत्रवती युवती जगस्वै रघुनायकभक्त तनै ज्यहि होई। नातरु बाँझ भली जगमे सुत जन्मत नाहक भै तिय सोई ॥ राम सुवाम भये सुतते बड़ि हानि कहै कवि कोवि दलोई। भाग्यवली भगवन्त स्वई सियरामके रङ्ग रँगो नर जोई ॥

अस जिय जानि रामसँग जाहू। लेहु तात जग जीवनलाहू ॥ राम सीय पद सेवन कीन्ह्यो। स्वपनेहु चितकहुँअनतनदीन्ह्यो॥ समुझि हृदय स्वइ करेहु उपाई। ज्यहि दुख लहै न सियरघुराई ॥ असकहि सुतहि लाइ उर लीन्ही। जाहु मुदितमन आशिषदीन्ही॥ मातुचरण सादर शिरनाई। चलेलषण शुभ आशिष पाई ॥ आय रामपद वंदन कीन्हे। मुदित लिवाय संग प्रभु लीन्हे ॥

दो० सीता लषण समेत प्रभु कृपासिंधु गुणधाम।
चले मुदित आये तुरत नृपमंदिर अभिराम ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिद्धवर्मातमज्ञभगवतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेऔदशरथ महाराजाधिपादजानकीरघुनन्दनकौशल्यामातृविदामांगनसुमित्रालषणसंवाद सीतालषणसहितप्रभुनृपपासआगमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ४॥

सीता लषण सहित रघुनाथा। जाय भूपपद नायउ माथा।
सहित सीय सुत सुभग निहारी। भय अतिविकल धीरधुरधारी।
अति सनेह गहि हृदय लगावा। प्रेम विवश मुख वचन न आवा।
तब रघुनाथ जोरि युग हाथा। कहेउ विदा करिये हिं दीनै नाथा।
सुनि प्रभुवचन भूप दुख पाये। गहि कर निकट राम बैठाये।
बहुप्रकार सिखदीन महीपा। रहत न जाने रघुकुलदीपा।
तब सीतहि उर लीन लगाई। दीन विविध विधि सीखसुहाई।
नहिं सुहानि सुनि सीतहि कैसे। चकइहि शरद चांदनी जैसे।
॥ दो० ॥ केकयसुता सकोप तब मुनिपट भाजन आनि।
॥ बोली धरि रघुवर पहिरि जाहु बनै हित जानि ॥
। राम तुरत मुनि बेष बनि अनुज जानकी साथ।
॥ चले बंदि गुरु विप्र पद नाय मातु पितु माथ ॥
आये गुरु वशिष्ठके द्वारे। दुखि लोग सब भये दुखारे॥
राम सबहिं बहु धीरज दीन्हे। याचकवृन्द बोलि पुनि लीन्हे॥
दान मानकरि विनय बड़ाई। प्रमुदित कीन्ह सबहिं रघुराई॥
गुरुसन कहेउ जोरियुग पानी। तुम रक्षक सबके मुनिज्ञानी॥
असकहि राम गुरुहिं शिरनाये। सुमिरि गजानन मुदित सिधाये॥
प्रभु वनचलत विकल सब लोगू। कहिनजाय पुर दारुण सोगू॥
। दो० ॥ इहाँ सुमंत्रहि बोलिकै कहेउ विकल नरनाथ।
॥ रामहिं यान चढायकै जाहु सखा तुम साथ॥
वन दिखाय अन्हवाय सरि तात गये दिनचारि।
सिय समेत दोउ बन्धु पुनि लायहु पुर लौटारि॥
लौटहिं नगर न जो दोउ भाता। तो तुम कहव विनय करि ताता॥
देहु फेरि रघुपति वैदेही। कहिनि संदेश मातु पितु येही॥

हहिअवलम्ब अंत्र दिलि गिमाना ॥ रहहिंनतौ ममअत्रसिद्धनिदाना ॥
कहिअस परेउ निकलि भेरनाथा ॥ चले सुमन्त्र नाइपद माथा ॥
रथ आनिरुचिर साजि तहँ लाये विविधभाँतिकरिविनयसुनाये ॥
सुनि पितु शासन राम उदारा सियसहित अनुज युत भये सवारा ॥
चलेनाय भ्रत अवधहिं माथा पुरजन विकल लगे सबसाथा ॥
प्रीतिकी छन्द ॥ पुर लोगलागे साथ व्याकुल राम बहुविधि
कहि रही । नहिं फिरहिं ते वशप्रेम प्रभु मुखओर यकटक हेरहीं ॥ लो
त भयानक नगर अति जनु कालनिशि अंधियारि है ॥ नर नारि
जनु कराल डरपनि एक एक निहारि है ॥ निजधाम ज्योंहि मशान
परिजन भूतसम भयदानि है । यमदूतसम सुतमीत हित जनुचहत
मारन आनि है ॥ वनवाग वेलिमलीन सरिसर हेरि नैन न जावहीं ।
गजवाजि पशु मृग विहंग व्याकुल देह सुधि बिसरावहीं ॥ त्यहि
समय दारुण दुसह दुख क्यहि भाँति कउ वरणनकरै ॥ रघुवीर विपिन
पयानसुनि अस कौन जो धीरज धरै ॥ [illegible]
। दोहा ॥ यहिविधि पुरजन सहित सब कृपासिंधु रघुनाथ ॥
जायरहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिनुपाथ ॥

अवध दक्षिणै कोस दा तमसा नदी विशाल ।
चैत्रशुक्ल तिथिनौमिको आये रामकृपाल ॥

सवैया ॥ श्रीरघुवीर कृपा परिपूरण संतत दासनकी दुखहारी ।
आपुदुखी बहुभाँति भये अवलोकि प्रजा निज प्रेम दुखारी ॥ भाँति
अनेक दिये उपदेश फिरे नहिं लोग सनेह सम्भारी । शीलसनेह न
जाइ तजो रघुनाथहिं भो असमंजस भारी ॥ छप्पै ॥ लोगगये सब
सोइ शोक श्रमवश निशिपाई । विगत निशा युगयाम कह्यो सचि
विनहि रघुराई ॥ चक्रचिह्न दरशाय भ्रमित होंकहु रथ ताता ॥ ना

हिन अपर उपाय चहत बिगरन सबबाता ॥ इमि सचिव रामशासन अकनि प्रभु सिय लषणचढ़ाय रथ । दिशि बिपिन तुरत हांकत भयो रथकर खोज दुरायपथ ॥ तोटक छन्द ॥ भय भोर जगे पुर लोग जबै । गय राम उठे करि शोर सबै ॥ रथ खोज कतौं नहिं पावतहैं । कहि राम चहूँ दिशि धावतहैं ॥ भय व्याकुल भूरि न धीर धरैं ॥ यक एकन यों उपदेश करैं ॥ बनमे संग जानि कलेश महाँ । तजि दीन हमैं रघुनाथ यहाँ ॥ धृग जीवन राम बिना जग मैं । बपु छांड़ि न हंस गये सँगमैं ॥ यहि भांति बिलाप कलाप करैं। भख वंश प्रशंसि निजै निदरैं ॥ त्यहिऔसर केर विषादमहा । नहिं जात कह्यो मुनि धीर बहा ॥

दो० यहि प्रकार बिलपंत सकल आये अवध सप्रेम ।
राम दरश हित नारि नर लगे करन ब्रत नेम ॥

कुण्डलिका ॥ सीता सचिव समेत इत राम लषण द्वउ वीर । शृंगवेरपुर जायके पहुँचे सुरसरि तीर ॥ पहुँचे सुरसरि तीर उतरि कीन्हे अस्नाना । पीवत अमल सुवारि भये मन मुदित सुजाना ॥ जाना मरम निषाद साजि शुभ भेंट पुनीता । चल्यो मिलन सानंद गयो जहँ राघव सीता ॥

दो० करि प्रणाम आगे धर्यो भेंट मूल फल कन्द ।
अति सप्रेम यकटक चितै रह्यो राम मुख चन्द ॥
तब रघुनाथ सनेह वश सादर ढिग बैठाय ।
कुशलप्रश्न पूछी मुदित प्रेम न हृदय समाय ॥

रोलाछन्द ॥ सुनि निषाद करजोरि नाय शिर बचन उचारे । कुशलनाथ सब भाँतिदेखि पदपद्म तुम्हारे ॥ मैं सेवक प्रभुआपु कृपा कीन्ह्यो जनजानी । दीन्ह्यो दरश कृपाल कहौंकिमि भागबखानी ॥

अब चलि नगर कृपाल करिय पावन ममधामा। सुनि सप्रेम त्यहि वैन कह्यो सादर श्रीरामा॥ कह्यो सखा तुम नीक मोहिं पितु आयसु आना। चौदह वर्ष निवास विपिनभल नगर न जाना॥

दो० सुनि प्रभुवचन निषाद मन भयो विषाद अपार।
कहहिं नारि नर देखि द्वउ बंधु परम सुकुमार॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामल गौर किशोर अनूपम आनन चंद उदैसे। अञ्जन अङ्ग अपार प्रभा युग वेष धरयो रतिनायक जैसे॥ कोमल शील सुभाव भलो भगवन्त बखान करौं छवि कैसे। ते पितु मातु कहौ सजनी किमि जे पठये वन बालक ऐसे॥ सुनि बानि सुतासु सयानि सखी कउ एक कहै भल भूप किये। छविसागर नागर बालक ये बहु कामप्रभा जिन जीति लिये॥ सहि संकट आपु इन्हें पठये वन देखि जिन्हें मगलोग जिये। भगवन्त महीपति धन्य मही जिन लोचनलाभ हमें सुदिये॥

तबहिं निषाद हृदय अनुमानी। द्रुम शिंशुपा सुहावन जानी॥ शीतल सुखद छाँह सबकाला। गयो तहाँ लै राम कृपाला॥ निजकर कुशसाथरी बनाई। मृदुमंजुलमय दीन डसाई॥ कंद मूल फल विविध सुहाये। दिये आनि लखि प्रभुमन भाये॥ सीता सचिव सहित द्वउ भाई। भोजन कीन प्रीति अधिकाई॥ करि भोजन सोवन प्रभु लागे। गहिं शर चाप लषण अनुरागे॥ बैठे कछुक दूरिपर जाई। कसि निषंग शरचाप चढाई॥

दो० गुहबुलाय बहुपाहरू जहँ तहँ राखे आय।
बैठ्यो धनुशर साजिकै आपु लषण पहँ जाय॥
भूमि कुशासनपै निरखि सोवत राजिव नयन।
पुलकगात लोचन सजल कहत लषण सन बैन॥

सवैया ॥ जे रघुनंदन सीय सदा सुख सिंधु जिन्हैं शिव मानस गोए। ध्यावत हैं भगवन्त जिन्हैं मुनि सिद्ध सदा तन लाजन खोए॥ शैन करैं नित भूपनिलै मन लाजत मैन सुजो सुख जोए। ते सिय राम कृपा परिपूरण कानन भूमि कुशासन सोए॥

दो० फणि मणि सम भूपति जिनहिं जोगवत आठौं याम।
सोवत महि स्वइ रामसिय विधिगति कठिन वाम॥
कह्यो लषण यामें कछु दोष न काहुक होय।
करै कर्म जैसे ज्वई तस फल पावै सोय॥
मोह मूल दुख रूप सब जानिय जग व्यवहार।
संत संगति रघुपति भगति सार अंश संसार॥
व्यापक ब्रह्म अनादि अज अविगत अलख अभेद।
नेति नेति कहि जाहि नित बरणत बाणी वेद॥
राम स्वई निज भक्तहित धरि जग मनुज शरीर।
करत चरित पावन विविध सुनत मिटहिं भव भीर॥
सखा समुझि मन माहिं अस परिहरि मोह विकार।
भजहु राम रघुनायकहि हरण घोर भवभार॥

यहिविधि कहत राम गुणगाहा। भयो भोर जागे सुरनाहा॥ करि मज्जन चटक्षीर मँगाये। बन्धु सहित शिर जटा बनाये॥ लखि सुमंत मन भयो दुखारी। कहत वचन भरि लोचन वारी॥ नाथ कहेउ अवहिं कोशलराई। विपिन दिखाय गंग अन्हवाई॥ सीता अनुज सहित रघुनाथै। लायहु फेरि बेगि निज साथै॥ सुनि रघुवीर सचिव बरबानी। बोले गिरा धर्म नयसानी॥ तात तुम्हार मर्म सब जाना। सत्य समान धर्म नहिं आना॥

दो० शिबि दधीचि हरिचंद नृप रंतिदेव बलिभूप।

धर्म धर्यो सहि संकटहि कीरति विदित अनूप॥

किरीटछंद ॥ एक समय शिवि यज्ञकरै महिदेव रहे तहँ बैठ अपारन। इन्द्रस अग्नि सुन्यो यशकान चल्यो तहँ लेन परीक्षहि कारन॥ अग्नि कपोत स्वरूप भयो अरु वासव बाज कियो वपुधारन। खेद्यउ बाज कपोत भग्यो डरिजाय दुर्यो नृप गोद मँझारन॥

सवैया॥ पाछेहि धावत बाजगयो तहँ देखि नृपै असबैन सुनायो। भूप अहौ धरमज्ञ बड़े यशपुंज तुम्हार मैं सुनि पायो॥ आवहि याचक द्वार जुके तुमसों वह बेमुख जान न पायो। सो अवधर्म सँभार करो यशते यश लोकन भूप करायो॥

दो० भोजन मोर कपोत यह त्यहि क्यों गोद दुराय।
बहुत दिवस को छुधितहो दीजे म्वहि पकराय॥
सुनि राजा बोलत भयो श्येन बात सुनिलेउ।
पक्षी आयो शरण मम त्यहि कैसे तजिदेउ॥
शरणागत आवे जु निज ताहि तजै जो कोय।
कोटि ब्रह्महत्या सरिस त्यहि शिरपातक होय॥

ताते यह मोते जनि मांगो। तजि यहि आश पंथ निजलागो॥
सुनत बाज कह वचन बनाई। धर्म धुरीण अहौ तुमराई॥
जो मम अशन देउ नहि याही। तौ निश्चय मम जीवन नाही॥
म्वहि बिनु मरी सकल परिवारा। कवन धर्म तब तुम्हें भुवारा॥
एक पुण्य अरु पातक भूरी। इन वचनन कछु परी न पूरी॥
कह नृप वृथावाद जनि करहू। तजवन याहि सकल जो मरहू॥
अपर मांगि जो चाहै लेहू। बिनु सन्देह वेगि सो देहू॥
यहि विधि हठ कीन्हेउ जबराजा। तब करिक्रोध कहेउ स्वइ बाजा॥
धर्मवान जो नृप कहवावो। तौ यहिसम निज मांस खवावो॥

सवैया ॥ मुनि भूप भँगाय तुला तुरतै यक ओर सो आमिष काटि धस्यो। बैठाय कपोत दुजे पलरा गहि पाणि उठाय न पूरस स्यो ॥ बहु बार धस्यो न पुस्यो जबहीं तबही नृप आपुहि कूदि पस्यो। लखि लज्जित अग्नि विड़ौज भये नभ हर्षित जयजय देव कस्यो॥

दो० ह्वै प्रसन्न भगवन्त तव नृप कहँ दरश दिखाय।
धन्यधन्य कहि धन्य नृप गय हरि अनल लजाय॥
धर्म हेतु शिवि भूप इति संकट सहे अपार।
सो भगवन्त विचित्र यश विदित सकल संसार॥

भूप दधीचि धर्म के हेता। दुख जो सहे कहै को तेता॥
तनु तजि अस्थि सुरनकहँ दयऊ। तिनकोसुयशलोकतिहुंछयऊ॥
नृप हरिचंद सुयश जग जाना। मुनिकौशिकतिनसोछलठाना॥
सरबसु दीन बेचि निज अंगा। कहउँकहांलगि बिपतिप्रसंगा॥
धर्म न तज्यो सहेउ दुखजाला। बिदितसुयशतिहुंलोकविशाला॥
रन्तिदेव यश त्रिभुवन छावा। बहु उपास करि भोजन पावा॥
सो यक अभ्यागत को दयऊ। आपुउपासहि पुनिरहिगयऊ॥

दो० धर्म हेतु बलि बावनहिं दीन्ही पीठि नपाय।
बिदितसुयश तिहुँलोकसो कहउँकहांलगिगाय॥
धर्मवान ऐसे अमित सहि बहु संकट लीन।
तन धन सर्वसु दैदिये धर्म न त्यागन कीन॥

त्यहि ते सत्य तजब हम नाहीं। नाशै धर्म अयश जग माहीं॥
अस बिचारि पुर गवनहु ताता। पितुसनजायकहब असिबाता॥
नाथ कृपा वल पुण्य तुम्हारे। सब प्रकार बन कुशल हमारे॥
ममहित सोच करिय जनिनाथा। पितुसन कहब जोरियुग हाथा॥
तुमहुँ उपाय करब सोइ ताता। ज्यहिनशोचवलहुपितुमाता॥

सुनि सचिवहिं दुखदारुण भयऊ । नृप संदेश कहन पुनि लयऊ ॥
॥ सवैया ॥ नाथ कह्यो अस कोशलनाथ अवै लघु वै मिथिलेश कुमारी । फेरिय ताहि उपायन कै न सकी सहि सो वन संकट भारी ॥ आवहि ज्यों सिय लौटि घरै भगवन्त करौ सोइ युक्ति विचारी । पाय विना अवलम्ब कछू नहिं जीवन मो झख ज्यों विनु वारी ॥
दो० पितु संदेश सुनि जानकिहि बहुविधि सिखवन दीन ।
सासु श्वशुर सुख कहि बहुरि वन दुख बरणन कीन ॥
सो० सुनि सादर पति बैन बोली सिय कर जोरिके ।
सुनिये राजिवनैन कृपासिंधु शोभा सदन ॥
॥ सवैया ॥ जान शिरोमणि ज्ञानमई कुल हंस प्रभाकर हे सुखदाई । आपु विचारि कहौ जिय सों कहुँ छाँह सकै रहि देह विहाई ॥ माय प्रभा तजि भानु कहां कहुँ चंद्रिक चंद कहौ तजि जाई । यों भगवन्त सप्रेम विनै रघुनाथहि सादर सीय सुनाई ॥
बहुरि सचिव सन कह कर जोरी । क्षमिये तात ढीठता मोरी ॥
आरजसुत पद कमल विहीना । बादि नात जहँ लगि विधि कीन्हा ॥
प्राणनाथ विनु जग सुख भोगू । कहउँ सत्य सब रोग संयोगू ॥
कहिहैं ते सासु श्वशुर सन मोरी । विनय करव सादर कर जोरी ॥
मोर शोच कीजै कछु नाहीं । मैं प्रभु संग सुखी वन माहीं ॥
प्रियसुनि विकल सचिव सिय बानी । कहउँ काह सो दशा बखानी ॥
समुझाये बहु विधि रघुवीरा । तदपि न होत सचिव मन धीरा ॥
शिर धरि सादर राम रजाई । फिरेउ सुमंत सबहि शिर नाई ॥
दो० राम सुमंतहि फेरि कै बहुप्रकार दै धीर ।
आपु लषण सीता सहित आये सुरसरि तीर ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्म्मात्मज भगवन्तसिंह विरचिते भाषाशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्र रनयात्रा शृंगवेरपुरआगमन सचिवसंवादवर्णनोनाम पंचमो ऽध्याय ५ ॥

॥ सवैया ॥ दीनदयाल सभीवन पाल कृपाल सदा सुख दासन दायक। वेद पुराण पुकारतहै गुण दिव्य कलाप भरे सब लायक॥ धर्म धुरीण उदार सुखालय बीर प्रसिद्ध धरे धनु शायक। बन्दत है भगवन्त सदा कर संपुटके पद श्रीरघुनायक॥ कुण्डलिया ॥ राम कह्यो तब केवटहि लै आवहु निज नाव। सुनि बोल्यो केवट वचन सुनिये श्रीरघुराव॥ सुनिये श्रीरघुराव मरम सै रे में जाना। कीन्ह्यो शुभ मुनि नारि रही जो कठिन पषाना॥ ताते कठिन न काठ डरौं गति सुनि मुनिबामा। मानुष करणि सुमूरि अहै पद रज श्रीरामा॥ कवित्त॥ पाहन ते काठ की कठोर है न मेरी नाव नाथ सो उड़ातवार नेकहू न लाइहौं। पालौं परिवार सब याहीं अवलम्बलाय दूसरो क्वार है न बालक्यों जियाइहौं॥ होय कुल अपने कि हानि जो चढ़ाउँ नाव द्रव्यहू विहीन क्यों सुदूसरी सजहौं। रावरे शपथ बात साँची कहौं भाग्यवन्त धोये बिनु धूरि प्र नाव ना छुवाइहौं॥ धूरि है प्रभाव पगधूरि को प्रसिद्ध लोक रा न लागे अनुराग रूपधारिहौं। मानुष उड़ात है परसि जाहि गा में सुछोटी गति काठकी सँभार कौन कारिहौं॥ गौतमकि नारि गति होय जो तरणि आजु मेरे परिवार सब बाट मोरि पारिहौं भाग्यवन्त कीजिये उपाय किन कोटि आपु धोये बिनु पावँ ना पार मा उतारिहौं॥ सवैया॥ कोटि करो किन बात छरो नहिं जीवत आपनि हानि करैहौं। मोहिं मरे परिवार बचै बनबाहन हीं सबै मरिजैहो॥ लेत ध्ववाय नहीं पद क्यों मम नाव उड़ाइ कहँ तुम पैहो। सत्य कहौं पग धोये बिना भगवन्त तुम्है नहिं नाव चढ़ैहौं॥ प्रभु चाहहु पारहि जान जुतौ सुपखारन पायँ कहौ कर ना। पद धोइ उतारिहौं पार चहौं उतराइ कछू तुम सों मैं ना॥ अ

मारहिं लक्ष्मण तीर चहै जबलों पदपद्म पखारौं ना। तबलों भगवन्त सुसत्य कहौं प्रभु रोखहि पार उतारौंना॥ कवित्त॥ केवट के बैन सुनि प्रेम लपटाने चारु विहँसे कृपाल मन मोद भो अपारहीं। देखिके सनेह तासु शीलसिंधु बारबार जानकी लषण ओर राघव निहारहीं॥ कह्यो करु बात सो न जाय ज्यहि नाव तव आनि के सुजल पाँय वेगि तू पखारही। होतहै अवार अब लावै न विलंब भूरि धोयकै चरण मोहिं पारको उतारही॥ व्यापक अखिल विश्व पूरण विरज ब्रह्म ध्यानन अगम्य जापि योगीजन जागते। लावत समाधि शम्भु गावत सुयश वेद पावत न पार मुनि पाप पुंज भागते॥ शीलसिंधु नागर उदार चित्त कारुणीक दीनबन्धु दानिदास प्रेमपाग पागते। भाग्यवन्त स्वामि सोई पावन सुप्रेम वश ठाढे सरितीर नाव केवटसों मांगते॥ सवैया॥ ज्यहि थाह लहै श्रुति शास्त्र नहीं मुनि ध्यावनिकासन ध्यान मड़े। जपि नामतरें बहु पापभरे नर गोपद सो भवसिंधु बड़े॥ यमनादि अजामिल आदि कवी भय शुद्ध कटे दुख जाल कड़े। भगवन्त स्वई प्रभु केवटसों अनुरागसो मांगत नाव खड़े॥ हरिपदछंद॥ केवट राम रजाय पायकै परिजन सकल बुलायो। अति आनंद कठौता भरिकै सुरसरि जल लै आयो॥ चरण कमल प्रभु धोवन लाग्यो कहि न जाय सुखभारी। बरषहिं सुमन देव नभ संकुल जय जय शब्द पुकारी॥ जेपद कमल चहत विधि शंकर मुनिजन ध्यान न पाये। ते पद पद्म आजु यह धोवत कुटुंब सहित हरषाये॥ धन्य धन्य कहि देवताहि बहु मुदित दुन्दुभी दीन्हे। केवट पाँय पखारि वारि स्वइ पान कुटुंब सह कीन्हे॥

दो० कीन पान जल कुटुंब सह केवट परम प्रवीन।

आप तर्यो परिजन सहित पितरपार सब कीन ॥
तब केवट अति आनँद पायो । सादर आनि सुनाव चढ़ायो
गयो पारलै सबहिं तुरंता । कहि न जाय उर हरप अनंता
तब केवटहि बोलि रघुराई । कह्यो लेहु थोरी उतराई
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे । केवट कहेउ वचन अनुरागे
नाराच छन्द ॥ लह्यो ने आजु काह मैं कृपा कटाक्ष नाथके
मिटे दरिद्र दोप दुःख जन्म जन्म साथके ॥ किये कलाप काल
कृपाल मैं मँजूरिका । दिये विरंचि आजुसो वनाय भारि पूरिका
सवैया ॥ जे पद ध्यावत शम्भु सदा श्रुति गावत कीरति दि
जगी है । जे पदपंकजसों प्रगटी सरिदेव विलोकत पाप भगी है
जे पदपंकज पेषन को सुरसिद्धन की नित आस लगी है । धोयउँ
भगवन्त स्वई पदनाथ कृपा अब काह खगी है ॥ जे पदपंकज धू
छुये अघमे गति गौतम नारि लही है । जे पद धोय विदेहलहें सु
कीरति दिव्य प्रकाश मही है ॥ जे पदपंकज को वरणे श्रुति शार
पुंज प्रभाव सही है । ते पदकंज प्रक्षाल्यउँ मैं भगवन्त कमी अ
काह रही है ॥
दो० फिरति बार जनजानि म्वहिं जो कृपाल कछुदेव ।
सो प्रसाद भगवन्त मैं सादर शिर धरिलेव ॥
नाराच छन्द ॥ किये उपाययो कदम्बपै कछू न सो लिये । स्व
भक्ति चारुदै विदा सुराम केवटै किये ॥ पुनः नहाय गंगराम पूजि
शम्भु भायकै । किये विनै बहोरि सीय गंग माथनायकै ॥ प्रभाव
ब्रह्मवारि बारबार ही बखान की । दई अशीश गंग तो प्रसन्नपाय
जानकी ॥ कह्यो कृपालु तौ सखाहि भौन आपु जाइयो । तबै नि
पाद नाथ जोरिहाथ यो सुनाइयो ॥ जहाँ लगापु जाइहौ तहाँलु हौ

ठायकै। फिरो बनाय पर्णशाल शासनापु पायकै॥ विलोकि ता
नेह राम लीन बोलि साथही। चले गणेश शंभु ध्याय नाय गंग
माथही। सखा सबंधु राम सीय पाय बीच नासही। लख्यो प्रभात
आयकै कृपाल तीर्थराजही॥ कहो प्रभावपुंज क्यों बखानि तीर्थ
राजको। लह्यो प्रमोद पेखि राम जासु राजसाजको॥ तहाँ त्रिवेनि
न्हाय राम पूजि चन्द्रभालही। दिये बुलाय विप्रवृन्द दानमान
लालही॥ चले सवेग राम आय भारद्वाज आश्रमै। सुने मुनीश
लोग भो प्रमोदजाल तासमै॥ किये प्रणाम रामही मुनीश आय
धाइयो। दिये अशीश भूरिही प्रमोद ना समाइयो॥ कुशाभि
शालात शुभ्र आनि आसने दिये। सप्रेम पूजि भांति भूरि पूर्ण
भावसो किये॥ दिये सुधा समान स्वाद कंद मूल लायकै। सखा
बन्धु राम सीय भे प्रसन्न खायकै॥

दो०। परम प्रसन्न बिलोकि पुनि कृपासिंधु सुख ऐन।
भरद्वाज मुनिराज तब बोले अति मृदु बैन॥

सवैया॥ आजु भयो सिधि काजि सबै तप तीरथ त्याग समाधि
कियेको। योग विराग सुसिद्धि सबै फल आजु लह्यो जप दान
दियेको॥ त्यो भगवन्त भयो सफलाज सबैसुख साधनसाज कि-
को। राम तुम्हे अवलोकत आजु भयो परिपूरण लाहु जियेको॥

दो०। अब कृपाल करिकै कृपा म्वहि वर दीजै येहु।
ज्यहि पदपंकज रावरे उपजै सहज सनेहु॥

छंदत्रोटक॥ जबलौ जन आपु न होय सही। तबलौ सुख स्वप्न
न जीव लही॥ सुनि राम लह्यो सुख पुंज हिये। मुनिकी पुनि अ
स्तुति भूरि किये॥ तुम आदर जासु मुनीश करो। वह सोइ सबै
गुणग्रामभरो॥ त्यहि अवसर ग्रामनिवासि जिते। तहँ आवत भे

सुधि पाय तिते ॥ अति आनँद प्रेम उमंग युते । अवलोकन कौशलराज सुते ॥ सबसो रघुवीर प्रणाम किये । लहि लोचनलाभ मुदित्त हिये ॥ बहुभाँतिन आशिरवाद दिये । धरि राघव रूप अनूप हिये ॥ गवनें गृह आनँदजाल लही । सुखमा रघुवीर सराहतही ॥
तब निशि जानि तहाँ रघुवीरा । किय विश्राम हरण भवभीरा ॥
प्रातकाल उठि भाग नहाई । सखाअनुजसंह सिय रघुराई ॥
आयसुलहि करि मुनिहिं प्रणामा । चले वनहिं सानँद श्रीरामा ॥
ज्यहि मग निसरहिं ग्राम किनारे । होहिं मुदित सब देखनहारे ॥
सिय रघुवीर निरखि छबि ऐना । कहहिं एक एकनसों बैना ॥
एक कहहिं सियवदन सोहावत । चन्द्रसमान अली म्वहिं भावत ॥
षोड़श कलनयुक्त निशिराई । सीय वदन सुखमा बहु छाई ॥
शशिमहँ श्याम रेख यक राजै । सियमुखपर लट श्याम बिराजै ॥
शशिहि मृगाङ्क कहत कविभूपा । यह मृगनैन सुखद मुदरूपा ॥
तापहरत वह यह त्रयतापा । सियमुखशशिसमसखियकथापा ॥
एक सखी सुनि कह मृदुबानी । सियमुख कमलसरिस मैंजानी ॥
अरुण मृदुल अरु गंध बिशेखी । सिय मुख माहिंसकल सोदेखी ॥
कमलसुयशकविजन मुख गायो । सियमुखसुयशलोकतिहुँछायो ॥
सीत सुबैन पंकज जग जानै । यह प्रसिद्ध सीता श्रुतिभानै ॥
उपमा और न सम सरि आवै । सियमुखकमलसरिसम्वहिभावै ॥
सुनि पुनि सखी एक कह बाता । सियमुखसम न चंद जलजाता ॥
कमल मंदनिशि दिन निशिराई । दुहुन राहु हिमि शत्रु सदाई ॥
सिय मुख दुवन कतहुँ कउ नाहीं । करि विचारि देखहु मन माहीं ॥
त्यहिते चन्द्र कमल सम नाहीं । सियमुख सरिस सियैमुखआहीं ॥

प्रभु सिय लषण देखि छवि खानी। बड़भागी सब आपुहि ज्ञानी॥
पुरजन रहे देखि ठगि ठाऊँ। सकहिं न बूझि नाँवअरुगाऊँ॥
जे कउ वृद्ध रहे बुधिवाना। रहा मरम कछु प्रथमहिं जाना॥
मन अनुमानि गये ते जानी। यइ सिय राम लषण छविखानी॥
आदिहिते सब कथा सुनाये। पितु आयसु ये वनहिसिधाये॥
सुनि दुख भयो हृदय सब केही। राजहिं रानिहि दूषण देही॥
॥ सवैया॥ त्यहि औसर आवत एक भयो तहँ तापस बेप विरक्त किये। लखि रामहि दण्डप्रणामकियो सुउठाय हृदै प्रभु लायलिये॥ पुनि लच्मण पायँन लागि पस्यो सिय पायँन पूरण प्रेम हिये। मिलि फेरि निपादहि सादर सो अवलोकि रह्यो प्रभु चित्त दिये॥
दो० तापस केर प्रसंग यह पस्यो अचानक आय।
तोहि वरणि पुनि कहतहौ सोई कथा सुहाय॥
सवैया॥ ग्राम वधू यक एकन सो कहती नृप बालक देखि सुहाये। भाग बड़ो भगवन्त तिन्हें जिनके गृह ये सुत सुंदर जाये॥ कोमल गात किशोर महा प्रति अंग अनंग प्रभा बहु छाये। ते पितु मातु कहो सखिहैं किमि जे वन बालक ऐस पठाये॥
दो० मग लोगन इमि देत सुख कृपासिंधु मति धीर।
सखा लषण सिय सहित प्रभु आये यमुना तीर॥
यमुना उतरि सखहि रघुवीरा। विदा कीन भवनेउ धरि धीरा॥
प्रभु सिय लपण समेत वहोरी। यमुनहिकिय प्रणाम कर जोरी॥
चले विपिन सानंद रघुराई। कृपासिंधु भक्तन सुखदाई॥
मारग जात पथिक बहु मिलहीं। कहहिं देखि मृदु मूरति तिनहीं॥
सवैया॥ सुंदररूप अनूपबने सब राज सुलक्षण अङ्ग तुम्हारे। काननपंथ कठोर महा करि केहरि वृन्द न जाहिं निहारे॥ संग

लिये सुकुमारि प्रिया पदत्राण न हैं मग कंटक भोरे। होत यही अति सोचहिये लखि ज्योतिष झूंठ सुभाय हमारे॥

बहुरि बिचारि कहहिं कछु काला। गये आपु पुनि होब खुवाला। यहि निधि पंथ सबहिं सुख देता॥ जाहिं रामसिय लषणसमेता॥ ज्यहिपुर प्रविशि चलेप्रभु जाहीं। त्यहिपुर सरिस अमरपुर नाहीं॥ जे सिय राम लषण छवि देखे। ते जग पुण्य पुंज करि लेखे॥ ग्रामसमीप निकरि ज्यहि जाहीं। कहहिं देखि यक एकन पाहीं॥ आजु अबहिं यहि मारग जाता। सखि द्वै पथिक दीख सुखदाता॥

। कवित्त ॥ आगे सोहैं सांवरे बरन गौर पाछे नेकु लीन्हें सुकुमारि नारि प्यारि यक संग मेंं। सहज सुहाये मुनिबेषहें बनाये कटि तूनको लगाये भारि पानही न पग में ॥ कंजदल लोचनविशाल मुखचंद चारु सुखमा अपार सम उपमा न जग में। भाग्यवन्त कहौं छविकैसे कै बखानि मुख देखे द्वै पथिक जात आली आजु मग में ॥ किये मुनिबेष साथ लिये सुपुनीत बाम आजु द्वै पथिक याहि मारग सिधायगे। लघु लघु बैस छवि बैस ना त्रिलोक हेरि सुखमै सुछविमग मगमे सुछायगे॥ भाग्यवन्त कहौं गति कैसे सो बखानि जिन आपने स्वरूप अग जग लौ लोभायगे। पाये मैन आछी भांति देखन सुमुखचंद मोहनीसी डारिचित्त वित्तको चोरायगे॥

॥ दो० ॥ सुनि इमि बानी नारि नर चले बिलोकन धाय॥ कछुक दूरि आगे लखे जात सुपथ द्वउ भाय॥ बोली यक सखि एकसो देखु अली द्वउ भ्रात। सुन्दर रूप अनूपवर नारि सहित मग जात॥

कवित्त ॥ देखुरी पथिक द्वैक जात ये सुभाय चाट सुखमा नि-

धाम रूप शीलके अगारहैं। किये मुनिवेश पाणि लिगेहैं धनुष बान कसेहैं निषंग काम कोटि जैतवारेहैं ॥ सोहैं संग नारि एक अति सुकुमारि चारु शोभित शृंगार बिनु हार भूमिसार हैं। भाग्यवन्त कार सुख दुखके हरनहार अतिशय उदार काहू नृपके कुमारहैं॥ सुन्दर सलोने घन सोनेके बरण चारु मंजुल मधुर मृदु मूरति उदार हैं। बीच दीप्ति दामिनीरी भामिनी प्रकाशमान सुकृत सनेह शील सूखमाके सारहैं॥ भाग्यवन्त रूप मैं सुघार कोटि कामरति आनँद अगार नैन चैन दैनहार है॥ रहे न सँभार तन देखत अपार छवि आली ये अनूप काहू नृपके कुमारहैं॥ सवैया॥ नवपंकज लोचन चारु बने भृकुटी जनु काम कमान लसै। करकंज शरासन बान गहे छवि अंग अनंगन भूरि नसै॥ तिय संग सुभामिनि दामिनि सी अवलोकत जो रति मान नसै॥ भगवन्त प्रभा किमि जायकहो युग मूरति वै चित सो न खसै॥ तनु श्यामल गोर किशोर अबै मुनि वेष किये शुभ शीश जटा॥ करकंज शिलीमुख चाप गहे सु निषंग कसे वर लंक तटा॥ मुख पूरण चन्द्रप्रकाश मनो ताकि हारत कोटिक मैन भटा॥ भगवन्त बखान करौं छवि क्यो लखि रूप भये नरनारि कटा॥ सजनी धनिहै वहो ग्राम जहाँ सुखधाम सुवास किये निंतये॥ धनिहै त्यहि ग्रामगली अलिवै विहरैं वसु याम सखी जितये॥ धनि वै नरनारि सुभूतल मे सब भाँति सदैव जिन्हे हितये॥ हमहूं अब धन्य भई सबहे भगवन्त त्रिरूप इन्हेचितये॥ कवित्त॥ आली एक बोलीवैन सुनीमै ये बात कानि कहौ सो बखानि ताहि सुनि चित्त आइलै॥ ये है राजपुत्र जाते कानन सुतपकाज वनिता समेत पेखि वेषहूते ताड़िलै॥ त्पालि पितु वैन चले क्षितिको हरनभार परै जो न सांच स्वानि आलि मोहि गाड़िलै॥

भाग्यवन्त नामहै लपण रामचन्द्र चारु कौशलेश चक्रवर्ति भूपके हैं लाड़िले ॥ चतुरंसा छन्द ॥ सुनि त्यहि वैना। भरिजल नैना ॥ बदयक आली। परम विहाली ॥ कवित्त ॥ श्याम गौरगात अति कोमल किशोर वैसु माधुरी उमंग अंग अंग में सुछाये हैं। जनु रतिनाथ युत रति ऋतुनाथ साथ सुन्दर अनूप वेप मुनिको वनाये हैं ॥ प्राणनकेप्राण जगजीवन के जीवनय सूखमा समृद्धि कोटि कामभा लजाये हैं। भाग्यवन्त कैसे पितु मातुते कठिन जिन ऐसे सुखधाम पुत्र कानन पठाये हैं ॥ रानिहू अयानि भूरि कीन जो न बूझि वात पाहनौंते पुंजसो कठोरहीय तासुहै। राजहू न जान्य हू अकाज काज आपनो सुधारिवे विचारजे कुवैन कान जासुहै॥ रूप शीलधाम कोटि कामभाखु जैतवार ईनके विछोह पाय लोग क्यो सुपासुहै। भाग्यवन्त आंखिनें में राखिवे के योग है य दीन्ह कौन भाँतितेसु इन्है वनवासुहै ॥ सवैया ॥ अति सुन्दररूप नखशिख लो समहेरिन है उपमा जगकै। सुखसागर नागर आगरहैं छबिदायक मोद सुभायनस्वै ॥ पितु मातु कठोर अहैं किमि ते पठयें असि मूरति काननज्वै। भगवन्त हृदे सुहमेश वसौ अवधेशके वेश य बाल कद्वै ॥ मृदु पंकज पॉय नहीं पनहीं वन पन्थ महा दुखदायकज्वै सुकुमार कुमार अपार अवै कबहूं न पस्यो जिनको श्रमकै ॥ चलि हैं किमितेसु कठोरमही अवलोकिय शोचरहयो सखिह्वै। भगवन्त हृदय नितमोंसु वसै अवधेशके वेश य बालकद्वै॥ सुखधाम अनूपम मूरति ये इनको सखि का वनवास चहा। वनजान इन्है वरमं गतमें वहि रानि कठोर हृदय न दहा॥ अवलोकिय काननजा सवैं कहि हे हमलोग विचारि कहा। वहि राज समाज विषे भगवन्त कहा नर चातुरकै न रह ॥

यहिप्रकार सब नर अरुनारी। समुभि समुभिमन होहिं दुखारी॥
कहहिं एक एकन समुझाई। लेहु निरखि छवि नयन अघाई॥
प्रेम विवश देखहिं सब शोभा। रूप अपार नयन मन लोभा॥
यकटक चितवत सँग सब लागे। चले जाहि तनमन अनुरागे॥
कउ यक देखि छाँह सुखदाई। देहिं मृदुल तरुपात बिछाई॥
कहहिं सप्रेम जोरि युग हाथा। क्षणयक विलँविजाहु इतनाथा॥
मारगश्रम निवारि प्रभु लीजै। पुनि कृपाल जस भावै कीजै॥
तवलगिकउयकजल भरिलायो। अँचइयप्रभु मृदुवचन सुनायो॥

दो० जानि प्रीति सुनि वचन मृदु वटछाया भलि देखि।
सीतहि श्रमित विलोकि अति रामकृपाल विशेखि॥

क्षण यक विलँविगये त्यहि ठामा। सीता लपण सहित सुखधामा॥
भये मुदित सब नर अरुनारी। दुखितमीन जिमि लहिं वहुवारी॥
चितवहिं सब सादर चितलाये। प्रेम विवश तन सुधि विसराये॥
छवि अपार नहिं वरणि सिराई। रतिशतकोटि मदन वलि जाई॥

सवैया॥ सुंदर श्यामल गौर कलेवर मोहनरूप मनोहर जोरी। पंकजनैन भुकी भृकुटी कलकाम कमानहुकी गति तोरी॥ शीश जटा मुनिवेष कियेधनु पाणिलिये कर त्यों वय थोरी। क्यों भगवन्त वखान करौं रतिनाथहुके मति भै लखि भोरी॥

राम लपण सिय छवि अवलोकी। यकटक रहे नयनपट रोकी॥
पुरतिय धरि धीरज मनमाहीं। सिय समीप सादर चलिजाहीं॥
करि प्रणाम पायँन शिर नाईं। कहहि सप्रेम वचन रुख पाई॥

सवैया॥ श्यामतमालसो गात मनोहर कोटिक मैन लजावनहारे। पंकज लोचन वाहु विशाल सुपाणि शरासन शायकधारे॥ त्यों भगवन्त विलोकनि वंक चितै लिय चित्त सुचोरि हमारे।

पूँछति राजकुमारि तुम्हैं कहियो सखि को वय आहि तुम्हारे ॥

दो० ग्रामवधुन के वचन सुनि मृदु मंजुल सुखऐन ।
सकुचि सप्रेम सुभाय पुनि बोली सिय मृदु बैन ॥

गोरे शरीर सुभग सुकुमारे । ते लघु देवर अहैं हमारे ॥
पुनि प्रिय ओर चितै सुखपाई । कह्यो स्वपति सिय सैन बुझाई ॥
सुनि हरषीं अति सकल सयानी । पुनि सप्रेम बोलीं मृदुबानी ॥
धाम कहाँ कोशलपुर हेरे । काके सुत दशरथ नृपकेरे ॥
जात कहाँ इत तुमहिं सिधाये । कारण कवहि पितु शासन पाये ॥
भई विकल सुनि सकल सयानी । धन्य धन्य पुनि आपुहि जानी ॥
वार वार सिय पायँन लागीं । कहहिं सप्रेम वचन अनुरागी ॥

सवैया ॥ राजकुमारि कह्यो महि मारग आउब जो फिरि आनँद खानी । तौ भगवन्त कृपा करिकै पुनि दर्शन देव सुसेवकि मानी ॥ है हम लायक कोइ नहीं यदि शीश आपनि हेरि सप्रेम पिछानी । दीनदयाल दया न तज्यो सब भाँतिन मोहिं सु आपन जानी ॥

दो० सुनि सप्रेम तिनके वचन हृदय प्रीति पहिचानि ।
बहु प्रकार धीरज दिये कहि कहि सिय प्रियवानि ॥

गीतिकाछंद ॥ तब जानि अर्थ सब लषण लोगन विपिन मग पूँछत भयो । सुनि नारि नर सब सकल व्याकुल मलिन मन आनँद गयो ॥ मन समुझि कर्म प्रभाव अपने हृदय पुनि धीरज किये । भगवन्त सादर त्यो पि मारग सुगम तिन तब कहि दिये ॥

तब सिय लषण सहित रघुबीरा । चले विपिन सानँद मतिधीरा ॥
फेरे सबहिं वचन मृदु भाषी । चले भवन रामहिं उर राखी ॥
विरह विषाद अधिक मन माहीं । कहत परसपर इमि सब जाहीं ॥

कुण्डलिया ॥ जानि न जाय विरचि गति निपट निठुर चित

तौन। भल अनभल भावै ज्वई तिन विचार कर तौन॥ यिन वि- चारकर तौन रूख सुरतरु ज्यहि कीन्हा। सागर कीन्हो खार शशि हे अकलंक जु दीन्हा॥ दीन्हा करि ज्यहि कञ्ज सहित कंटक दृढ़ सानी। नीच धनिक बड़ रंक जाय विधि गति नहिं जानी॥ दीन्हे विधि जो पै इन्हें दुखदायक वनवास। तौ कत कीन्हे श्रम विपुल रचिरचि भोग विलास॥ रचिरचि भोग विलास फिरहिं ये विनुपद त्रान। नाहक कृत गज बाजि यान विधि वाहननाना॥ जो पौढ़हिं कुश डासि वादि मृदु सेजहि कीन्हे। वृथा रच्यो गृहवास तरहिं तरुतर जो दीन्हे॥ जो पै ये वन विचरि नित कन्द मूलफल खाहिं। तौ विधि अशन सुधादि बहु वादि रचे जगमाहिं॥ वादि रचे जगमाहिं फिरत वनपट ये धारे। भूषण वसन अनूप वृथा विरचे विधि सारे॥ सारे सुख जगमाहिं वादि विधि कीन्हे ता पै। मनमोहन सुखधाम इनहिं दीन्हे वन जोपै॥

दो० एक कहहिं ये सुठि सुभग आपु लीन अवतार।
अद्भुत रूप अनूप ये विरचे नहि करतार॥
देखहु खोजि त्रिलोक सब सुर नर नाग समेत।
सचराचर नरनारि महँ को अस प्रभा निकेत॥

यहि विधि सब मन करहिं विचारा। कहि न जाय उर प्रेम अपारा॥
राम लषण सिय कृपा निकेता। मगवासिन यहिविधिसुखदेता॥
जाहिं चले वन सहज सुभाये। निज शोभा रति मदन लजाये॥
ज्यहिमग जाहि निकरि द्वउभाई। त्यहि मग रहत मोद बहुताई॥
खगमृग वृन्द निरखि चकिजाहीं। थकठक रहत देह सुधि नाहीं॥
नगर नगर अस आनँद माता। सीता सहित निरखि द्वउभ्राता॥
विनुपदत्राण निरखि मग लोगू। कहत न ये रहैं कानन योगू॥

पाइ, अजोपि इन्हें असभाखे। तौ धरि हृदय कमल महँ राखै॥
जे कउ तिनहिं न देखन पावहिं। सुनि स्वरूपते पाछे धावहिं॥
दौरि निरखि छवि आनँद भरिकै। फिरहिं भवन शोभा उरधरिकै॥
अवलरहहिं कर मलि पछिताई। सुनि छवि हृदय न प्रेम समाई॥
सीता लषण सहित सुरनाहू। देत सवहिं मग लोचन लाहू॥
अति सुकुमार चले संग जाहीं। श्रमकण छाय रहे मुख माहीं॥
सहज सनेह पतिहिं ऋजु जानी। बूझत प्रभुहिं सीय मृदुवानी॥
॥ सवैया ॥ सिय पूँछति प्राणप्रियापति सों वह कानन केतिक दूरि अवै। प्रभु आपु प्रयान किये जहँको तजि सुन्दर भोग विलास सवै॥ क्षण एक विलम्ब करौ कतहूँ तकि पंथ परै तरु छाँह जवै। रज झारि वयारि सु कैमुख पै चलिहौं प्रभु आयसु पाय तवै॥ राजिवलोचन राम प्रभू पियके सुनि कोमल बैन सुहाये। आरत वन्धु कृपालय नेह सँभारत वारि विलोचन छाये॥ प्रेम सों पोपि कह्यो अवही वन दूरि धरो धृति भीरु सुभाये। यों भगवन्त बुझाय तिते पिय ओर चले मृग नैन लजाये॥
कछुक दूरि लखि छाँह गँभीरा। क्षणयकविलँवि गये मतिधीरा॥
समाचार पुर लोगन पाये। तजि तजिकामधाम सवधाये॥
राम लषण सिय रूप निहारी। पाय नयनफल होहिं सुखारी॥
कहहिं धन्य ते पितु अरु माता। जिन जन्मे सुत ये सुखदाता॥
आजु धन्य वड़भाग हमारा। जो भरि नयनन इनहिं निहारा॥
मगवासी यहिविधि नरनारी। निरखिनिरखि सव होहिंसुखारी॥
सव तहँ राम भीर वड़ि जाना। पुनिउठि कीन्हे विपिनपयाना॥
फिरे मुदित गृह लोग लगाई। करत परस्पर राम वड़ाई॥
॥ कुण्डलिया ॥ आगे प्रभु पाछे लषण मध्य सीय सुख धाम।

ब्रह्म जीवके बीच में जनु माया अभिराम ॥ जनु माया अभिराम शिवाशिव गणपति कैधौं। कैसह शची जयंत चले सँग सुरपति लैधौ ॥ लैधौं सँग रति मैननाथ ऋतु जात सुभागे। सीता लषण समेत जात कैधौं प्रभु आगे ॥ गीतिका छन्द ॥ सिय राम पंथ चरित्र पावन मोद प्रद मंगलमहा। नहिं जात मुखयक वरणि सुख मै छाय वन मारग रहा ॥ सिय सहित सुन्दर पथिक द्वउ सत भाय जिन देखे भले। ते धन्य विनु श्रम अगम भवभय पार दुख दारुण दले ॥ भगवन्त वह छवि अजहुँ जाके हृदय स्वप्नेहु आवई। श्री राम धाम सुजाय जो पथ कवहुँ काउ मुनि पावई ॥

दो० यहि प्रकार विहरत विपिन मग वासिन सुख देत।
वाल्मीकि मुनि आश्रमहि आये कृपा निकेत ॥

इतिश्रीमदयोध्यानिहवमीतमजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रप्रतिनिषादधात्तापथचरित्रप्रभुसीतालषणसहित वाल्मीकिमुनिआश्रमप्राप्तिवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दो० भवनिधिअगमअपार कहँ सुगमनाव ज्यहि नाम।
जनक सुता रघुनन्दनहि पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥
राम दीख मुनि आश्रमहि शोभा अमित अनूप।
सीता लषण समेत अति पाये सुख सुरभूप ॥
मुनि रघुवर आगमन तब आये मिलन मुनीश।
प्रभु प्रणाम कीन्होनिरखि मुनिवर दीन अशीश ॥
अति सप्रेम मुनि रघुवरहि लीन्हे हृदय लगाय।
निरखि राम मुख चन्द्र छवि हर्ष न हृदय समाय ॥
पुनि निज आश्रम लायके वहुप्रकार सनमानि।
कन्द मूल फल अशन हित दीन्हे मुनिवर आनि ॥
प्रभुसिय लषण समेत तब कन्द मूल फल खाय।

भये मुदित मुनिराज तव दीन्हे आसन लाय।
तव करि संपुट करकमल बोले श्रीरघुराज॥
आजु सुकृत मम सफल तव दर्शन ते मुनिराज।
वर्ष चतुर्दश मोहिं प्रभु दीन पिता वनवास।
सो अब सुथल बताइये जहँ मैं करौं निवास॥
सुनि मुनि रघुपति वचन मृदु बोले वचन सहेतु।
कसन कहौ तुम राम अस कृतपालन श्रुतिसेतु॥
तव चरित्र अद्भुत अमित अद्भुत रूप तुम्हार।
अनुपम अलख अनादि ज्यहि वेद न पावतपार॥
विधि हरिशंकर कौतुकी कौतुक जिन्ह अपार।
त्रिभुवन पति रघुवंश मणि त्यहि तुम देखनहार॥
तेऊ निज वल बुद्धि तव मर्म सकै नहिं पाय।
जानै सो भगवन्त वह ज्यहि तुम देहु जनाय॥
तुम कहँ जानै जान सो तुमहीं सम ह्वै जाय।
ज्यों मलया सँग काष्ठ लहि होत मलय सुखदाय॥
ते तुम सुरमुनि संतहित लागि धरेउ नररूप।
जड़ मोहन सज्जन सुखद करहु सुचरित अनूप॥
पूछेउ म्वहिं निज रहन हित कहउँ सुनहु सो ठाम।
जहाँ लषण सीता सहित वसहु सदा श्रीराम॥

छंद त्रोटक॥ जिनके श्रुति सिंधु समान परे। यशपावन तौ सरिजालभरे॥ कबहूँ परसो नहिं पूरभरौ। तिनके हृदि मंदिर रू करौ॥ युग लोचन चातृक जे सुकिये। धृत दर्शन वारिद चाह हिये॥ सरिसागर वारि सुनिंदत जे। लहि विंदु स्वरूप अनंदित जे। तिनके हृदि येस्मि प्रकाशभरो। सिय सानुज राम निवास करौ॥

जिनके मन मान न मोह मदा। तिनके मन धाम करौ सुखदा॥ प्रिय संत अनंत जिन्हे नितही। सम पेखत जे सु हिताहितही॥ नित भोजन आपु उच्छिष्ट करै। पटभूषण अर्पि तुम्हे सुधरै॥ शिर नावहिं देखि सु विप्रगुरै। करिये तिनके शुभथान उरै॥ पदतीर्थ पयान करैं जिनके। मन मंदिर राम बसैं तिनके॥ करहीकर पूजन राम सदा। तजि आपु भरोस न आन यदा॥ तुमतेधिक जानि गुरै सुहृदै। सनमानि सुसेवन कृत्य सदै॥ जननी सम जे परनारि तकै। वदवैन सुसत्य वृथा न बकै॥ वच मानस कर्म सदै जिनके। गति तो उरराम बसौ तिनके॥

दो॰ सबप्रकार ज्यहि आपु सों मन बच कर्म सनेह।
राम लपण सीता सहित करहु तासु उरगेह॥
यहि प्रकार मुनि राम कहँ बहुत बताये ऐन।
पुनि सप्रेम श्रीरामसन बोले मुनि मृदुबैन॥
सुनहुराम अब कहउँ मैं आश्रम सबै समान।
चित्रकूट गिरि सुखद अति करहु तहाँ शुभथान॥
अत्रि आदि मुनिवर जहाँ बसि तप करहिं अपार।
पावन सरि कानन सुभग फल बाँछित दातार॥
भलेहि नाथ कहि मुदित मन सीय सहित दउभाय।
चले तुरत पै सरितवर कीन्हे मज्जन आय॥

छन्द॥ चित्रकूट कियवास राम सुनि देवन पाये। धरि धरि कोल किरात वेष तहवाँ सब आये॥ रचे परण तृणशाल सुभग युग वरणि न जाही। सीता लपण समेत राम राजत तिन माँहीं॥ जनुरति ऋतुपति मदन युत मुदित बिपिन बसि तप करत। भगवन्त कहै किमि समय सुख चित्रकूट आनँद भरत॥ रोलाछंद॥ वरषि सुमन

सुरवृन्द हरषि जै जै बहुभाखी। गमने निज निज धाम हृदय सिय रामहिं राखी॥ समाचार सुनि सकल अत्रि आदिक मुनिवृन्दा। आये तहँ सानँद सुछवि देखन सुखकन्दा॥ प्रभु प्रणाम उठि कीन दीन आशिष सर्व काहू। राम लषण सियरूप निरखि लहि लोचनलाहू॥ भये मुदित मुनिवृन्द राम वहु विधि सनमानी। किये विदा सानंद सब कहि कहि मृदुवानी॥ सुनि रघुवर आगमन मुदित सब कोल किराता। कन्द मूल फल भूरि चले लै भरिभरि पाता॥ आये तहँ सानंद भेट दै प्रभुहिं जुहारी। निरखि निरखि सियराम रूप छवि होहिं सुखारी॥ जानि प्रीति वहु भांति तिनहिं रघुपति सनमानी। प्रभु प्रसन्न अवलोकि कहैं सादर मृदुवानी॥ सवैया॥ नाथ सनाथ भये सवहैं हम आपु सुपङ्कज पांय निहारे। कोशलनाथ कृपालत वागमना जु भये वड़ भाग हमारे॥ वास कियो भल जानि यहाँ रहवै सब काल सुआपु सुखारे। नाथ न आयसु देत सक्यो हमसे वकहै सकुटुम्ब तुम्हारे॥

दो॰ सुनि सप्रेम तिनके वचन रघुपति राजिवनैन।
परितोषे वहुविधि सवहिं कहि सप्रेम मृदु वैन॥
विदा किये पुनि सबहिं प्रभु चले नाय पद माथ।
आये निज निज भवन सब कहत रामगुण गाथ॥
यहिप्रकार कानन सुभग सिय समेत द्वउ भाय।
बसहिं परम आनंदयुत सुर नर मुनि सुखदाय॥

सवैया॥ जादिन ते करुणा करिकै सिय संयुत राम बसे वन आई। तादिन ते सब जीव सुखी अति होत भयो वन मंगलदाई॥ आनँद पूरि रह्यो सब ठाम सुजाहिं जहाँ जहँ द्वनहु भाई। क्यों भगवन्त विमान करो कानन मंगल रह्यो छविछाई॥

सोहहिं अतिवृक्षनकी पांती। फल प्रसून पल्लव बहु भांती॥
ललित लतान वितान सुहाये। विहँगवृन्द तिन महँ छबिछाये॥
शीतल मंद सुगन्ध बयारी। चलत सुभाय ताप त्रयहारी॥
फूले सरन सरोज अपारा। अलिगण करहि मुदित गुंजारा॥
खग अनेक बहु बानी बोलै। सुनत सुख मन धीर न डोलै॥
करि हरि कपि वृक कोल कुरंगा। बैर विहाइ फिरहिं यकसंगा॥
राम कृपा भय काहुहिं नाहीं। सुखी सकल बनचर बनमाही॥
कहौं प्रभाव बहुत किमि गाई। जहाँ बास कीन्ह्यौ प्रभु आई॥

दो० गिरि कानन सर सरित वर जावन त्रिभुवन माहि।
चित्रकूट के भागको सब मन रहें सराहि॥

यहि विधि सीयसहित दउभाई। बसहिंबिपिन त्रिभुवनसुखदाई॥
मन वच कर्म जानि निजदेवहिं। लषण राम पद पंकज सेवहिं॥
सुखी परम प्रभु सँग वैदेही। करत न सुरति मातु पितुकेही॥
कहहिं राम बहु कथा पुनीता। सादर सुनहिं लषण अरुसीता॥

दो० चित्रकूट यहि विधि सुभग सिय समेत दउ भाय।
परणशाल राजहिं मुदित शोभा कहि नहि जाय॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहनस्यकारवमात्मजभगवन्तासिंहाधिरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटविलासवर्णनोनामसप्तमोध्याय ७॥

दो० वरदायक वरदायकन वरदायक सुखधाम।
जनकसुता रघुबीरपद शिरधरि करौं प्रणाम॥
चित्रकूट ज्यहिविधि रहे सियसमेत दउभाय।
सो चरित्र पावनपरम कह्यौं कछुक मैं गाय॥
अब सुमन्त ज्यहिविधिगयो फेरि अवध दुखमानि।
सो चरित्र संक्षेप मैं सादर कहौं बखानि॥

॥ रोलाछन्द ॥ जबदयो प्रभुहि पठाय भवन निज जबहि निषादा। देख्यो सचिवहि आय परे महिं विकल विषादा ॥ रटत राम सिय राम देखि दुखभयो निषादे। समुझाये बहुभाँति सचिव अब तजहु विषादे ॥ बहुप्रकारदे धीर यान बरबस बैठाई ॥ रामबिरह दुखदीन सचिव रथहाँकि न जाई ॥ चलत न हय हिहिनात बिकल दिशि दक्षिणदेखी । बाजिदशा अवलोकि भयो दुख गुहहिं विशेषी ॥

॥ दो० तब दीन्हे करि साथ निज सेवक चारि बुलाय।
॥ हाँकि रथहि ते अवधपुर चले सुमन्त ल्यवाय ॥
बहुविधि शोच सुमन्तउर करमींजे पछिताय।
रामहि बिपिन पठाय पुर जाव कवन मुहलाय ॥
॥ पंचरचित यह अधमतनु आखिर रहि न निदान।
॥ कस न लहेउ जग सुयशवर बिछुरत श्रीभगवान ॥
॥ पुरजन मोहिं बिलोकि जब धायपूछिहैं आय।
॥ काह कहब मैं तिनहिं तब आयों बिपिन पठाय ॥

सवैया ॥ मातुसबै दुखदीन महा अवलोकि हमैं पुछिहै जबआई। कौन सुआननते कहवै तब कौन सँदेश तिन्हे सुखदाई ॥ आयउँ मैं कुशलात धरे बन सानुज राम ससीय पठाई। पूँछिहि जो त्यहि उत्तरदेब सुलेब यही यश औधहि जाई ॥

दो० पूँछिहि मोहिं बिलोकि जब राउ महादुख दीन।
कहिहौं का तब जासुकर जिवन रामआधीन ॥
सो० यहिविधि करत बिषाद तमसातट आयो तुरत।
कीन्हे बिदा निषाद फिरे पायपरि मन दुखित ॥

सवैया ॥ बसहानि गलानि सुमन्त महा सकुचे पुर पैठत माहिं हिये । कहिजाय न तासु दशातनकी जनु ब्राह्मण गोबध जाल

कये॥ तरुकेतर बैठि बितायदिनै भई सांझ सुऔसर जानिलिये।
भगवन्त घरीयुग शातिगये चुपके रथलै पुरपाँवदिये॥

दो० माधव कृष्ण सुब्राण तिथि गये निशारधयाम।
आय राखि रथ द्वार नृप रह्योजाइ छपि धाम॥
समाचार पुरजन सुनत धाये भूपति द्वार।
रामरहित अवलोकि रथ भय सब विकल अपार॥

पुनि सुमन्त आगमन अवासू। भई सब विकल परम रनिवासू॥
लाग्यो भवन भयानक कैसे। प्रेत निवास करत जहँ तैसे॥
विकल सकल त्यहि पूँछै लीन्हा। सचिव शोकवश उतर न दीन्हा॥
पुनि सुमंत भूपति पहँ गयऊ। नृपगतिदेखिअधिकदुखभयऊ॥

दो० राम विरह व्याकुल नृपति पर्यो धरणि यहिभांति।
सुरपुर ते जनु भूमि पै खसि नृप पर्यो ययाति॥

नृप ययाति कै गति भै जैसी। करि संक्षेप कहौं कछु तैसी॥
यकसै एक यज्ञ उन कीन्हा। यही देह सुरपुर लै लीन्हा॥
तब हरि निजदुख गुरुहि सुनाये। सुनत बृहस्पति युक्ति बताये॥
धरि द्विज रूप शक्र तहँ गयऊ। नृप ययाति ते बूझत भयऊ॥
आपु कीन का पुण्य अपारा। ज्यहिसदेह यहि लोकसिधारा॥
सुनि ययाति सुख वरणन लीना। तुरतहिं पुण्य भई सब क्षीना॥
पुण्यहीन महि गिर्यो ययाती। नृपदशरथगति भै त्यहिभांती॥

दो० भूप मनोरथ अमरपद भूमि मनोरथ वाम।
वरणन करि सुख धर्म निज पर्यो भूमि परिणाम॥

जाय सुमंत चरण शिरनावा। देखि भूप उठि हृदय लगावा॥
अतिसनेह पूँछत नृपतेही। कहु सुमंत कहँ रामसनेही॥
कहाँ लषण कहँ सिय सुकुमारी। पूँछत राउ नयन भरिवारी॥

सखा कुशल कहु रघुपति केरी। गये बनहिं की आन्यहु फेरी॥
कहिनि सँदेश राम कछु तोही। सपदिसुनाउ सचिव सो मोही॥
राजदेन कहि बनहिं पठाये। हरष विषाद न कछु मन लाये॥
अस सुत गये रहे जो प्राना। तौ म्वहिंसम को पापनिधाना॥
वेगि सखा स्वइ करहु उपाई। राम लषण सिय देहिं देखाई॥

सवैया॥ धारि सुधीर सुमंत हृदै नृप सों करजोरि कह्यो मृदु वानी। राजशिरोमणि चक्रवती तुम धीर धुरन्धर पण्डितज्ञानी॥ सेवहु साधु समाज सदा नृप कीरति पावन तौ जगमानी। त्यों भगवन्त विचारि हिये नृप धीर धरौ समया अनुमानी॥

दो॰ जन्ममरण बिछुरन मिलन हानि लाभ सुखशोग।
नाथ होत सब साथही कहत वेद बुध लोग॥

असनृप समुझि शोक परिहरहू। समय विचारि सु धीरज धरहू।
प्रथम कीन तमसातट बासा। दुसरे दिन गये सुरसरिपासा।
तिसरे दिन उठि होत सकारे। लय वट पय शिर जटा सँवारे।
सीता लषण सहित रघुवीरा। चढेनाव लखि मोहिं अधीरा।

चौपैया छंद॥ लखि मोहिं अधीरा धरि उरधीरा कह्यो वच रघुराई। पितुसन हुतिमोरी तुम करजोरी करब विनय शिरनाई। चिंता ममलाई करिय न राई म्वहिंसुद कृपा तुम्हारी। आयसु प्रति पाली फिरिहौं हाली तजि अशोच सुखकारी॥ जननिन समुझा धीर धराई विनय भाँति बहुकीन्ह्यो। गुरुसन पुनिजाइ पद शि नाई कहि सँदेश यह दीन्ह्यो॥ स्वइ करब उपाई ज्यहि दुखरा

यहिविधि रघुनायक जनसुखदायक कह्यो मोहिं समुझाई। केवट तबपाई रुख रघुराई पारहि नावचलाई ॥
यहिविधि राम लषण सियसंगा। चले नावचढि पारहि गंगा ॥
मैं लखि नैन जियत फिरिआयो। म्वहिंसम पापवन्तकों जायो ॥
सुनतपर्‌यो महिविकलभुआलू। मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यालू ॥
समयशोक किमिकहौं बखानी। सुमिरि सुमिरि सबरोवहि रानी ॥

दो० राममातु धरिधीर उर बोली बचन गँभीर।
नाथधरिय मनधीर तौ फिरि मिलिहैं रघुबीर ॥

सुनि नृप चितयो आँखि उघारी। तलफत मीनलह्यो जनुवारी ॥
उठे बोलि कहँ राम हमारे। कहँ सीता कहँ लक्षिमण प्यारे ॥
बारबार॥ इमि कहि नरनाहू। भयो अधिक उर दारुणदाहू ॥
यहि अवसरकर शोकअपारा। को असधीर जो बरणैपारा ॥

दो॰ अन्धीअन्धा शापकी तब सुधि हृदयसुकीन।
कौशल्यासन हाल सो। सब नृप वरणय लीन ॥

तापसान्ध अन्धी विख्याता। सरवन के ते हैं पितुमाता ॥
सरवन तिनहिं तृषितजियजानी। सरयूतट गये आनन पानी ॥
बोरयो जबहिं कमण्डल जाई। सो रव कछुक भूप सुनिपाई ॥
चीन्ह्योनहिं निशि नृपकरिजाना। त्यहि भ्रमते नृपमार्‌यो बाना ॥
लागत शर सरवन मरिगयऊ। तबतिन नृपहि शापअसदयऊ ॥
हमहि शोक दीन्ह्यो सो पैहौ। पुत्रविरह तुमहूं मरिजैहौ ॥
इति इतिहास भूप सुधिआनी। कौशल्यासन कह्यो बखानी ॥
बहुत बढ़ाय कह्यो मैं नाहीं। बिदित कथा अध्यातम माहीं ॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्हा। उदय पाप सोई अब चीन्हा ॥
कहि अस विकलपर्‌यो नरनाथा। छूक धृक जीवन बिनु रघुनाथा ॥

हाय हाय कहि कहि सियरामा। तनु तजिगयो भूप सुरधामा॥

दो॰ लखि लागीं रोवन सकल रानी हति शिरपानि।
भूपरूप गुण तेज बल शील सुभाव बखानि॥
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन लोग।
परयो रुदन घरघर अवध भूपमरणके शोग॥
होत प्रात मुनिआयके सबकर शोक मिटाय।
नृपतनु राखि सुयानकरि लीन्हें दूत बुलाय॥
कह्यो बेगि तुम जायके लावहु भरतहि बोलि।
भूपमरणकर हाल यह कह्यो कतहुँ जनि खोलि॥
यहै कह्यो पठये तुमहिं गुरुबुलाय द्वउभाय।
सुनि मुनिवरके वचनवर चले दूत तुर धाय॥

पहुँचे दूत भरत पहँ जाई। गुरुनिदेश सुनि दूनौ भाई॥ गमने तुरत शोच अधिकाई। पुरसमीप पहुँचे जब आई॥ लगेहोन अशकुन बहुभाँती। खर भृगाल रवकरहि कुभाँती॥ मिलहिंलोगकछुकुशलनकहही। करि प्रणाम निजमारगगहही॥ कैकयसुता सुन्यो सुत आवत। उठी तुरत उर चाव बढ़ावत॥

॥ सवैया ॥ कैकयनंदिनि मंद महासुत आवत जानि उठीहरपाई। कंचनथार सवाँरि सुआरति मंगल वस्तु भरे समुदाई॥ द्वारहि आय मिली भरते करि आरति पुंज प्रमोद बढाई। त्यों भगवन्त सुभेंटि भली विधि वारहिंवार सुमंदिरलाई॥

॥ दो॰ भरत दुखित परिवार लखि लहत न मनमें चैन।
सुतहि सशोच बिलोकि तब बोली केकइ बैन॥

॥ बन्धुछन्द ॥ पूछति केकइ पुत्रहि बाता। खैरि अहै मम नैहर ताता॥ भरत सबै कहि खैरि सुनाई। बूझेउ फेरि इहाँ कुशलाई॥

मुक्तकदामच्छन्द ॥ कहाँ कहु बेगि अहै मम तात। कहाँ कहु मातु सबै कुशलात ॥ कहाँ कहु राम सिया सुखदाय। कहाँ कहु लक्ष्मण प्रीतम भाय ॥ कमलछन्द ॥ सुनत सुवैन बयनं । ठन्यसि कुमति फयनं ॥ सारछन्द ॥ नैन नीर ढारि । बोलि बैन मारि ॥ कवित्त ॥ राज काज साज सब सहित कुशल क्षेम सकल प्रकार तात बात मैं सँवारिऊं। भई है सहाय मम मंथरा परमपीव देखि जों नशात काज आपने सँभारिऊं ॥ मांगि राज हेत तव कंटक उखारि सब थेरिक सिवात विधि बीचही बिगारिऊ। पाये न विलोकन महीप पुत्रराज तव त्यागि तनु आप सुरलोकही सिधारिऊ ॥ सुनत भरत भये सानुज विकल भूरि परेमहि मुर्छित संभारना सुगातही। तलफत मीन जनु पीन बिनु दीन अति हाय हाय हाय कहि रहे टेरि तातही ॥ गयो सौंपि रामही न तात गहि पाणि मोहिं पायों मैं न देखन नयन तोहि जातही ॥ भाग्यवन्त धारि उर धीरज सँभारि उठि पूछत सप्रेम बारबार पुनि मातही ॥ तोमरछन्द ॥ क्यहि हेतु गे मरि तात। ग्वहि बेगि सो कहु मात ॥ सुनि भरतके इमि बैन। कह मन्दधी दुख दैन ॥

दो॰ देवासुर संग्राम ते त्यहि दिन लगे जुकीन।
सो करनी सब आपनी कुटिल कुमति कहि दीन ॥

गीतिकाछन्द ॥ सुनि राम सिय बन गमन भरतहि बिसरि पितु मरिबो गयो। गिरि परेउ मुर्छित भूमि तलफत हृदय दुख दारुण भयो ॥ ग्वहि लागि सब सुख त्यागि निज सिय राम बन मारग गहे। अनुमानि मन सब हेतु आपन थकित धरि मौनहिं रहे ॥ मोदकछन्द ॥ व्याकुल देखि सुतै समुझावत। मानहुं लोन जरेम लगावत ॥ तात महीप न शोचन योगहि। पुण्य बिढै फल कीन्हेउ

भोगहि ॥ सवैया ॥ जग रीति है जीवन मृत्यु सदा त्यहिते नृप लागि न शोच धरो। नहिं होतहै आपन कीन कछू सुत होत सबै जु विरञ्चि करो॥ भगवन्त हिये अनुमानि यही धरि धीरज शोक तजौ सगरौ। ससमाज नृपायसु राज करो सुप्रजा परिवारक शोक हरो ॥ रथोद्धताछन्द ॥ राज कीजिय सु यों जबै कह्यो। सो सुने भरतको हृदै दह्यो॥ भेति व्याकुल सँभार ना रही। फेरि धारि धृति बैन यों कही ॥ कवित्त ॥ जो पै तव चित्त बीच रही यों कुमति नीच दीन्हे क्यों न मीचु मोहिं जन्मतहि बावरी। दीये कुल नाश करि एकही सुधार तयँ पस्यो सुभि काह तोहिं कीन्हे जो कुदाँवरी॥ कीन्हेसि तु ऐस जैस करी है न कोई जग पापिनि प्रतीति तोरि कीन्ही किमि रावरी। ऐसो बर मांगते खसी न महि जीह तव फूंभि मुख मैन भयो उर घावरी ॥ सवैया ॥ हरि बुद्धि लई बिधि अंत समय नृप बात न लीन विचारि हिये। रघुनंदनसे सुत जाहि वनै इति बैनलया त्यहि कान किये ॥ अब तोहिं कहौं बहु भांति कहा तै तो सब काज बनाय लिये। वन लक्ष्मण राम ससीय पठै पति मारि हमै त्रहे राज दिये॥ मारत नाँह न नेकु डरी बर मांगि बनै सियराम पठाई। कौन सों प्रेत पिशाचिनि है कहँकी नृप बामभई अब आई॥ जो त्वहिं राम अहित्त लगे कहु सत्य कठोर हिये दुख दाई। जोहसि सोहसि मूँदि मुखै उठि आँखिन ओट तु बैठहि जाई॥

दो॰ त्यहि अवसर कुबरी तहाँ आई सजि सब गात।
लखि सक्रोध उठि शत्रुहन हनि मारी यकलात॥

कवित्त ॥ लागत चरण चोट गिरी सो धरनि जाय कूबर गो टूटि फूटि फाटि गो कपारहै। गये मुख टूटि दंत दलित अधर बीच खंडित सुजीह जोर चली रक्त धारहै॥ हाय हाय हाय कहि रोवन

पुकारि दैव करत सुनीके फल पायों मैं व्यकारहे। सुनि शत्रु आरि धारिकेशन घसीटिपीटि डारी तन तासु करि दुर्गति अपारहे॥

दो॰ भरत दयानिधि देखि तब दीन्हें ताहि छोड़ाय॥
कौशल्या के भवन पुनि आये चलि द्वउ भाय॥

पंकज वाटिका छन्द॥ राम जननि गति जाय लख्यो जब। शोक विकल द्वउ भाय भये तब॥ सवैया॥ पहिने पट अंग मलीन महा वपु गौर अतीव सुश्याम भयो। कृशगात गयो रहि अस्ति मई हत श्रीसुख जाल उदासि छयो॥ दुखभार सँभार न कारिसकै रघुवीर वियोग त्रिताप तयो। जनु कल्पलता वर कानन में छवि छाय रही सुतुपार हयो॥

राम मातु जब भरतहिं देखी। उर उपजा अनुराग विशेखी॥
लगी उठन महि गिरी भँवाई। भरतहिं देखि बहुरि उठिधाई॥
पुनि गिरि परी अजिर महँमाता। निरखि रोय दीन्हे द्वउ भ्राता॥
भरत उठाय चरण शिर नाये। तवहिं मातु गहि हृदयलगाये॥
नयनन नीर भरे द्वउ भाई। समय विषाद वरणिनहि जाई॥
कौशल्या तब धीरज लाई। वहु प्रकार भरतहिं समुझाई॥
अँचल आंसु पोंछि पुनि रानी। कहत भरत सों इमि मृदुवानी॥
तुम विन तात मोर यह हाला। उठि न सकौं तनुपरमविहाला॥
राम लपण सिय वनहिं सिधाये। करिमुनि वेप पयादेहिं पाँये॥
राम विरह भूपति तनु त्यागी। सुरपुर गयो आपु वड़ भागी॥
मै न गइउँ सँग तज्यउँ न प्राना। को पापिनि जग मोहिंसमाना॥
मातु वचन सुनि भरत सभाई। भये विकल तन दशा भुलाई॥
रोवहिं विकल सकल रनिवासू। कहि न जाय जसभयो हरासू॥
बोले भरत धीर धरि बाता। वृथाजगत जनम्योम्पहिंमाता॥

सवैया॥ केकइ क्यों जननी जगमांझ महादुखदाइनि पापमई है। जोपय सो जननी जगआनि तु काहुन है निज बांझगई है॥ वंश कलंकित द्रोहमई अघरूप जु जन्मत मोहिंभई है। जोपि है करिवो असताहि तो काहेन डायसि होत हुई है॥ मोसमको जग पापमई ज्यहि लागिभई गति तो असिमाई। तात पयान किये सुर लोक ससीयगये वन दूनहु भाई॥ केवल मोहि अनर्थक मूलसों उतपात भयो म्वहिं लाई। जन्म वृथा जग मोर भयो ज्यहि लागि सवै दुख दारुण पाई॥

दो०। धिक धिक उदधि अभाग मैं औगुण अयश अगार।
ममपाछे सियराम वन सहिहैं विपति अपार॥

सुनि मृदु बचन राम महतारी। वोलीं हृदय धीर धरि भारी॥ तात जाउँ बलि समय विचारी। धीरज धरहु धीर धुरधारी॥ मोर अभाग न काहुहि दोषू। तात मातपर करिय न रोषू॥ होनहार सुत जो कछु रहेऊ। कालपाय सव होत सो भयऊ॥ भयउ वाम विधि उदय अभागू। तात सकल मम कर्मन लागू॥ सुनि दुखभरी मातु मुख बानी। कहत भरतकरि सम्पुट पानी॥

दो०। जो अघमारे मातु पितु गाय विप्र गुरु होय।
मातु मोर मत होय तो देवै विधि म्वहिं सोय॥

रोला छन्द॥ जे मारे शिशु ग्रामगाँव वन आगि लगावै। चलै वेद प्रतिकूल साधु सुरसंत सतावै॥ जेहरि हरपद त्यागि भजै नित भूत पिशाचा। नहि सुहाय हरि सुयश कहैं मुख सत्य न वाचा॥ विपदै मारै मित्र अपडर दया न आनै। कपटी कुटिल कलाप पाप पर वदन वखानै॥ तिनहिं पाप जो होइ देउसो मोहि विधाता। मत हमार लवलेश होय जो यामे माता॥ जे निन्दक श्रुति शास्त्र

भेद हरिजनमें लावत ॥ परधन परतिय काज लाज तजि निशि दिन धावत ॥ देहिं विप्र गुरु शोक मातु पितु चरण न सेवैं । करै न तीरथ वर्त विनाहरि अर्पण जेवै ॥ लोभी लम्पट चोर मांस मदिरा जे खाही । नितउठि ठानै रारि साधुसंगति नहि जाहीं ॥ होंय तिनहि जो पाप देउ मोकहँ विधि सोई । जो जननी यहि माहिं मोर तनकौ मत होई ॥

दो० कर्म वचन मन छाँडि छल जिनहि न हरिपद नेहु ।
तिनके गति म्वहि देहु विधि जो जानौ मत येहु ॥

गीतिका छन्द ॥ सुनि भरतके इमि वैन मृदु शुचि सरल सुठि सांचे सदे ॥ भरि नीर नैनन जननि पुनि पुनि कहत धरि धीरज हृदे ॥ तुम तात करिय न शपथ तुम कहँ प्राणसम प्रिय रामहे । रघुबरहिं तुम प्रिय प्राणसम सुत कोउ काहु न खामहें ॥

दो० मातुमते मत तातत्तव कहे जो लघु मति कोइ ।
शुभगति सुयश सुधर्म सुख स्वमेहु लहै न सोइ ॥

छन्द ॥ कहि वचन अस पुनि मातु भरतहि पाणि गहिउर लायऊ । अनुरागवश सुत स्रवतथनपय नीर नैनन छायऊ ॥ यहि भाँति विलपत रैनि वीती प्रात मुनिवर आयऊ । उपदेश वहु विधि देइ भरतहि सवन धीर धरायऊ ॥

दो० गुरु वशिष्ठ आयसु भरत उठे करन पितु काज ॥
बोलि सचिव सेवक अनुज कह्यो सजहु सबसाज ॥

छंद ॥ तब वेद रीति न्हवाय नृप तनु विविध गंध लगायके । सुन्दर विमान वनाय सजि त्यहि माहिं नृप पौढ़ायके ॥ करि विनय राखी मातु सव पुनि सरयुतीरहि ल्यायके । चंदन अगर वहु भार आये अमित गंध भँगायके ॥ विरचे चिता भलि भाँति जनु

सोपान स्वर्ग सुहावनी । ज्यहि भाँति कीन्हीं दाह क्रिय तहँ भरत रवि सनथावनी ॥

दो० अवध पूर्व चौकोश पै घाट बिल्व हरि जानि।
तहँ अदग्ध महि शोधिके दाह क्रिया किय आनि ॥

छप्पै॥ दाह क्रिया करि सकल न्हाय तिलअंजलि दीन्हें। शोधि सुमृति श्रुति शास्त्र सविधि दशगात्रहि कीन्हें ॥ भय विशुद्ध बहु भाँति बोलि विप्रन दिय दाना । धेनु बाजि गज अन्न बसन भूषण धननाना ॥ बहु भाँति द्विजन सनमान करि दिये दान अभिलाखसों । पितु हेत भरत करनी जु किय कहि न जाय मुखलाख सों ॥ बरवैछंद ॥ माधव शुक्ल पंचमी चंदसुवार । जानि सुदिन मुनि गये भूप दरबार ॥ पुरजन परिजन सचिवन सकल बुलाय । राजसभा महँ बैठे सब मिलि जाय ॥ तब तहँ पठये बोलि भरत दउभाय । आवत भये तुरत गुरु आयसु पाय ॥ निज समीप बैठो मुनि गहिपानि । पुनि बुलाय मुनि पठई तहँ सब रानि ॥

दो० तब वशिष्ठ मुनि भरतसन सावकाश सब जानि ।
॥ धर्मनीतिमै वचन मृदु कहत प्रेम रससानि ॥
कही प्रथम मुनि केकई कीन जो कठिन कुदाव ।
राम लषण सिय पठय बन दीन्हेसि सबहि कुघाव ॥
पुनि नृप सत्य सुधर्म ब्रत कीन मुनीश बखान ।
ज्यहिं निबाहि निज प्रेम प्रण तृण सम त्यागे प्रान ॥

सवैया ॥ शोच न कीजिय भूप हिते ज्यहि आपन पूरण प्रेम कियो है । राम वियोग कृशानु महा तृण सों धरि जो निज प्राण दियो है ॥ भोग विलास कलाप किये लखि जाहि सिहात सुरेश हियो है । त्यों भगवन्त रह्यो यशछाय मनो शशि शर्द प्रकाश

वियो है ॥ कवित्त ॥ शोचिय महीप सो न नीति में प्रवीन जौन शोचिये सो विप्र जाहि वेदको न ज्ञानहै। शोचिय सो वैश्य धनवान है कृपण जौन शोचिये सो शूद्रकार विप्र अपमानहै ॥ शोचिय सो नारि पतिवंचक कुटिल जौन शोचिये सो वटु तजिव्रत रत आनहै। भाग्यवन्त सोई सब भाँति है सुशोचनीय जाके नहिं प्रान जीव भक्ति भगवानहै ॥ सवैया ॥ शोचइ योग न कोशलराउ सुजासु प्रभाव तिहूँपुरछायो। जो गुनगाथ बखानकरैं हरि शंकर ब्रह्म पुराननगायो ॥ तात पिता जस आपु भये तस है नहि होन न ह्वैकहुँ आयो। त्यों भगवन्त सुभागवली अवधेशसमान नहीं कोउजायो॥

दो० तातेतात न कीजिये शोच कछू मन माहिं।
होनहार जो होत है होत टरै सो नाहि ॥

॥ सवैया ॥ केकइ क्रूर कठोरमहा त्यहि काहकहौ नहि जात कही है। राय कुबुद्धिमई पुरं आगि प्रचंड सबै नर नारि दही है ॥ सातुज सिय पठैबन राम कलंक विधौ पन आपु लही है। त्यो भगवंत न जाय कही विधिकी बिधितातिं कठोर सही है ॥ राम स्वभाव न जाय कह्यो पितु आयसु जेतजि भूषणसारे। वल्कल चीर सँवारि तुरंत उठे कछु मानस खेद न धारे ॥ बारहिं बार बुझायसबै पितु पंकज पायँ पुनीत जुहारे। धर्म्म धुरन्धर धीरनि लै पितु आयसु कानन राम सिधारे॥

दो० सुनहु भरत भूपहि वचन प्रिया न प्रिय निजप्रान।
ताते तात सु कीजिये ताके वचन प्रमान ॥

रोलाछंद ॥ ज्यहि रघुवर हित लागि तजे तृणसम निजप्राना। करहु तासुकर वैन धर्म्म इति वेद बखाना ॥ तुमहि राज नृप दीन ताहि कीजे सुखमानी। यहिसम धर्म न आन पुत्र पालै पितुबानी॥

दो० परशुराम पितु शासनहि कीन्हे बध निज मात।

सवैया ॥ छींक सुमंगल धाम अहै सुविचार कियो कछु विग्रह नाहीं । संग लिये पुर लोग सबै रघुनाथहिं भरत मनावन जाहीं ॥ सो मम बैन प्रतीत करौ तुम जाय मिलौ चलिकै उनपाहीं ॥ सा हस कर्म करी नहिं कोइ करी सो विचारि करौ मनमाहीं ।

दो० सुनि निषादपति हरपि कह कहत बृद्ध भलि बात ।
बिनु बूझे सहसा करै सो पाछे पछितात ॥

अस मन समुझि मुदित गुहराजा । तुरत साजि सब भेंट समाजा ॥
खगमृग विविध वसन धन मीना । कंद मूल फल सुरसरि भीना ।
मिलन साज सब सजि गुहनाथा । चलेउ मिलन लै पुरजन साथा ।
जाय प्रथम मुनि पद शिरनावा । पाइ अशीश भरत पहँ धावा ।
आवत देखि भरत रथ त्यागी । चलेउ जानि रघुवर अनुरागी ।
केवट जानि गाँव निज नामा । कहि पुनि भरतहि कीन प्रणामा ।
करत प्रणाम भरत उर लाये । अति प्रिय मनहुँ लपणकहँ पाये ।
निरखि देव नभ बरपहिं फूला । जयजय करहिं परम अनुकूला ।

सवैया ॥ लोकहु वेद सबै विधि नीच निपादहु ये तिनजा पर छाई । होयन सो बिनु मार्जन शुद्ध कह्यो इमि वेद पुराणन गाई । भेंटत ताहि प्रफुल्लित प्रेम सुअंक भरे रघुनन्दन भाई । राम को किंकर है भगवन्त लख्यो नहिं कों जग जाल बड़ाई ॥

दो० मिलि सप्रेम केवट भरत पूँछी कुशल सुभाय ।
कह्यो नाथ मम कुशल सब देखि तुम्हारे पाय ॥
सब भाँतिन अति नीच मैं अधम सुकरमन बाम ।
जबते प्रभु आपन कियो भयों सुमंगल धाम ॥
देखि प्रीति रिपुहन बहुरि मिले ताहि उरलाय ।
पुनि केवट रानिन सकल मुदित जुहारेउ जाय ॥

पाई अशीश मुदित गुह नाहू। पुनि सप्रेम भेंटेउ सब काहू॥
देखि सुभाव सहित अनुरागा। पुरजन तासु सराहत भागा॥
धन्य धन्य यह सब सुखधामा। भेंटेउ जाहि लाइ उर रामा॥
तब निषाद बहु विनय सुनाई। सादर सबन कहँ चल्यो लिवाई॥
आये सब सुरसरि के तीरा। भये मुदित लखि धवलसुनीरा॥
करि मज्जन माँगहिं वर येहू। नित नव अधिक रामपद नेहू॥
तब गुह समय सरिस सुखदायक। दीन बास जोजन ज्यहि लायक॥
सब सुपास करि सिबे बहोरी। बहुविधि विनय कीन करजोरी॥

॥दो॰ राम सखहि तब बोलिकै भरत साथ निज लीन।
गये तुरत चलि रैनि जहँ सैन राम सिय कीन॥
कुश साथरी विलोकि कै भये विकल मतिधीर।
करि प्रणाम लोचन सजल बोले बचन गँभीर॥
धिक् धिक् अधम अभाग मैं पापार्णव दुखमूल।
रामलषणसिय मोहि लगि सहत विपिन बहु शूल॥

सवैया॥ जे सिय राम सबै सुखधाम सके कहि को तिन सुंदरताई। मातु पितै प्रिय प्राण समान सुशील कृपाल सबै सुखदाई॥ गावत वेद पुराण जिन्हें भगवन्त रह्यो यश लोकन छाई। नाहि न कान सुने दुख जे अब ते महि सोवत दर्भ डसाई॥

दो॰ लषणलाल सम भाय सुठि भयो न त्रिभुवन काहु।
मम कारण ते बन बसत सहत दुसह दुखदाहु॥
धिक् धिक् मोहिं कुमातु युत अयशमूल अघधाम।
फटि न अवनि धँसि स्यो कस न होत राम ते वाम॥

छप्पै॥ सुनि सप्रेम मृदुबैन कहत कर जोरि निषादू। जानि वाम विधि नाथ तजौ मन सकल विषादू॥ तुम रामहि प्रिय प्राण प्राण

प्रिय राम तुम्हारे। धरहु धीर अस जानि हृदय तजि शोचन सारे॥
सुनि सखा वचन धरि धीर उर आये थल सुमिरत प्रभुइ। रघुवीरगुणन
वरणत भयो भोर लागि उतरण सभइ॥
उतरि देवसरि करि अस्नाना। कीनसवहिं मन मुदित पयाना॥
भरत सुवन्धु पयादेहि जाहीं। देखि सुसेवक मन सकुचाहीं॥
सुमिरत राम सीय लवलायें। तिसरे पहर प्रयागहि आये॥
सादर सवह्नि मज्जन कीन्हा। अमित दान महिदेवन दीन्हा॥
करि प्रणाम माँगहिं वर येहू। वढ़ै राम सिय चरण सनेहू॥
तव कर कमल जोरि मृदुवानी। बोले भरत प्रेम रस सानी॥

दो० सकल काम दायक अक्षत तीरथराज सुजान।
दानि शिरोमणि आजु म्वहिं दीजै यह वरदान॥

सवैया॥ अर्थ न धर्म न काम चहों निरवाण हुकी कछु चाह नहीं है। ऋद्धिहु सिद्धिकी वृद्धि नही नहिं भोग विलासन चाहत ही है॥ आठहु याम यहै वच मानसो कर्म हृदय अभिलाष सही है। श्रीरघुवीर पदाम्बुज में सरसै नित प्रीति सुदेहु यही है॥

दो० भरत वचन सुनि सरल सुनि भई त्रिवेणी वानि।
रामहि प्रिय तुम प्राणसम त्यागहु तात गलानि॥

सो० वेणि वचन सुखदाय सुनत भरत हरषे हृदय।
पुनि सादर द्वौ भाय भरद्वाज आश्रम गये॥

कीन्ह प्रणाम मुनिहिं शिरनाई। मुनिवर धाय लिये उरलाई॥
दे अशीश आसन बैठाये। बोले मुनि तव वचन सुहाये॥
तात भरत जनि करहु गलानी। हमसवचुकौ प्रथम सुधिजानी॥
तुम रामहि [illegible] अयाना॥
पितु आयसु करत्यहु [illegible] चितुर समाजू॥

यह भल कीन्ह हमारे भाये। सहित समाज इहां जो आये॥
राम प्रेम मूरति तुम ताता। भक्तजनन कहँ आनँद दाता॥
आजु उदित भइ सुकृत हमारी। भरि लोचन जो तुमहिं निहारी॥

दो० सुनि मुनिवर के वचन वर भरत हृदय धरि धीर।
पुलक गात बोले वचन सुमिरि राम रघुबीर॥

सवैया॥ नाथ न मोहि पिता कर शोच न शोच हमैं जगपोच कहावे। नाहिन शोक नशै परलोक अधर्म मरै शिर धर्म नशावे॥ दारुण दाह यहै हियँ एक न जाय सह्यो नित सोतन तावे। कारण मोहि सिया रघुवीर गये वनवास पयादेहि पाँवे॥

दो० यह कुरोग दारुण दुखद भयो आय तन मोहि।
त्यहि कर औषध शोधि मैं देखेउँ है कहुँ नाहिं॥
कुटिल केकई मोहि लगि ठटेसि यह सब ठाट।
त्यहि सब कर सुख छीनि कै घालेसि बारहबाट॥
मोहिं दैन्य भय हास क्षुध तृप हानि गलानि।
मृत्यु क्षोभ व्यथा कीर्ति द्विदश बाट दुखदानि॥
यह कुरोग नाशै जबहिं फिरि आवें रघुराय।
बसे अवध सानन्द तब नाहि न आन उपाय॥

भरत वचन सुनि सहज सोहाये। सहित सभा मुनि मन सुख पाये॥
कह मुनि तात शोच जनि कीजिहि। प्रभुहि विलोकत सब दुख छीजिहि॥
पुनि मुनि सकल भांति सुख दीन्हा। भरत निवास रैनि तहँ कीन्हा॥
प्रात न्हाय मुनिपद शिर नाई। कीन गमन हित आशिष पाई॥
सुमिरत राम लषण सिय शोभा। चले सकल दरशन मन लोभा॥
भरत नेम व्रत प्रेम सुहावन। बरणि न जाइ राम पद पावन॥

त्रोटकछंद॥ रसना रटि रामहिं राम रटे। मन रूप प्रभा दृढ

ध्यान गहे ॥ श्रुति राम कथै अभिराम हिये । चारितछिन चारु हृदै सुलिये ॥ बशप्रेम सँभार सुगात नहीं । डग डोलि परे पग जात मही ॥ केहिं राम सिआर्जव श्वासभरे । द्रुम पाहनहूं सुनि द्रैसुपरे ॥ झरि पंथ प्रसूनन देवसभा ॥ जय जैति कहैं लखि भूरिप्रभा ॥ भरतै बहुभाँति सराहिरहे । धनि धन्य महीभल जन्मलहे ॥ हरिपद छंद ॥ भरत प्रभाव देखि सुरराजे भयो शोच मनमाही । जान मुनवन भरत रामको भली बात यह नाहीं ॥ जाय कह्यो तुरतै हरि गुरु सों करहु यतन्न प्रभुसोई । भरत जाहिं पुर लौटि आपने रामहि भेट न होई ॥ राम सुभक्त प्रेम बश संतत भरत प्रेम निधिआहीं । फिरि है अवशि काज सब नशिहैं बनिहै फिरि कछु नाही ॥

दो० सुनि बोल्यौ सुरगुरु बिहँसि हरिहरिगो तव ज्ञान ।
माया पति जनसों करन चाहत छल अज्ञान ॥
हरिद्रोही उबरै बरकु हरिजन द्रोही नाहि ।
भक्त बैर भगवान के क्रोधानल जरिजाहिं ॥
तातें सुरपति कीजिये भरत चरण अनुराग ।
भरत भक्तमणि जानि के करिय कुटिल पन त्याग ॥

यहिविधि सुरगुरु कहि समुझावा । सुनि सुरेश मन धीरज आवा ॥ बरपि सुमन करि भरत बड़ाई । जय जय कहहिं देव समुदाई ॥ करि भगवास भरतयुत भीरा । आवत भये यमुन के तीरा ॥ रामवरण लखि श्यामल वारी । प्रेममगन सब भये सुखारी ॥ त्यहिनिशि वसित हँस हित सहायें । होतप्रात सब उतरि नहाये ॥ करि प्रणाम यमुनहिं शिरनाई । चले भरत सब सहित सहाई ॥ सानुज राम सखहिं सँग लीन्हें । राजसमाज अग्र सब कीन्हे ॥ रामचरण पंकज चितलागा । चलेजाहिं उमगंत अनुरागा ॥

दो० सहज वेष पदत्राण नहि मानसमलिन विशेखि।
नगवासी नर नारि इमि कहहि परस्पर देखि॥

सवैया॥ का दउ लक्ष्मण रामअहैं सजनी यहिवाट गयेरहे जोई। वे वपुरूप सुरंगवही समशील सनेह सुचालहु सोई॥ त्यों भगवन्त विलोकनि बोलनि वैसहि भेदपरै नहि कोई। औरमिलानि मिल्यो सबहे पै सँदेह यहै मनमें यकहोई॥ वेषनहीं इनको तसहे जसदीख उन्हें सखिजात गली है। वे सुखपुंज प्रमोद भरे लिय संग हते निज नारिभली है॥ ये न प्रसन्न सुखेद लिये इन सङ्गअनी चतुरङ्ग चली है। त्यों भगवन्त ये भेदन सों मनहोत कछूक सँदेह भली है॥ त्रोटक छंद॥ इति चातुरता सुनि तासु भली। हरषीं मन माँहि सबै सु अली॥ बहु भाँतिन ताहि सराहि रही। सखि दूसरि नौ सब हाल कही॥ ज्यहि भाँति न काज अकाज भयो। रघुनन्द नै तजि राज गयो॥ अब जात मनावन रामहिं ये। पुरलोग सबै सँग मातु लिये॥

दो० सुनि प्रसंग सोचो सकल भरतहि बहुत सराहि।
कहहिं दैव असि आपदा क्यहु शिर डारै नाहि॥

त्रोटक छन्द॥ यक तौ छुटि सुन्दरराज गयो। दुसरे पितु मर्ण अकाज भयो॥ तिसरे बन राम सिया गवने। उतपात कहे सखि को कवने॥

दो० एक कहहि ये मृदुल सुठि सुंदर परम उदार।
केकइ जन्म न योग विधि कीन्हे सब अविचार॥

सवैया॥ एक कहैं यह कीन सबै विधि जो हमरे सखि दाहिन आजे। लोकहु वेद विहीन कहा हम नीच त्रियाकृत खोटनकाजे॥ बास कुदेश कुठाँव हमें यह दुर्लभ दर्शभयो सुखसाजे। ज्यों भग-

वन्त मिल्यो विधि योग सुसिंधलव्योसिन्ह तीरथ राजें ॥ तन्वीछंद ॥
याविधि सों एकन प्रति यक बातें करतीं विविधि विधि अली है।
जावत जौने पुर नगर किनारे चित्र जौनिन जवति गली है॥ द
खतही भर्त छवि मगन होवै सब जानि जनम सुफली है। मांगहि
याही वर विधिहि करें ये नितही प्रेम हृदय थली है॥

सो० यहि विधि सहित समाज धर्म धुरन्धर बन्धु दोउ।
मगन प्रेम रघुराज जाहिं चले सुमिरत हरिहि॥
पथिक मिलहिं बहुजात तिनहिं बूझि रघुवर खबरि।
शिथिल होहिं दोउ भ्रात राम स्वभाव बिचारिकै॥
सगुण होहिं सुखधाम जाति सुहावन मन हरष।
अवशि मिलहिं सियराम असि प्रतीति सबके हृदय।

दो० तब निषाद प्रति भरत सन कह्यो देखिये नाथ।
शैल शिरोमणि है वही जहाँ बसे रघुनाथ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ सुनि सत्य केवट बैन सबहिंन परम आ-
नन्द पायऊ। अति प्रेम बारहिंबार कामदगिरिहिं लखि शिर ना-
यऊ॥ त्यहि समय भरतहि प्रेम जस कहि शेष पार न पायऊ।
भगवन्त ते धनि धन्य जे सियराम पद रति लायऊ॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थे भरत-
समाजसहितचित्रकूटनिकटआगमनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः॥९॥

दो० भवनिधि तारक पोत दृढ़ विदित भूरि गुणगाथ।
चरण कमल सियरामके बन्दौं महि धरि माथ॥
सम प्रेम बारिधि मगन भरत समेत समाज।
उभय कोस चलि बास किय जानि अस्त दिनराज॥
भोर भये उठि लोग सज चले सुमिरि रघुराय॥

दो० राम दरश की लालसा रही सबन उर छाय॥

कुंडलिया॥ जागे उत रजनी विगत रघुपति जक्त निवास। स्वप्न विलोक्यउ सीयनिशि लागी करन प्रकाश॥ लागी करन प्रकाश भरतजनु सहित सहाये। प्रभु वियोग त्रयताप तप्त व्याकुल वलि आये॥ आये सकल मलीन दुसह दुख दाहन दागे। दीख सासु विधि आन कहत सिय स्वप्नहिं जागे॥

सो० सीय स्वप्न सुनिराम भये शोचवश शोचहर।
सजलनैन सुखधाम बोले शुचिमन अनुजसन॥
तातस्वप्न इति जोइ मम विचार फल नीकनहिं।
चहत सुनावन कोइ दुखदायक मानहुं वचन॥

दो० पुनिप्रभु मज्जनकरि शिवहिं पूजिसुबन्धु समेत।
सहित सकल मुनि मण्डली बैठे कृपा निकेत॥

कवित्त॥ बंदि सुर साधु मुनि मण्डली सबैठे राम देख्यो दिशि उत्तरे जुशीशही उठायकै। छायोनभ धूरि भूरि व्याकुल विहंग मृग छपे जाल आनि प्रभु आश्रम परायके॥ भाग्यवन्त उठे अवलोकि श्रीकृपाल आपु कारण है काह चित्त चकित बनायके। तौ लागि किरात कोल वैसिन ते दौरि दौरि कहे सब समाचार प्रभु सन आयकै॥

भरत आगमन सुनि भव मोचन। प्रेम विवश आये भरि लोचन॥
समुझि वचन पितु बन्धु सनेहू। भये शोचवश कृपा सुगेहू॥
बहुरि विचारि ठीक मन धारे। भरत साधु पुनि कहे हमारे॥
धर्म नीति तजिकहब न आना। भरत भक्तमणि परम सुजाना॥
लषण राम मन दुख अनुमानी। बोले वचन जोरि युगपानी॥
नाथ बिना जगतोल्हु बाता। कहउ क्षमा करबै जन त्राता॥

नाथ हरि हर पद जोवै

जेवश विषयादिवसनिशि धावहिं। ते विधि योग जु वै भवपावहिं॥
ते वश मोह छाँड़ि शठनीती। चहत जनाव निजहि यह रीती॥
यद्यपि भरत रहे बड़साधू। प्रभु पद पंकज प्रेम अगाधू॥

दो० त्यक आजुलहि राजपद त्यागि धर्म निज जौन।
जानितुम्है अकसर विपिन किये विजयहित गौन॥

सवैया॥ ठानि कुमंत्र सु साजिदलै बन जानि अकेल तुम्हें दोउ भाई। आवत भे चालि काजयही हति रामहिं राज अकंटक राई॥ जो यह बात न होत हिये चलते कत लै सँग तौ कटकाई। त्यों भगवन्त न दोष उन्हैं लहि राजहि को न उठै बउराई॥

दो० बेनु नहुप शशि अमर पति सहसबाहु तिरशंकु।
काको नाहिन राज मद दीन्ह्यो कलुष कलंकु॥

वेनु भूप उर न्रप मद पैठो। सो आपहि ईश्वर बनि बैठो॥
विप्रशाप सो भयो विनासा। विदित भागवत मे इतिहासा॥
नहुप नह्यो रथ मे द्विजवृंदा। चल्योशचिहि भोगन चढि मंदा॥
भयो सर्प सो विप्रन शापा। मदवश सह्यो दुसह दुखआपा॥
शशिगुरुवृहसपति तिय संगभोगा। कीनविवश मद काम अयोगा॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठाना। भई सहसभग जग सब जाना॥
सहस बाहु जमदग्नि कि गाई। मदवश बरबस लीन छड़ाई॥
डारेसि मारि ऋषिहि करि कोहा। वंश सनाश भयो इति द्रोहा॥
भूप त्रिशंकु द्रोह गुरु ठाना। भयचंडाल तिनहि जगजाना॥
बहुत कहाँ लगि कहौं गनाई। क्यहि न राजमद मरदेउ भाई॥
यह तो कीन भरत भरि नीती। ऋपुऋण राखनचहिय न रीती॥

दो० एक कीन नहि भरत भल राम शत्रु वन मानि।
आपे चढि लै दल विपुल स्वउ मारिहैं ... नि॥
... मारि रघुराय॥

अस कहि लषण सक्रोध ह्वै नाय राम पद भाल।
सत्य सहज बोले वचन करि मुख अम्बक लाल॥
नाथ हमारे हित भरत कीन्हें बहुत उपाय।
अब लगि गमखाये रहे अब न सहा सहिजाय॥

ताते नाथ कहौं तुम पाहीं। भरतहि आजु समरके माहीं॥
सहित बन्धु अरु सकलौ सैना। डरिहौं मारि सु एक बचैना॥
राम विरोध हाल जस होई। देउँ बताइ उन्हें सब सोई॥
कीन्हेनि जस अब पैहहि तैसा। जसकछुवइअलाहिअफलवैसा॥

सवैया॥ ज्यों मृगराज दलै गजराज खगेश यथा अहिवृन्द सँहारो। लेइ लपेटि लवा जिमिवाज तथा गहिदेखत भूमि पछारो॥ त्योंभगवन्त गुमान सबै उनको चकचूरकै धूरमे डारो। जो पै सहाय करैं शत शंकर तौ रण आजु प्रचारिकै मारो॥

दो॰ देखिय रज लघुहै परम स्वउ परि चरण प्रहार।
चढत शीश गमखाय किमि है हम राजकुमार॥

जबहि लषण इमि वचन बखाने। सकल लोक लोकप डरपाने॥
भई गगन तब गिरा उदारा। ऐसहि है बल तात तुम्हारा॥

सवैया॥ तात प्रताप प्रभाव लयावल ऐसहिहै कोउ जानि सकैना। पै बुधिवंतन रीतियही सु विचार बिना कछु काज करैना॥ जे सहसा करिकै पछिताहिं कहै बुधवेद सुतै बुधहैना। यो भगवंत सुदेव गिरा सुनि लक्ष्मणही सकुचे त्यहि ठैना॥

तब सिय राम लषण सनमानी। प्रीति सहित प्रभु बोले ज्ञानी॥
कही तात तुम जो नय सोई। पै न राजमद भरतहि होई॥
भरत सरिस जगतीतल माहीं। शुचि सेवक मम दूसर नाहीं॥
विधि हरि हर पद जोवै पावै। तबहुँ न नृप मद मनमें लावै॥

कुं० होवै वरु घृत वारि ते तरणिहि तम मकुलाय।
गोपद जल बूडहिं घटज सुरतिहि सिंधु समाय॥
सुरतिहि सिंधु समाय श्रवै हिमिकर वरु आगी।
भरत हृदय नहिं भूलि कवहुँ नृपकर मदजागी॥
जागी कवहुँ न कुमति सुयश अघ संचित खोवै।
लषण शपथ तव सत्य भरत मन द्वैत न होवै॥

गगनांगनाछंद॥ भरत सरिस शुचि भाय काहुको विधि नहिं दीनहै। गुण औगुण मिश्रित जक्त सकल ज्यहिं कीनहै॥ भरत हंस गहि क्षीर गुणन औगुण जल तजि दिये। भगवन्त सुयश उज्जल जगत अपन जिन करिलिये॥

यहिविधि कहत भरत गुणगाथा। प्रेम पयोधि मगन रघुनाथा॥
गगन मगन सुर वरपहिं फूला। जय जय करहिं परम अनुकूला॥

नाराचछंद॥ इतै नहाय भक्त पै सरित्तसा समाजही। सबै थै भाय तत्र साथले निषादराजही॥ चले सबंधु आपु तत्र यत्र राम जानकी। सुकर्तही कुतर्कनै अनेकनै विधानकी॥ श्रीराम सीयनाम मो सुश्रौण माहिं सुन्तही। विचारि मोहिं भामते न जाहिं चालि अन्तही॥ मते कुमातु जानि जो कहै सुमोहिं थोरही। निवाजि चूक आदरें जु मानि आपु ओरही॥ तजैं मलीन जानि मानिदास जो सुआदरे। सबै प्रकार हौं उन्हेंक भाव जोहि सो करैं॥ सरभ-छंद॥ यहिविधि भरत गुनत मनमनही। चलत सुमग सुधि तनक न तनही॥ निरखि भरत कै तव असि गतिही। गयउ विसरि तन सुधि गुहपतिही॥ पंकजवाटिका छंद॥ लागि सगुन शुभ होन अपारन। केवट पति गुनि सो वदकारन॥ मल्लिकाछंद॥ शोच जाइ मोद मोहि। फेरि अंत खेदहोहि॥

दो० सुनि केवट वाणी भरत कीन हृदय विश्वास।
नियराने तब आइकै प्रभु आश्रम के पास॥

सवैया॥ केवट तौ चढ़ि ऊंच शिलै यक हाथ उठायकहै समुझाई। देखहु नाथ सुवृक्षनवे जुविशाल मनोहर देत तकाई॥ पाकरि जम्बु रसाल तमाल सुतामधि मे बट दिव्यसुहाई। ताहि तरे भगवन्त अनूप सुहावनि पावनि राघव छाई॥ छॉह यदा विशादा उमदा सुखदा सुसदा रस एकरहाई। ताहि बटैतर सीय निजे कर वेदि रची वर मञ्जु सुहाई॥ वैठहिं आइ जहाँ मुनि वृन्द कहै इतिहास पुरानन गाई। सादर सों भगवन्त सुनें तहँ बैठि ससीय सहूनहुँ भाई॥ भूरि लसै तुलसी तरुतत्र कहूं सियजू कहुँ लच्मण लाये। फूलि प्रसून रहे रँग रंग अभंग प्रभा सुअनंग लजाये॥ क्यों भगवन्त कहौं छवि सो अवलोकत लेतजु चित्त चुराये। कोशलपाल कृपाल तहां सरि पैस्वनि तीर कुटी सुबनाये॥ दोधक छन्द॥ केवटके सुनि वैन सु ऐसे। देख्यउ भरत सुवृक्षन जैसे॥ प्रेम उमंग युगाक्षन वारी। विह्वल गात न जात सँभारी॥ वारहिं वार प्रणाम सु करते। वेगिचले हृदयानँद भरते॥ भाग्यसुवन्त भणे किमि लेपै। गम्य सुयत्र न शारद शेपै॥ गीतिका छन्द॥ सिय रामपद अंकत मनोहर निरखि अतिसुख पावहीं। मानहु लह्यो निधिरंक वारहिं वार रज शिर लावहीं॥ कहिजात नहिं गति अकथ रघुपति मिलन सम भव चावहीं। अवलोकि खग मृग जीवजड़ वश प्रेम तन विसरावहीं॥ वरपे सुमन सुरवृन्द हरपित निरखि नभ जै जै कही। भगवन्त राघव प्रेम जलनिधि भरत पूरण है सही॥

दो० भरत विलोक्योउ दूरि ते सिय समेत दउ बीर।

करि प्रणाम लोचन सजल पुलकितअंगअधीर ॥

सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल बाहु विशाल उरायत सोहें । शीशजटा सरसीरुह लोचन आननकी उपमा नहिं टोहें । वल्कल चीर निषंग कसे धनुबाणधरे कर देखत मोहें । सीय समेत विराजित आसन दूरिहिते छवि भारत जोहें ॥ कवित्त ॥ कीन्हें मुनि वेष रति कामकीधौं रामसीय सूखमा अपार पेखि प्रेमहीय वर्तहीं । वल्कल वसन तूण कटिमें कसन बान धनुकी लसनि पानि भानि सो न पर्तहीं ॥ श्यामतन सुन्दर जटाकेजूट शीशपै सु वाम भाग जानकी प्रकाश जाल कर्तहीं । भाग्यवन्त वेदिकापै राजहीं समुनि वृन्द देखते सुशोभ ख्याल भूल्योगात भर्तहीं ॥ सवैया ॥ कहिपाहि सुपाहि हरे रघुनंद सुदण्डसो भूतल धायगिरे । मुनि प्रेम अधीर उठे रघुबीर सुधीर सँभार न गात करे ॥ कहुँ तीर निषंग सुचापकहूँ कहुँ अंगनके पट छूटिपरे । भगवन्त उमंगत प्रेम हृदै रघुनंद सु अंकहि धाय भरे ॥

पुनि पुनि भरतहिं भेटि कृपाला । मेटे विषम विरह उरशाला ॥
फिरि फिरि भरत परत प्रभुपायन । समय सनेहवराणि सो जायन ॥
गदगद वचन कहत कर जोरे । क्षमहु नाथ अव अवगुण मोरे ॥
जै भगवन्त प्रणत प्रति पालक । जै सुज्ञात उर अन्तर हालक ॥

हरिगीतिका छंद ॥ जै अमलचंद दुचंद आनँद कंद आनन सुख प्रदं । जैदिव्य भास्करपुंज हास्कर तव सु हाँस्कर मुदसदं ॥ जै प्रणतपाल कृपाल कोशलपाल जन रक्षक नितं । जै अखिल कारण करण तारण तरण प्रति पक्षक जितं ॥ जै सुलभ दुर्लभ दरस दुर्मति रमति सचराचर ध्रुवं । जै प्रकृति पार अपार श्रुति यश नेति नेतिहि नित ध्रुवं ॥ जै शुद्ध सच्चित रूप सदगुण निलय सुर मुनि

वंदितं। जे सत्य,व्रतमद्वैत निर्गुण,त्रिगुण कृत निज छंदितं॥

दो० जयजय,जय रघुवंश मणि जय प्रभु पूरण काम।
करहु कृपा,जन जानि निज कृपासिंधु श्रीराम॥

भरत विनै सुनि इमि रघुवीरा॥ भये प्रेमवश परम अधीरा॥
पुनि प्रभु भरत,लाय उर लीन्हें। कहि मृदुवचन,सुधीरज दीन्हें॥
भरत रामकै मिलनि सुहाई। कहत शेष शारद सकुचाई॥
सो मैं कहौं कवन विधि गाई। जलनिधिउलीचिकिसूतिनपाई॥
जै जै करहिं गगन सुर वृन्दा। जै कृपाल जै राम मुकुन्दा॥
पुनि रिपुहनहिं मिले रघुराई। प्रेमप्रमोद बरणि नहिं जाई॥
बहुरि राम किंवट उर लाये। भेटत अति सनेह सचुपाये॥
भरतहि मिले लपण सह मोदा। लीनउठाय भरत निज गोदा॥
पुनि लक्ष्मण भेंटे लघुभ्राते। अधिक सनेह प्रेम भर गाते॥
बहुरि लपण उमगत अहलादा। धाय लाय उरलिये निषादा॥

गीतिका छन्द॥ पुनि मुदित दूनौभाय वंदे सकल मुनिगण आयकै। भय मुदित सानुज भरत अभिमत शुभ सुआशिष पायकै॥ पुनि हरषि दूनौभाय सिय पद पद्मरज माथे धरी। भगवंत दीन्ही सीस आशिष मनहिमन आनंद भरी॥

सो० जानिसीय अनुकूल आदिशक्ति त्रिभुवनजननि।
मिटी सकल उर शूल भये मुदित सानुज भरत॥

दो० तब केवट करजोरिकै कह्यो सुनिय रघुनाथ।
मातु सकल पुरजन विकल आये मुनिवर साथ॥

गुरु आगमन श्रवण सुनि पाये। तुरतहि राम तहां चलिआये॥
कीन्ह प्रणाम गुरुहि दउभाई। धाइ लीन मुनि हृदय लगाई॥
पुनि कृपाल दुख दोष निकंदन। अनुज सहित भेंटे द्विजवृंदन॥

जानि लोग आरत सुर नाहू। क्षणमहँ मिलत भये सबकाहू॥
रही हृदय जाके रुचि जैसी। कीन्ही प्रभु पूरण त्यहिं तैसी॥
यह न बड़ी रघुवीर बड़ाई। सचराचर व्यापक श्रुति गाई॥
धन्य धन्य ते नर बड़भागी। जे सियराम चरण अनुरागी॥
॥दो०॥ पुनि प्रभु देखी मातु सब आरत परम विहाल।
॥ कैकेइहि भेंटे प्रथम सादर राम कृपाल॥
॥ गीतिकाछंद॥ परिपाँय करि बहुविनय जननिहिं विविध विधि धीरजदिये। पुनि मिले मातनसकल रघुपति तप्रति उर शीतलकिये॥ भेंटे सुमित्रहि जाय पुनि प्रभु लायउर जननी लिये। भगवन्त मानहुँ लहेउ संपति रंक अति आनँद हिये॥
॥दो०॥ कौशल्याके चरण पुनि परे जाय द्वउभाय।
॥ तन पुलकित लोचन सजल लीन मायँ उरलाय॥
॥ तोटकछंद॥ त्यहि औसर केर विषाद महा। कवि क्यों कथ धीरन धीरवहा॥ मिलि मातन राम समुद्र चले। गुरुसों कह धारिय पाँव थले॥ मुनिराज सुआयसु पाय तवै। उतरे सुजहाँ तहँ लोग सबै॥ गुरु मंत्रि द्विजाम्बन संग लिये। शुभ आश्रम राम पयान किये॥ मुनिराज पगे सिय आनिपरी। शुभ आशिष पाय प्रमोद भरी॥ पुनि विप्रतिया गुरु नारि सहा। सिय वन्दि सु आशिर्वाद लहा॥ पुनि सासुन सीय मिली सबही। अवलोकि दशा दुख दून लही॥ तिनहूं लखि सीतहिं शोक किये। बश प्रेम लगाय हृदै सु लिये॥ सिय वारहिंवार सु पाँयपरी। सब सासुन भेंटत प्रेमभरी॥ तिन सीतहि दीन अशीश यही। रहिहो सु सुहाग भरी नितहीं॥
दो०॥ तब वशिष्ठ मुनि धीर धरि रानिन कह्यो बुझाय।
॥ वैठि जाहु गई वैठि सब मुनिवर आयसु पाय॥

तोमरछंद ॥ तब बोलियो मुनिराय। सुनिये सबै चितलाय ॥ व्यवहार लौकिक भूर। भल ताहि जो रहरूर ॥ पुनि गाइयो सुख दात। परमार्थ की कछु बात ॥ कहि फेरि मर्ण भुवाल। सुनि राम भो दुखजाल ॥ दोधकछंद ॥ कारण मर्ण पिता निज नेहू। जानि दुखाति लहे दुखगेहू ॥ भूरि बिलाप करै सबरानी। शोक समाज न जाय बखानी ॥ शशिवदनीछंद ॥ तबमुनिनाथा। कहिबहु गाथा ॥ रघुकुलनाथा। श्रुतिवरसाथा ॥ वहुसमुझाये। सहितसहाये ॥ सुरसरिन्हाये। पुनिथलआये ॥ त्यहिदिनझारी। नरअरुनारी ॥ रहि बिनुवारी। व्रतवरधारी ॥ भयभिनुसारा। मुनिजुउचारा ॥ स्वइ रावकारा। प्रभुसुखसारा ॥ तारकछंद ॥ करितात क्रिया जस वेद बखानी। भय शुद्ध जु शुद्ध सदा श्रुतिवानी ॥ सुखसिंधु परात्पर ब्रह्म सुशीला। निज भक्त हितार्थ कृताद्भुत लीला ॥

दो॰ लीला अद्भुत रामकी जानै बिरला कोइ।
ज्यहि जानै लीला अपर जात आपही खोइ ॥

कवित्त ॥ पायकै शरीर दिव्य मानवाने चेतु चित्त वित्तही के नित्त धाव धाम धामहै। वेद शास्त्र वाक्यको न मानिते प्रतीत नीच विषयनिकीच बीच मग्न आठ याम है ॥ भाग्यवन्त कौल कै वेकौल हान हानि बुद्धि शुद्धिकै कृतांत लोक शोक मैं जुआम है। ऊमर तमाम कै बेकामरे निकाम अब सीय रामनाम क्यों न ध्यावसि हराम है ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहयमात्मजभगवन्तसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रंथे भरतचित्रकूटआगमनश्रीराममिलापवर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

हरिपद छंद ॥ सुमिरत जाको नाम कामतरु काम सकल मन पाते हैं। गावत गुण गण विमल जासके सब दुख दोष नसाते हैं ॥

आदि अंत कोउ जानि न पावत श्रुति ज्यहिं नेति बताते हैं। भाग्यवंत स्वइ राम सियाके सादर हम शिर नाते है ॥ भक्तहेत मानुप तनुधारे किये कलुप कुलिहाते हैं। सुन्दर श्याम गौर छवि आगर सबहीके मन भाते हैं ॥ कहँ लगि कहौं अरे गुण पूरण नारदादि यशगाते हैं। भाग्यवन्त स्वइ रामसियाके सादर हम शिरनाते हैं॥

कौशलपुर बासी नर नारी। चित्रकूट सब रहहिं सुखारी॥ करहि नेम व्रत संयम नाना। दिनप्रति देहिं विविधविधिदाना॥ ज्येष्ठकृष्ण द्वितिया शुभ जानी। बोले प्रभु गुरुसन मृदुबानी॥

सवैया॥ नाथ दुखी पुरलोग सबै अति मूल फलादिक अम्बु अहारी। सानुज भर्त समंत्रिन भावन जात न सन्मुख मोहिं निहारी। बीतत मोहि मनो पल कल्प सु आपु इहां पितु स्वर्ग सिधारी। सो अब आपु समेत सबै पुर धारिय पांव सबै हितकारी॥

कहमुनिसुनहु भानुकुल नायक। किसनकहहु असतुमसबलायक॥ ये सब लोग दुसह दुख ताये। भये सुखी तुम दरशन पाये॥ तातें कछु दिन दीजे रहना। फिरि सब करिहै तुम्हरे कहना॥ सुनि गुरु वचन भले प्रभु भाषा। लगेरहन सब युत अभिलाषा॥

छंद त्रिभंगी॥ पावन पय पानी गुण गण खानी [illegible] तमल हानी सुखकारी। ज्यहिं देखत भागै कलुप [illegible] जागै सुकृत विरागै भव वारी॥ तिहुँ काल नहाहीं सब ताहि माहीं हरष समाहीं सुखसाथै, भरि नैन निहारी होहि सुखारी छवि अति भारी रघुनाथै। रघुपति गिरि कानन सब दुख भानन सुयश पुरातन ज्यहि गायो। देख त्यहि जावै लखि सुख पावैं शीश नवावैं मन भायो। झरना व झरहीं खग रव करहीं मृग गण चरहीं स्वच्छन्दे। तरु विविध सम युत फल फूले लखि अनकूले सुख वृन्दे॥ सरसिज बहु बरने वि

सित सरनै कवि किमि वरनै, छवि ताकी॥ गुंजहि बहु भृंगा, अगि-
णित रंगा सहित उमंगा रस छाकी॥ बहु कोल किराता भरि भरि
पाता शुचि सुखदाता मधुमेवा। गुण स्वाद बखानी, सेवहिन आनी
देहिं सुजानी सहसेवा॥ बहु मोल सो देहीं तेनहिं लेहीं फेरत देही
दुहाई। कहहिं सुबानी तुष्टतज्ञानी प्रीति पिछानी सुहाई॥ तुम सु-
कृत रासी अवध निवासी सुखसुविलासी स्वामिमया। हम पापप-
रायन तव सुखदायन, दरशन पायन रामदया॥ तुम पाहुन प्यारे
बनपग धारे हमहि सुधारे सुखदानी। अब कृपा करीजे, दलफल ली-
जें सकुच न कीजे जनजानी॥ हम आप कँगाला औरन पाला
तुमहि कृपाला देव कहा। सियराम कृपाते, भय दुखहाते, मनन स-
माते मोदमहा॥ सुनि, वचनसुहाये सब सुखपाये लै सु सिधाये
फल मूला। भय परम सुखारे वनेचर सारे तिनहिं विचारे अनुकू-
ला॥ यहि विधि प्रभुपासा सहित हुलासा करहिं निवासा सब
लोगा। इच्छा मनमाही, भवन न जाहीं इहै रहाहीं सुखयोगा॥ रा
नंद कृपालै सब सुखआलै जन प्रतिपालै छवि ऐना। वसियाम वि-
लोकी होहिं विशोकी स्वामि त्रिलोकी भरि नैना॥ ते धन्यसुभा-
गा जिन अनुरागा प्रभुसन लागा जगमाही। भगवन्त सुताके
हित पटुताके लोक त्रिताके समनाही॥

दो० सिय सादर सबसासु निज करिसेवा वश कीन।
देखि प्रेम सुखपाय तिन सिखभल आशिष दीन॥
सबके मन संशय यहै प्रभु फिरिहैं, के नाहिं।
भरतकोटि विधि तर्कना करत रहे मनमाहिं॥
होत प्रात मज्जन सुकरि वंदे प्रभुपद जाय।
तेहि अवसर श्रीभरतको पठये ऋषयबोलाय॥

प्रायँ शंकर भवानी साखि रह्यौं याही घाई है ॥ बहुरि त्रिलोकि कै निषादको सनेह चारु कुलिश कठोर उर सो न दरकाई है। सोई निज नैनन विलोक्यो सब आनि अब जीवतहिं जीव जड़ सबहि संहाई है ॥ सवैया ॥ देखि जिन्हैं मग साँपिनि बीछि तजै विष तोमस तीक्षण ताई । त्यों भगवन्त सुशील सुभाव करै जिनकी सब लोक बड़ाई ॥ तें रघुनन्दन लच्मण सीय लगे अनहित्त सु जाहि वनाई। तासु तनय तजिकै दुखदारुण दैव कहौ अब काहि धार जी ॥ मालीछन्द ॥ सुनि ऐसे वचन भरत सुभाय के। चली कमलके वन ज्यों तु... आयु के ॥ दविगे सभाके जन हखभारहे ॥ पर्यो ... मुनि वशिष्ठ उपदेश बहु भाँति सो। भगवन्त कीन्हे सबहिन शांति सो। ... मोदकछन्द ॥ तात गलानि हृदय जनि मानहु । जीव गती वश ... जानहु ॥ तिनिहु काल त्रिभूवनमें सत । पुण्ययशी तुमसों नहिं मामित ...रि- लता तुम पे उर आनत । लोकहु सापरलोकहु शानत ॥ दोष धर जननी जड़ तेइनि । नाहिंन साधु सभा जिन सेइनि ॥

दो० साधु संग जिन कीन भल तिनको तो मत एहु ।
कैकेई परहित अयश लिय त्यहि दोपन देहु ॥

तात नाम तुम्हरो लय लोका । हैहैं नर भवबन्ध विशोका ॥ सुमिरत तुमहि तात जग माहीं । सत्य कहौं कछु दुर्लभ नाहीं ॥ तुम गलानि मनिहु जनि कोई । रहत न बैर प्रीति कहँ गोई ॥ निजहितअहितजानि पशु लेही । गुण ज्ञानादि भरी नर देहीं ॥ ॥ सवैया ॥ काह करौ असमंजससहीय सुजानहैं तात भलीविधि तोहीं । प्राण दिये प्रण लागि महीप सुराख्यउ सत्य तज्यो ज्यहि मोहीं ॥ शोच बड़ो तिन मेटत बैन संकोच त्वया त्यहि सो अधि

कोही। त्यों भगवन्त दियो गुरु आयसु तात कहो करिहौं सतिकोही॥
सो० राम वचन सुखमूल सुनत सभा हरषी सकल।
मिटी मलिन मन शूल भरत हृदय आनँद परम॥
भरत राम सम्वाद सुहावा। सुनि अमरन मनसंशय आवा॥
राम सुभक्त विवश श्रुति बानी। फिरहिं न होइ काज सुरहानी॥
बहुरि विचारि धीर मन आना। परहित निरत सुभक्त सुजाना॥
भरत धर्मधुर धुर प्रभु दासा। करिहैं कुसन धर्म परकासा॥
अस विचारि सब सुर अनुरागे। भरत चरण मन सुमिरण लागे॥
कह सुरगुरु सुनु सुरपति बैना। कीन्हेउ मन्त्र सकल सुख ऐना॥
मन वच कर्म देखि जन सेवा। तुष्टत त्यहि परतर प्रभु देवा॥
भरत राम द्वउ एक न भेदा। अस मन समुझि तजहु सब खेदा॥
दो० अन्तरयामी रामप्रभु जानि सुरन मतयेहु।
भये शोचवश वचन पितु तुलइत बन्धु सनेहु॥
पुनि सब अमर भरत की शरणा। तिन्हकरशोकअवशिम्नहिंहरणा॥
तबहि भरत निज मन अनुसारा। परेउ आइ सब मम शिर भारा॥
कहउँ फिरन तो अनय अधर्मा। बिनु प्रभु काहकरब मैं धरमा॥
करि कुतर्क बहु मन दृढ़ आना। प्रभुआज्ञा आपन कल्याना॥
उठि सप्रेम धरि प्रभुपद माथा। बोले भरत जोरि युग हाथा॥
दो० कृपा वारिधर दीनहित विरद विदित तनजोहि।
कहहु कृपाकरि नाथ अब काह कहावहु मोहि॥
मैं निजसुख का कहो बखानी। सबविधिते सम बुद्धिहेरानी॥
उदय अभाग करमफल पाका। आखव सुखयुत दुखरस ताका॥
प्रभु सरवज्ञ कृपालु सुजाना। ज्यहिविधिहोइ सकलकल्याना॥
स्वइ कृपालु अब करहु उपाऊ। जनहित सकुच न राखवकाऊ॥

सवैया ॥ जानि शिरोमणि जानसबै मन स्वारथ स्वामि फिरे सबहीको। ईश अनीशन के जगदीश सुनीसविसे किय आयसु नीको ॥ है यह स्वारथहू परमारथ सारु शृंगारु भलो सुगतीको। सोइकरो करि नाथकृपा हित दास सकोच परै नहिं जीको ॥

॥ दो० नाथ सुनिय यक विनय अब करव उचित मतजौन।
तिलकसाज आन्येसकल करियसफल प्रभुतौन॥

॥ सवैया ॥ पठई म्वहिं सानुज देववनै रहि कीजिय आपु सनाथ सबै। नतु फेरिय बन्धु द्विधामचलों सँग मैं बन आयसु होइ अबै॥ नहिं जाहिं वनै तिहुभाय फिरैं सहसीय कृपालय खूबफबै। भगवन्त प्रसन्नहुवै मनज्यों स्वइ कीजिय नाथ निबाहतबै ॥ देवदियो सब भार हमैं शिर धर्मविचार कछू म्वहिं नाहिन । स्वारथहीलिय बात कहौं सब चेतरहै चित आरतमाहिन ॥ मैं अघ अवगुण धाम सराहत स्वामि सुसाधु गन्यो कछु ताहिन। नाथ स्वइमत भाव हमैं मन स्वामिसकोच लहै ज्यहि नाहिन॥

॥ दो० भरतवचन शुचि सरल मृदु पूरण प्रेम गँभीर।
सुनि रहिगे चुपसाधि सब सहितसभा रघुवीर॥

त्यहि अवसर मिथिलाधिप दूता। आये तहाँ सुनत विधिपूता॥ लीनवोलि शिरआइ नवाये। रामहि लखि तिन अतिदुखपाये॥

। वशिष्ठ दोहा॥

हे चरचातुर रुचिर चिर कहियो वचन सुवेश।
सहित समाज सुराज सब कुशल भूपमिथिलेश॥

चतुरंसा छन्द॥ सुनि मुनिवैना। भरि जलनैना॥ करि पुट हाथा। धरि पग माथा॥ सकुच समाई। कहत दुखाई॥ दूत सवैया॥ मुनि बूझब राउर सादर स्वै कुशलात प्रदात कि बातभई। नतु कौ-

शलनाथहिं साथचली कुशलात सबै मुनिनाथ गई॥ मिथिलायुत औध विशेषि भयो सुअनाथ सबै जगतापतई। भगवन्त न जानि परै सुगती जलजासन की सब रीति नई॥

॥ इतिश्रीमद्योध्यासिंहुयमात्मजभगवंतसिंहविरचितेभाकोशिरोमणिग्रंथेचित्रकूटे जनकदूतआगमनवर्णनोनामैकादशोऽध्याय ११॥

कुण्डलिया॥ जाके गुणगण अगम अति गावत निगम न पार। परब्रह्म परमातमा निर्गुण गुणआगार॥ निर्गुण गुण आगार सुलभ सेवत अघ भञ्जन। रघुकुल मणि अवतार सुखद सज्जन जन रञ्जन॥ रञ्जन सुर मुनि मनुज शरण कछु अगम न ताके। बंदत पद भगवन्त नमत विधि हरिहर जाके॥

दो० पुनि धरि धीरज जनकचर नाय सुमुनि पद भाल।
कह्यो कृपाकरि नाथ अब सुनिये मम नृप हाल॥

द्रुत भुजंगप्रयात छंद॥ गये राम आरण्य ताही बिशोकै। तजे प्राण भूपाल गे देवलोकै॥ सुसुन्तै समाचार तिर्हूति राजा। भये शोक आकुल्लते सासमाजा॥ करी जो सुता भूप केकैकि करणी। सुसुन्तै पर्यो राउ व्याकुल्ल धरणी॥ दियो राज भरतै वनै राम खेद्यो। यवानी मनो भूपही बाण छेद्यो॥ पुनः धारिधीर्य्यापु हीमें विचारी। पठाये चतुरचार औधै सुचारी॥ गये दूत लाये समाचार सुन्तै। पयाना इतै भूप कीन्हें तुरन्तै॥ न कीन्हें मगै बास आये प्रयागै। पठाये हमै आजु प्रातै सुआगै॥

दो० खबरि लेन पठये हमै सो पाये मुनि नाथ।
देहु बिदा अब जाहि हम नाये कहि अस माथ॥
बोलि छ सात किरात तब दीन्हें करि तिन साथ।
चले दूत निरहूतिपहिं नाय सुमुनि पद माथ॥

आवत सुन्यो जनक नृप जबहीं ॥ आगे चले लेन प्रभु तबहीं ॥ पुरजन परिजन अनुज समेता । युत गुरु गुरजन कृपानिकेता ॥ कामदगिरि जब दीख बिरागी । चल्यो प्रणाम करत रथत्यागी ॥ पंथ जनित श्रम काहु न रेजा ॥ मन प्रथमै रघुपति पहिं भेजा ॥ आये निकट देखि अनुरागे । जहँ तहँ मिलन परस्पर लागे ॥ ॥ हरिगीतिका छंद ॥ लागे परस्पर मिलन सादर प्रेम परिपूरण हिये । मिथिलेश बंदे जाय मुनिजन ऋषिन प्रभु बंदन किये ॥ पुनि राम सानुज जनक नृप पद पद्म शीश नवायऊ । भगवन्त मिलि अति प्रेम सबहिन शुभ सुआश्रम लायऊ ॥ सवैया ॥ बिलपै दउ राज समाज मिले नहिं काहुहिं ज्ञान बिराग रहा । गुण रूप सुशील सराहि महीपति शोच सबै बश शोक महा ॥ दय दोष सरोष कहै सब कै अह वाम बिरंचि सुकीन कहा ॥ भगवन्त सु देखि विदेह दशा मुनि सिद्ध बिरक्त धीर वहा ॥

दो० ॥ तब सब लोगन मुनिवरन दीन्है बहु उपदेश ॥
कह वशिष्ठ मिथिलाधिपहिं धीरज धरिय नरेश ॥

सवैया ॥ जाकर ज्ञान प्रभाकर ज्यों सु उदै भव घोर निशाहि नशाई । बैन समूह लसैं किरणै शुकसे मुनि पद्म विकासहिं पाई ॥ ताहिकि कौन्यहु कालकवौ ममता मद मोह सकै नियराई । त्यो भगवन्त अचर्य नहीं सिय राम सनेह कि है य बड़ाई ॥ सिय राम सनेह मई ज्यहि देह सराहत ताहि सदा सबकै । भगवन्त सु साधु समाजनमें बड़ पावत भावत आदरस्वै ॥ जप योग विराग सुज्ञान जितो बिनु रामसनेह वृथा सुतज्वै । प्रण रोपि कहौं नहिं कामकई हरि प्रेम विना हरिसों बड़है ॥

दो० कोटि इन्द्र सम सुखसदन कोटि काम छवि देह ।

कह भगवन्त सोतुच्छ सब बिनु सिय रामसनेह ॥
बहुतभाँति मिथिलाधिपहि कहिमुनि धीरजदीन ॥
रामघाट तव जायकै सबहिन मज्जन कीन ॥
मुनि आयसु जहँतहँ सकल उतरे सुथल बिचारि ।
त्यहि वासर बिनु वारिही रहे सुयो नरनारि ॥
होत प्रात सब लोग नहाने । कोलकिरात खबरि असजाने ॥
कंदमूल फल विविध प्रकारा । लावत भये अपारन भारा ॥
सवैया ॥ श्रीरघुवीर प्रताप कलाप सु पाय भयो वन मंगल दायक । दानि सबै मन काम भये गिरि देखत जो दुख जालनशायक । वृक्ष सबै फल फूल सराजत डोलत वायु सुभाय सुहायक । त्यो भगवन्त प्रभाव महावन क्यों सु कहौ जहँ श्री रघुनायक ॥
दो० कन्दमूल फल सकल स्वइ सबहिं पठै मुनि दीन ।
अर्पिअर्पि हरि हरि सुमिरि सबहिनभोजनकीन ॥
छप्पैछंद ॥ यहि विधिगत दिन चारि निरखि रामहि नरनारी । रहहि सुखी सब काल सदन सुख सुरति बिसारी ॥ दुहुँ समाज रुचि यहै फिरब प्रभु बिनु भल नाही । सुरपुर कोटि सुपास रमा सिय संग वन माहीं ॥ तजि लषण राम सिय धामसुख भाव सदनसुख मन जिनहि । त्यहि सम न हानि जगजानि कछु वाम सकलविधि विधि तिनहि ॥ सवैया ॥ पूरुव कर्म्म किये कछु नेक प्रभावहि सों तनु मानुष पायो । सो लहि जो नकरी हरिभक्ति वृथा वश मोह सु वैस बितायो ॥ छांड़ि सबै छलकाय गिरा मन जो नहि राम सों नेह बढ़ायो । सोभगवन्त सु देखु विचारि जिये जगनाहक नाहकजायो ॥
इन्द्रवज्राछंद ॥ ताही समय में सियजू कि माई । भेजी सुदासी यक तत्र आई ॥ सो देखि गेली सबकाश जानी । आई सबै तत्रवी-

देह रानी ॥ श्रीराम मैया सनमानि वानी। दीन्हासनै लै समया समानी॥ बैठी सबै प्रेम गंभीर भीनी। बोली सुनैना वचने प्रवीनी ॥ सुनैना सवैया ॥ वाम विरञ्चिकिहै बुधि वाम जु कोरत फेनहिं पय पवि टाँकी। जन्म विवाह उछाह कहाँ वह सुक्खमहीं दय कीन अचाकी॥ डारि कहाँ अब आनि दिये यह दुःख रहीगति एकन वाकी। जानि नजाय कहौं सु कहा भगवन्त सबै उलटीगति ताकी॥

दो० देखहु विप वायस विपुल असिय हंस यकनास। ताते वहिविधि वामकी सबै अहैगति वाम॥

सुमित्रा सवैया ॥ विपरीत सबैविधिकी गति है सु विचित्र महा नहिं जानिपरै। लघुबालक ज्यों बुधि भोरि सदा रचि खेल विगारत फेरितरै ॥ क्षणमें सृजि लोक अनेकनत्यो प्रतिपालनके सु व होरिहरै। भगवन्त स्वछन्द करै सबसों मनभावत काहुन नेकुडरै॥ कौशल्या कवित्त ॥ काहूको न दोष निज कर्महीको रोष सब अतिशै करालगति कर्मकी सु जानिकै। ताही अनुकूल विधि दातर सुदेत फल घटिना बढ़ाय दुखे सुख लाभ हानिकै॥ ईशहू रजाय शीशा जानिये सकलजीव शोचियेन आदि यों अनादि रीति मानिकै। शोचिये जु देविहित आपने कि हानि जानि जीवन मरण भूप बातहीय आनिकै॥ सुनैना दोहा॥

देवि सत्य बानी लयो कैसेन कहौ असजानि॥
सुकृतकोश अवधेशनृप तिनकी तुम पटरानि॥

कौशल्या चौपाई॥

राम लषण सिय काननजाहीं। सोभल सबहि काल तिहुँमाहीं॥ मोहिं भरत कर शोच विशेषी। राम प्रेम मूरति उन देखी॥ भरत सुभाउ शील गुण करणी। सकहिं न शेष सहससुख वरणी॥

जब तब असम्व हि नृपतिवखान्यो। यहिकुल दीपभरत जियजान्यो॥
दो॰ जैसे कनक कसौटिको कसे खुलत गुणतासु।
तैसे समया पायके पुरुष परखिये आसु॥
भरत सरिस भरतै भयो उपमा कतहुँ न एकु।
ऐसेहु दुख अवसरजु निज त्यागे नहीं विवेकु॥
सुनि पुनीत सुविनीत मृदु कौशल्याकी बानि।
प्रेम मगन विह्वल परम भई शिथिल सबरानि॥
तब धरिधीर राम महतारी। बोली वचन प्रेम उरभारी॥
सुनहु देवि प्रिय जनक नरेशू। तुमहिं देइ किमि कउ उपदेशू॥
अवसर पाइ भूपसन बानी। कहब देवि निज ओर बखानी॥
भरत जाहिवन लषण न जाहीं। परैठीक जो नृप मनमाहीं॥
कौशल्या सवैया॥ तौ भलि यत्न विचारि करौम्वहिं शोच बड़ो
यक भारतहीको। गूढ़ सनेह अहै उनकेमन लागत मोहिं रहे नहि
नीको॥ त्यों भगवन्त सुसत्य कहो मिथिलेशि तुम्हे निज भावत
जीको। श्रीरघुबीर विना भरतै सुख लागत लोकसबै मन फीको॥
सुमित्रा नराचिकाछंद॥ हे श्रीविदेह भामिनी।गै दण्डद्वैकयामिनी॥
राम जननि तव कह्यो सप्रीती। अब थल जाहु रैनि वहुवीती॥
म्वहिं गति ईश कि भूप सहाई। ठनत न मन कछु और उपाई॥
सुनि सप्रेम कौशल्या बैना। वंदिचरण तव कह्यो सुनैना॥
सुनैना चामरछन्द॥ मोहि सो उचितयों विनय सुआपु स्वा-
मिनी। रामचन्द्र मातु कौशलेश प्रीव भामिनी॥ स्वामिनै सुभाव
यों सुनीचहूक आदरै। अग्नि धूम्र अद्रि ज्यों तृणादि शीश पै
धरै॥ रावरे सुअंग भोग विश्व माहिको हुई। भानुकी सहायता
कतौं सुदीप सोहई॥

॥दो०॥ कर्म वचन मन छाँड़ि छल सेवक आपु नरेश।
देवि सहायक रावरे गिरिजा शम्भु हमेश॥

न।राचछन्द॥ श्रीराम जाय कानने सवाँरि देवकाजही। बहोरि आय कारिहैं अडोल अवध राजही॥ नृदेव नाग पायकै सुराम वाहने बलै। सुखी स्वछन्द वासिहैं समस्त आपनै थलै॥

दो० यह सब तिरहुतिराय सों याज्ञवल्क्य मुनि गाय।
हौं राख्यो सुनि मुनि वचन देवि वृथा नहिं जाय॥

अस कहि पुनि पुनि पायँन लागी। सियहित विनय कीन अनुरागी॥ आयसु पाय सहित संग सीता। चली सराहत प्रेम पुनीता॥

॥दो०॥ आयसु थल परिजन प्रियहि मिली सीय जसयोग।
तापस वेष बिलोकि सिय भये विकल सब लोग॥

इत वशिष्ठ मुनि पाय निदेशू। आवत भये थलहि मिथिलेशू॥ सियहि विलोकि लीन उरलाई। अति अनुराग न हृदय समाई॥ भये विकल लोमश इव राया। उपज्यउ ज्ञान मिटी भ्रम माया॥ एक समय लोमश अभिलाषा। नर नारायण ते अस भाषा॥ देखन हम चाहत तव माया। सो दिखाय दीजै करि दाया॥ सुनि प्रभु थोरि निज माया गाढ़ी। उमग्यो सिंधु चल्यो जल बाढ़ी॥ गई बूड़ि महि पारन पाथा। बूड़त तरत बहे मुनि नाथा॥ यहि विधि बहत प्रयागहि आयो। जहाँ अक्षयवट रहेउ सुहायो॥ जस जस वारिध जल उपराता। तस तस वृक्ष सो बाढ़त जाता॥ विकल चढ़े मुनि तापर धाई। तहाँ देखि अस कौतुक पाई॥ पत्ता पर यक बालक सोवत। सो भगवान चकित मुनि जोवत॥ ताको मुनि अवलम्बन पावा। है कोउ अपर धीर मन आवा॥ मिटी प्रलय पुनि बच्यो मुनीशा। हरि मायाहि नवायो शीशा॥

दो० हरिमाया अतिशय प्रबल जाय सकै को पार।
जाके वश नट प्लवँग इव नाचत सब संसार॥
फँस्यो न मोह म जनक मति ज्यापि न बिषै बयारि।
यह सिय राम सनेहको प्रबल प्रताप बिचारि॥

जनक सवैया॥ पुत्रि पवित्र किये कुल दोउ इतै निमिराज उतै रघुकोरी॥ त्यो भगवन्त सुछायरह्यो यश जाहिर उज्वल तव चहुँ-ओरी॥ जीति लिये सरि देवनकी यह कीरति रूप सुता सरि तोरी। प्रापति है सब लोकन मै करि भेदन सो विधि अण्ड करोरी॥

दो० गंगाजीके अवनि मै तीनि बड़े थल आहि।
हरद्वार अरु प्रागपुनि गंगासागर माहि॥
सुरसरि रूप कीर्ति तव विपुल बड़े थव ओज।
भाग्यवंत सब लोक मे जहँ जहँ सन्त समाज॥
सुनि पितु वचन सुसत्य शुचि सियसकुची मनमाहि।
कहि न सकत मन गुनत निशि बसब इहां भलनाहि॥
लखि रुख नृप रानी सियहि बार बार उरलाय।
बिदाकीन सनमानि अति चलीथलहि शिरनाय॥

सीय मातु तब अवसर पाई। नृपसन कह्यो भरत गतिगाई॥
कौशल्या जसि भरत बड़ाई। कीन्ह प्रीतिहि सोसकल सुनाई॥
सुनि मिथिलाधिप भरत प्रभावा। पुलक शरीर नैन जल छावा॥
सुनहु प्रिया तव सत्य सुबानी। भरत प्रभाव न परत बखानी॥
मैं अनुमान कीन बहु भाँती। भरत सुभाव शील गुणपाँती॥
जानि न जाहि अमित अवगाहा। विथकित बुद्धि लहै नहि थाहा॥
शारद शेष अगम शिव बेदै। जानि को सकै अपर उन भेदै॥
भरत चरित वरणत सब रानी। बिनश्रम लहहिं परमपद प्रानी॥

धन्य धन्य तिनकर बड़ भागा । जिन्हके भरतचरण अनुरागा ॥
भरत भक्त मन वच अरु करणी । भक्त प्रभाव अमित वर बरणी ॥

दो० । भरत जाहिं बन फिरहिं गृह लषण भली यहबात ।
पै रघुवर अरु भरतकी प्रीति जानि नहिं जात ॥
जो आयसु रघुपति करब मेटिहहि भरत न ताहि ।
ताते शोच सनेह बश करिय न प्रिय मन माँहि ॥

इति श्रीमद्योध्यानिवासिमौनिजअगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रंथे अनन्तगुनतारसप्रांते भरतगुणवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

दो० रुरु रुरु रामै रामरे मार मोर मैं मारि ।
रमु रमु रामैं राम मैं रोमै रोम मुरारि ॥
यहि विधि जनक सुनैनिका भरत रामगुण ब्रात ।
सहित प्रीति वर्णनकरत विगत निशा भइ प्रात ॥
नव सबहिन मज्जन किये पूजे जो ज्यहि इष्ट ।
गे नहाय रघुवीर तहँ मज्जत जहाँ वशिष्ट ॥

रामछप्पै ॥ नाथ सकलपुर लोग, भरत सानुज महतारी । व्याकुल शोकसनेह बिपुल बन माहिं दुखारी ॥ लीन्हे सकल समाज साज सँग जनक नरेशू ॥ भये बहुत दिन रहत सहत बन माहिं कलेशू ॥ मुनि नाथ परमहित सबहिं कर साथ हाथ शैलहि अहै । भगवन्त उचित जस होय कछु करिय स्वई सब शिरसहै ॥ वशिष्ठ चकोरछंद ॥ नरक समान सबै सुखसाज द्विराज समाज तुम्हें बिनु राम । सो सुखकर्म सुधर्म सबै जरिजाउ सुभाउ जहाँ नहिं राम ॥ योग कुयोग सु ज्ञान अज्ञान वृथा जहि प्रेम प्रधान न राम । त्यों भगवन्त सदा धृग ताहि न प्राण प्रिया ज्यहि हैं सियराम ॥

दो० तुम बिनु संतत सहतदुख लहत सुखहि तुमपाय ।

जानतहौ गति सबहिकी ज्यहि जसभाय कुभाय ॥

तोटकछंद॥ तव आयसु राम सबै शिरहै। तुमपै सबकी गति जाहिरहै॥ अब आश्रम जाइ अरामे खुदै। करिहौ रुचि राउरि मै समुदै॥

दो० करि प्रणाम निज आश्रमहिं गये जवहिं रघुनाथ।
तब धरिधीर विदेह पै आवत भे मुनि नाथ॥

वशिष्ठ तोमरछंद॥ मिथिलेशजी महराज। करिये स्वई अब काज॥ ज्यहि धर्मसों सवकेर। सब भाँति हो हित ढेर॥

दो० मुनि वशिष्ठके वचन इमि सुनि विदेह महराज।
करि विचार मन भरत पहँ आये सहित समाज॥

जनक दोहा॥

तात भरत तुम रामकरे जानिहु शील सुभाय।
तातें जो आयसु करहु कीजिय स्वई उपाय॥

भरत सवैया॥ सब भाँति महीप बड़े सुहित गुरु मातु पिता सम आपु अहो। गुणज्ञान निधान सुजान महामुनि कौशिक आदि मुनीशजहो॥ भगवन्त सुयोथलु बूझब सोहि न शोभित आपु विचारि कहो। शिशु सेवक जानिजु आयसु मोहिं करौ स्वइ सादर शीशलहो॥ तोटकछंद॥ श्रुति शास्त्र पुराण पुकारिकहै। अति सेवक धर्म कठोर अहै॥ प्रभु धर्महिं स्वार्थ विरोध महा। रत वैरहि प्रेम प्रबोध कहा॥

सो० पराधीन न्वहिं जानि पालिराम रुख धर्मव्रत।
करहु प्रेम पहिचानि सवकर हित सम्मत सबहि॥
सुनत भरत के वैन सहित सभा मिथिलाधिपति।
पुलकगात जल नैन लगे सराहन भरत कहँ॥

पुनि मुनि नृपति भरत समेता। सचिवसाधु द्विजसकलसचेता॥

गये जहां राजत रघुवीरा। वट तरुतर वर छाँह गँभीरा ॥
सुरन हृदये भय भा अधिकाई। सुमिरि शारदहिं तुरंत बुलाई ॥
कहेनि भरत मति फेरहु माता। करिछलहोहु विबुध कुलत्राता ॥
सुनि कहदेवि शक्ति म्वहिंनाहीं। सकउँ न प्रविशि भरत मतिमाहीं ॥
भरत हृदय निवसत रघुराया। तहँ नहिं चलिहि सुरहु छलमाया ॥
यहि विधि सुरन सीख बहुदैली। विधिलोकहिं शारद तब गैली ॥
सुर उपाय नहिं चले खरोसे। रहे शोचि मन भरत भरोसे ॥
राम सबहिं बहुविधि सनमानी। आसन दीन सबै सम जानी ॥
निरखि राम सिय अद्भुत शोभा। भये प्रेमवश सब मन लोभा ॥

वशिष्ठ दोहा ॥

हे रघुवर कुलद्युमणि मणि सत्यसंध सुखगेहु।
मत हमार याही सकल करै जो आयसु देहु ॥

राम सवैया ॥ विद्य सुमानसभा ज्यहि मै मुनिराजसु आपु अहौ मिथिलेशू। तामधि मैं शिशु सेवक नाथ कहौ सु कहा सब भांति भदेशू ॥ ज्ञान निधान सुजान मुनीश महीपति आपु जु देहु निदेशू। सोइ करौं भगवन्त अवै न डरौं पुनि आयसु भंग नरेशू ॥
सुनि प्रभु वचन सरल सुखसाने। मुनि मिथिलेश मनहिं सकुचाने।
उतर न आव विकल भये भारी। रहे भरत मुख सकल निहारी ॥

दो० जानि कुअवसर भरत तब हृदय सनेह सँभारि।
विन्ध्याचल गिरिवढ़त जिमि लीन्ह्यउ घटजनिवारि ॥

विंध्या मुनि कर शिष्य सुभागा। एक समय सो बाढ़न लागा ॥
मुनि अवलोकि कीन अनुमाना। लेइहि ढाँकि अवशि यह भाना ॥
अस विचारि तहँ गे मुनिनाथा। कीन प्रणाम सो धरि महि माथा ॥
दै अशीश अस कह मुनि सऊ। जब तक मैं न अत्र पुनि आऊ ॥

तब तक परे रहो तुम ऐसे। आजु लगे सो पोढ़ा वैसे॥
तैसेहि राम प्रताप तमारी। अवरोधक निज नेह विचारी॥
बढ़त खैचि उर अन्तर माही। राखेउ गुप्त प्रगट सो नाहीं॥

दो० जैसे पृथिवी कनकदृग हरिलै गयो चुराय।
ह्वै वराह अज नासिका बधि तेहिं थप्यो धराय॥
शोक रूप हिरण्याक्ष त्यों गोये सुमति धराह।
उत्पति ह्वै विधि भरत ते तुरत विवेक वराह॥
मारि कनकदृग शोक मे मति महि तुरत उधारि।
करि प्रणाम सिय राम पद बोले भरत विचारि॥

भरत रोलाछंद॥ नाथ मातु पितु स्वामि सुहृद गुरु पूज्य हमारे। सबप्रकार तुम राम प्रणतपालक हितकारे॥ मै बश मोह अबूझ मेटि प्रभुके बरबानी। आयउँ सहित समाज इहां अति दीठहि ठानी॥ सोकृपाल नहिं कोह तनक मनमे निज कीन्हा। साधुसभा महँ नाथ मोहि आदर अति दीन्हा॥ राउरि रीति सु ऐसि विदित जग वेद बखाने। को कृपालु विनु आप दास जियकी रुचिजाने॥ क्षमि सब गुनह हमार नाथ अब आयसु करहू। बहुत कहौ प्रभु काहस्वई शिर सादर धरहू॥ सवैया॥ प्रभु पंकज पायँन सौंह किये रुचि जागत सोवत की सुकहो। फलचारि विहाय सु छांड़ि छलै मनमें कछु काम न आन चहो॥ बसुयाम सुस्वामि पदाम्बुजन की करि सेव सनेह म मग्नरहो। भगवन्त जु आयसु नाथ करो स्वइ सादर मैं निज शीशलहो॥

दो० असकहि भरत सप्रेमउठि परेधाय प्रभुपाय।
समय सनेह अपारसो कहि न जाय मुखगाय॥

गीतिका छंद॥ श्रीराम सुनि शुचि भरत की बर विनय सुख

पूरण हिये। सनमानि प्रभु गहिपाणि ढिग बैठाय अति आदर लिये॥ रघुराज साधुसमाज नृप मुनिराज लखि आनँद भिये॥ लागे सराहन भरत रघुवर भक्ति भल आयप प्रिये॥

राम भरत कै प्रीति निहारी। सुरपति डरि उचाट शिरडारी॥
भरत जनक मंत्री मुनिराजा। औरहु साधु सचेत समाजा॥
इनहि विहाइ लागि सबकेरो। विकल लोग सुरमाया प्रेरे॥
मन न शांति क्षण वन क्षण घरमा। रुचिन कहति कोउ काहुहि मरमा॥
यकटक चितवहिं सब सुरत्राता। वारि विलोचन पुलकित गाता॥
भरत प्रभाउ सकै को गाई। कहत शेष शारद सकुचाई॥

कवित्त॥ प्रीति नय विनय प्रतीति प्यारु आयपन पावत न पार शेष औरन कि गायना॥ जाकी वरभक्ति लवलेशहू विलोकि आपु मगन विदेह भये प्रेमही समायना॥ भाग्यवंत गावत सुनत सत्यभाव जासु राम सीयपायँ रति काके सरसायना। कीन्हो अनुमान तिहुँ लोकनमें आनमन भयो है न होन कहुँ भारत सो भायना॥ तोटक छन्द॥ गति देखि सुएसि सबै जनकी। प्रभु जान सुजानि गये मनकी॥ शुभ धर्मधुरीन सुधीर हृदै। सतिसन्ध कृपाल सुशील सदै॥

दो० समय समान सुवानि मृदु सुनत श्रवण सुखदाय।
भरतहि निरखि सप्रेम तब बोले श्रीरघुराय॥
जानत तुम सबविधि अहो तात तरणि कुलरीति।
आपन ओर विचारि भल कहु कहै जस नीति॥

तात भरत भूपति विना बात हमारी शृष्ट।
रही यथा प्रथमै रही केवल कृपा वशिष्ठ॥
मतरु प्रजा परिवार प्रिय मोहि सहित पुरलोग।
सहत्यो विषम विषाद सब लखि नृपमरण अयोग॥

हम तुमरक्षक दिशिदऊ है प्रसाद गुरुदेव।
ताते निधरक हूजिये मानि तात मन येव॥

सवैया॥ ज्यहि आयसु तात किये वनको दिय राजसमाज तुम्हे सुसवै। स्वइ कीजिय आजु हमौ तुमहूं हित मानिरहै कुलधर्म तवै॥ जग जीवनलाहु लह्यो भलसो करते पितुआयसु जो न दवै। ज्यहि खण्डितहोइ न तातगिरा स्वइ ताताकिये तव मोहि फवै॥

सुनि प्रभुवचन नाइ पदमाथा। बोले भरत जोरि युगहाथा॥
उतरदेउँ प्रभु करौं ढिठाई। क्षमव जानि सेवक लघुभाई॥
पितु आयसु पालिय सुखमानी। परम धर्म यह वेद वखानी॥
पै पितुहोइ नारि वश जोई। सन्निपात अरु वातुल होई॥
सेवत मदहि कुपथ नित चालै। ऐसे पितुकर वचन न पालै॥
समुझि उचित कीजै भगवाना। तुम सर्वज्ञ कृपाल सुजाना॥
भरतसुजान रामरुख जाना। मन्दाकिनी तीर प्रणठाना॥

दो० लैकर जल संकल्पपढि जो नहि फिरिहैं राम।
तौ तृणसम तनु आपनो देहौं तजि यहिठाम॥

तनमन अरपित भरत निहारी। तव सुरसरि तिय वेप सुधारी॥
चन्द्रवदनि शुभ पंकज नैनी। सकल सुभग तनु कोकिलवैनी॥
सन्मुख वैठि भरत सुखरूपा। लगी देन उपदेश अनूपा॥

दो० हे रामानुज रामप्रिय हे सुबुद्धि बलवीर।
प्रणकीन्ह्यो अब तासुकर सुनु विवेक मतिधीर॥

राम सच्चिदानन्द स्वरूपा। आदि अनादि अखिलसुरभूपा॥
ब्रह्मादिक ज्यहि पार न पावै। नेति नेति निगमागम गावै॥
ताहि न सुत भ्राताकरि मानौ। सर्वोपरि त्रिभुवनपति जानौ॥
विधि हरि हर कारणकर जोई। परब्रह्म परमातमा सोई॥

निज इच्छा भूतल तनुधारी। जनपालन खलगण अघहारी॥
चले विपिन सुरकाज सुधारन। गोद्विज सन्त धरणि उद्धारन॥
दशमुख सुर नर मुनि दुखदाता। जात वधनहित त्यहि सुरत्राता॥
ताहि मारि प्रभु करि सब काजू। आय अवधपुर करिहहि राजू॥
राज बैठि देहहिं सुख भूरी। त्रिभुवन रही सुयश भरि पूरी॥
ताते तात हठहि जनि करहू। उठहु राम आयसु शिर धरहू॥
॥दो०॥ यहिविधि अमित प्रबोध करि भई अदश तब गंग।
भरत हृदय सुनि शिख सुखद परमानन्द उमंग॥
चरण कमल रघुवीरके परे भरत तब धाय।
करजोरे विनती करत प्रेम न हृदय समाय॥
॥भरत सवैया॥ जय प्रभु पालन देवधरा मुनि संतनके दुखवृन्द निवारन। शील समूह उजागर नागर आगर बुद्धि गुणाकर सारन॥ छोह सकोह न द्रोह ज़रा जग मंगल काज सुसाज सवांरन। राजिव लोचन राम कृपा भगवन्त करौ जनदीन उधारन॥ मै सह दोप अदोष सदा प्रभु आपु उदार सुस्वामि अतूल्यो। देखि सुभाउ सुराउरको लखि आपनि ओर हिये शर हूल्यो॥ नाथ कृपा किय आपु यथा अब त्योंहिं हमेश रह्यो अनुकूल्यो। त्यों भगवन्त सुजानि हमै पदपङ्कज दास न सूरति भूल्यो॥
दो० अब कृपाल म्वहिं करि कृपा सो अवलम्बन देव।
अवधि अवधि ज्यहिपार प्रभुपावों करि त्यहि सेव॥
॥मालिनीछन्द॥ दिनकर कुलकेतु सत्य संकल्प यस्य। सुजन मुद प्रदाता विश्व आथै सुतस्या॥ अगम निगम वानी नेतिय नित्य गायो। भरतहि स्वइ स्वामी प्रेमसा अंकलायो॥ बहु विधि करि बोधै पाँवरी पायँ दीन्हे। सुखयुत हरि भ्राते धारि माथे

मलीन्हे ॥ सुखनिधि भगवन्तै देखि देवालि हर्षे । जयजय करि भूपै भूरि पुष्पानिवर्षे ॥ उपेन्द्रवज्राछन्द ॥ श्रीरामचन्द्रै पदपीठ पाई । मुदातिभर्तै नहिही समाई ॥ प्रजा निमाने जनु भ्रात हेतू । किये दिजामीक भवाब्धि सेतू ॥ सनेह वन्धू शुभ रत्न सोई । सुता सुसंपुट्ट खराउ देई ॥ सुभाय जीवै हित रक्ष कर्ने । सुनाम रामादिय दैक वर्ने ॥ दिनेश कुलधाम सुमध्य जाके । सुकर्म मै सोधन पूर्ण ताके ॥ कपाट दोऊ पदपीठ वेशू । दिये सुरक्षा हित राघवेशू ॥ श्रिराम सेवा मय धर्म जोई । युगाक्षताके पदपीठ दोई ॥

दो॰ चरणपीठ रघुवीरके पाय भरत सुखधाम ।
अस सुख सन मानहु मनुज रहे लपण सिय राम ॥

सवैया ॥ सन्तोष अपार भयो भरते दुख दोष सबै तनतें गयो । लखि सन्मुख स्वामि प्रसन्न हिये जनु गूंगहि बानि प्रसाद भयो ॥ करजोरि विनय बहु भांतिन के पुनि पङ्कज पांयन शीश नयो । जगजीवन लाहु लह्यो भगवन्त भयो सुखज्यों प्रभुसाथ लयो ॥

इतिश्रीमद्‌यथार्थाखिलजनमोहनजगवन्तासहायविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेअयोध्याकाण्डेभरतपुरगमनहेतुप्रभुआज्ञावर्णनोनामत्रिदशोऽध्यायः १३ ॥

दो॰ सीताराम कृपायतन सकल सुमंगल धाम ।
चरण कमल कर जोरिके पुनि पुनि करौं प्रणाम ॥

तब कर जोरि भरत मृदुवानी । बोले प्रभु गुरु आयसु मानी ॥ तब अभिषेक हेत रघुनाथा । आन्यउँ सकल सुतीरथ पाथा ॥ त्यहि कहँ जवन रजायसु होई । करौं नाथ मैं सादर सोई ॥ अवर एक अभिलाष विशेखी । चित्रकूट वन आवउँ देखी ॥ सुनि प्रभु कहा जाहु किन ताता । आवहु देखि विपिन सुखदाता ॥

मुनि अत्रै आयसु जहँ होई। तीरथ जल थल राखेउ सोई ॥
पाइ निदेश मुदित दोउ बीरा। आये मुनि अत्री के तीरा ॥
कीन प्रणाम चरण शिरनाई। मुनि वर आशिष दीनसुहाई ॥
करि आदर समीप बैठाये। तब मुनि ते अस भरतसुनाये ॥

भरत दोहा ॥

सकल सुतीर्थन केर यह है अति पावन नाथ।
याहि राखिये कवन थल कहिये श्री मुनि नाथ ॥

अत्रि दोहा ॥

कामद गिरि पश्चिम निकट है अति सुन्दर कूप।
तामें यह तीरथ सलिल राखिय परम अनूप ॥
मुनि समेत दोउ बन्धु पुनि सुभग कूप तट जाय।
मुनि शासन सादर भरत कीन्हीं स्वई उपाय ॥
मुनि बहु महिमा कूपकी भरतहि कह्यो सुनाय।
भरतकूप यहि आजु ते कहि है सब सुखदाय ॥

सवैया ॥ यह कूप अनूप पवित्र महा महिमा मुख क्यों कवि गाय कहै। यहि मज्जन प्रेम सनेम लिये सप्रयास विना अघ पुंज दहै ॥ मन काय गिरा तन पावन ह्वै सब तीर्थनको फल त्यों सु लहै। भगवन्त कृपा सिय राघवकी यह कूप महा सुखरूप अहै ॥ त्रोटक छंद ॥ महिमा इमि कूप बखानतही। गये राजत राम कृपाल जही ॥ प्रभु सों मुनि अत्रि सुनाय कहा। वहि तीरथ पुण्य प्रभाव महा ॥

दो० ओरु भये मंदाकिनिहि करि मज्जन दोउ भाय।

रामचन्द्र गुरु अत्रि को सादर आयसु पाय ॥ चले अटन रघुवर विपिन युत समाज द्वेउ भ्रात । निरखि विपिन शोभा अमित हृदय न हर्षसमात ॥ चंचरीक ॥ राजत वन अति विशाल सोहहि द्रुम सुखदशाल वेष्टित नव लता जाल मंजुल छविछाई । गोजत खग सहित चाय डोलत शुभ त्रिविध वाय परसत सुखप्रद सदाय संचित सुखदाई ॥ फूले शुभ कमलताल राजत बहु भ्रमरसाल पीवत रस बस निहाल संकुल सुख छाके । विहरत मृगगण स्वछन्द नाचत कल केकि वृंद उमगत अतिशय अनंद निरखत सुखमाके ॥ मंदाकिनि सरित पास कीन्हें मुनिजन निवास संतत जहँ सब सुपास सुमिरत रघुवीरै । कामदगिरि वर विशाल देखत दुख दहत जाल राजत जहँ नित कृपाल भंजन भव भीरै ॥ शारद शिव निगम शेष संतत मिलि करहिं लेख पावहिं नहिं लिखि अशेष कानन प्रभुताई । सानुज जहँ सीयराम राजत सुखा सुछवि धाम सुमिरत भगवन्त नाम कीरति कल गाई ॥ कुण्डलिया ॥ भरत पांच दिन माहिं सब देखे विपिन सभाय । ज्येष्ठ कृष्ण त्रैदशि दिवस बोले प्रभु सन जाय ॥ बोले प्रभुसन जाय देहु अब मोहिं रजाई । सेवहुँ अवधहिजाइ अवधिभरि श्रीरघुराई ॥ श्रीरघुवीरकृपाल हृदै जन दोष न धारत । भरतहि लीन लगाय धायउर प्रेम सँभारत ॥ राम वचन त्रोटकछंद ॥ सुनि तातहृदै मम बातधरो । कछु राजस धर्म बखानकरो ॥ कबहूं नहि झूठ बखानकरै । बरु संकट कोटिक आनि परै ॥ निज मंत्रिहि राखय मूढनहीं । दैकै पुनि फेरि न ले कबहीं ॥ अनजान कि वस्त न भोगकरै । सब सो हितमान न वैरधरै ॥ दुख देइ न मित्रहि आपु निजै । कबहूं नहिं भूलि सताव द्विजै ॥ रिपु

र्की विसवास करै न कवौ ॥ मदमांस कुभोग बिहाइ सबौ ॥ नहिं काहुहि देइ वृथाहि सजा । सब पुत्र निते प्रतिपाल प्रजा ॥ परनारि विलोकय मातुसमा । परद्रव्य मनो विषपुंज जमा ॥ नहिं मोह न द्रोह न कोहहिये । मन वैचि रहै हरिओरदिये ॥ सतसंगतिकै उरभक्ति धरै । भगवंत सो भक्त विचारकरै ॥ हरि कीरति कान सुनै नितही । कृत पूजनपाठ मुदे चितही ॥ रिपु सो रणरोर जु आनिपरै । नहिं गुप्त सुमंत्र प्रसिद्ध करै ॥ कवि कोविद सज्जन मान सभू । कटु बैन कहै मुखसों न कभू ॥ जप संयम ध्यान सुवर्त करै । श्रद्धा निज मा-फिक धर्मसरै ॥ नृप चातुर जौन चलैं यगती । त्यहि लाग कबौ नहिं दोषरती ॥

दो० यहि विधि रघुपति भरतकहँ करि प्रबोध समुझाय ।
कहेउ मानिमम बचनअब सेवहु अवधहि जाय ॥

सुनि रघुवीर बचन अभिरामा । पुनिपुनि भरत कीन्हपरणामा ॥ भरतहि राम लीन उर लाई । प्रेम पयोधि मग्न द्वउभाई ॥ बारहिबार भेंटि धरि धीरा । पुनि रिपुहनहि मिले रघुबीरा ॥ लषण भरत रिपुहन तिहुँभाई । भेंटे परम सनेह बढाई ॥ जननिन सकल भेंटि रघुनाथा । जाइ जनक पद नायउमाथा ॥ करि बहु विनय चरण शिरनाई । गुरु पद पद्म परे द्वउभाई ॥ पाइ अशीश मुदित रघुनायक । मिलेसबहि जो जनज्यहि लायक ॥ सानुज भरत सु मुनिगण बन्दे । शुभआशिष लहि परमअनन्दे ॥ पुनि सिय चरण धूरिधरि शीशा । चले मुदितमन पाइअशीशा ॥ पुनि सिय सासुन सकलजुहारी । लहि अशीश मन भइसुखारी ॥

दो० यहि बिधि सबहिन भेंटिमिलि रामरजायसु पाय ।

॥ कीन गवन अवधहि भवन रामचरण शिरनाय ॥
सबहि पठै रघुबीर पुनि कीन्हे बिदा निषाद।
अनुज जानकी सहितथल फिरे सहर्ष विषाद ॥

कवित्त ॥ सानुज ससीयराम सुखमै सपूर्णकाम बैठिकै सुपर्ण धाम भंजन सकोचने। प्रिया परिवारके वियोगहि सँभारि उर रहे विलखाय सो सुभायवश शोचने ॥ कायमन वचन प्रतीति प्रीति प्रेमचारु श्रीमुख सुगाय वारवार कंज लोचने । भाग्यवंत भारत सुभायको सुभाव शील गुनतसुप्रेम भवफंदन विमोचने ॥

दो० सुरन देखि रघुबीर को शील सनेह सुभाव।
जगजयकरि बरषहिंसुमन विगत शोचमनचाव ॥

इतै भरत सब संग सहाये। चौथे दिन कौशलपुर आये ॥
जनक चारि दिनकरि तहँबासा। सबविधि सबहि बसाइसुपासा ॥
कीनगवन निज पुर महिपाला। उर धरि सिय रघुवीर कृपाला ॥
रामचंद्र सिय दर्शन लागी। अवधलोग सबअतिअनुरागी ॥
लगे करन-जप तप व्रत दाना।ज्यहिविधिमिलहिंरामभगवाना॥
भरत कह्यो - रिपुहनहिं बुलाई। करेहुसकल जननिन सेवकाई ॥
आपु मातु गुरु आयसु पाई। नन्दिग्राम रहे तब आई ॥
करि मुनिवेष विषय सुख त्यागी। लगेकरन तप कठिन सुभागी ॥
सिहासन पदपीठ पधारी। मन वच क्रम सेवा अनुसारी ॥

सवैया ॥ सुरराज सिहातहैं औध कि राज धनै सुनिकै धनराज लजे । अस बैभव पुंज सुप्राप्ति जहाँ विधि आपु सबै सुख आनि सजे ॥ पुर तासु बसै इमिभर्त यथा तजि भृंग सु चम्पक बागमजे ।

वच मानस कर्म सु भूपण भोग सबै मन सों तृण तूरि तजे ॥ रघुवीर के बंधु सुप्राण-प्रिया पुनि भक्तशिरोमणि वेदबकै । गुणमंदिर सुन्दर ज्ञानमई यश गावत शारद शेष थकै ॥ भगवन्त सदा प्रभु सन्मुख जे दिशितारज भूलि कबौं न तकै । सिय रामसनेह पयोनिधि भर्त बिषै तिनको कोरि काहिसकै ॥

दो० भरत कथा अकथा अमित मुनिन मथा नहिं प्रार ।
तदपि यथा बुधि मैं तथा बरणयो ग्रंथ मझार ॥
जे गावहिं यह प्रेम युत भरत चरित सुख रूप ।
राम कृपा भगवन्त पुनि ते न परहिं भवकूप ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिद्धवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणि ग्रन्थे अयोध्याकाण्डे भरतचरित्र वर्णनोनाम चतुर्दशोऽध्याय १४ ॥

इतिश्रीअयोध्याकाण्डसमाप्तम् ॥



भक्तिशिरोमणि आरण्यकाण्ड ।

कवित्त ॥

धर्म द्रुममूल भव शूल के हरणहार लीन्हे हौ त्रिशूल पाणि शत्रु दल हालिया । लोचन त्रिलाल भाल धारे शशि कण्ठ काल-कूट ग्रीव मुण्डमाल शीश गंग कालिया ॥ रीझत सुभाय फल फूलहीं को पाय दान देत ना अघाय भव भूतराय जालिया । भाग्यवन्त दासन के त्रासन हरणहार देवो सो उदार नौमि शंकर कपालिया ॥ सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल आनँद कंद सुपूरण कामैं । पङ्कज नैन बँकी भृकुटी शिर जूट जटा स्व प्रभा सुख धामैं ॥ पाणि शरासन बाण कसे कटि तूण लसैं वन मारग तामैं । कै पुट पाणि प्रणाम करौं भगवन्त सदा सिय लिच्छमण रामैं ॥

दो० ॥ श्रीगुरुचरण प्रणामु करि सिय रघुवीर मनाय । जरा मरण भव भय हरणि कहौं कथा शुभ गाय ॥
सुनहु शिष्य सुन्दर कछुक बरण्यो भरत चरित्र । अब पुनि श्रीरघुवीर को बरणौं चरित विचित्र ॥
रुद्रवर्ष अरु रुद्रही मास और दिन ईश ।

नित नौमि करुणा कीजिये। निजभक्ति भक्तन सुखद रघुपति जानि जनि म्वहिं दीजिये॥

दो० सुनि मुनिविनय सप्रेम तव हर्षे मन अति राम॥
अनसूयाके चरण पुनि कीन्ही सीय प्रणाम॥

मिलिसप्रेम सीतहि मुनिनारी। आशिरवाद दीन सुखकारी॥
अति आदर समीप बैठारी। भूषण वसन अनूप निकारी॥
जे नित नवल रहत छविधामा। पहिराये सीतहि मुनिवामा॥
पुनि सप्रेम ऋषिनारि पुनीता। बोलीं सुनु स्वामिनि जगसीता॥
कहौं कछुक तिय धर्म सुहावा। निगमागम पुराण जसगावा॥
नारि देव केवल पतिमानै। पतितजि स्वपनेहु अपरनजानै॥
जननी जनक बन्धुहित जेते। अल्प सुखहिं दायक सब तेते॥
पंच वर्षलौं जननी सेवै। लालन पालन करि सुखदेवै॥
पिता वरष दशलौं जसचाही। भोजन वसन देतहै वाही॥
पुनि विवाहि दायजु कछुदेई। करि त्यहि विदासु फुरसति लेई॥
पर्व त्योहार भ्रात तहँ जावै। किंचित धनदै फिरि पुनिआवै॥
जन्मप्रयन्त सकल सुखताही। देत नाहिं मोसिर जसजाही॥
ताते अधम नारि है सोई। मनवचक्रम पति सेव न जोई॥

कुंडलिया॥ पावै पतिकरि नारिजो अंध वधिर अति दीन। वृद्ध रोगवश जड़ अधन क्रोधी निपट मलीन॥ क्रोधी निपट मलीन सहैदुख ताकेसाथा। तदपि न हरै भूलि नारि दिशि और न नाथा॥ नाथहिं जो असपाइ तासु अपमान करावै। नानाविधि सों नरय सदन यमके दुखपावै॥

दो० चारिभाँति जग पतिव्रता वरणत नारी वेद।
उत्तम मध्यम नीच लघु कहौं सबन के भेद॥

सवैया ॥ जे हरिके रङ्ग रँगी जु रहै बच मानस कर्म भजै पति जोई । औरन ओर न भूलितकै विभु पापति शक्रसमान जु होई ॥ स्वप्नेहु जानत सो मनमें जगतीतल पूरुष आनहु कोई । यों भगवन्त गहै दृढ़धर्म पतिव्रत नारि है उत्तमसोई ॥ आपन स्वामि गनै करि स्वामि विचारत यो परकन्त निहारी । वृद्ध हि तात युवा सम भ्रात सुवैलघु पेखत पुत्र विचारी ॥ और कुभाव हिये न धरै पति सेवकरै निज धर्म सँभारी । यों भगवन्त सुरीति जिन्हैं नित भाषत सो श्रुति मध्यम नारी ॥ परपूरुष सुन्दर देखतही ह्वयजात सकाम है वामज्वई । निज धर्मकि हानि विचारि हिये कुलकी मरयाद सुजानि स्वई ॥ रहती बचि है परपी रतिवे करती अपराध न और कई । भगवन्त बखानत वेद रहै यहि रीति जु नारि निकृष्ट खई ॥ देखि जिन्हैं परनाहन को चित चौगुन चाह भई रति ठानै । पै न मिल्यो त्यहि औसर शून्य सुत्रास कछू गुरु लोगन मानै ॥ कारण योहि करै व्यभिचार न राखत मैं मन कामकलानै । सो इहै नीच महाधिम नारि सुलक्षण ये श्रुति शास्त्र बखानै ॥

दो० ॥ निजपति सों छल ठानि कै परपति मे रत जौन ।
॥ रौरव नरक सुकल्पशत परै नारि ध्रुव तौन ॥

पतिव्रत धर्म जु छांड़ि छल गहै नारि दृढ़ जोइ ।
विनुश्रम पावै परमपद कहत वेद बुधलोइ ॥

तुमहिं प्राणसम प्रियसतत सुनु सीता भगवान । जग उपदेशन हितु यह कीन्ह्यो कथा बखान ॥ अनुसूया के वचन सुनि जनकसुता सुखपाय । बारहिंबार प्रणाम किय चरणकमल शिरनाय ॥

छप्पै ॥ तब मुनि सों प्रभु कह्यो नाथ अब आयसु देहू । जावें अ-

परबेन देव्र तजन जन जानि न नेहू ॥ सुनि बोले ऋषिराज राम अस कांह्यन कहहू । तुम सर्वज्ञ सुजान सर्वगति जानत अहहू ॥ प्रभु कृपासिंधु सज्जन सुखद सेवत सब सुख पाइये । सुखधाम राम क्यहिभांति मैं कहउँ स्वामि बन जाइये ॥ सोरठा ॥ बारबार शिरनाय करि प्रणाम मुनि पद कमल । सीय सहित दोउभाय चले बिपिन भंजन बिपति ॥

इतिश्रीमिश्र्यां(?)सिद्धर्थमात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजयंतनत्रभंगप्रभुअत्रिमुनिसमागमअनसूयापातिव्रतधर्म वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० श्रीरघुपति पद पद्मको पुनि पुनि करौं प्रणाम ।
जिनकी कृपा कटाक्षते सिद्धि होत सब काम ॥

सीता लषण सहित रघुराई । चले विपिन मुनि आयसु पाई ॥
सुन्दर श्यांम गौर सुखधामा । निरखि होहिं परिपूरण कामा ॥
रामहिं चलत कठिन मग देखी । भइ कोमलमहि आपु विशेखी ॥
गिरि कानन मग देहिं सुहाये । रहहिं मेघ छाया नभ छाये ॥
यहि बिधि राम जाहिं सुख पागे । मिला बिराध असुर यक आगे ॥
अतिविशालतनु वरणि न जाई । प्रभुहि विलोकि चला सोधाई ॥
अतिरिस लाग कहन कटु बैना । तब मास्यो प्रभु मुनि शरपैना ॥

दो० लागत शरतनु तजि भयो दिव्यरूप ततकाल ।
देखि दुखी निज धाम त्यहि दीन्ह्यो राम कृपाल ॥

छंदतोटक ॥ पुनि सानुज रामसियाहि लये । शरभंग ऋष्याश्रम जात भये ॥ लखि रामप्रभा मुनि मोद भरे । कर जोरि विनै बहु भाँति करे ॥ तुम नाथ अनाथन नाथहिते । किये भूरि कृपादृग कोर चिते ॥ अब जाहु न आन कहूँ तबलौं । तनु त्यागि तुम्हें न मिलौं जबलौं ॥ जप योग मखादिक जोन किये । प्रभुको दयभक्ति

बरै सु लिये ॥ इमि जोरि चिता चित प्रेम भिये। सिय लक्ष्मण राम सुधारि हिये ॥ तनु जारत योग सु अग्नि भयो । सिय राम कृपा करि धामदयो ॥ सवैया ॥ शरभंगहिं रामदियो निजधाम विलोकि सबै मुनि मोदभरे। बहु भाँति प्रशंसि सुनाय विनै त्रयरूप अनूप हृदय सुधरे ॥ सुर सानँद व्योम विमान चढे जय जयति पुकारत फूलझरे। भगवन्त कृपा सियराम सबै मगवासिनके सबकाजसरे ॥

पुनि आगे गवने सुखकन्दा। मिलहिं अनेक मुनिनके वृन्दा ॥
भेंटि भेंटि सबही सुख देता। जाहिं चले प्रभु कृपानिकेता ॥
अस्थिअमितलखिविपिनकृपाला। बूझे मुनिन कहेतिन हाला ॥
नाथ निशाचर अति दुखदाई। लीन्हे विपुल मुनिन कहँखाई ॥
सुनि है दुखित राम प्रणकीना। करिहौं धरणि निशाचर हीना ॥
सुनि प्रण भये मुदित वनवासी। चले राम सुखधाम निवासी ॥
रहे जहां जहँ मुनि सुप्रवीना। तहँतहँ जाइ सबन सुख दीना ॥

दो० मुनि अगस्त्यकर शिष्यवर नाम सुतीक्षण जान। कर्म वचन मन रामरति प्रभु आवन सुनि कान ॥

छंद हरिगीतिका ॥ धायो मनोरथ करत बहु विधि सपदि सुख पूरण हियो। अवलोकिहौं इन जाय नैनन रूप ज्यहि सम नहि बियो ॥ अति पुलक निर्भर प्रेम तन मन सुरति सब बिसराइकै। फिरि जात पाछे कबहुं आगे करत नृति गुण गाइकै ॥ अवलोकि प्रभु अति प्रीति मुनि उर प्रगट निजरूपहि कियो। ज्यहि पाय मुनि ह्वै सुथिर मग महँ बैठ मन मूरति दियो ॥ छंदनाराच ॥ तबै श्रिराम धायके मुनीश पासको गये। थके जगाय जाग सो न चित्त ध्यानमों दये ॥ लिये दुराय राम सो स्वरूप भूपको तबै। दिये दिखाय चौभुजी स्वमूर्ति हीय में जबै ॥ लख्यो मुनीश हीय में

जबै न राम रूपस्वै उठ्यो विकल वेगि ज्यों फणीश मनि जायस्वै ॥ विलोकि ताहि अथ रामचंद सीय लक्ष्मणै । भयो प्रमोद पुञ्ज तौ प्रगट्ट ही सुतीक्ष्णै ॥ कियो प्रणाम धाय तौ श्रीराम हीय लायकै । सप्रेम भेंटि बारबार मोद पुञ्ज छायकै ॥ चतुरंसा छंद ॥ तब मुनि नाथा । करिपुट हाथा ॥ विनय सुनाई । प्रभुहिं लिवाई ॥ निजथल आये । अरचि सुभाये ॥ प्रभु छबि देखी । हरषि विशेखी ॥ करन सु लागे । विनय सुभागे ॥ चौपाई ॥ [illegible] ॥ दो० ॥ जै रघुवर जै जानकी जै लक्ष्मण सुखधाम । जै ॥ [illegible] जै प्रभु त्रिभुवन पति सुखद प्रणतपाल शुभ नाम ॥ [illegible] ॥ रोला छंद ॥ नौमि राम सुखधामं तामरस श्यामशरीरं ॥ नौमि मुकुट शिर केश वेश परिधानं मुनि चीरं ॥ नौमि चाप शर पाणि लसत कटि तट तूणीरं ॥ नौमि सदा सर्वज्ञ शमन संसृत रणधीरं ॥ नौमि गहन घन मोह दहन वर वृहद करालं ॥ नौमि सुखद सुर संत प्रणत प्रतिपाल कृपालं ॥ नौमि रजनिचर वृन्द करिन दालन मृगराजं ॥ नौमि सदा जन त्रातु शमन भव भय खगराजं ॥ नौमि अरुण जलजाक्षि सुभग संताप विनाशं ॥ नौमि भुजाक्ष चकोर सुखद विधु वदन प्रकाशं ॥ नौमि ईश कैलाश मानसर हीय मराल ॥ नौमि सुबाहु ससेन दलन उर बाहु विशालं ॥ नौमि सकल संशय कसर्प ग्रासक उरगादं ॥ नौमि कुतर्क कुपीर शमन वर विपम विषादं ॥ नौमि हरण महि भार शरण प्रतिपालक रामं ॥ नौमि

तारणनामं। नौमि क्रोध मद लोभ हरण मोहादि सकामं॥ नौमि निरंतर नित्य निरत नयनागर राम॥ नौमि भानुकुल केतु सेतु भवनिधि छवि धाम॥ नौमि अतुल भुज तेज विपुल बलधाम अजीतं॥ नौमि अनाथन नाथ सुयश श्रुति गाव पुनीतं॥ नौमि धर्म वरवर्म सुखद गुणग्राम अपारं॥ नौमि नौमि मम त्रातु सदा सिय राम उदारं॥ कबित्त॥ विस्तृत प्रताप पुंज पावन त्रिलोक यश कीरति उदार कलगाय सुख भीजिये। दीनबन्धु साहेब समर्थ चित्त कारुणीक कृपया कटाक्ष के सुदास दुःख छीजिये॥ वीरद गंभीर भवभीरको हरणहार कौशल कुमार सो सँभार चित्त कीजिये। भाग्यवन्त जानि जन जानकीश जानमणि भावनी सुभव मोहिं भक्ति निज दीजिये॥

दो०-औरहु यक प्रभु करि कृपा पूरण कीजे आस।
सिय समेत द्वउ बन्धु मम हृदय करहु नितवास॥

सुनि मुनि विनय राम सुख पाई। एवमस्तु कहि पद शिरनाई॥ मुनि समेत पुनि चले सुभाये। कुम्भजऋषि आश्रम जहँआये॥ जाय सुतीक्षण गुरु पहँ आगे। करि प्रणाम बोले अनुरागे॥ सवैया॥ नाथ जिनहिं नित ध्यावतहौ निशिवासर सादर ध्यानहिं लाये। जासु प्रभाव प्रसिद्ध महा यश पावन वेद पुराणन गाये॥ सानुज सीय समेत जिन्हें भगवन्त हृदय निज शंभु बसाये। कोशलराज कुमार स्वई मुनिराज मिलै हित राउर आये॥ छप्पै॥ सुनत सुतीक्षण बैन हरषि कुम्भज उठिधाये। निरखि राम छविधाम जलज लोचन जल छाये॥ सीता अनुज समेत परे प्रभु चरणन्ह जाई। अति सप्रेम ऋषिराज लिये गहि हृदय लगाई॥

पुनि पूँछि कुशल सादर प्रभुहि आसन वर बैठायकै ॥ करि वि-
विध भांति पूजन ऋषय मुदित जनम फल पायकै ॥
तब प्रभु कह्यो सुनहु मुनिराया। देहु सोमन्त्र हमहिं करि दाया ॥
हतौं जाहि सुर मुनि दुखदाता। सुनि मुसकाय कह्यो मुनिबाता ॥
तुम समर्थ सर्वज्ञ कृपाला। जानतहौ सबही कर हाला ॥
मैं तव चरण कमल अनुगामी। देउँ कवन मत तुम कहँ स्वामी ॥
जानि दास निज मान बढ़ावा। प्रणतपाल यश वेदन गावा ॥
भक्ति आपनी सब सुखदायक। देहु कृपा करि म्वहिं रघुनायक ॥
सो स्थान कहौं अब गाई। सीता सहित बसौ जहँ जाई ॥
गोदावरी निकट अति पावन। पंचवटी आश्रम मन भावन ॥
तहँ बसि राम सबहिं सुख भेंटौ। करि वन स्वच्छ शाप पुनि मेटौ ॥

कुण्डलिया ॥ दण्डक नृप यकबार तहँ शुक्रसुता सन आय। बरबस कीन्ह्यो भोग मुनि दीन्ह्यो शाप रिसाय ॥ दीन्ह्यो शाप रिसाय नृपहिं तब राज्य समेता। सात दिवस के माहिं दहै यह कानन जेता ॥ जेता वन भयो भस्म हरहु स्वइ शाप अखण्डक। राम बसहु तहँ जाय करहु पावन वन दण्डक ॥

सुनि अगस्त्य आयसु शिरनाई। चले ससीय मुदित दोउ भाई ॥
आगे मिल्यउ गीधपति जाई। बहुविधि तिनसन प्रीति बढ़ाई ॥
गोदावरी दीख प्रभु जाई। पंचवटी सुन्दर सुखदाई ॥
तहँ रचि पर्णकुटी अभिरामा। कीन निवास लषण सियरामा ॥
राम लषण सिय पद परिपावन। मिटी शाप वन भयो सुहावन ॥
मुनि तापस सुर सिद्ध उदासी। भये सुखी सब कै भय नासी ॥
खग मृग रहहिं सकल सुख पूरे। बिगत बैर विचरहिं बनरूरे ॥
बनसुखमा अति बरणि न जाई। जहँ सिय राम लषण रहे आई ॥

॥ सवैया ॥ आय रहे जबते इत भाय भयो तबते बन मंगल दायक। पुंज प्रमोद छयो सब ठौर करै धुनि कोकिल कीर सुहायक॥ नेकु नहीं मन त्रास कछू सब नाश भये खल वृन्द सतायक। क्यों भगवन्त कहौं छवि गाय न लोक तिहूँ उपमा त्यहि लायक॥

दो॰ जग पालन घालन असुर रघुलालन छवि ऐन।
आय रहे भगवन्त जहँ को छवि बरणै बैन॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेआरण्यकाण्डेविराधबधशरभंगकथाअगस्त्यसमागमप्रभुपंचवटीवास वर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः॥

दो॰ रंजन सुरसज्जन सुखद भवभंजन महिभार।
भाग्यवन्त सिय रामपद बन्दौं सब सुखसार॥

॥ सवैया ॥ पंचवटी गुणग्रामजटी सुखपुंजपटी परि दुःखछुटी है। प्रेमछटी बरभक्तितटी नित त्यागठटी नवशोभजुटी है॥ पापघटी दुरितापहटी भवदापकटी लखि लाहलुटी है। भागपुटी भगवन्त कुटी लखि पंचवटी प्रभु पर्णकुटी है॥ कवित्त॥ कैधौं ज्ञानभक्ति औ बैराग बपु धारे आपु कैधौं बिधिभारती समेत आपु राजते। कैधौं त्रिपुरारि संग गिरिजा गणेश धारि कैधौं ऋतुनाथ युत रतिमैन राजते॥ कैधौं परमार्थ अरु योगयुत प्रीति आपु कैधौं वीर शान्त औ शृंगार सुखसाजते। भाग्यवन्त कैधौं कूर्म शेष सुरधेनु आपु कैधौं सहसीय राम लक्ष्मण विराजते॥

दो॰ एकबार श्रीरामपद लषणलाल शिरनाय।
अति सप्रेम करजोरिकै बोले बचन सुभाय॥
हे समर्थ सरवज्ञ प्रभु कृपासिन्धु गुणखानि।
मैं पूछौं कछु आपुसों कहिये निजजन जानि॥

गीतिका छन्द॥ क्यहि कहत ज्ञान विराग काको कौन माया गा-

इये । का भेद ईश्वर जीवसों सद्ग्रन्थ वेद बताइये ॥ है भक्ति कौन अनूप जाकहँ करत तवपद पाइये । ज्यहिजाय संशय सुनत मो-कहँ नाथकहि समुझाइये ॥ त्रोटकछन्द ॥ कहिये सुनु तातहै ज्ञान वही । जहँ एकहु बातको माननही ॥ समदृष्टि चराचर माहिं करै । यक ब्रह्ममयी सब देखिपरै ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ सुनु तातसुभागी अति अनुरागी परमविरागी ताहि कही । जो तृणसम तीनों गुणतजि दीनो सिद्धिन कीनो चाहनही ॥ पुनि मैं अरु मोरा, तैं अरु तोरा जहँलगि जोरा नातजितो । गो गोचर द्वारै मनसि विचारै जहँलगि पारै देखि तितो ॥ माया सबजानौ मन अनुमानौ अपर बखानौ भेदतदा । प्रथमैं यक विद्या द्वितिय अविद्या परम निषिद्धा वेदवदा ॥ जाके वश परिकै हरिहि विसरिकै कुकरम करिकै होत दुखी । विद्या भलिभावै जो जगजावै हरिहि मिलावै जीवसुखी ॥ पुनि ईश्वर सोई समरथ जोई सबपर होई स्वामिज्वई । माया अरु ईशै आपु अनीशै रूप न दीसै जीवस्वई ॥ पुनि भक्तिहमारी परमापियारी जन हितकारी तात सुनो । निज तंत्र सदासो सब सुखदासो करत प्र-कासो ज्ञानगुनो ॥ सो मिलत न तोलो द्रवत न जोलो सन्त अ-तोलो ज्ञानमई । त्यहिकरन उपाई कहउ सुभाई सुनु चितलाई कान दई ॥ प्रथमै द्विजपाँयन प्रीति सुहायन करै सदायन भायसती । त्यहिकर फललागे विषय विरागे भव निशिजागे शुद्धमती ॥ तब त्यहि ममचरणन सब दुखहरणन उपज अवरनन प्रीतिनई । श्रव-णादिक नवधा भक्तिके पवधा तब सुख सवधा करनठई ॥ सुन्दर ममलीला सुनि सुखशीला है गिलशीला प्रेमपगो । गुणग्राम हमारे गुणहि सँभारे ते अतिप्यारे मोहिलगो ॥

दो० कर्मवचन मन छोड़िछल सेवै सन्तसुजान ।

सत्य कहों त्वहि तातते प्रिय त्वहिं प्राणसमान ॥
संत महातम अमित अनूपा। कहि न सके शारद अहिभूपा॥
जिनके दरश किये अघमूला। होय शमन जिमि पावक तूला॥
पूरब पुण्यभाग जब जागे। तब मन संत चरण महँलागे॥
करै सदा जो संतन सेवा। ताके वश संतत सब देवा॥
धन्य संत जे तजि सबकामा। रटहिं नाम सहरति वसुयामा॥
ईश्वररूप तिनहिं करिजानो। तिनके चरण सदा उर आनो॥
॥ हरि गीतिका छंद॥ तजि कामजे वसुयाम ध्यावहिं नाम पावन मन किये। ते धन्य संतत संत ईश्वर देहधरि आपुहि लिये॥ सब जक्त पावन करण कारण नित्यते भ्रमें अटें। भगवन्त जनके मेटि संकट ठट ते सुखकी ठटें॥

दो० सन्त बचन रविकर सरिस जाके हृदय प्रकाश।
मोह अविद्या घोरतम करत सो वेगि विनाश॥

सवैया॥ सन्तन के गुणग्राम अनन्त न पावत अन्त अनन्त बखानत। औगुण औरनके न गनैं गुण तासु सप्रेम सदै उर आनत॥ जो पैकरै अपकार कऊ उपकारहि तासु हिये करि मानत। याबिधि सन्तनको भगवन्त सदा श्रुति ब्रह्म समानहि भानत॥

दो० धन्य सन्त निर हेत जे करै अपरको काज।
ज्यों कपास दुख भूरि सहि राखत औरन लाज॥

संत चरण रज जो शिरलावै। उपजै ज्ञान भक्ति ममपावै॥
जप तप तीरथ धर्म अचारू। योग यज्ञ व्रत नेम विचारू॥
वेद पुराण पढै बहुभांती। कथै ज्ञान चाहे दिन राती॥
संत चरण बिनु किये सनेहू। बादितात सबैस सुनु येहू॥

कीन्हें विनु संतन पद नाता। पाव न भक्ति मोरि सुनु ताता॥
संतन विवश सदा मैं कैसे। हाथ ख्यलार चंग रहे जैसे॥
संत वचन जो मानै साँचा। ताको सुयश लोक तिहुं माँचा॥
पापरूप प्राणी किन होई। संत संग पावै गति सोई॥
अस प्रभाव संतन कर भाई। शेष गणेश सकैं नहिं गाई॥
सकृत प्रणाम किये जिन केरे। पाप ताप नहिं आवत नेरे॥
जिनहिं संत पद प्रेम अभंगा। होहिं सकल तिन्ह के दुख भंगा॥
प्राण समान संत म्वहि प्यारे। होत नहीं क्षण एकहु न्यारे॥
यथा कलेवर संग सदाही। रहत वास कीन्हें परिछाहीं॥
जिमि सनेह पय माँझ निवासा। भानु किरण महँ यथा प्रकासा॥
वेतस मध्य यथा द्विजराजा। आखर में जिमि अर्थ विराजा॥
तिमि मम वास संत ढिग अहई। रक्षा करत चक्र नित रहई॥
संतनतें मोंते नहिं भेदा। देवे तात उनहिं जो खेदा॥
निंदा करै किधौ उपहासा। सहित कुटुम्ब करौं त्यहि नासा॥
रौरव नरक वासतें पावै। जे संतन कहँ भूलि सतावै॥
संत विरोध किये तिहुँ लोका। पाव न तात कतहुं सो ओका॥
ज्यों झख वैर अम्बु सों ठानै। करै तासु को रक्षा आनै॥
मम अपराध करै जो कोई। करौं क्षमा मैं चाहे सोई॥
भक्त द्रोह जो मनहिं विचारै। ताकहँ चक्र मोर संहारै॥
अस प्रण मोर भक्त हित लागी। सो न बचै पुनि त्रिभुवन भागी॥

॥ सो० संत कृपा विनु तात, मोहिं न पावै कोटि विधि।
॥ संतन सों भल नात तातें संतत कीजिये॥
रामवचन सुखदाय परम मनोहर नीतिमय

॥ सुनि लक्ष्मण सुख पाय बार बार बन्दे चरण॥

॥ इतिश्रीमदयोध्यामिहवमोत्मजभगवन्तसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिप्रथेआरण्य काण्डेलक्ष्मणप्रतिप्रभुज्ञानवैराग्यभक्तिवर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ३॥

॥ दो० राम लषण श्रीजानकी चरण कमल सुखधाम।
॥ भाग्यवन्त कर जोरिकै पुनि पुनि करो प्रणाम॥

॥ मोदक छंद॥ यो कुछ काल व्यतीत भये जब। शूर्पणखा दश कंध स्वसा तब॥ दुष्ट महा विकराल भयावनि। निश्चर वंश कुठारि नशावनि॥ जाइ तहां लखि कै भगवानहिं। वेधि गई उर काम के बानहिं॥ धारि सुरूप चलायकै नैनन। बोलत भै भरि चातुरि बैनन॥ सवैया॥ सुन्दर श्यामल गौर मनोहर आनन पूरण चंद्र कलाहो। देखतही चित मोहि लियो भगवन्त सबै सुखमाके थलाहो॥ शीश जटा शर चाप गहे कर भावत वीर बड़े प्रबलाहो। बैठि निशंक महावन में तुम को कहौ संग लिये अबलाहो॥ चक्रवर्ती दशरत्थ महीपति कौशलनाथ के हैं हम जाये। राम सुलच्छमण नामन संयुत आयसु दै यह तात पठाये॥ जाय बने सब मारिकै राकस पालहु जे मुनिवृन्द सुहाये। तैं कहु को हसि आपन हाल सुहाल निजै हम देत बताये॥ चंचरीक छंद॥ लंकनाथ दशास्य की म्वहिं जानिये भगिनी सही। जासुहै ठकुराइ तीनिहुँलोक मा- नहुँ जो कही॥ है न पुरुष आन ज्यों तुम नारिहू सम ना हमों। ताहि ते सुकुमारिहो अस जानि मो संगमें रमो॥

दो० कह्यो नीक सो भामिनी पै कहि सुनो हमारि।
लषण कुमारे जाउ तहँ है मेरे यह नारि॥

तोमर छंद॥ सुनि बैन सो सति मानि। तिनसों कही अस- आनि॥ सवैया॥ राम सहोदर आनँद कोदर हेरहु मो दिशि नैन

उठाई ॥ मैं अनुजा दशकंधरकी तिहुँलोक में जाकरि है ठकुराई ॥ राजकुमार रमौ सँग मोहिं करौ पतिनी पति ह्वै मनभाई । जासों लहौ भगवन्त सबै सुख सम्पति सिद्धि समृद्धि बड़ाई ॥

कह लक्ष्मण सुनु भामिनि बाता । वेहैं भूप सबनि के त्राता ॥ म्वहिं सेवकहिं वरे का पैहो । चेरी ह्वै उपहास करैहो ॥ तातें उनहिंन पास सिधावो । जातें सुयश लोक तिहुँ पावो ॥ सुनि सो गई जहां रघुवीरा । पुनि पठये प्रभु लक्ष्मण तीरा ॥

तोटक छंद ॥ लखि लक्ष्मण ताहि सक्रोध कही । लहिं आवति लाज निलज्जि नही ॥ त्वहिंको जग पुरुष जौन वरै । तृणसो निज लाजहिं तोरि धरै ॥ बरवै छंद ॥ समुझि हास अति व्यंकट रूप ब-नाय । दौरी मुख पसारि गइ सिया डेराय ॥ तब सयनहिं प्रभु ल-षणहिं दीन बुझाय । ज्यहि विधि सो बरवैमें तुलसी गाय ॥ तब लक्ष्मण तुरते त्यहि नासा कान । लीन काटि भइ व्याकुल मानि गलान ॥ चलि खरदूषण पै गइ ठन्यासि फैन । सुनि उठि धाये तुरते ते सजि सैन ॥ गीतिका छंद ॥ सजि सैन निश्चर निकर धाये सपर गिरि कज्जल मनो । धृत अस्त्र शस्त्र अनेक आयुध विविध वाहन को गनो ॥ अति होत असगुन अमित ते नाहिं गनत मृत्युवश रा-कसा । बाजत अनेक जुझाउ बाजन गरजि तर्जहिं वाकसा ॥ कोउ कहत मारहु पकरि दोउन ललित लै ललना लियो । इमि कहत धाये सुभट सबदल अग्रसुपनखहि कियो ॥

दो० धूरि पूरि अम्बर निरखि कह अनुजै रघुवीर ।
लै सीतहि गिरि कंदरहि जाहु सजग रह्यो वीर ॥
प्रभु आयसु लक्ष्मण गये लै सीतहि गिरि खोह ।
तब लगि रिपुदल सन्मुखै आइगयो अति कोह ॥

छप्पै ॥ तब रघुपति मन विहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ायो।बांधि जटा शिर जूट कमरकसि तूण लगायो ॥ करशर चाप सुधारि दुव-नदल सन्मुख देख्यो।ज्यों केहरि करि झुंड निरखि मन हरप विशेख्यो ॥ गयमोहि निरखि सब राम छवि सकत न निशिचर डारिशर। तब निकट बोलि मंत्रिहि विकल कहतभयो अस बचन खर ॥ य कोऊ नृप सुवन भुवन भूपण छविऐना। असि शोभाभरि जन्म कतहुँ हम दीख न नैना ॥ यद्यपि किहिनि कुरूरभूरि पर वद्ध न लायक। ताते कहियोजाय देहिं निजनारि सुहायक॥ दैनारि जियत दउभाय ज्यहि जाहिं भवन निज मानिसुख। नतु मारि गरद म्यलिहौं दुहुन परेआइ ममकालमुख॥ सचिवन्ह प्रभुसों जाय बात सब वरणन कीन्ह्यो। सुनि मुसकाने राम तिनहिं अस उत्तरदीन्ह्यो ॥ हमक्षत्री मृगयार्थ फिरत वनमें नहिं डरते। तुमसे खल मल राशि खोजि मृगगण संहरते ॥ रिपु प्रबल देखि नहिंडरत हम लरत जुरण कालौ मिलहिं। नहिं होइ जुबल घरजाहु फिरि भागेन पर करनहिं दिलहिं॥ दूतन प्रभुके बैन जाय निजनाथ सुनायो। खर दूपण त्रिशिरादि सुनत अति क्रोध बढ़ायो ॥ बोले तब ललकारि सुभट सब सन्मुख धावहु। नृप बलकन दउ बांधि मारिसहि गर्द मिलावहु॥ सुनिवले धाय निशिचर सकल प्रभुपर हहाकारकय। शर शक्ति शूल तोमर परिघ नानाविधि हथियारलय॥ कुंडलिया॥ तब रघुपति टंकोरिधनु कीन्ह्यो शब्द अपार। सुनि सब निशिचर भे वधिर गिरि गिरिगे हथियार॥ गिरिगिरिगे हथियार सक्यो काहुन संभारी। सावधानह्वै सकल बहुरि धाये तमचारी॥ तमचारिन दलकोपि चल्यो आयुध बहु बरपति। तिलसमान सो काटि बाण निज छाड़े रघुपति॥ भुजंगप्रयात छन्द॥ चलेराम नाराच संग्रामछाये। मनो

पुंज, व्यालालि फुंकारि धाये ॥ गये रेलि कै पेलि फौजै विडारी । लगे अंग काटै भगे जै निशाचारी ॥ तबै कोपियों आय तीनों पुकारे । सु संग्राम ते पौंव पाछे क धारे ॥ करौ वृद्ध मैंही स्वहस्ता जु ताको । फिरे ठानिकै मर्ण द्वैरि हांको ॥ लिये अस्त्र शस्त्रादि नाना हथ्यारे । लगे कोपि श्रीराम सों हैं प्रहारे ॥ तिन्है जानि क्रुद्धाति श्रीरामसांचे । सु संधानि शारंग छांडे नराचै ॥ लगे ते विखण्डे सुराराति अंगै । अरेरुंड जैजै ति बोलैं उमंगै ॥ कटै ग्रीव बाहैं हृदै लंकपावै । बिना मुंड कै रुंड भूमाहिं धावैं ॥ लगे बाण चिक्कार कोई मचावै । कई मुंड नाये मुखै खान धावै ॥ कई काहरैं भूमिपै घाव खोये । कई बाहु लै चाम नाराच धाये ॥ कितो तौ लिये कंक औ काक खाहीं । कितो नोचि जम्बूक भागे हु हाहीं ॥ सजैं खप्परै भूत प्रेता पिशाचैं । पिये योगिनी रक्त को मस्त नाचैं ॥ लिये भूरि बैताल अट्टौं कपालैं । बजावैं उठावैं तुरङ्गानि तालैं ॥ प्रचण्डाति नाराच श्री रामकेरे । विखण्डैं भुजा मुंड आराति घेरे ॥ जहाँ कैं तहाँ ते दशौ ओर पाटे । बचै बीर ना भागि वे अंग काटे ॥ लिये गीध अंतावरी व्योम जावैं । गहे ताहि भूमैं पिशाचा पु धावैं ॥ उड़ावैं पतंगै मनोबाल लीने । करे जाल कल्लोल आनन्द भीने ॥ विलोके निजै सैन बेहाल ज्योंहीं । बढे कोपि खर्दूषणादी सु त्योंहीं ॥ गहे अस्त्र शस्त्रादि नाना प्रकारे । कृपासिंधु पै वार एकै प्रहारे ॥ तिन्है काटि श्रीराम संग्राम कोपी । सु नाराच दीन्हे दलै शत्रु तोपी ॥

दो० दश दश शर रिपुनायकन तत्र मारे रघुबीर । परत भूमि पुनि उठि लरत मरत न ते अतिधीर ॥ सहस चतुर्दश राकसा एकै राम सुख ऐन । दिवि देव डरपत सकल परत न मनमें चैन ॥

सभय देव करुणानिधि चीन्हे। रामरूप सब कंटकहि कीन्हे ॥
एकहि एक धाय धरि मारा। क्षण महँ सकल भये संहारी ॥
राम राम कहि तजेनि शरीरा। भये मुक्त ते सब रणधीरा ॥
देखि चरित हरषे सुर भारी। बरषि सुमन जै जयति पुकारी ॥
सीता सहित लषण तब आये। प्रभुपद अम्बुज हरषि शिर नाये ॥
निरखि राम छवि भये सुखारे। तब रघुपति निज ढिग बैठारे ॥
दो० पंचवटी श्री राम बसि नित नव चरित अपार।
करत जाहि गावत सुनत पावत नर भव पार ॥

[illegible]

छप्पै ॥ छवि समुद्र परधाम विरज निर्गुण गुणरासी। परमातम परब्रह्म अखिल उर अंतरवासी ॥ विधि हरि हर पदवंद्य प्रणत प्रतिपाल कृपालं। रञ्जन सुर मुनि मनुज दनुज कुल काल करालं ॥ जय सकल भुवन पालन करण शरणागत संकट कदन। भाग्यवन्त वन्दन करौ रघुवंश विभूषण सुखसदन ॥

दो० खरदूषण त्रिशिरादि को देखी नवै विनास।
शूर्पणखा तब भागि के गई रावण पास ॥
सो० अनहुँ मौत विकराल निश्चर कुल केरी कुमति।
गई भुवन दशभाल खरदूषण त्रिशिरादि भखि ॥
सभा मध्य परि जाय करि विलाप बोली तमकि।
तोहि न सूझत भाय सबलशत्रु शिरपर चढ्यो ॥
कुंडलिया ॥ भूली सुधि एरु देश की करै पान मदअन्ध। मेरी गति यह ह्वैगई तोहिं जियत दशकन्ध ॥ तोहिं जियत दशकन्ध लाज सब ह्वै गै भंगा। निरखसि नैन पसारि भरे शोणित मम अंगा ॥

अद्भन अंग निहारि मीर त्यहि तनक न हूली। रढ़त चढ़ी शिर मौत खबरि तोको सब भूली ॥ बोल्यो सुनि दशमुख सरुप कहु क्यहि त्रास लै मोरि। ज्यहि श्रुति नासा काटि यह कीन्हीं दुर्गति तोरि॥ कीन्ही दुर्गति तोरि कहै क्यों सपदि न हाला। को अस प्रबल त्रिलोक आयु पहुँच्यो क्यहि काला॥ कालहुको डरडारि श्रवण नासा तव छोली। कहु कहु काके कर्म सुनत शूरपणखा बोली॥ कवित्त॥ आये वनदेखन कुमार कौशलेश द्वैक सुंदर उदार कोटिमारसौ लजावना॥ भाग्यवन्त चारु सुकुमार वीरबाणयुत पौरुष प्रतापपुंज पारहै प्रभावना॥ मारे खलवृन्दन अनन्द मुनिवृन्द त्रास डारे डर देवन पुकारे यश पावना। काटे श्रुति नाकते सुडाटे खरदूषणादि मारिकै सदलै औनिपाटे तिन रावना॥ सवैया॥ तै यक संगलिये नवनारि निहारत जो सचराचर मोहै। रंभ रमा रति भारति गौरि मलीन प्रभाद्युति दामिनि को है॥ कोटिन चंदप्रभा सुखपुंज अनूपम रूप विरञ्चि रच्यो है। क्यों भगवन्त प्रशंस करौं गुणसागरि रूप उजागरि सो है॥ कवित्त॥ भाईतीय साथमें सुभाईती न साथमें सुभाईती न साथहैं सुगाति दीन भाई है। राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाकको न राखी श्रुतिनाक दिगनाकलौं सुहाई है। राखेआपु बैरिन न राखी आपु बैरिनको बानोवान खंडन सुबानि हेरिआई है। एरे मन्द रौना तोहि सूझितौ परौना तिन्हैं जान्यसु नरौना काल तेरेहाल पाईहै॥

दो० खरदूषण त्रिशिरादिको सुन्यो जबहिं सो घात।
अतिरिस व्यापी दशमुखहि उठेसकल जरिगात॥
शूरपणखहिं तब विविध प्रबोधी। गयो भवन रावण मनशोधी॥
तीनिलोक सुर नर मुनिमाहीं। मम सेवक सरि दूसर नाहीं॥

मो सम प्रबल सुभट खर दूषण। तिनहिं बधैको बिनु जगभूषण॥ जो अवतरेउ जगतपति आई। तौकरि बैर तरों भव जाई॥ तामस देह भजन किमि करिहौं। हरिपद बिमुख नरकमहँ परिहौं॥ निजपरलोकहि जो न बनायो। धृग धृग ताहि बृथाजगजायो॥ जो नृप तनय कऊ बलभारी। तौ हरिहौं तिय दउ रणमारी॥

दो० असबिचारि मन रावणा चल्यो जहाँ मारीचु।
ज्यों पतंग दिशि दीपकहिं चल्योधाय बशमीचु॥

स्वागता छन्द॥ राम सीय इतबोलय लीना। राजपुत्रि सुनिये सुप्रवीना॥ मैं सुकीन चहतों नर लीला। भूमिभार हर आनँद शीला॥ सो शुभागिन करिये तुम वासा। जावतारि गण होहिं न नासा॥ प्राणनाथ मुखके सुनिबानी। हर्षिसीय तब अग्निसमानी॥ राखि तत्र वैसे निज छाया। जानिजाय नहि रामकि माया॥

दो० रावण उत मारीचको जाय नवायो भाल।
मनउदास त्यहिं देखिकै पूछेउ कहु निजहाल॥

द्वै तपसी दण्डकवन आये। शूर्पण ताहि कुरूप बनाये॥ खरदूषण त्रिशिरादिक मारे। चौदह सहस न एक उबारे॥ सो तुम करहु सहाय हमारी। कपट कुरंग होहु छलकारी॥ त्यहिलै मैं उन तिय हरिआनों। तो तुम्हार बहुविधि गुणमानों॥

दो० सुनत बचन मारीच तब कहा सुनहु दशशीश।
तिनहि न जान्यहु नर निपट भवभंजनजगदीश॥

सवैया॥ राखन गे मुनियज्ञ जबै म्वहिं शायक ते फरको बिन मारचो। आयउँ सो शतयोजन अत्र सुताड़क मारि सुबाहुहि जारयो॥ भूप सभा धनु शंभु दल्यो भृगुनायकको जिन गर्ब उतारयो। नाश कियो खरदूषण जो भगवन्त न मानुष ताहि बिचारयो॥ पूरण

ब्रह्म चराचर जो धृत मानुष देह महारण शूरो । जाहि न पावत पार पुराण बखानत वेद हु को मन मूरो ॥ त्यों भगवन्त सुमानि सयाशिप अंतरते छलता गहि तूरो । जाहु घरै कुल वैरि विचारि सुतासुत्रि-शोर्ध परी नहिं पूरो ॥ तोमरछंद ॥ सुनि कोपि रावण नीच । कहवैन डाटि मरीच ॥ नहिं देत ज्यों गुरुज्ञान । भट कौन मोहि समान ॥ नाराचछंद ॥ तबै मरीच हीय मैं विचार यों हृढ़ायऊ । उभै प्रकार मौतको सुत्यों तचालि आयऊ ॥ इतै जु जाब देउँ तौ दशास्य मूढ मारिहै । उतै श्रीराम बाण छूटि प्राण ना उबारि है ॥ निरै सुहाथ अस्य औसि त्रैसि जाव धामको । मरौं सुहाथ रामके करौं दशास्य कामको ॥

दो० असि विचारि मारीच मन सुमिरि राम रघुनाथ ।
परम प्रेम हरपित हृदै चल्यो दशानन साथ ॥
यहि कारण मुनि योगिजन करत अनेक उपाय ।
सइ प्रभु आजु बिलोकिहौं इन नैनन ते जाय ॥
जासु क्रोध निर्वाणप्रद करण अवश बश भक्ति ।
नैन सफल करिहौ निरखि सोई प्रभु सहशक्ति ॥

पंचवटी हैं रघुबीरा । सीता अनुज सहित मतिधीरा ॥
कहहिं राम कछु कथा पुनीता । सादर सुनहि लपण अरु सीता ॥
रावण संग लिये मारीचा । ताही दिन आवा मतिनीचा ॥
कनक कुरंग जटित मणिनाना । भा मारीच न जाय बखाना ॥
त्यहि थल कपट कुरंग स्वइ आवा । देखि सुभग सीता मन भावा ॥
कह प्रभु सों हरपित मृदुबैना । यह मृग नाथ परम छवि ऐना ॥
मिलत गहे जो पालन लायक । मारयहु होइ चर्म सुखदायक ॥
प्रिया बचन सुनि आगम जानी । उठे राम गहि शर धनु पानी ॥

दो० लषणहिं सौंपि विदेहजहि आपु शरासन साजि। मृगपाछे धाये तुरत चल्यउ देखि सो भाजि॥

सवैया॥ सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन पाप सुकीरति छायो। आगम वेद पुराण बखानत नेति न शंकर ध्यानहि पायो॥ पूरण ब्रह्म जिदादि न अंत अनंत सुसंत महातम गायो। सो भगवन्त शरासन साजि कपट्ट कुरंग के संग सिधायो॥

पुनि पुनि चितवत प्रभु चित दीन्हे। मुनि मखके रखवारे चीन्हे॥
कबहुँ जाय हरि पुनि प्रगटावै। कबहुँ घेर परिकट निकटावै॥
यहि विधि सो जब दूरि सिधारा। तब रघुबीर ताकि शर मारा॥
परेउ धरणि महि धरहि पुकारी। हरुयें सुमिरि राम दुखहारी॥
तौं त्यहि दीन राम निजधामा। लै मृगचर्म फिरे अभिरामा॥
तासु शब्द इत सिय सुनि पाई। बोली लक्ष्मण ते दुखराई॥
हे देवर तुम वेगि सिधारो। प्रभुहिं परेउ कछु संकट भारो॥
मृग न होइ यह निशिचर कोई। दीन्हेउ प्रभुहि विपिन दुखसोई॥

सो० लषण कह्यो सुनु माउ दुखदायक प्रभुको कवन। सौंपिगये किमि जाउँ स्वामि रजायसु भंगकरि॥

सवैया॥ रामहिं जीतनहार न है कउ कालहु आनि जुरै रण जोई। देव अदेव सबै लरि हारहि पावहिंगे पर पार न सोई॥ राम न आरत बैन कहैं कहु डारिय मातु सुशोचन खोई। त्यों भगवन्त सु मानु प्रतीति न रामहिं संकट दायक कोई॥

तब सिय कहीं पुरुष कछु बाणी। उठे लषण गहि शर धनुपाणी॥
चाप कोर ते चहुँ दिशि रेखा। खैंचि सौंपि वनदेवन शेषा॥
जो नँघि सो देहै तुरंता। चले नायशिर सियहिं अनंता॥
रावण सून बीच तब पावा। यतीरूप धरि सियढिग आवा॥

याच्यो भीख सुनत वैदेही। लगी देनी फल मूल सु तेही॥ बोला पुनि सो कपट प्रवीना। बंधी आखमें कतहुँ न लीना॥ दो० भावी वश सिय रेख तजि बाहर निकसी त्योहिं। करि प्रणाम कै आशिरिध जलयउ गगन पथ त्योहिं॥ इत उत चितवत चकित चित जान्यो सिय दशशीश। करि पुकार बिलखाइ कह हाइ हाइ जगदीश॥ सवैया॥ हा सुख भूरि गयो वन दूरि कुरंग के संग अनंग लजावन। लेहु न कयों सुधि दीनदयाल दिवाकर वंश दिवाकर पावन॥ आरतभंजन नाम प्रसिद्ध सु आरति मोरि हरौ मनभावन। त्यों भगवन्त छुड़ावहु वेगि हरेस्व हि जात लिये खल रावन॥ हाय सु लक्ष्मण दोषनि तव फल पायउँ सो भल रोष जु कीन्हो। सो क्षमि शेष सुधावहु रेख जु तो घत डारि लँघाइ दीन्हो॥ ज्यों सुरभी सुर गोमर थानि परी परपानि सु त्यों मैंहि चीन्हो। चोर हु के छलछद्र हमैं हरि रावन देव सतावन लीन्हो॥

दो० सीता केर विलाप सुनि सचराचर सब जीव। भये विकल भूली सबहि तनमन सुधि बुधि हीव॥

छंद हरिपद॥ गृद्धराज रघुराज प्रिया को आरत रव सुनि पायो। राम राम कहि ताहि अनारत गगन पंथ धुकि धायो॥ ज्यों छूटे पविशक्र गिरिन पै मारुत वेग लजायो। त्यों करि क्रुद्ध गृद्ध अति आतुर जहँ रावण तहँ आयो॥ कवित्त॥ रे रे दुष्ट रावण निलज्ज राजप्रति चोर लंपट लवार क्षुद्र राव मंद्य खोरमै। बाहु बीस शीश दश ईशके अशीश खीस जैहैं बिसो बीश जगदीश कोप घोरमै॥ जाहि दीलि जनकी सुजानकी कुशल चाहि मान किन मान तजि जानकीश मो रेमे। नातो करिहातो विश्वनातो सब ठाढ़ होहि भागुरे

न भागुहत आयो काल तोंसे॥ चोंचन विदारि अंग मोचहिं प-
छारि औनि। औनिजै सुराखि थल ताहि फेरि डाट्यऊ। पौरुख प्र-
बल पूरि, दोहुन विरंचि युद्ध रामके प्रभाव मोवँ गृद्धको न हाट्यऊ॥
मारिकै विकल चोट अंगुलन तूरकरि मुकुट कोदण्ड पाणि आयु-
धन छँटियऊ। भीग्यवन्त फेरि उठि रावण सक्रुद्ध वीर काढिकै
कृपानधैन पंखतासु काटिअऊ॥ तोटकछन्द॥ कटि पंखगिस्यो खग
रुण्डमही। मुखसों करुणानिधि रामकही॥ खनि गृद्धजु रामहि
काजलस्यो। नहि जीवित जानकि त्यागकस्यो॥ मुनि सिद्ध सराहत
ध्यानअड़े। भगवन्त जटायुके भागबड़े॥ दोधक छन्द॥ रावणले
सियभाग सभीता। भूरि विलापकरै नभ सीता॥ पर्वतपै सिय
कीशनहेरी। दीनसुडारि पटे हरिटेरी॥ [illegible]
दो० यहिविधि रावण जानकी, हरि लैगयो पराय॥ [illegible]
[illegible] विपिन अशोक अशोकतरु तरखे राख्यसि जाय॥ [illegible]
वेला तन सियसों अनुरागी। करहु न शोच नरनके लागी॥
उनमे कछु प्रभाव नहिं भूरी। मे समुझत तिनको करिधूरी॥
दिहिनि खेदि घरते पितु माता। भरमत फिरत विपिन दउभ्राता॥
नहिं जानी क्यहि करम प्रभावा। तुमकरि नाह नरनको पावा॥
अब जागयउ तव भाग सुसीता। जो आइउ हमरे सँगप्रीता॥
देखहु मोरि प्रभाव अपारा। मोसम प्रबल न कउ संसारा॥
मेरकहा जो करु हितमानी। तौतुव चेरिकरों सब रानी॥
यहिविधि खलबहुसिखवनदीन्हा। पै सिय कान नसी कछु कीन्हा॥
दो० ज्यों पत्थरमें चोंचको, खण्ड प्रहार किय [illegible]
[illegible] ताहि न व्यापै चोट पुनि [illegible] आपुही होय॥ [illegible]
इतिश्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतरामायणेआनन्दरामायणे आरण्य-
काण्डेमायासीताहरणवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

दो० जा को नाम सु ध्यावतै अशुभौ शुभ सब होत ॥
भागयवन्त स्वइ राम सिय बन्दौ भुव विधि प्रीत ॥ ८ ॥
गये लषण जहँ राजिवनैना । अनुजे लखि बोले प्रभु बैना ॥
तात भली नहीं कीन्हेउ भाई । आयहु छोड़ि सीय बन माहीं ॥
परत जानि मोहिं अशकुन देखी । कोउ हि खल सिय हरेउ बिशेखी ॥
कह्यो लषण कछु मोर न दोषा । पठयो हठि स्वामिनि करि रोषा ॥
तेसम दोउ चलि आश्रम आये । शून्य कुटी नहिं सीतहिं पाये ॥
भये बिकल जस पूरुष कामी । नरइव चरित करत जगस्वामी ॥
चले मिथिहि खोजत दोउ बीरा । गिरि सर खग मृग बन द्रुम तीरा ॥
इन्द्रवज्रा छन्द ॥ हि हे खगाली मृग भृङ्ग श्रेनी । देख्यो सु सीता मृगमंजुनैनी ॥ हे हे सुसीता मम प्राणप्यारी । बोली कहाँ को दय मोहिं न्यारी ॥ जो नेस नेह तजि आर्य्यगेहू । आई हमारे सँग तौन नेहू ॥ कीन्ह्यो कहाँ सो न्यहि आजु मोहीं । देखो न सीता कृत खोजतोहीं ॥ कैसे व्यथा मो सहि जात तोपै । हे हे सुसीता प्रगटौन जोपै ॥ मैसों सुकीन्ह्यो कहने तुम्हारे । धायौ तुरन्तै मृग हेम मारे ॥ काहे सुप्यारी अब कोह कीन्ह्यो । जो बीच बनमें तजि मोहि दीन्ह्यो ॥ ऐसेहि श्रीराम विलाप करते । आयो जहाँ गृद्ध परो कहरते ॥ सोंचे सकोले मन दुःखदाय्यो । मेरे न एकौ कछु हाथ लाग्यो ॥ हरिगीतिका छन्द ॥ लाग्यो न मेरे हाथ एकहु बीति वपु बादिहिं गयो । जिमि कल्पबेलि सुजन्मि कानन उपजि दव दाहत भयो ॥ बरबस निशाचर नाथ लैगो हठि न सीतहि राख्यऊ । देख्यउ न भरतहु राम छवि सियसुधि न प्रभु सन भाख्यऊ ॥ योंही जटायू कर मींजि शोचे । मोसों अभागी भव कौन पोचै ॥ ताही समै सो दउ बंधु आये । देखे सु गीधे जल नैन छाये ॥ छाये विलोचन वारि गीधहिं गोदकरि

राघव लिये। अति प्रेम सींचे सलिल अश्रुन मनहुं जल आंधो दिये॥ हे लषण गीधहिं मिलत वनमें मरण पितु नहिं जान्यऊ। सहि सं-क्यउ सो विधि कठिन नहिं बड़पक्ष आजु सु मान्यऊ॥ बोल्यो जटायू तव धीर धारी। कीन्हीं दशास्या गति या हमारी॥ सी ते सु लैगो दिशि दक्षिणे को। राख्यों सु प्राणे तव दर्शने को॥ छंद॥ तव दरश लागि सु प्राण राख्यों चलन अव चाहित सही। कह राम राखेहु तात तनु अतिधीर मन डोल्यो नहीं। अवलोकि प्रभु मुख चंद्रछवि वर वचन गीध सुनाइहौं। यहि भूंठ जीवन लागि रघुपति समय धोख न लाइहौं॥ दुर्गहुं जाको हैनाम अंते। पैहौं कहां फेरि सुभागवंते॥ जानो सुभावे प्रभु आपुनी के। पालौ नते मेटि विका-रही के॥ हियके विकारन मेटि रघुपति प्रणत प्रतिपालय लियो। शुभकर्म हीन मलीन म्वहिं पितु आपने पटतर दियो॥ जो त्रिजग योनि कुजाति गृद्ध सु खाय परआमिष जियो। भगवन्त आज सं-मांज सुकृतिन मोहिं सब ऊपर कियो॥ वाणी सुकाने मुख नाम रूरो। रूपै सु चाखौ चख सोद पूरो॥ मोसो सुभागी जग कौन जायो। जाको सुअंके निज रामलायो॥ तासे सुअंकहि कहत रघु-पति तात कछु दिन जीजिये। अवलोकि सेवा सुवन मोकहँ तात को सुख दीजिये॥ रहि दिव्य देह सुइच्छया जग मरण जीवन लीजिये। दै दरश हरि हर सुयश गाय कृतार्थ सबको कीजिये॥ श्री रामवाणी सुनि आरयटेरी। बोल्यो जटायू मृदुवैन फेरी॥ मेरे सुभेवे मम फलचारी। हौवैं जु राघो कहियो विचारी॥ दो॰ सुनि प्रभु वचन जटायुको मौन न उत्तर दीन॥ भाग्यवंत रघुवीर सम को कृपालु परवीन॥ पुनि कृपालु बोले मृदुबानी। तात सकल तुम सुकृत किखानी॥

परहित लहेउ तात तुम तासू। पायउ फल मुनि दुर्लभ आसू॥ जाहु धाम मम त्यागि शरीरा। देउँ कहा तुम्हरे सब पीरा॥ सीता हरण पिता सन जाई। कहेउ न तात सुनत दुख पाई॥ रावण पुत्र प्रताप सु आगी। दहिहौं शत्रु तिलम्ब न लागी॥ कुल समेत सुर सभा हवाला। कही। आइ आपे दर्शभाला॥ सुनि प्रभु वचन गीध हरषाना। ह्वैके तुरत स्वरूप भगवाना॥ करि करपुट अस्तुति अनुसारी। जे जे गनि गे रघुवंश खरारी॥ त्रोटकछंद॥ जय राम कृपा सुख धामहरे। परमातम पूरण ब्रह्म परे॥ नवनीरद गात प्रकाशमई। प्रति अंग प्रभा बहु कामछई॥ अरुणाम्बुज लोचन चारुमुखं। अवलोकनि हारण दासदुखं॥ भुजदंड प्रलम्ब प्रचण्ड नितं। कर शायक चापधरं अजितं॥ ज्यहि भगवत पार न वेद बकैं। गुण गावत शारद शेष थकैं॥ ज्यहि आदि न अंत सुमध्य नहीं। सम दृष्टि चराचर व्याप्त सही॥ भव भंजन रंजन दिव्य निते। प्रणतारति मोचन भक्त हिते॥ करुणाकरि सो चितते न खसो। भगवन्त हृदय प्रभु नित्त बसो॥ गीतिका छंद॥ यहि भांति अस्तुति गीध करि हरिभक्ति अविरल पायके। हरिधाम गो अभिराम हर्षित राम पद शिर नायके॥ रघुवीर तासु क्रिया पुनः पितु सरिस कीन बनायके। भगवन्त ऐसे प्रभुहिं काहे न भजसि मन चित लायकै॥ [illegible] शुद्ध क्रिया करि सुनि द्वउ भाई। चले सियहि खोजत सब ठांई॥ मिलेउ कबंध असुर तहँ रहेऊ। द्वउ जन खैचि खान जब चहेऊ॥ तब रघुवीर कीन त्यहि घाता। कहेसि सकल निज शापकि बाता॥ मैं प्रभु॥ एक को गन्धर्वा। त्रिया रूप रहो अति गर्वा॥ दुर्वासा की कीन्ह हांसी जो कीन्हा। तिन तब कोपि शाप यहि दीन्हा॥

होसि जाय राक्षस कुरूपा। तब उद्धार होय सुरभूपा ॥
भयउँ असुर अति करौं उपद्रो। मारेउ इन्द्र कोपि तब बिद्रो ॥
गयउ शीश तब पेट समाई। व्याकुल गिरेउँ धरणिपर आई ॥
पुनि वश दयाकीन सुरनाहे। योजन भरि मम लम्बी बाँहे ॥
बाँहन बीच परे जो आई। खाउँ ताहि नहिं आन उपाई ॥
यहिविधि कहि निज कथा सुनाई। राम कृपा आपनि गति पाई ॥
पुनि प्रभु चले अनुजयुत आगे। शबरी के सुधि करि अनुरागे ॥
ज्यहि त्यहि पूछत राजिवनैना। क्यहिबन बसत शबरि सुखऐना ॥
जासु भक्ति सुनि श्रवण बिशेखी। कल्लोल परत न्वहिं कबधौं देखी ॥
॥ दो० ॥ यहां प्रात शवरी उठी फरके शुभ सब अंग।
॥ सगुन सुहावन देखि मन परमानंद उमंग ॥
॥ करत मनोरथ विविध बिध पुलक प्रफुल्लित गात।
॥ आजु हमारे आइहैं राम लषण द्वउ भ्रात ॥
॥ कवित्त ॥ ऐहै घर मेरे आजु पाहुने लषण राम प्राणन अधार सो निहारि सुक्ख पाइहों। पूजित अजादि सुर शङ्कर सरोज पायँ प्रेमसों पखारि पूजि हीय सों लगाइहों ॥ जासु छवि देखिबेभिलाषन मरत देव सोई छवि आजु इन नैनन बसाइहों। भाग्यवन्त पाय के गरीबको निवाजबान रामम्यों सुभाय सब लाहुने अघाइहों ॥ झारि तृण झोपड़े सुवारि भरि कुंभधारि दोनन सँवारि भरि धरे फल आनिके। खन भौनजावे खन द्वारिको सिधावे खनखन झाँकि आवे पंथ भूपर सुपानिके ॥ खन अनुरागे तनमन प्रेम पागे खन चूनन सुलागे फल फूलन सुजानिके। भाग्यवन्त राघव सबंधु आप गये आय शवरी के भौन प्रेम पूरण पहिचानिके ॥ शबरी बिलोकि छवि साँवरी मगन प्रेम धायके सरोज पायँ जाय भई लागती

प्रेमपट पाँवड़े अरघ देत आँसुनै सु आश्रमै ल्यवायलाय मोदपुंज पागती ॥ धोयकै चरण चारु आसनै पधारि दिव्य दोनन सुआनि फल दीन्हे अनुरागती । भाग्यवन्त सानुजै श्रिराम सो सराहि खात शावरी कि भागिको न भागि जगजागती ॥

दो॰ जो प्रभु पूरण ब्रह्मपर शिवको अगम लखात।
स्वहप्रभु शवरीसों मुदित माँगि माँगि फलखात ॥
धन्य धन्य भगवन्त जग शवरी को बड़ भाग।
ऋषि आश्रमन विहाय ज्यहि खाये प्रभुफलशाग ॥

करि फल अशन अँचे रघुवीरा। उठे हरषि भंजन भवभीरा॥
तव करजोरि शवरि मृदुवानी। बोली सुनहु राम सुखदानी॥
मैं योपित शुभ कर्मन हीना। पापपरायन कुटिल मलीना॥
प्रभु करि कृपा लीन अपनाई। करौं कवनविधि विनय बड़ाई॥
कह रघुपति भामिनि जगमाहीं। तो कहँ कछु दुर्लभ है नाहीं॥
भक्तिमोरि तैं हृदय दृढ़ाई। ताते मुनि दुर्लभगति पाई॥

दो॰ अवकछु सीतासुधि सुखद जो पाये कहँहोय।
पंपासर प्रभुजाउ तहँ कहिहि सुग्रीव सुधिजोय॥
असकहि प्रभुपद पद्मकरि वारहिवार प्रणाम।
योगअग्नि तनु त्यागिकै गई रामके धाम॥
निजकर प्रभु ताकी क्रिया कीन्हीं मातु समान।
भाग्यवन्तअसस्वामितजि कहहु भजै क्यहिआन॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे आरण्यकाण्डेजटायुउद्धरणशवरीकथावर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६॥

कुण्डलिया॥ पूरण ब्रह्मप्रकाशमय निराकार निरखेद। अज अलेख अविकार ज्यहि पार न पावत वेद॥ पारनपावत वेद अमित

सहसानन गाई। करुणासिन्धु कृपाल स्वई भक्तहित आई॥ आइ धस्यो नरदेह दलन भवभय दलकरन। भाग्यवन्त प्रणमामि राम रघुपति प्रणपूरन॥

॥ दो० शवरिहिं सुथल पठाइकै राम लषण द्वउ बन्धु।
॥ चले बहुरि खोजत सियहि नरकेहरि बलसिन्धु॥
दुख सुखरहित सु एकरस गुणसागर सुखधाम।
॥ विरहीइव विलपत विकल गये पंपसर राम॥
। सन्तहृदय निर्मल यथा पूरण जल त्यहि माहिं।
॥ बांधेघाट सुचारि वर कहत बनै छवि नाहिं॥

हरिपद छन्द॥ फूलेताल कमल बहुभांतिन भ्रमरमाल गुंजारें। बोलत चक्रवाक खग संकुल सुनत ध्यान मुनिटारें॥ चारिहु दिशि बनबाग सुहावन मनभावन तरुफूले। डोलत त्रिविध वायु सुखदायक बोलत खग अनुकूले॥ मुनिगण विपुल कुटी तहँ छाये बसहिं सदा अनुरागे। देखि राम सुखधाम सरोवर सहित अनुज सुखपागे॥

दो० करि मज्जन सज्जन सुखद तरुछाया भलि देखि।
। अनुजसहित बैठे तहाँ राम कृपाल विशेखि॥
। सुरमुनि सकल सुपाय सुधि आये जहँ रघुराय।
। नानाविधि करि करि विनय गये भवन शिरनाय॥
। नारदमुनि ताही समय करत रामगुण गान।
। प्रेममगन आये तहाँ राजत जहँ भगवान॥

करत प्रणाम राम उर लाये। पूंछि कुशल आसन बैठाये॥ बहुविधि मुनिहि विनय प्रभु कीन्हा। तब नारद अस बोलत लीन्हा॥
सवैया॥ कोशलराज कुमार उदार अपार सदा यशवेद पुकारें।

दीनदयाल शिरोमणिस्वामि प्रसिद्ध सदा जनके हितकारे॥ देहु यहैवर मांगतहों रघुवीर सर्वगति ज्ञाननहारे। रामवड़ो सर्व नामनमें भगवंत वसौउर नित्तहमारे॥ ॥ चौपाई॥

सुनि मुनि वचन राम सुखपाये। एवमस्तु कहि हृदय लगाये॥ पुनि करजोरि मधुर मृदुवानी। बोले मुनि प्रसन्न प्रभु जानी॥

सवैया॥ प्रेरउराम जवै निज मायहि मोह्यउ मोहिं तवै जगतारन। चाहउँ मैं सुविवाह करे प्रभु दीन करे नहिं सो कयहिकारन॥ सो प्रभु भेद वुझायकहो ज्यहि होय हृदे मम खेद निवारन। राजिवलोचन राम तुम्हें विन देखिय और न दास सँभारन॥ रोलाछंद॥ सुनि बोले रघुनाथ नाथ जेभक्त हमारे। भजहिं मोहिं वसुयाम काम तजि प्राण पियारे॥ करौं सदा तेहित्रातु यथा वालक महतारी॥ लेत अनल अहिगहत शिशुहिं लखिधाय निवारी॥ प्रौढ़ भयसोइ वाल प्रिया मातहि वरुआछे॥ पै नहिं तैसी वात रही जैसी कछुपाछे॥ तिमि प्रियज्ञानी भक्त मोहिं शिशु प्रौढ़समाना। दासअमानी प्रीव यथा वालक अनजाना॥ ज्ञानिहि निजवल रहत अमानिहि केवल मेरो। काम क्रोध रिपु प्रवल दुहुन पै करतदरेरो॥

दो० अस विचारि जे विडुपवर भजहि मोहिं निजशक्ति।
पायहु ज्ञान सुजानपर तजत न मेरी भक्ति॥

सो० काम क्रोध मद लोभ प्रवल मोह सेना सकल।
मयि मे तिय शोभ तिनमहँ अति दारुण दुखद॥

सवैया॥ श्रीमुनिराज पुराणकहै श्रुतिसंतनको सतमत्त यहीहै। मोहमई घन काननको सुखदायकनारि वसंत सही है॥ त्यो भगवंत जपादिक नेम जलाश्रय पूरण पुंज मही है। ताहि विशोषत नारि मे है अत ग्रीषम गावत नाम नही है॥ कामक्रोध मदा-

दिक मत्सर भेकनको मुद संकुलदाई। है वरपाऋतु नारिसही दुर-वासनकूमुद को समुदाई॥ दायकहै मुदशर्द यथा सरसीरुह वृन्द सुधर्म्म सुहाई। देति तिन्हें दुखदारुण त्यो प्रमदाहिमि ह्वै मति-मन्द सदाई॥

दो॰ नारि शिशिरऋतु पाइकै पलुहै ममतु जवास।
कलुप उलूकन को सदा निशिसम देत सुपास॥
बुधि विवेक बलशील झख लहि सनेह जलमाहिं।
वनशीसम वेधत तुरत नारि कहत बुध आहि॥

सवैया॥ औगुणमूल सदै प्रतिशूल करै प्रतिकूल सुधर्म्म न चीन्ह्यो। नारिसनेह महा वनमें परि भूलि सुपंथनके दुख लीन्ह्यो॥ त्यों भगवंत कहे सदग्रन्थ कलंकन नारि मतो क्यहि दीन्ह्यो। सोइ मुनिराज विचारि तुम्हें विप पीवत देखि निवारण कीन्ह्यो॥

दो॰ रामचन्द्रके वचन सुनि मुनि नारद सुख पाय।
ब्रह्मभवनको गवने मुदित बार बार शिर नाय॥
रामसरिस तिहुंलोकमें को कृपालु भनिरहेतु।
ताते सब छल छांडिकै भजहु रामकरि चेतु॥

कुंडलिया॥ नाहीं ह्वै करार कछु सो तनको क्षणएक। ताते भल सियरामको भजिले सहित विवेक॥ भजिले सहित विवेक गये समया नहिं पैहै। चौरासी दुखदेखि हाथ मलिमलि पछितैहै॥ पछितैहै बहुभांति समुझु अवहीं मनमाहीं। भाग्यवंत विनुराम हितू आपन कोउ नाहीं॥

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतरामायणे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसम्पादनो नाम आरण्यकाण्डे रामनारदसमागमवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ७॥
॥ इति आरण्यकाण्डः समाप्तः॥

भक्तिशिरोमणि किष्किन्धाकाण्ड ।

दोहा ॥

गुरु गणेश गिरिजा हरहि सुमिरि राम सिय ध्याय ।
॥ किष्किंधा शुभ काण्ड अब कहौं सकल सुखदाय ॥

सवैया ॥ सत्य सुशील दया गुण सागर आगर नीति प्रणै प्रति पालक । रक्षन साधु महीसुर सज्जन भञ्जन वैरिन दुष्टन घालक ॥ भक्त शिरोमणि वीर बली शरणागत पाल सदै दुखदालक । ध्यावतहैं भगवन्त तुम्हे जन जानि दवौ सुसमीर के बालक ॥

दो० । नारद मुनि हरिभक्ति जब आइ गिये पितु धाम ।
तब सानुज आगे बहुरि चले विपिन श्रीराम ॥
॥ ऋष्यमूक पर्वत निकट जब दरशे दोउ भाय ।
लखि सुग्रीव सभीत है कह हनुमन्त बुलाय ॥
अति सुन्दर द्वै पुरुष ये रूप शील बल गेहु ।
आवत सो धरि बटु वपुष जाइ मर्म तुम लेहु ॥

सो० सुनि सुकण्ठ के बैन पवन तनय धरि विप्र तनु ।
जाय निकट छवि ऐन माथ नाय बोले बचन ॥

॥ सवैया ॥ श्यामल गौर मनोहर मंजुल कोमलगात सुभाय सुहाये ॥ वीर सुधीर तिजावन मैन सुबैन सुक्षत्रिय रूप बनाये ॥ कारण कौन फिरौ बनमें हिमि मारुत घाम रहे तन छाये। सो भगवंत कहौ प्रभु आपु कहांत्यनि आवत कौनको जाये ॥ श्रीदशरत्थ के पुत्र उभै हम राम सुलक्षण नाम हमारो । आयसु तात चले वन को सँग सुन्दरि नारि रहीं मनहारो ॥ सो हरि निशिचर लीन यहां हम खोजत ताहिनै शोध न पारो । विप्र कहौ अब रावरे कौन हौ काज कहा बन मांझ तुम्हारो ॥

॥ दो० ॥ सुनि प्रभु वचन विचारि निज बोलपनीके नाथ।

॥ परेउ चरण अति प्रेमवश पवनतनय धरि माथ॥

॥ तब रघुवीर उठायकै लाये हृदय सप्रीत ।

॥ परम प्रेम पोपे कपिहिं कहि मृदु वचन विनीत॥

॥ कवित्त ॥ नाथ कीशनाथ यहि शैलपै करत वास रावरो सो दास ताहि गति है न आनकी ॥ बन्धुत्रास व्याकुल कृपाल कै सुप्रीति ताहि कीजिये निवाज लाज राखिये सुवानकी ॥ भाग्यवन्त पाथके सुसिद्धि काज वानरेश आपहू सुसाधि काज मानिये प्रमानकी । बोलि कीश संकुल पठाय देश देशनै सुदेइगो मिलाय खोज रावरेहि जानकी ॥

॥ दो० ॥ यो कहि सादर बन्धु दउ लीन्हें पीठि चढाय।

लाये जहँ सुग्रीव लखि परे चरण तल धाय॥

सूरसुवन दशरथ सुवन जातवेद दै बीच।

पावन परम सुहावनी कीन्ही प्रीति अबीच॥

तब सौमित्र कही सब बाता । ज्यहिबिधि बनहिं चले जनत्राता ॥
सियगति सुनि भूषण पटआनी । दीन प्रभुहि सुग्रीव सुजानी ॥

हृदयलाय अति शोचहि कीन्हा । कहि सु कंठ बहु धीरज दीन्हा ॥
नाथ करहु जनि शोचहि भारी । मिलिहैं तुमहिं विदेह कुमारी ॥
दो० सखा तिहारे वचन सुनि भयो शोच मम नास ।
कहु कारण अब आपनो कयो कृत वन मे वास ॥
मैं अरु वालि नाथ दोउ भाई । मै उरपति जिमि कहौं सुनाई ॥
ब्रह्मा आँसु बुंद ते जायो । रिच्छराज कपि एक कहायो ॥
मज्जत सो सर एक मँझारी । ह्वैगा तुरत दिव्य तनु नारी ॥
देखि इन्द्र मोहित मन हरेऊ । खस्यो बीज कच ऊपर परेऊ ॥
त्यहि ते भयो वालि कपि वीरा । मम उरपति सुनिये रघुवीरा ॥
रविकर बीज खस्यो त्यहि ग्रीवा । ताते मैं प्रगट्यो सुग्रीवा ॥
रिच्छराज पुनि वैसहि भयऊ । वानररूप प्रथम जिमि रहेऊ ॥
तव ताको विरंचि सुत जानी । किष्किन्धा दीन्ही रजधानी ॥
दुन्दुभि और मयावी नामा । मय सुत असुर रहे बलधामा ॥
प्रथमहिं वालि दुन्दभी मारा । मोयावी स्वइ वैर सँभारा ॥
अर्धराति पुर आइ हमारे । वालिहि युद्ध हेत ललकारे ॥
धायो वालि महूँ सँग धारा । भागि पैठ गिरि गुहा मँझारा ॥
म्वहिं वदि वालि अवधि पखवारा । मासदिवसलगि किहेउ निहारा ॥
निकस्यो रुधिरमृतक त्यहिजानी । आयो भवन भीति मन मानी ॥
मंत्रिन्ह पुर भूपति विनु चीन्हा । बरबस राजतिलक म्वहिं दीन्हा ॥
दो० ताहि निधन करि वालि पुनि आयो मोहिं विलोकि ।
धामवामधन छीनि म्वहिं खेदेउ बहुविधि ठोकि ॥
ताके डर रघुवंश मणि फिरेउँ विकुल सब ठाँय ।
ऋषि मतंग की शाप वश इहाँ न सो सक आय ॥
॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ जबै दुन्दुभी शत्रुको वालि मार्यो । दियो

फेंकि लै बाहिं सो अत्र पाखो ॥ ऋषै देखिके कोपि यों शाप दीन्हो ॥ हुवै भस्म आवे इहाँ जौन कीन्हो ॥ सवैया ॥ सुनि सेवक को दुख दीनदयाल सभीतन प्राल कपोल सही । फरके भुजदण्ड प्रचण्ड उभै अवलोकि सुकण्ठहि कोपि कही ॥ मरिहौं शर एकहि बालि बली बिन औगुण जो उर तीर दही । बचिहै नहि प्राण सु सत्य कहौं शरणागत जो विधि शम्भु गही ॥ कवित्त ॥ होय दुख दुखित सुमित्र दुख देखि जौन पातक बिलोकि ताहि दृग न निहारिये । आप दुख मेरु को समान रज लेखियत मित्र दुख रजको सुमेरु ज्यों सिहारिये ॥ काय मन बचन प्रतीति प्रीति मित्र मैन जानिये कुमित्र ताहि दुखदै बिचारिये । भाग्यवंत जाके मन साँचो न सनेह तौन मित्रन कि मित्रता में मित्र खाक डारिये ॥ आपै सत्यसार कोन राखै छल चित्तलेश औगुण दुराय गुण मित्रहि प्रचारिये । देवत निशङ्क ह्वय लेवत सु वस्तु ताहि जेंवत जेंवाय गुह्य बक्ति भक्ष कारिये ॥ आपद के काल करे सौगुन सनेह जाल बलमें सदैव तासु हितही बिचारिये । भाग्यवन्त भाषत पुराण वेद ग्रन्थमाल ऐसे शास्त्र मित्रन पै प्राण वारि डारिये ॥

॥ दो० ॥ सेवक शठ भूपति कृपण कपटी मित्र कुनारि ।
दुख दायक नित जानिये शूल सरिस ये चारि ॥
सखा हमारो प्राण बल त्यागो शोच समाज ।
सब प्रकार मैं काल्हिही करिहौं तेरो काज ॥

सवैया ॥ बालि महाबल शालि अहै त्यहि मारनहार न दूसर कोई । दुन्दुभि अस्थि समूह दहै शर एकहि बेधय तालय जोई ॥ त्यो भगवन्त सु बात यहू बलअर्द्ध लहै रिपु सन्मुख होई । रावनजी इति काजसरै वर बालिहि मारिसकै भट सोई ॥ गीतिका छन्द ॥

जब बालि मार्यो दुन्दुभी सुनि शक्रमन मुद मानिकै। फल ताल पठयें सात नारद हाथ दीन्हे आनिकै॥ इन खात ह्वैहै अजर अमरहु बालि मन सुख छायऊ। धरि ल्हान लाग्यो उरग यक तहँ आइ सो तेहु खायऊ॥ लखि बालि कह तरुताल जो महिं सात तव तनु फारिहै। सुनि भुजग बोल्यो तोहिं मारिहि मोहि जौन उबारिहै॥

दो० सर्पाकृत रघुवंशमणि सप्तताल स्वइ जान।
को अस सुभट त्रिलोक महँ बेधि सकै यक बान॥
कह प्रभु मोहिं देखाइयो कहाँ ह्वै सो तार।
बेधौं एकहिं बाणही नेकु न लावौं बार॥

त्रोटक छंद॥ रघुबीर जबै यह बात कही। शुभ ग्रीव भयो लय जात तहीं॥ दश धूह जु दुन्दुभि अस्थि रहै। पद अंगुठ बाम श्रिरामढहे॥ दश योजन पै स्वइ जायगिरे। शर एकहि तालन बेधि फिरे॥ गत शाप भुजंग प्रमोद भरे। गवन्यो कहि जै रघुबीर हरे॥

दो० जो निज माया प्रबल करि बेधे सब जग गात॥
सात ताल बेधन कहा ताको है बड़ि बात॥

सवैया॥ राम प्रभाव विलोकि महा मनमोद भयो शुभ कंठहि भारी। भे परतीत सु बालि बधे हित दूरिगई दुचिता चितसारी॥ बारहि बार गहे पदपंकज पूरण प्रेम बिलोचन बारी। नाथ अडोल भयो अब मै भगवन्त कृपा रघुनन्द तुम्हारी॥ संपति पुंज प्रिया परिवार पसार जितो जग कारण मोहै। शत्रु न मित्र दुखो सुखहू सब स्वारथ ना परमारथ कोहै॥ ये सब रामहिं भक्तिके बाधक हित्त न आपनके जग जोहै। त्योंभगवन्त विहाय सबै यक राखिहों नेह सु रावरे सोहै॥

सो० बालि परम हित मोर ज्यहिं प्रसाद भंजन विपति।

कोशलु राजकिशोर मिल्योमोहिं करुणा भवन॥
दो० सखा, कह्यो सो सत्य सब, पैनच मृषा न माम।
गिरिजा नटमरकट सरिस, सबहिं नचावत राम॥
भुजङ्गप्रयात छन्द॥ तबै बोलि श्रीराम सुग्रीवसाथै। चलेसाजि शारंग नाराच हाथै॥ पठायो सुकंठै पुकाऱ्यो सो वाली। सुसुन्तै चल्यो कोपिकै वीरहाली॥ परीपायँ तौ वालिके नारि तारा। मिल्योजाय सुग्रीव रामैं उदारा॥ तिन्हे वैरकै नाथ ना पार पैहो। रहो भाति क्योंजाय प्राणैगँवैहो॥ कह्यो वालि है लाभ दूनो प्रकारे। प्रिया शोच ऐसे समय तू न धारे॥ छन्द नाराच॥ चल्यो सवेग भाखियों विलोकि भानुजातही। भिरे उभै सक्रुद्ध वालि मारि मुष्टि भ्रातही॥ कियो विहाल भूरिसो सुकंठ हारि भागयऊ। प्रहार मुष्टि वालिको समान वज्रलागयऊ॥ कह्यो कृपालु मैं जु वालि वन्धुमोन आरि है। स्वरूप एक बन्धु दो सुभेद हौं न मारि है॥ कृपालु दृष्टि हेरि फेरि पाणिप्रेलि भ्रातही। पठाइयो वहोरि दैवलै विशाल जालही॥ लग्योसुहोन युद्ध क्रुद्ध वीर दोय भावते। श्रिरामओट वृक्ष हेरि चोट क्यो वचावते॥ जवै श्रिराम जानियों सुकंठ हीय हारऊ। दुमाड़ बाणताकि वालि हीयमांझ मारऊ॥ पऱ्यो विकल्प वीरभूमि भूमि खाय घावही। उठ्यो वहोरि ठाढ़ अग्र देखि राम चावही॥ श्रिरामश्याम रूपको सुधारि हीय फेरिकै। कह्यो कठोर वैन वालि राम ओर हेरिकै॥ सवैया॥ रामप्रभाव अपार सुन्यो तव देख्यों कर्म्म किरातन केरो। व्यापक ब्रह्म चराचर में समदृष्टि सदा सब काहुहि हेरो॥ है नहिं अप्रिय कोउ तुम्हैं रस एक सदा श्रुतिसन्त निवेरो। सो भगवंत कहो प्रभु क्यों हित मानि सुकंठ कियो वधमेरो॥ हैंहम निर्वल केर सदाहित मानिनको गहिं मान निदारी॥ तें अभिमान

भरोकपिकुंजर नारि सिखावन कान न धारी॥ बन्धुवधू प्रियनारि किये शठ कौनहै पातकि तोसम भारी। त्यों भगवंत विचार भले शरणागत पाल है बानि हमारी॥ त्रोटकछंद॥ अजहूं प्रभुगे युत पापसही। गति अन्तसमय थ्यहि आपरही॥ कहि नामयदा भव पार लहैं॥ अवलोकत सो किमि प्रापरहै॥ बंधुछन्द॥ राम कह्यो तब राखहु प्राना। बोलेउ बालि सुनौ भगवाना॥ जाहित यत्नकरैं मुनि नाना। सेवत जीव लहै निरवाना॥ दीनदयाल कृपा सुख राशी। पूरणब्रह्म अजय अविनाशी॥ सो रघुवीर खड़ो मम आगे। राखिउ प्राण कहा सुख लागे॥

दो॰ को अस मूरख मंदमति कहिसो राम सुजान। जो शठ सुरतरु काटिकै रूंधै बबुर अजान॥

सवैया॥ नाथ मैं मांगतहौं करजोरि कृपाकरि एकयहै बरदेहू। जन्म जहां जेहि योनि विषे वश कर्म लहौं गुरु नीचन गेहू॥ और न है अभिलाष कछू भगवंत तहां तहँ चाहत येहू। राघवजी तिहँ पंकजपायन सेव बढ़ै नव नित्त सनेहू॥

दो॰ अंगद मेरो पुत्र यह नहिं मोसम बलवान। ताहि आपनो दास प्रभु कीजै कृपानिधान॥

अस कहि रामहिं राखिउर बालि गयो हरिधाम। गिरिजा श्रीरघुवीर सो कौ कृपालु बिनु काम॥

इतिश्रीमद्योध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थे किष्किन्धाकाण्डे श्रीरामचन्द्रसुग्रीवमित्रतावालिबधवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥

दो॰ रामचरण आश्रित करण संसृत सागरपार। भाग्यवंत बंदौं चरण पुनि पुनि पवन कुमार॥

बरवै छंद॥ बालि मरण सुनि व्याकुल सब पुरलोग। धाये तहँ

तसि तारा उर अति शोगु॥ बहुविधि रोवत जोवत मुख भरतार। छूटे केश न रहि तन वसन सँभार॥ सवैया॥ से सिख देत रहिउँ इह भूरि कहा वश काल न सो श्रुति आन्यो। पूरणब्रह्म चराचर नाथ तिन्हें वश मान है मानव मान्यो॥ त्यागि सबै बुधि चातुरता कि धाय सु बैरहि शर्म सो ठान्यो। पायो कियो फल आपन कंत गयो अब अंत अनंतहि जान्यो॥ लीला छंद॥ ताराको विकल जानि। बोले प्रभु कमलपानि॥ कवित्त॥ वायु व्योम पावक स-लिल धरणि धारि पञ्च ये सु तत्त्व मैं शरीर जो प्रगट ताहि जोवती। जीव तो सुनित्य भृत्य ईशको न नाश तासु आशुके विचार जागु राग रैनि सोवती॥ मीलन वियोग दुःख सुख सो समान जानि मोहही विहाय क्यों न मैल भ्रम धोवती। भाग्यवंत आनुही सुज्ञान त्यागि शोच पोच वस्तुही अनित्य लागि वादि क्यों तु रोवती॥ पद्धरी छंद॥ सुनि राम बैन वर मारतंड। गयो तिमिर ज्ञान प्रगट्यो अखं-ड॥ कीन्ही प्रणाम पद पद्म लागि। लीन्ही सुभक्ति वर परम मांगि॥ तब सुकण्ठ प्रभु कहे सप्रीती। मृतक कर्म कीन्हें जसि रीती॥ राम कह्यो अनुजहिं पुर जाई। सुग्रीवहि नृप करो बजाई॥ तुरतहि लषण चले पुर आये। नगर लोग द्विज वृन्द बुलाये॥ सुगरहि दीन राज्य सजि साजू। बालितनय कीन्हे युवराजू॥

सवैया॥ राम गरीब निवाज सदैं शरणागत पालक पुंज प्रभा-ऊ। जो बिन काज द्रवे जनपै विरदावलि वेद पुराणन गाऊ॥ त्यों भगवन्त सनेह लिये जगको न सराहत शील सुभाऊ। राम सो कौन कृपालु कियो जिन कीन सुकण्ठहि रङ्कते राऊ॥ लीला॥ पुनि सुकंठ सँग लिये अनन्ता। आये जहँ राजत भगवन्ता॥ सुग्रीवहि प्रभु निकट बुलाई। राजनीति बहु भांति सिखाई॥

॥ कुंडलिया ॥ पाल्यो प्रजहिं समान सुत सुजनन को सुख देव। दंड करव दुष्टन प्रवल देश कोश सुधि लेव ॥ देश कोश सुधि लेव शत्रु पै करव न दाया। धर्म धस्यो दृढ़ ताकि कस्यो सँग मित्र न माया ॥ मानि मर्यासिख सत्य कुपथ कबहूँ नहिं चाल्यो। भाग्यवन्त श्रुतिरीति समुझि सन्तत प्रतिपाल्यो ॥

सो० अव सुनु सखा सुजानि जाहु भवन अंगदसहित। करेहु राजकल्यान भूल्यो जनि मम काजही ॥

मैं इत गिरिपरछाय वरषा भरि रहिहौं निकट। वर्ष चतुर्दश ताय पुर न जाउँ आयसु जनक ॥

सुनि सुकंठ धरि चैल करि प्रणाम गवने भवन। राम प्रवर्षण शैल आय वासकीन्हे हरषि ॥

राम रहन हित आये प्रथमहिं देवन गिरिगुहा। राखे रुचिर बनाय मनभायक सन्तत सुखद ॥

॥ त्रोटक छन्द ॥ वन राघव आय रहे जबते। प्रद आनँद पुंज भयो तबते ॥ द्रुम भाँतिन भाँति सुफूलि फले। खगवृन्दसु वोलत वोल भले ॥ अलि गुंजत पुंज प्रमोद पगे ॥ अवलोकि प्रभा मनमैन ठगे ॥ मुनि सिद्ध सदेव प्रसन्न हिये। खग भृंग कुरंग सुवेप किये ॥ प्रभु सेवहिं सादर शुद्ध हिये। वसु याम श्रिराम सनेह लिये ॥ रघुनाथ कै वहु भाँति कथा। अनुजै नृपनीति सुभक्ति यथा ॥

दो० वरषाऋतु सुन्दर सुखद देखहु तात सुजान। घनघमंडि जनु यामिनी रविपै कीन पयान ॥

कवित्त ॥ घेरि नभ संकुल घमंडि घनघोर जोर गर्जितर्जि भू मांड़ि अँधिरीराति छैरहो। कोपकरि यामिनी सुसाजिके समूह सैन धाई जनु भानुपै गराजि होंक दै रही ॥ भाग्यवन्त वारिधनु इन्द्र ई

नदितआसि वारिबुन्दवाणनकि वृष्टिजालह्वैरही। भागिगो सुभानु ह्वै सशंक पाय जैत रैन चैन सो निशंक त्यों सुखैनराज कैरही॥ आयो है मनोज साजि सैन चतुरंग संग कीन्ह्यो है निशंक जगडेरहि सचावनै॥ श्यामल ससेत पीत रक्तन घटाके जाल दीन्हे है वितान तानि मंजुल सुहावनै॥ चंचल चमाक तड़िताके फहरात ध्वज दुंदभी सो देतघन गर्ज घहरावनै। भाग्यवंत गावत विरद वंदि मोरपीक धायो है मदनकोपि विरही सतावनै॥ घेर्‌यो गिरि वृन्दन शतक्र यों सुसाजि सेन वारिवुंद वाणझरि भूतल भरतुहै। मारै ताकि वज्रकहूं डारत तडपि गाज धावन से मोर गांव गांवन फिरतुहै॥ भाग्यवंत गावति सुयश चारु कोकिला सुमेघनकी गर्ज द्वारा नैवति झरतुहै। तानि द्रुम बेलिन वितान त्यों सुजैति रिपु पाय कै अचलआपु राजही करतुहै॥ ऊदधि सकोप चढयो भूपर किसाजि सैन दीन्हे करि मुदित न खोज महिपाडयो। नदीनद नारसो अपार परे वारिदल कीन्हे शरपंजर सुत्राणवृंदछाइयो॥ वाणवर्सि विज्जुनाद वीरनकी गर्जघोर मारुत झकोरजोर शोरको मचाइयो। हाहाकारहोत दिशि दशहू न जानिजात कंपमान भूमिगहि सिंधु कैधों लाइयो॥ सवैया॥ चहुँओरते घोर छटाउनये घनघेरिकै दामिनि शोभसचे। झकझोरित पौन झकोरनशोर शिखंडि रहे चहुँओर मचे॥ पपिहा पिवपीव रटै न घटै कलकूकनि कोमल तेरागचे। विरहीजन मान सतावन ज्यों ऋतुपावसकोपि चढयो न बचे॥ घहरात घटा घनघोर घिरे तमतोम तमी महि व्योम मढयो। चमकै चपला चहुँ ओरनते धुनि दादुरत्यों अतिजोर वढयो॥ वरपे वरवुंदनवारि वहै वसुधात डरात न जातकढयो। भगवंत मनो दल साजि सुलै विरहीनपै पावस कोपि चढयो॥ नवपल्लव बेलि प्रसूनलये द्रुमभारन झु-

मैं बानर पशु विषयनिकेता । मायावश सुरनर मुनिजेता ॥
ज्यहिपर कृपा नाथ तव होई । त्रिपय बन्धते छूटै सोई ॥
सुनि रघुवीर परमप्रिय बानी । बैठाये करगहि सनमानी ॥
राखाकरहु अब रघुराई । उपाइ सिय सुधिमिलै जाहि सुखदाई ॥
यहिविधि कहत कृपासुखकन्दा । तबलगि आइगये कपिवृन्दा ॥
राम चरण पंकज शिरनावहिं । प्रभुहिबिलोकिजन्मफलपावहिं ॥
कपिदलप्रबल अमितनहिंलेखा । स्वइ जानै जिन नैनन देखा ॥
बूभी कुशल सबहि रघुबीरा । विश्वरूप व्यापक मति धीरा ॥
॥ छप्पै ॥ तब बोले सुग्रीव सुनहु मर्कट समुदाई । करहु राम कर काज सियहि खोजहु सब जाई ॥ मास दिवस के माहिं अवशि दीन्यो सुधि मोही । अवधि मेटि बिनु खोज आव जो मारौं वोही ॥ यहि भाँति पाय शासन हरषि जहँ तहँ चले तुरन्त सब । कपिराज कह्यो पुनि बोलि अस अंगद नल हनुमंत तब ॥ सवैया ॥ हेनल अंगद वायुतनै तुम ऋक्षपते सब दक्षिण जाहू । सीतहि खोज कियो सब ठौर मिलै मग जो जहँ पूछेहु ताहू ॥ त्यों भगवन्त खु काय गिरा मन काज कियो प्रभुको सउछाहू । जाहु हृदै धरि राम पदै प्रभुकाजक आज तुम्हैं बड़लाहू ॥
॥ दो० ॥ आयसु पाय कपीश को हर्षि नाय पद शीश ।
॥ लै सँग मर्कट भालु बहु चले सुमिरि जगदीश ॥
॥ कुंडलिया ॥ नायो शिर हनुमान जब तब प्रभु निकट बुलाय । दीन्हे निजकर मुद्रिका दीन्ह्यो सीतहि जाय ॥ दीन्ह्यो सीतहि जाय यहै मेरी सहिदानी । आयो फिरि कपि बेगि बिरद मम प्रियहि बखानी ॥ खानि सुकृत सुखदानि पानि मुँदरी जब पायो । पवनतनय मन हर्षि चल्यो रामहिं शिर नायो ॥

चले सुभट सब खोजत सीते। सुमिरि राम भञ्जन भवभीतैं॥ गये सोवन बन सकल भुलाने। भये तृषित जलविनु अकुलाने॥ तब हनुमान विवर यक देखा। गयउ तहाँ लै कपिन अशेखा॥ यहि भीतर मन्दिर यक सोहा। वरणिनजाइ देखि मनमोहा॥ यहि महँ दीख बैठि यक नारी। तप समूह शोभा अति भारी॥ तत्त जाय त्यहि शीश नवाये। पूँछेउ सो निजचरित सुनाये॥ दो० त्यहि तब कहा कि खाहुफल करहु पान शुचिनीर। ... खुनि फल खाय सुपाय जल आये पुनि त्यहिवीर॥ ... चतुरसा छन्द॥ तब निजहाल स्वइ तपवाला॥ कहसि वचनी। कपिन सुवानी॥ कुण्डलिया॥ हेमा नामसु अप्सरा रही एक छविवान। मयदानव त्यहि देखिकै हरिआन्यो यहि थान॥ हरिआन्यो यहि थान इन्दसुनि मार्‍यो ताही। यहसब विभव विनास बहुरि दीन्ह्यो विधिवाही॥ वाहीकेर निदेश करो यहि थलकी क्षेमा। स्वयंप्रभा मम नाम सखी जानो म्वहिं हेमा॥

दो० मै हो मनुसावर्ण्य की सुता किह्यो तपवृन्द।
अब जैहौं रघुवीर जहँ कृपासिंधु सुखकन्द॥
तुम अब मूँदहु नैन निज जाहु विवर तजि वीर।
तजहु शोच पैहौ सियहि धरहु हृदै सब धीर॥

तोटक छंद॥ दृग मूँदि विलोकहिं फेरि जबै। कपि ठाढ समुद के तीर सबै। वह राघव पै पुनि जात भई॥ शिरनाय विनय बहुभांति कई॥ हरिभक्ति अनूपम पाय भली। वदरीवन गै शिर नाय चली॥ इत शोचत कीश खड़े सबहीं। गत औधि न शोध मिल्यो अबहीं॥ कह अंगद तौ सब कीश सुनो॥ मम मृत्यु भई अब भाति दुनो॥ सुधि सीय मिली कतहूं न इते।

कपिराज करी वध जात उते ॥ अवलोकि दुखी अति बालितनै
कह ऋक्षपते गुनि बात मनै ॥ मोदकछंद ॥ तात गनौ जनि मा
नुप रामहिं । पूरणब्रह्म सदा सबठामहिं ॥ लीन सुइच्छहि ते अ
तारक ॥ गोद्विज देव धरा दुख टारक ॥ त्रोटक छंद ॥ यहिभांति र
कहि बंदरते । सम्पाति सुन्यो गिरि कंदरते ॥ ह्वै बाहेर कीश ल
ख्यो जबहीं । जगदीश अहार दियो घरहीं ॥ अब भक्षण आज
करौं जितये । बहुबार अहार बिना बिनये ॥ डरपे कपि गीध गिर
सुनिकै ॥ तब अंगद बात कह्यो गुनिकै ॥ सवैया ॥ धन्य जटा
समान नही कउ रामके काज जु देहहिं त्यागयो । रावण से भट हारि
हिये बल जासु बिचारि सिये लै भाग्यो ॥ जासु क्रिया निज पाणि
कियो रघुनायक दिव्य सु कीरति जाग्यो । आपु गयो हरिधाम सबै
छल छांड़ि जु रामहि सों अनुराग्यो ॥

अनुज कथा सुनि इमि बहु भांती । कपिन समीप चल्यो संपाती ॥
करि बहु शपथ निकट सो आवा । परम प्रेम सब कहं शिरनावा ॥
जामे पक्ष तिलांजलि दीन्हा । प्रभु प्रभाव बहु वरणन कीन्हा ॥
पुनि निज कथा कही सब गाई । जरे पंख ज्यहि विधि तरुणाई ॥
सीता कै सुधि बहुरि सुनाई । पैहहु धीर धरहु मनभाई ॥
शत योजन यह सागर जोई । नांघै काज करै भट सोई ॥
असकहि गयो जबहिं संपाती । कपिन कियो विसमय बहुभांती ॥
निज निज बल तब सकल बखाने । पारजान हित सबहिं सकाने ॥

कुण्डलिया ॥ जावौं पार समुद्र में कह अंगद सब पाहि । फि
रति बार पर होतहै कछु संशय मनमाहिं ॥ कछु संशय मनमाहिं
ऋक्षपति कहत हंकारी । रह्यो कहा चुप साधि पवननंदन बलभारी ॥

ारी काज विचारि शंक मनमें जनि लावो। सुमिरि रामपद कंज
ार सागर तुम जावो ॥

दो० जामवंत के वचन सुनि पवनतनय हरषाय।
तुरत हेम गिरि सो अधिक दीन्ह्यो देह बढाय ॥
ऋक्षपते बूझौ तुम्हें करौं कहा अबजाय।
उचित सिखावन होइ जस सो कहियो समुझाय ॥

भुजंगप्रयातछंद ॥ कहो रावनै सेनसा जाय मारौं। त्रिकूटाद्रि
पारि सामुद्र डारौं ॥ कहौ लाय वैदेहि रामै मिलावों। करौ जो
नेदेशापु कै सोइ आवो॥ कुंडलिया॥ याही तुम हनुमंत अब करौ
क में जाय। जनकसुता को देखिकै प्रभुहिं देउ सुधिआय ॥ प्र-
ुहिं देउ सुधिआय सुनत सजि सैन सिधैहै। मारि असुर रण जीति
नकतनया सँग लैहै ॥ लैहै सुख सब लोक सुयश जागिरि ज-
माहीं। भाग्यवंत यश गाय सुफल जीवन सब याहीं॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहधर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे
किष्किधाकाण्डसमाप्त त्रितीयोऽध्यायः ३॥



भक्तिशिरोमणि सुन्दरकाण्ड ॥

दोहा ॥ वन्दौं श्रीहनुमन्तके । चरणकमल शिरनाय ॥ जिनकी कृपा कटाक्षते अगमौं सुगम लखाय ॥

कुंडलिया ॥ पायो जब अक्षेशको आशसु पवनकुमार । कूदि चढ्यो भूधर तमकि करि उर प्रभुहिं सँभार ॥ करि उर प्रभुहिं सँभार जवहिं कूद्यो बलवन्ता । मसकि धस्यो महि मेरु गयो शिरचोट अनन्ता ॥ चोट दल्यो उर कूर्म उछलि ऊपर जल आयो । कंपमान सब लोक विकल दिग्गज डरपायो ॥ कीन्हें जलधि विचार मन कपिहि जातपथ देखि । रामचन्द्रको दूत यह ह्वैहै श्रमित विशेखि ॥ ह्वैहै श्रमित विशेखि कह्यो मैनाक हँकारी । जाहु उपर उतराय हुवो कीशै श्रमहारी ॥ हरि त्यहि तरत विलोकि परसि पदपंकज दीन्हो चल्यो कहत विश्राम कहाँ कारज बिनु कीन्हे ॥ आगे रोंक्यो आयकै सुरसा वदन वढाय । त्यहि आनन ह्वै निकरि कपि चल्यो आशिपा पाय ॥ चल्यो आशिपा पाय राहु जननी तहँ रहई । करै गगनचर भोग उड़त लखि छाँहै गहई ॥ गहन चहेसि तिमि कपिहि करखि ताहू त्यहि लागे

मारि पवनसुत वीर चल्यो सुमिरत प्रभुआगे ॥ तहिमारि मारुत सुवन गयो समुद्र वहिपार। तहाँ जाइ देख्यो विपिन शोभा अति अनपार ॥ शोभाअति अनपार सुतरु फूले फलनाना। गुञ्जत मधुकरवृन्द मगन देखत हनुमाना ॥ माना मनआनन्द चढ्यो सूधर भयनाहीं। जापर कृपा श्रीराम सुगम अगमौं सवताहीं ॥ लङ्का रावणकी लख्यो पर्व्वततें हनुमान। अति उत्तम शोभाअमित क्यों करिकरौं वखान ॥ क्योंकरि करौंवखान पुरीफौजैं अनगन्ती। शहर कहर की वनति कहैको कहत न वन्ती ॥ वन्ती कहत न भूति वसै रावण निरशङ्का। देखत दुःख नशाय वनी कंचनमय लङ्का ॥ धार्‌यो मशक समान तन रूप पवनसुत वीर। चल्यो लंकगढ बंकको सुमिरि राम रणधीर ॥ सुमिरि राम रणधीर चल्यो लखि लंकिनि टोक्यो। सुनत क्रुद्धि वलवन्त झपटि मुष्टिक शक ठोक्यो ॥ ठोकत सो महिगिरी सत्यवर ब्रह्म विचार्‌यो। जायकरौ प्रभुकाज नगर निरशंक सिधार्‌यो ॥ लंकापुर घर घर सकल ढूँढ्यो पवनकुमार। कहुँ न देख्यो जानकी गयो रावणागार ॥ गयो रावणागार तक्यो ताको तहँ सोवत। परी न कहुँ सियदृष्टि फिर्‌यो व्याकुल पुनि जोवत ॥ जोवत देख्यो एक भवन उत्तम अतिवंका। रामनाम अंकित्य सुभग न्यारो सब लंका ॥ पुनिलागे निज मनहि मन हनुमत करन विचार। जागि विभीषण कीन तब रामनाम उच्चार ॥ रामनाम उच्चार करत कपि सज्जन जान्यो। यासों होइ न हानि करनचाहिय पहिचान्यो ॥ आन्यो तब द्विजरूप कहत हरिगुण अनुरागे। सुनत विभीषण आय हरषि पॉयन पुनि लागे ॥ पूँछे तब हनुमन्त सो सकल विभीषण हाल। कह्योनाम निज विपिन जिमि आये राम कृपाल ॥ आये रामकृपाल जनकतनया जिमि खोई। खोजनहित

कपिभालु विपुल पठये प्रभु जोई ॥ जोई हग सब लंकसदन देखे सिय छूँछे। सुनतो मगन ह्वै प्रेम विभीषण पुनि त्यहि पूँछे॥ कहहु पवनसुत कबहुँ प्रभु मो कहँ जानि अनाथ। करिहै कृपा कृपायतन दीनबन्धु रघुनाथ ॥ दीनबन्धु रघुनाथ सकल साधनमें हीना। प्रीति न पंकज पाथँ सतत संसृत मनलीना ॥ लीना दृढ़ बिश्वास यहै जानत सब अहहू। मिलैसन्त भगवन्त कृपाविनु क्यों तुम कहहू॥ राम सुभाव सुरीति वर सुनहु सखा चितलाय। करहिं सदा निज दासपर प्रेमप्रीति अधिकाय॥ प्रेमप्रीति अधिकाय कहाँ हम बानर नीचा। कीन्हीकृपा कृपाल सुयश दीन्हे जगवीचा॥ बीच न राख्यो नेकु कियो आपन कपिराऊ। कहौं कहाँलगि तात सुखद जसराम सुभाऊ॥ सवैया॥ श्रीरघुबीर सो दीनदयाल कृपाल वियोकहुँ स्वामि सुहैना॥ कीनसखा कपि केवटभालु कुचालके रूप रहेअघऐना॥ यों भगवन्त सुस्वामि सुभावहि जानि सनेह सो जो न भजैना। सो मतिमन्द कुभाग्य जयोजग अन्तसु क्योंहठि नर्क परैना॥ ऐसेहिं कहत श्रिरामगुण मगन प्रेम ह्वैगात। कह्यो बिभीषण तबै सकल जनकसुता कै बात॥ पवनतनय कह मातुसिय देखनचाहौं बीर। कही बिभीषण युक्ति तब जान जानकी तीर॥ मारुतसुत धरिरूप स्वइ चल्यो सुमिरि जगत्रातु। बनअशोक जहँ जानकी रहति सकल जगमातु॥ सवैया॥ मारुतनन्दन जायलख्यो मिथिलाधिप नन्दिनि राजत जाहीं। कौन गणाम मनैमन हेरि सुजात दशा कहि सो सियनाहीं॥ शीशजटा कृशगात जपैं गुणब्रात सुराघवके उरमाहीं। देखिदुखी हनुमन्तभयो दरिजाय रह्यो तरुपल्लव छाहीं॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तासरविरचितभक्तिशिरोमणिग्रन्थे सुन्दरकाण्डेश्रीजानकीसमीपहनुमानप्राप्तवर्णनोनाम प्रथमोऽध्याय १॥

दो० जासु सुयश तिहुँलोकमे रह्यो व्यापि भगवन्त ।
चरणकमल वन्दन करौं । मारुतसुत हनुमन्त ॥
यहि अवसर रावण तहाँ कीन्हे विविध बनाव ।
संग लिये बहु तियनको आयो खलकुल राव ॥
नानाविधि सो जानकिहिं कह्योमूढ़ समुझाय ।
सामदाम । अरुभेद भय बहुविधि रह्यो देखाय ॥

सवैया ॥ हे शुठि सुंदरि प्राणप्रिया सिय कान सुवानि करौ यह मोरी । मैं बलवंत सुरासुर नाथ प्रसिद्ध न है प्रभुता ममथोरी ॥ जो प्रण पूरण मोर करौ यक बार विलोकहु त्यों मम ओरी । तौ निज रानि मदोदरि आदि सु यावत चेरि करौ सबतोरी ॥

दो० सुनि रावण के वचन इमि सुमिरि हृदय भगवान ।
तृणधरि ओट विदेहजा बोली वचन प्रमान ॥

छप्पैछंद ॥ रे रावण कस कहसि भयो चाहत तव नाशा । कहि कि नलिनि विकास कतहुँ खद्योत प्रकाशा ॥ हरि आने म्वहिं मूढ़ समय सूने प्रभुपाछे । सो फल पैहसि वेगि अधम आपन कृत आछे ॥ अब जाहि इहांते उठि सपदि कहौं तोहि समुझायके । मम वचन विसीले सर्प लहि डसहि न जौलगि धायके ॥

सुनत वचन रावण रिस ठानी । काढ़ि खड्ग बोला अभिमानी ॥
मम अपमान करसि तै सीता । जानि परत आयू तव वीता ॥
अस कहि मूढ़ चला उठि मारन । मयतनया गहि कीन्ह निवारन ॥
तब सकोप निशिचरिन बोलाई । कहेसि जानकिहि त्रासहु जाई ॥

दो० मास दिवस के माहि जो कहा न करि है कान ।
तौ विशेषि मै मारिहौं निजकर कठिन कृपान ॥

यहि विधि रावण मवसन भाखी । गयो भवन सीतहि उरराखी ॥

विविधरूप धरि निशिचरनारी । लगीं देन सीतहि दुखभारी ॥
तब त्रिजटा सबहिन समुझावा । कहि निज स्वप्न प्रसंग सुनावा ॥
जो निज हित तुम चहहु सयानी । सेवहु सियहि कर्म मनबानी ॥

कवित्त ॥ वानर भटाकी एक आयो है अचाकी लङ्क जारि छार साकी को न त्रासतासु छाकी है । खंडित भुजाकी बीस मुंडित शिराकी देहनग्न रावणाकी बैठ पृष्ठि गर्दभाकी है ॥ ऐसीगति ताकी गौन दक्षिण दिशाकी राजपायो सब वाकी आय पूरण प्रभाकी है । जै जै सुरहांकी लोक लोकन में जागी भाग्यवंत कीर्त्तिबाँकी रामचंद्र भूमिजाकी है ॥

दो० यह स्वपना में आपनो सबसों कहौं विचारि ।
झूठ न सो फुर होइहै अवशिगये दिन चारि ॥

छंदचामर ॥ तासुबैन श्रूयरों भई सभीत राकसी । धाय सीय पाँय धारि छाय मूह लाकसी ॥ बार बार सीय सो निहोरि पायके क्षमा । यत्र तत्र जातते भई प्रणाम कैरमा ॥ सीय हीय लीय नो विचारि शोच भारि है । मास द्योस बीतते सुरारि मोहि मारि है ॥ भाखि बोलि त्रैजटे उपाय मातु सो करै । होय भस्म देह मो विपत्तिजाल ज्यों टरै ॥ आर्त्त बैन सीय के सुश्रूय बोलि त्रैजटा । रामके प्रताप केन शोकसिंधु है पटा ॥ पाइये न रैनि अग्नि सीय धीर को धरो । बार बार भाखियो पयान धाम सो करो ॥ छंदनाराच ॥ वदेसशोच जानकी भयो विरञ्चि वामहै । मिलैन आगि हेरिये मिटै न शूल मामहै ॥ परै विलोकि ऋक्ष व्योम जाल ये अँगारसो । न आव भूमि एकहू अभाग या हमारसो ॥ शशी सदैव अग्नि ज्यों सुबीरहीन जारतो । सुजानिके कुभागिमो न आगि आजु डारतो ॥ सुनै विनै सुदीनकी दयालु है अशोक

तैं। करै सुनाम सत्यमो हरै कलाप शोकतै॥ समान अग्नि रावरे जुजाल कौशलेनये। करौ सुआगि दै निदान भूरिदुःख मैं तये॥ भयो दुखी सु वायुपुत्र देखि राजपुत्रिका। दियो अँगार डारि ज्यो अशोक ते सुमुद्रिका॥ कुंडलिया॥ ताहि देखि नृपजा हरषि लीन्हो धायउठाय। लागतकर सियरी चकित भई आगिकसिआय॥ भई आगि कसिआय बहुरि मुँदरी तनदेख्यो। लिख्योश्रिरामोजयति बाँचि मन भ्रमित विशेख्यो॥ भ्रमित विशेख्यो कीन्हि समुद शोकित मनमाही। बारबार हियलाय निरखि पूछत सियताहीं॥ कवित्त॥ प्रीतम पियारी प्राणहीतसादियारी ज्योति जागत तिहारी दीप दीपन में सुंदरी। धार्यो है अबालपनही ते रघुनाथ तोहि बीछुरी सो हेत कौन कीन्हें मन तुंदरी॥ बाउरी न होसितैं सुनाउरी कुशलनाथ छाउरी प्रमोद काटु शोकफांसफुंदरी। जाउँ बलि वेगि सो बताउ मोहि भाग्यवंत आई यहि ठाउँ क्योंतु नाथ हाथ सुंदरी॥

दो०। सुनि सिय वचन सुशासते शाखामृग सुखपाय। परम मनोहर वचन मृदु बोल्यो प्रेम बढ़ाय॥

हरिगीतिका छन्द॥ सुनु मातु पूषण वंशभूषण भूप दशरथ जानिये। सुत रामलक्ष्मण नाम तिनके तात शासन मानिये॥ आये विपिनसँग सीय काहुहि हरी खल छल ठानिकै। द्वउ फिरत खोजत बिकल सुधि कछु गृद्ध सोंपुनि जानिकै॥ आयें सो पंपासरहि मिलि तहँ सखा सुग्रीवहि किये। सो दीन पट भूषण मनो-

चहू ॥ येहि भाँति श्री रघुबीर कीरति विमल कपि वर्णन किये ॥ सुनि जनकजा मन मोद संकुल प्रेम परिपूरण हिये ॥

दो० चहुँ दिशि चितै श्रि जानकी कह्यो हर्षि मन माहिं। ज्यहि बरण्यो येह यश असी सो प्रगटत कस नाहिं ॥

सुनि प्रिय वचन पवनसुत बीरा। आयो चलि सीता के तीरा ॥ मर्कट रूप देखि महिजाई। बैठी फिरि विसमय मन छाई ॥ कपटरूप विरचे येह कीशा। आवा छलन मोहिं दशशीशा ॥ कह कपि मैं मारुत कर पूता। हनुमत नाम रामकर दूता ॥ लायउँ मो मुँदरी सहिदानी। प्रभुकर केरि मातु फुरवानी ॥ कह सीता हरि गुणहिं सुनावै। तब प्रतीति मोरे मन आवै ॥

कवित्त॥ करुणउदार बलवैभव अपार नीति प्रीतिके अगार हार भूवभार ताके हैं। शीलसम शान्ति सुठि सुन्दर कृपायतन दास दुःखदारन विरद वेद हाँके हैं ॥ भाग्यवन्त साहब समर्थ सो त्रिलोक जासु जागत सुयशके सुयुग युग शाके हैं। पावै गनि पार गुणगणको अपार नृप कौशलकुमार त्यों उदार वीरबाँके हैं ॥

संयुता छन्द॥ सुनि मानियो हनुमानकी। मन सत्यमानि सुजानकी ॥ पुनि सीय तासन यों कह्यो। नरसंग वानर क्यों लह्यो ॥ हनुमन्त सर्व प्रसंग त्यों। वरण्यो भयो प्रभुसंग ज्यों ॥ सुनि मानि भू भुवपुत्रिका। उरलायलीनि सुमुद्रिका ॥

दो० बारबार उरलायके प्रिय मुद्रिका निहारि। कहत वचन श्रीजानकी कमलनैन भरिवारि ॥

कीहै यह रविकिरण सुहाई। ममदव दुसह हरण तम आई ॥ की शशिकला सरिस है न्यारी। आई शीतकरन म्वहिं प्यारी ॥ की यह राज्यश्री सुखदैना। आई जाहि तजी हरि पैना ॥

की नारायण उर सम सोहै। युत शुभअंकन श्रीमनमोहै॥
की निश्चय पठई पियपाती। आई शीतकरन मम छाती॥
की यह प्रतीहारिनी पियकी। आई गति बूझन ममहियकी॥
की सिख मोहिं देनके हेता। पठई त्वहिं छल कृपानिकेता॥

दो० यहिविधि कहि कहि प्रेमयुत पूंछति सियमृदुबैन।
कहसि कुशल किन मुदिके सानुज राजिवनैन॥

पुनि कपिसन पूंछति वैदेही। जानि रामपद कमलसनेही॥
तात कुशल प्रभु सहित सुभ्राता। कहहु वेगि सेवक सुखदाता॥
करुणासिन्धु कृपा सुखसागर। दीनबन्धु मृदुचित नयनागर॥
करत कबहुँ सुधि मोरि कृपालय। दीनदयाल प्रणत प्रतिपालय॥

॥ सवैया॥ दीनदयाल कृपा सुखशाल सदै जनपाल सुदायक बैनन। सुन्दर श्याम सरोरुह लोचन मोचन अंग कसी शतमैनन॥ रये भगवन्त सुतात कवों कहुं मोहहिं कानसुने सुखबैनन। है हहि शीतलगात कवौ वह मूरति मंजु निहारिके नैनन॥ जासु सनेह सँभारि हियेकरि खण्डन सम्भु सरासर के बैना। आयन संग निछोह भयो सो वियोग तजे तनु प्राण अबैना॥ जीवत दुःख अनेकसहेउ दहे तनु पी विरहागिनि मैना। आयो कछू बनि मोसों नही जन जानि सुधारहिं राजिवनैना॥

दो० सुनि सियबैनन सनिरसत सजलनयन मतिधीर।
कह्यो मात सानुज कुशल प्रभु जनि होहु अधीर॥

जनरंजन भंजन विपति प्रणतपाल सुखधाम।
तव वियोग संभूत दुख दुखित रहत श्रीराम॥
धरि धीरज सुनु मातु अब प्रभुसंदेश चितलाय।
तव वियोग मोकहँ सकल भये सुखद दुखदाय॥

॥ सवैया ॥ जादिन ते सुनु प्राणप्रिया म्वहिं तोहिं बिछोह बिरञ्चि कियो है। तादिन ते कलहैं न हमें दुख दारुणदै सुख छीनि लियो है॥ काह कहौं यह जान न कोउ कहते घटै दुखनाहिं हियो है। प्रेम को तत्त्व लयामम जौन सो जानत मोमन एक प्रियो है॥

सो० सोई मन सुनु मोर रहत सदा प्रिय पास तव।
प्रेम प्रीति को डोर जानु सकल यतनेहि महँ॥
प्रभु सँदेश सुनि सीय मगन प्रेम भूली तनहि।
सुमिरसुमिर छविहीय मोचति जललोचनकमल॥
कह हनुमंत प्रवीन मातु हृदय धीरज धरहु।
सुमिरि राम हित दीन करुणाकर भंजन बिपति॥

सवैया॥ राकसबृन्द पतंग सबै रघुनायक शायक घोर कृशानू। मातु न कीजिय शोच हृदै धरुधीर जरे खलबृन्दन जानू॥ होत लहे सुधि जो रघुबीर बिलम्ब न तौ करते फुरमानू। पै अब चाहत होन उदै तम दुष्टन रामको शायकभानू॥ जो अबही मैं जाउँ लेवाइ बनै नहिं बात न रामरजाई। ताहित धीरधरौ कछु रोजमें आवहिंगे कपिले दुउभाई॥ मारि सबै खलबृन्दन को लै जैहहिं मातु तुम्हैं सो लेवाई। त्यों भगवन्त तिहूँ पुर में रहि कीरति पुंज मनोहर छाई॥

दो० कह सीता सुनु सुतसकल हैकपि तुमहिं समान।
क्यो लड़ि पैहै पार अति यातुधान बलवान॥

पद्धरी छंद॥ तब तुरत स्वर्ण पर्व्वत समान। कीन्हो स्वअंग हनुमत सुजान॥ बिश्वास पूरि सिय मन मँझार। भइ देखि कीश बल बुधि अपार॥ हनुमंत बहुरि है लघु स्वरूप। बोले सुबैन सिय सों अनूप॥ सवैया॥ श्रीरघुबीर प्रताप बड़ो करि देखिय मातुहृदै

सु विचारै। जासु कृपातृण होइ ज्यों वज्र खगेशहि व्यालतनै गहि मारै॥ खायें तिमीरस तर्म्मपतिको गिरि हेम मसा गहि आपु उखारै। त्यों भगवन्त कृपा प्रभुकी कछु बात न सिंधु पिपीलि निवारै॥

दो० राम कृपा जापर करहिं ताहि सुगम सब बात।
प्रभुप्रभाव बड़ समुझि मन शंक न कीजिय मात॥

सुनि कपिवचन विदेहजहि भयो तोष मनमाहिं।
आशिष दीन्हीं हरषि हिय जानि रामप्रिय ताहिं॥
अजर अमर शुभ गुणसदन बलनिधान सुत होहु।
करहिं सदा रघुवंशमणि बहुत तोहिं पर छोहु॥

छंद हरिगीतिका॥ बहु करहिं रघुपति छोह सुनि हनुमान अति आनँद भयो। तन पुलक निर्भर प्रेम सियपद बार बारहि शिर नयो॥ तव विदित विश्व अमोघ आशिष मातु सो मैं पायकै। भगवन्त अब कृत कृत्य सब विधि भयउँ पूरण आयकै॥

दो० अब मोहि लागी भूख अति देखि सुफल समुदाय।
कपि बाधिबल अवलोकि सिय कह्यो खाहु फल जाय॥

इति श्रीमदयोध्यावासिरघुवरदासात्मजभगवन्तरायविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रंथे सुंदरकाण्डे श्रीहनुमान्जानकीसम्वादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

सो० बन्दौं पद शिरनाय मारुतसुत हनुमन्त के।
ज्यहि सुमिरत दुख जाय भाग्यवंत संतत सुखद॥

सवैया॥ सिय आयसु पाय समीरतनै शिर सादर नाय सहर्ष चल्यो। घन नंदहु ते अधिक बाग प्रिया दशकंधहि सो तहँ जाय रल्यो॥ फल खाय उखारन लाग द्रुमै लखि रक्षक गर्जत मारि दल्यो। कछु भागि चले ते पुकारत जाय दशाननपै सुनि हालहल्यो॥ पठये भट बोलि दशानन कोपि चले सजि सेन समूह छली। गर-

ज्यो हनुमंत विलोकि तिन्हैं करि क्रुद्ध सबै क्षणमाहिं दली॥ ज्वइ भागि बचे अधमारे कछू दशमाथ पुकारयन्हि जायचली। भगवंत न जीतन योगहमैं वह बानरहै अति बीरबली॥

दो० सुनि रावण करिकोप पुनि पठयो अक्षयकुमार।
चल्यो बीर रणधीर अति लै सँग सुभट अपार॥

भुजङ्गप्रयात छंद॥ विलोक्यो जबै आवतै कीश ताको। चल्यो गर्जिलै वृक्षधै वीरबांको॥ शुकुद्यो तिन्हे मध्य यों ठानिक्रोधा। यथा मेष वृन्दानिमें सिंह योधा॥ निपाते अक्षैशेष जे रैनिचारी। तिन्हैंले कछू नाय भूमे पछारी॥ कछू पाणि सों धारिकै अंगमर्दा। मिलाये कछू मारि कै मीजि गर्दा॥ पुकारे कछूभागिकै लंकरावै। महावीर सो कीश ना जीतिजावै॥

सुनत पुत्र बध रावण क्रोधा। कहेसि बोलि घननादहि योधा॥
जाहु कपिहि गहिलावहु बांधी। चल्यो सुभटपितु आयसुकांधी॥
संग सेन बहु सुभट जुझारा। आयो जहँ बानर बरियारा॥
लखि बजरंग विटप गहिधावा। तोरेसि रथत्यहि अवनि गिरावा॥
पुनि सब सुभटन गहिगहिधाई। डारयसि मर्दि मसनकी नाई॥
पुनि घननादहि भिरेउ भचारी। लागे लड़न सुभट द्वउभारी॥
तब पवनज मुष्टिक यक मारी। परेउ मुर्च्छिमहि विकलसुरारी॥
आपु चढ़्यो तरु कूदि बहोरी। जागिकीन त्यहि युक्तिन थोरी॥
जीति न जाइ पवनसुत योधा। ब्रह्मअस्त्र छांड़ेसि करिक्रोधा॥
तब हनुमान हृदय अनुमाना। चहियकीन विधि गिराप्रमाना॥

दो० ब्रह्मबाण लागत गिरयो दाबि सुभट बहुकीश।
नागफाँस पुनि बाँधित्यहि लायोजहँ दशशीश॥

सवैया॥ हे गिरिराजसुता सुनु सत्य सुजाप्रभुको जपिनाम सुभा-

यो । काटत हैं भव फंदनको, नर ज्ञानमई यश वेदनगायो ॥ ताप्रभुको ह्वयदूत कहौ किमि राकसके वरबंधन आयो। ताहि न बाँधनहार कऊ प्रभु कारजलागि सो आपु बँधायो ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ देख्योकपि जाई निशिचरराई अति प्रभुताई कौनकहै। करपुट सुरसारे रहत निहारे मुखरुख भारे डरनिरहै॥ गिरि सरिस विशाला, तनु दशभाला लोचनलाला क्रोधभरे। देखत प्रभुताई त्यहि बहुताई कपि नहिराई शंकधरे॥ कुंडलिया ॥ तब रावण कपितन चितै बोला विहँसि कठोर। रेवानर कहुकौन तैं क्यों मारे सुतमोर ॥ क्यों मारे सुतमोर वाटिका जाय उजारे। रक्षक रक्षाहेत तिन्हैं वर्जत संहारे॥ संहारे बहु रजनिचर डारे डर ममते बितै। कहु कहु काकेबल निडर कह रावण कपितन चितै॥ सुनुरावण परिहरि कपट भैहौं ताकोदूत। जो सृजि पालत हरत जग जाकोबल अनकूत ॥ जाकोबल अनकूत अवध नृप सुवन सलोने। राम लपण शुभनाम भये अस्ति अहै न होने॥ हने असुर चौदह सहस खर दूषण त्रिशिरा सुभट। त्यहि प्रभुको मैं दूतहौं सुनुरावण परिहरि कपट॥ खायोंफल म्वहिलागि जब सुनुरावण अतिभूख। कपि सुभाव चंचल सदा ताहिते तोरयउँरूख॥ ताहिते तोरयउँ रूख हमें मारा ज्यहि वोही। मारेउँ मैं त्यहिलागि सुवन बाँध्यउ तव मोही ॥ मोहि न सो कछुलाज काज प्रभु चहौं बनायो। परिहरु प्रभुसों वैर मानु यह मोर सिखायो ॥ क्यहि कारण आये इहाँ खोजन हित सिय चोर। सीयकौन कन्याजनक जाको यश नहिं थोर॥ जाको यश नहिं थोर स्वयम्बर में ज्यहि सीचा। रह्यो तुमहुँ अरु बाण भयोतहँवाँ शिरनीचा॥ नीच न सुधि श्रुति नासिका काटि स्वसा तव किय रिहा। तासु नारिचोरै लखे यहि कारण आये इहाँ॥ कोहै पठवा तोहि इत वालिबन्धु सुग्रीव।

वालि कौन वतलाउरे सोई कपि वलसीव॥ सोई कपि वलसीव मासपट जाकी कांखे। रहेसुरति करुतासु वहुरि पौरुष निज भाखे॥ भाखे कटुजनि मूढ़ वोलि वीसोहग जोहै॥ ज्यहि मार्यो शरएक वालिशठ तुच्छतु काहै॥ तातें तजि अभिमान सव सुनुरावण सिख मोर। कृपासिंधु रघुनाथसों वैर न करि भलतोर॥ वैर न करिभल तोर देहिले सीतहिं जाई॥ मरसि न ज्यहि विनमौत चहसि जो कुशल भलाई॥ चाहसि कुशल जो आपु होय कुलखीस न जाते। गहसि रामपद जाय मानि मम शिक्षहिं ताते॥ सवैया॥ कोम्बहिं मारनहार ह्वै तव कर्महिं को तिनसों फिरि राखे॥ श्रीरघुवीर कृपा करकी शरणागत तें मुखसों जब भाखे॥ मो शरणाजु त्रिलोक नवो क्यहिं जाय न जाय जुतौफल चाखे॥ श्रीरघुवीरके कोपकिये खल तू न वचे पुनि यत्नन लाखे॥ रेकपि पोच डरै नहिं काहि हमें कहु तैं खल तुच्छ कहाहै। आयसु दीन न श्रीरघुराज न तो करत्यों जस ख्याल चहाहै॥ तोहिं ससैन पछारि अवै डरत्यों गढलंके समुद्र महा है॥ त्यों भगवन्त फलाकम एक सुलैसिय जात्यउं राम जहां है॥ पै अवरावण मोर सिखावन तैं करुकान चहैभल जोरे। सेवक जासु सुरासुर सर्व्व कियेभल वैर न है त्यहि सोरे॥ सो कहि मानु सवैर अवै लय सीतहि पायपरो कर जोरे। त्यों भगवन्त गये शरणै क्षमि हैं अपराध सवै प्रभु तोरे॥ धरि रामके पंकज पांय हृदे निज लंक अशंक ह्वै राजकरे॥ शशि सों यश दिव्य पुलस्त्य जगै त्यहि वंश न होसि कलंक खरे। करिकान सिखावन रावण मो लै सादर सीतहि पायँ परे। जिनि रामके रोष दवानलमें युत वंश पतंग सो धायमरे॥ राम सों वैर कियो हठिकै जिन देखु विचारि न ते सुख लहे॥ एकन वीर करोरनके रण रोरपरे गढ़ मानके टूटेगा॥ तो सम

वीर बली खरदूषण ते उन भागि बचे शर छूटे। सूझि न तोहिं परयो अबही दशकंधर तो हग बीसहु फूटे॥ कवित्त॥ रोपु रे न रारि को खरारि सों सुरारि मूढ धारु बैन कान मो निकारु बात मान की। जासु भृत्य संतत अजादि देव सेव पायँ कीरति कलाप जस्य चारु वेद गान की॥ रक्षक त्रिलोक प्रतिपक्षक विध्वंसकार हार भूवभार है न उपमा समान की। भाग्यवन्त मानि सो विहायकै कुबैर सर्व सौपु जाय रामको प्रणामकै श्रिजानकी॥

दो॰ यद्यपि कह्यो कपि हित वचन बहुविधि ताहि बुझाय।
सो किमि मानै काल बश बोला वचन रिसाय॥

तोटकछंद॥ कपि ढीठ महा यह काहवकै। गहि मारहु वेगि न जाय सकै॥ सुनि मारण निशिचर धाय सबै। युत मन्त्रि विभीषण आय तबै॥ कर जोरि कह्यो यह नीति कही। नहिं मारत दूतहि नाथ चही॥ करियो कछु दंड जु और चहौ। दलि बुन्द समुद्र घटै न कहौ॥ कह रावण तौ यहि पूँछ दही। पठवो ज्यहि जाय सु स्वामि कही॥ सुनते तपसी द्वउ आवहिगे। कपिसेन सतौ सब खावहिगे॥ तजि एक जु आनि मिलै बहुतै। तजि दीजिय एकहि तौ तुरतै॥ सबहीन कह्यो भल मंत्र यही। हरष्यो कपि शारद सहाय सही॥ नाराच छंद॥ तबै सुरैनिचार बृन्द यत्र तत्र धायऊ। सघृत्त तेल तूल वस्त्र जाल ढोय लायऊ॥ सु बोरि बोरि ताहि सो लपेटि लूमको लियो। ख्यलार पौनपूत त्यो बढाय पूँछको दियो॥ रह्यो न तेल घृत्त वस्त्र लंकमें न्याघटी। दियो बहोरि बाँधि खैचि पुष्ट सूत सो बटी॥ सवैया॥ देखन काज यकौतुक त्योतहँ आवत भे सगरे पुरवासी। दे दय गारिन तारिन बालक मारहिं लातक्रै बहु हाँसी॥ बाजहि ढोल कलोल भरे सब निशिचरबृन्द उपद्रवराशी।

चारिहु ओर फिराय पुरै पुनि आनिकै बालधि अग्नि प्रकाशी ॥ तोमरछंद ॥ जब बर्त पावक दीश । लघुरूप है तब कीश ॥ रिपु भौन ऊपर जाय । चहुँ ओर पुच्छ भँवाय ॥ गीतिकाछंद ॥ चहुँओर पुच्छ भँवाय गर्ज्जत बाढ़ि नभ सों लगिगयो । इत उत अटारिन कूदि ठौरहिं ठौरपर पावकदयो ॥ अवलोकि पावक प्रबल घर घर खलन परिगै खलभली । त्यहिसमय श्रीरघुबीर प्रेरित मरुत उंचासहु चली ॥ व्यान उद्यान समान अपाना । शरद तेज पाण्डव निरबाना ॥ सरप सरोप शोप फरमाना । मोपन जन माधव लौमाना ॥ क्षिति संताप कुचर्पण कर्मा । लम्पट लोभ तोप घुहधर्मा ॥ तामोत्कर्प चैल शयचाना । सन्निपात अरु विग्रह दाना ॥ धातु धूरि प्रोपन अरुछोहा । दमनद रोचन तामसरोहा ॥ किंकर तिवनु धनञ्जय लाना । अरु उद्वेग चिंत्रिसा पाना ॥ यइ उञ्चास पवन के नामा । मोहिं जो मिले धरे सो यामा ॥ दो० प्रबल पवन झक झोरते चहुँदिशि बाढी आगि । तजि तजि निज निज भवन सब चले निशाचर भागि ॥ कवित्त ॥ रावणके भौन उच्च कञ्चन कँगूर चढ़ि ठाढो कपि कौतुकी कराल क्रुद्ध भाखऊ । भारी भयदायक लगाये लूम व्योम लगि वेप विकराल देखि धीर्य्य को न डाखऊ ॥ भाग्यवंत बीर रणधीर त्यों समीरसुत गाज्यो करि कोप जनै हाहाकार प्राखऊ । भागे भरे भीत कहैं निश्चरन कीश यह लीलिबे को लङ्क काल रसना पसाखऊ ॥ पावक प्रचण्डज्वाल उठी ओर चारिहूते कञ्चन कँगूर भू गिरनलागे जरि जरि परयो हाहाकारना सँभार कोऊ काहूकार जरें बाल बालकी अनेक रहे मरि मरि ॥ टेरै एक एकन उठावै

जनि सौजपरो भागो भागो प्रान लैलै यारो धीर धरिधरि । देखि यह हाल है निहाल दशभाल कह्यो मेघन बोलाय वारिन्नावोजाय भरि भरि ॥ पायकै निदेश दशभाल को सुवृन्द वृन्द प्रलय पयोद चले वारि बहु भरते । चारोंओर घेरि लागे बर्षे मुशलधार प्रगटी कृशानु त्यो अधिक बारि परते ॥ लागे सब जरन पराने घन हारि हीय आये लंकनाथ पै पुकार द्वार करते । भाग्यवंत महाराज बूझिबेको कौन कहै जीवन सो जागी आगि राखो हमें जरते ॥ सवैया ॥ द्वादश भानु कला भगवन्त विलोकि न तेज तहां अस चीन्हे । कालप्रलय कि कृशानु लखे असि तीक्षण ताति नहे स्वउ लीन्हे ॥ दीख विपाग्नि जु शेषमुखे घृत होत न पै कहुँ वारि के दीन्हे । काहकहैं हम वायुतनै अति अद्भुत मै यह कौतुक कीन्हे ॥

दो० सुनि बोल्यो मंत्री चतुर अग्नि न असि बरियार ।
ईश वामता केर प्रभु है यह सकल बिकार ॥

छप्पै ॥ पावक पानी पौन भानु हिमि भानु समेते । इन्द्र वरुण यम काल धनद लोकन पति जेते ॥ ममडर डामाडोल शम्भु अरचावन आवैं । सडर विष्णु विधि ब्रह्मलोक तीनिहु म्वहि ध्यावैं ॥ मम राज आज तिहुँलोक मे करौं रुचै मन जौनहै । पर उजुर न करता कोउ कहुँ ईश वाम वह कौनहै ॥ पद्धरी छंद ॥ वह ईशवाम स्वइ राम होय । ज्यहिवाम धाम लायो सु गोय ॥ ज्यहि कोध पावक प्रबल जानि । विरहाग्नि श्वास सिय वायु मानि ॥ द्वय वामता कपिरूप तासु । निरशंक लंक जाख्यो सो आसु ॥

दो० सुनि रावण करिकोप तब सेवसन कह्यो बुझाय ।
धाय धरो कपि कहँ सुभट भागि न पावै जाय ॥

कवित्त ॥ लै लै सेल शूल पाश परिघ प्रचंड दंड धाये बहुबीर

और कैकै हाहाकारहै । देख्यो तिन्है आवत सकोप कपि क्रुद्धो तत्र गाज्यो घन घोर ज्यों कठोरकै चिकारहै ॥ लाग्यो एकओर सों संहारन सुभट वृन्द भाग्यवंत कहै कौन गति सो अपारहै ॥ यातुधान धारि भूरि क्षणमें सँहारि धूरि दीन्ही मेलि केलि कपि केशरी कुमारहै ॥ दो० सो जासमिध मखकुंड पुर निशिचर यव तिल धान । श्रुव लंगूल स्वाहा शब्द हुने हाँकि हनुमान ॥ ग्रह दुर्दशा निहारिकै रावण रानी रोय । स्पर्द्धि पटकि सिर बचन कहत बीश दिशि जोय ॥ कवित्त ॥ केतहू उपाय करि हारीहौं सिखाय पर अविस्यो न ज्ञान नेकु याके मान बाँढ़ा मैं । हायकं विभीषण बुझायपै सभाग्यवन्त कीन्ही सो न कान मतिपागी गर्व गाढ़ा मैं ॥ भाइहै सो फल आप कीन्हो अब भाँति भली नाचिहै न आगि लोक तिहूं राम राढ़ामें । बार बार रोइयो मँदोदरी पुकारि कहै देत क्यों न लाय कपि लूम याके दाढ़ामें ॥ सवैया ॥ मैं बहु भाँति बुझायथकी यक बात न पै मम कान कर्यो है । छीनदई हरि बुद्धि सबै प्रभु सो ज्यहि नाहक जाय अर्यो है ॥ कील कराल गह्यो प्रिय लाहत ताहिले योंहक आनि धर्योहै । आपने हाथ लगाइकै आगि कुमारि मुवै अबजाल जर्योहै ॥ दो० कुम्भकरण की भामिनी बिनवत जोरे हाथ । जरत बृहद ते राखिये मेरो पति रघुनाथ ॥ भवन विभीषणकेर अरु कुम्भकरणकर दार । बच्यो और गढ़ लंक सब जार्यो पवनकुमार ॥ छप्पै ॥ जारि लंकगढ़ बंक सिंधुमें लूम बुतायो । धरि लहुरूप बहोरि जहाँ सीता तहँ आयो ॥ करि प्रणाम करजोरि कह्यो जननी करि नेह । दीन्ह्यो प्रभु जिमि मोहिं चिह्न तैसो कछु देहू ॥ हनुमान

वचन सुनि जानकी चूडामणि दिय काढिकै। भगवन्त कहत पुनि मातुसिय कमलनैन जल बाढ़िकै॥ सवैया॥ करि तात प्रणाम कह्यो प्रभुसों सब भाँतिन पूरणकाम अहौ। हित दीनसँभारि सुवीरदक्षो ममनाथ कुसंकट वेगिदहौ॥ सुतशक्र कथा सुसुनायकह्यो समुझा-यहु बाण प्रताप महौ। दिन मासमें नाथ न आवहिं जो पुनि पावहिगे नहि जीवत हौ॥ तात कहौ तुमहूं अब जान सुराखहुं प्रान कहौ क्यहि भांती। नाथ वियोग भयो जबते तबते कलहै न सदा कल-पाती॥ त्यों भगवंत बिलोकि तुम्हें हनुमंत भई कछु शीतलछाती। सोउ न बान रही म्वहितात सु ह्वैहहिं जात स्वई दिनराती॥

॥ दो० मणिबिनु व्याकुल भुजग जिमि मीन बिनु भखवैचैन॥

॥ तिमि देखु भगवंत बिनु तलफत हो दिनरैन॥

॥ सुनि सिय वचन समीर सुत बहु प्रकार समुझाय।

॥ चल्यउ गाजि श्रीरामपहँ चरण कमल शिरनाय॥

॥ इति श्रीमद्रामायणे ... हृदयमात्मज भगवन्तदासविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रन्थे सुन्दर-

[illegible]

॥ दो० शर जउन्क रचि सदनवर जो कृत तामे बास।

भग्यवंत प्रणमामि त्वइ करौ पूर मम आस॥

कूदि सिंधु आयो सपदि पवनतनय यहिपार।

मिल्यो कपिनसुनि हालसब हरष हृदय अपार॥

पुनिसब कपिन सहित हनुमंता। चल्यउ जहाँ राजत भगवंता॥ वरणत सीयचरित सचुपाये। आय सकल मधुवन फलखाये॥ सहित कीशपति पुनिसबकीशा। आये जहाँ रघुपति जगदीशा॥ फटिक शिला सुंदर सुखदाई। अनुज सहित राजत रघुराई॥ जाय सबहिं चरणन शिरनाये। पूछि कुशल प्रभु ढिग बैठाये॥

जामवंत सब प्रभुहि सुनाये । सियसुधिपवनतनयजिमिलाये॥
सुनि मन मुदित बहुरि भगवाना । हृदय लाय लीन्हे हनुमाना॥
परम प्रीति समीप बैठाई । बोले मधुर वचन सुरसाई॥
दो० कहहु तात क्यहि भांतितुम लायहु सियसुधिजाय ।
सुनिबोल्यो हनुमंत तब चरण कमल शिरनाय ॥
सुनहु नाथ भंजन भव त्रासन । तुम्हरी कृपा सुलभ सबदासन॥
प्रभु आयसु कृत खोज सिधायन । चलतचलत सागर यक्पायन॥
शतयोजन तावर विस्तारा । प्रभु प्रतापसो ह्वैकरि पारा॥
तहँ त्रिकूट गिरि ऊपर लंका । हरि मय बसत दुर्ग अतिबंका॥
तहँ नृप रावण रहै अशंका । जासु कोप त्रिभुवन उरशंका॥
त्यहि अशोक उपवन में सीता । रहति गहे प्रभु नाम पुनीता॥
जाय चरण पंकज शिरनायो । दै मुँदरी कहि कुशल सुनायों॥
मनभावत आशिष वर पाई । पैठेउँ बाग रजायसु पाई॥
वन विभंजि हति अक्षय कुमारा । तव प्रताप लंकापुर जारा॥
बहुरि आइ सियपद शिरनायो । लै चूड़ामणि सपदि सिधायों॥
सो प्रभु लेहु हरषि भगवंता । लीनलाय उर कृपा अनंता॥
दो० कह हनुमंत कृपायतन सुनिये परम प्रवीन ।
युगल नैन भरिवारि सिय वचनकहे कछुदीन॥

सवैया॥ सानुजपायँ गह्यो प्रभुके सुकह्यो यह मोर सँदेश सुभागी। हौ प्रभु दीनदयाल सदै प्रणतारति भंजन कीरति जागी॥ त्यों भगवन्त सुकाय गिरामन राउरके पदहौं अनुरागी। कौनसो चूक परी म्हहिसों ज्यहिकारण नाथइतै अबत्यागी॥ अवगुण एकमया मैं जानत प्राणतजे न तजे हरिजावत। लागसो नैननको हठिहोत जे बाधक प्राणचलेचहैं तावत॥ पौन उसास शरीर रुई बिरहागिनि

तौ क्षणमाहिं जरावत । त्यो भगवन्त सुहित्तहितै जलनैन सवै न जरे तनुपावत ॥ जाभुजसों सहसेन सुबाहु निकन्दनके शिवचाप चढ़ायो । जाभुजसों खर दूषण शीर्ष त्रिमारि अभय मुनिबृन्द बसायो ॥ जाभुजसों वधि वालिवली शुभकंठहि रंकते राउवनायो । वैभुज काहभये भगवन्तजु आजुलौं नाथ हमैं विसरायो ॥ कुण्डलिया ॥ सीताके अति विपति प्रभु क्यहिविधि कहौं बुझाय । पलपल वीतत कल्पसम तव वियोग रघुराय ॥ तव वियोग रघुराय साजिदल सपदि सिधावो । मारि असुरयुत वंश समररजमाहिं मिलावो ॥ लावो विलँव न नेकु समुझि निज विरदपुनीता । चलिय वेगि रिपुजीति नाथलेआइय सीता ॥

दो० सुनि सियको दुखहरन दुख रामकृपा सुखऐन । सजलनैन धरि धीर तव बोले गद्गद बैन ॥

॥ त्रोटक छन्द ॥ मनकायगिरा गति मोरियही । सपन्यो दुखचाहि कि वातत्यहौ ॥ सुनियो प्रभुहौं दुखभार त्यही । तजि आपुहुवेगति आनजही ॥ क्यहि जातिकरौ प्रभु शोचहियें । रिपुजीति लयाउब वेगिसियै ॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥ कहौ लंकनाथै ससेना सँहारौ । कहौ लायकै ताहि तौ पायँडारौ ॥ कहौ लंकऊपारि सिन्धुद्बोरौ । कहौ कूटते कुम्भ काचेसो फोरौं ॥ कहौ अद्रिलै भूरि सामुद्रपाटौं । कहौ पानकै वारि यों मार्गठाटौं ॥ कहौ अंगको देउँ के सेतुआपे । तरैं सेनसारी पलैमाहि जापे ॥ कहौ लै तुम्हैं जायँ सीतै देखावों । कहौ सीयकोलाय आपै मिलावों ॥

दो० तव प्रताप रघुवंशमणि करौं जो आयसु होय । तुच्छ शत्रु यहिलागि प्रभु करिय न संशयकोय ॥

सुनिवोले रघुवंशमणि ऐसे वल सुत तोर ।

काहि समान तिहूँ लोकमें नहि कहुँ न दूजो मोसो ॥

प्रति उपकार न योग तव देख्यों करि अनुमान ॥
तातें सन्तत हौं ऋणी मैं तेरो हनुमान ॥

सुनि रघुवीर वचन अनमोला । सकुचि वायुसुत पुनि अस बोला ॥

सवैया ॥ सो बड़ो सब भाँति प्रभो प्रभुता ज्यहि आपु दियो रघु-
नायक । नीच तिपाद [illegible] भरो उर लाय कियो प्रभु सो सुखदायक ॥
ताहि अगम्य सुकाज कहा रघुराज अहो ज्यहि आपु सहायक ।
त्यों भगवन्त प्रताप व्यथा सब मैं मृगशाख कहौं क्यहि लायक ॥

असकहि परयो चरण शिरनाई । प्रभु उठाय लीन्हे उरलाई ॥
निकट राखि बहुविधि सनमानी । कपिपति बोलि कह्यो प्रभु बानी ॥
लैकपि भालु कटक विधि नाना । करहु बेगि गढ़लंक पयाना ॥
सुनि कपीश साजी कटकाई । कहिनजाय यूथप विपुलाई ॥
असी शंख मुनि रति भटसाथा । कीन गमन गवाक्षके साथा ॥
सात पद्म अरु असी करोरा । दुर्द्धर गजसँग कपि भटघोरा ॥
साठि सहस शत तिइस लाखा । सँग बलवीर लिये मृगशाखा ॥
छप्पन कोटि शिखण्डी संगा । लै कपि चला युद्ध मनरंगा ॥
पद्मचारि सत्तासी लच्छा । लै सँग कीश कुमुद भटअच्छा ॥
षोड़श खर्व प्रवँग बलशीला । चला संग लै गर्जत नीला ॥
गेरह अर्ब कीश बलवाना । गन्धमदन लै कीन पयाना ॥
कोटि सतासी नब्बे लाखा । तारा बरवत लिये मृगशाखा ॥
छबिस सहस नवलक्ष दशकोरी । लयो केशरी चला रिपु ओरी ॥
द्वादशकोटि सहसशत बाँदर । बाणवसन्त लिये सँग सादर ॥
पद्म आठ नौसै इक्यासी । सतिमुख लिये कीशबलरासी ॥
पद्म एक [illegible] शतलाख कीश सिधाये ॥

लाख पचीस कीश यक कोरी। लै सँग चला द्विविद सुखबोरी॥
सात पद्म वसु अर्ब प्रमाना। लै कपि कीन्ह्यो प्रनस पयाना॥

दो० जामवन्त के साथ में भालुनको दल जौन।
सो नहिं वरणैं पार मैं जानहिं देखे तौन॥
यहि विधि यूथप चलुत हैं कहँ लगि कह्यौ बखानि।
रामचन्द्रके काज हित चढ़े तहँ सब आनि॥

छप्पै॥ प्रभु आयसु तब पाय भालु कपिकटक सिधायो। गर्जत घोर कठोर शब्द तिहुँ पुरमें छायो॥ यूथयूथ बलवन्त अन्त कहि कौहुन पायो। कम्पित अहि महि व्योम शेष दिग्गज सकुचायो॥ श्रीराम कटक को विभव नहिं जानहिं जिन देखपायो। यहि भाँति जाय किसये दिवस समुद्रतीर डेरा कियो॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहप्रमीतमङ्गलभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेसुन्दरकाण्डेश्रीरामचन्द्रसेनासहितसमुद्रतीरमासवर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय॥४॥

दो० स्वामी तुमसों नहिं छपी भीतर बाहर नेक।
मह्य समुझि निरवाहिये प्रणतपाल तव टेक॥

सवैया॥ कोउ स्वरूप कहै अनरूप कऊ गुणगाय हिये सुखपावै। कोउ रहो रटि नाम नितै अभिराम कऊ पद सेवन लावै॥ कोउ कहै हरि व्यापक ब्रह्म अनादि कऊ हरि एक बतावै। त्यों भगवन्त प्रतीत जिन्है ज्यहि माहि तिन्हे प्रभु न्हे त्यहि भावै॥ श्रीहनुमान महा बलवान सुकूदि जे वारिधि एक फलंका। बाग उजारि निशाचर मारि के आयउ जारि महा गढ़लङ्का॥ ता दिनते दिन राति हिये सब राकस वृन्द रहै सहशंका। आजहु गर्भ स्रवै तिय इहनके सुधि श्रीहनुमान कि हङ्का॥

दो० सदरसकल निज निज भवन गन असकरैं विचार।

नहिं निशिचरकुलकेर अब है क्यहुँ भांति उवार ॥
जाके चरबर केर अति बल नहि बरणों जात ॥
त्यहि प्रभुके आये नगर कहौ कवन कुशलात ॥

हरिगीतिकाछंद ॥ कपि भालुदल लै राम लछिमन आय सागर तटपरे। यह पाय सुधि मंदोदरी उर कम्पअति शोचहिधरे ॥ करजोरि सादर बार बारहिं पाँय गहि कह रावणै। तजि कोहकरि अति छोह पिय उर धरहु मोरा सिखावनै ॥ सवैया ॥ नाथ बिरोध तजौ प्रभुसों हित आपन जानि मयासिखही तैं। श्रीरघुवीर परात्पर ब्रह्मगनो करि छोट तिन्हैं नहि जीतै। त्यों भगवन्त सुजानि भलो पिय देहुपठाय श्रीरामहिं सीतै। नाहिं तो जो खरदूषण बालि कि भैगति चाहत तौ शिर बीतै॥ तामरसछंद ॥ सुनि प्रियके इति उत्तम शिक्षा। बिहँसि कह्यो कह बानर ऋक्षा॥ त्रिभुवन वीरनहै मम आगे। डरपति है प्रिय तू क्यहि लागे॥ नर कपि भालु अहार हमारे। हम मरि हैं तिनके किमि मारे॥ तोमरछंद॥ यहिभांति ताहि सिखाय। बैठ्यो सभामहँ जाय ॥ तवलौं कह्यो कउ बैन। कपि भालु लै प्रभुसेन॥ तट सिंधु डेरहिं कीन। सुनि बोलि मंत्रिन्ह जीन॥ कहियो मतो चित कौन। सबही कह्यो रहो मौन॥ छंदत्रिभंगी॥ घटश्रुति अभिमानी तब कहबानी अट हमसानी कौनजना। जो सोह हमारी सके निहारी नर बनचारी कौन गना॥ छल निरत सदाया कह अतिकाया जो करिदाया हुक्मलहौं। अबहीं क्षितिसारी बिनु नरहारी करउँ पुकारी सत्यकहौं॥ सुनिकै करिवादा बद्र घननादा ममयश जादा जगत जहां। बिधि हरि हरसारे सुभट जुझारे बिबश हमारे नृकपि कहां॥ तब बोले कुंभा असुर निकुंभा रतछल दंभा कलुषलदे। बल बिदित हमारो सुरन पछारो शंकन

धारो मनुपन्नदे॥ यहिविधि बल आपन सबरत पापन करत भला-पन विपुल भये। तबकरि पुटहस्ता कह्यो प्रहस्ता सुखप्रद रस्ता सुनहु चये॥ सिय देहु पठाई जो तिमपाई सहित सहाई फिरिजाही। तौ तौ भलिवातो नतु हठिघाता करिय प्रभाता रणमाहीं॥ सुनि सिख सुखदाई निशिचरराई कह्यो रिसाई वशमाने। कादर सी बातै करत कहातै ममबल भ्रातै नहिं जानै॥

दो० नीति कहत हम आपुपै ठहरे कादर माँह।
तौ तुम जाना सोइहौ भली भांति सुखछाहँ॥
कह्यो विभीषण जोरिकर नाथ सुनो मतमोर।
रामहिं सौंपहु जानकी सबप्रकार भलतोर॥

सवैया॥ रामहिं मानुष तातगनो जनि पूरणब्रह्म चराचरनायक। गो द्विज देव सुसंत हितै अवतार धर्योमहिभार नशायक॥ दुर्लभ जो मुनियोगिन को शिव मानसहंस सदा सुखदायक। सो भगवंत कृपाकर सो तजि वैर भजो भजिवे प्रभुलायक॥ कवित्त॥ नाथ करि दूरि रघुनाथ सो विरोधभूरि नाइयो सुमाथ जो कुशल चाहो प्रानकी। त्यागिहै न पायकै शरण्य सो सुभायरीति प्रीतिकै सुभायवात मानुमो प्रमानकी॥ जासुनाम ताप त्रै विनाशक प्र-सिद्ध गाथ नाथसो प्रकट चारि वेद जाहि गानकी। भाग्यवंतनाथ सो समुझि विश्वनाथ वेगिसौंपियो सुजाय रघुनाथै नाथजानकी॥ सवैया॥ हित कीनचहो निज नाथ भजो रघुनाथ तजो द्विचिता चितकी। चितकी गति जानत मानत स्वै उर आनतहै न उतै इतकी॥ इतकी न सहासुखता सुखकै हरि आसु नजो विभुता नितकी। नित कीन चहो सुखनाथ भजो भगवंत सुवात कहो हितकी॥ वलपै घननादसे वीर जिते रण सम्मुख एकन छूटहिंगे। रजनी-

नरवृन्द गुमानभरे हनुमान सवैगहि कूटहिंगे॥ खरारीश महेशके भेदरशीश जुतो खग जम्बुक लूटहिंगे। धरि है धृति कौन कराल जवै रघुवीरके शायक छूटहिंगे॥ चहुँ ओरते वानर भालु जवै प्रभु आयसु लंकमें धैपिलिहैं। भटखारत बैठिय गाल जिते न उलूक सो खोज किये मिलिहैं॥ भगवंत उदै रविराम भये न दशास्य कुमोदिनि तो खिलिहै। धरि है धृतिको करिकोप जवै रघुनायक बाण निजै दिलि हैं॥ नल नील न सेतु रचें जवलों जल राशि न राघव पारतरो। सुत वालि न लंकदहै जवलों न प्रभंजनजात सरोपभरो॥ भगवंत अनंत सुऋद्धि हिये जवलों न शरासन बाण धरो। जगदीश न शीश हरें जवलों तवलौं किनलै सिय पांय परो॥ प्रियछंद॥ तातें मतमेरो यह मानौ प्रियहीतैं। दीजो रघुनाथै सुखसाथै लैसीतें॥ तोमरछन्द॥ कह कोपि तो विसअक्ष। रिपुकेर ठानतपक्ष॥ त्यहि ते उहे किनजात। अस भाखि मारयो लात॥ त्रोटकछंद॥ मोहिं मारेहु लात सो नीककियो। करि ताड़िनके प्रभु सोंह दियो॥ प्रभु पे हम तो अव जाहिभजे। परराउरको हित रामभजे॥ अस भाखि सुमंत्रिन संग लियो। रघुवीरके तीर पयान कियो॥ सवैया॥ जे पदकंजन सो प्रगटी शुभदेवसरी त्रयताप नशावन। जे पदकंजन पादुकनै मन भारत लायरहे करिभावन॥ जे पदकंज कुरंग छली सँग धायचले अवदापन दावन। देखिहौं जाइसु आजुभले भगवंत स्वई पदपंकज पावन॥ जे पदपंकज धूरिछुये ऋषिनारि तरी शिवमानस गोये। जे पदपद्म सप्रेम हिये सुविदेहनिलै स्वय सादर धोये॥ जे पदकंज परभे हरे जनदंडक पाप सथापके खोये। पाइहौं आजु सबै सुखमै भगवंत सोई पदपंकज जोये॥ कवित्त॥ दानि सुखदान के प्रमान है निगम बीच रावरी सुरीति क्यो न देखते

सँभरिहैं ॥ जानराय जानि जननीकी रुचि लालसाहु भायके न भायसी सुभायहो निदरिहैं ॥ भाग्यवन्त दीनबंधु जानिके सुजन दीन कृपया कटाक्षकै विषम पीर हरिहैं ॥ करुणानिधान रघुवंश अवतंस आजु मेरे शीश कञ्जपाणि जानकीश धरिहैं ॥

यहिविधि मनमहँ करत विचारा । आवत भयो सिंधु यहिपारा ॥ कपिन विभीषण देख्यो आवत । रिपुचरजानि राखित्यहिलावत ॥ कपिपतिसन बरण्यो त्यहिबाता । सुनितिनजाय कह्योजगत्राता ॥ नाथ अनुज रावण रिपु केरा । आवा मिलन तुम्हैं यहि बेरा ॥ कह प्रभु शरण जो आवा होई । मर्म्म बूझि लै आवहु सोई ॥ प्रणतपाल मेरो यह बाना । शरणागत म्वहि प्राणसमाना ॥ सुनि कपि वृन्द हरषि उठि धाये । सादर त्यहि प्रभु पहँ लै आये ॥ अनुज समेत देखि प्रभु शोभा । बोल्यो वचन विगत मनक्षोभा ॥

॥ सवैया ॥ नाम विभीषण रावणको लघुभ्रात निशाचर के कुल जायो । तामस देह परायण पाप सुधर्म अचार न भूलिहु भायो ॥ त्यों भगवन्त सु आपु यशै सुनि पावन मे शरणैं तकि आयो । कीजिय त्रातु कृपालमया शरणागत पाल तुम्हैं श्रुतिगायो ॥ दासन के हित राम सदासहि दुःख कियो निज दास सुखारे । सो बरबात प्रसिद्ध प्रभो यश पावन वेद पुराण पुकारे ॥ ज्यों प्रह्लाद गयंदहु कीसुनि टेर न देर किये दुखटारे । त्योंभगवन्त अनाथके नाथधरौ प्रभु हाथ सुमाथ हमारे ॥ राम गरीब निवाज हर्यो तुम दीन अनेकन को दुख गाढ़ो । शील सुकंठ कियो रह्योजात जु बालि के त्रास महानल डाढो ॥ त्योंहि विभीषणहू कि सुनौ भगवन्त सुदास विनै करै ठाढो । रावण के अघओघ समुद्र में बूड़त नाथ भुजागहि काढ़ो ॥

कुंडलिया॥ कीन्ह्यो दंडप्रणाम प्रभु लीन्ह्यो हृदय लगाय। निकट राखि पूँछी कुशल सानुज श्रीरघुराय॥ सानुज श्रीरघुराय कुशल पद पंकज देखे। मिट्यो अमंगल मूल धन्य निज भागहि लेखे॥ भाग्यवन्त बड़ जानि राम जल सायर लीन्ह्यो। कहि लङ्केश्वर ताहि तिलक लङ्काकर कीन्ह्यो॥ सवैया॥ जो सुख संपति रावण को शशिभाल दिये दशभाल चढ़ावत। जाबल तीनिहुँ लोकनमें दशकन्धर राजकरै मनभावत॥ सोइ विभूति विभीषणको रघुनाथ दिये पद माथहि नावत। यो भगवन्त सु साहेबसे भजि केन कहौ सन भावत पावत॥

दो० राम सुभाव सुरीति लखि हरषे सब कपि भालु।
सखा निकट बैठाय तब बोले राम कृपालु॥

सवैया॥ हे कपिराज सुलंकपती कपि भालु जे औरहुहौ मति आगर। देखहु सिंधु न माउभरे भख उरग नक्र औ कच्छप मागर॥ थाहि लहै नहिं घाट कहूँ सु अगाध महा नहिं बाटकि सागर। त्यो भगवन्त बिचारि कहो केंहि भाँतितरौ यह दुस्तर सागर॥ पद्धरी छंद॥ कह लङ्कनाथ सुनु दीनबन्धु। शोषै सुबाण तव कोटि सिन्धु॥ पर कहत नाथ अस नीति गाय। करिये समुद्रसन विनय जाय॥ सुनि प्रभु मंत्र विभीषण केरा। बोले उचित कह्यो यहि बेरा॥ रुच्यो लषण मन यह मत नाही। जोरि पाणि बोले प्रभु पाही॥ नाथ रोष करि शोषिय याही। विनय किये जड़ मानत नाही॥ कह्यो करन ऐसहि परिणामा। अस कहि गये सिंधु तट रामा॥ करि प्रणाम बैठे कुशडासी। कृपासिंधु। सुंदर सुखरासी॥
दो० जबहिं विभीषण राम पहँ आये शरण सिधाय [illegible]

तबहिं दशानन बोलिकै पठये दूत दुराय।
छल मैं लवँगरूप ते धारी। रहे रामकर चरित निहारी ॥
जानि सो मर्म कपिन जब पाये। तुरत बाँधि कपिपति पहँ लाये ॥
कह कपीश नासा श्रुति काटी। पिठवहु फेरि इन्हहिं बहुडाटी ॥
त्रासत दीन्हे रामि दुहाई। सुनत सदय दियलषण छुड़ाई ॥
दशमुख कर यह पत्र हमारा। दै सँदेश बरण्यो मुख द्वारा ॥
जो निजकुशल चहसि दशमाथा। सीतहि देइ मिलौ रघुनाथा ॥
नाहिं तो चलि अब कालतुम्हारा। आवा कठिन न होइ उवारा ॥
करि प्रणाम चर लंकहि आये। दै दशमुखहि पत्र सब गाये ॥
सुनि संदेश बँचायसि पाती। सभयविहँसि बोला कुलघाती ॥
जान्यउँ मैं उनकै प्रभुताई। वृथा करहु तुम निकर बड़ाई ॥
सचिव विभीषण सम जिनकेरे। कबहुँक पूर परे तिन तेरे ॥
यहि विधि रह्यो गालसो मारी। सुनहु राम यश भव भयहारी ॥

दो० तीनि दिवस सागर निकट विनये राजिव नैन।
जब नहिं मान्यो कोपि प्रभु साध्यो शायक पैन ॥

भुजंगप्रयात छंद ॥ जबै राम शारंग लैबाण तान्यो। भयोक्रुद्ध श्रीराम सामुद्र जान्यो ॥ सभै विप्र ह्वै रत्नलै भेंट आयो। रचैं सेतु नलनील मंत्रै बतायो ॥
ये द्वउ कीश महाबल वीरा। रहत रहे ऋषि आश्रम तीरा ॥
जब कहुँ कुटी छाँड़ि ऋषिटरहीं। तब ये अमित उपद्रव करहीं ॥
शालिग्राम शिला गहि ल्याई। जलमें फेंकि देहिं अन्याई ॥
यहिते ऋषिन शाप इमि दीन्हा। इनकर पाहन परशान कीन्हा ॥
दो० जल में नहिं बुड़िहै कबहुँ यहै हेतु जियजानि।

भक्तिशिरोमणि लङ्काकाण्ड ॥

॥ छप्पै ॥ जै शिव सुखद सुजान सदय प्रणतारति मोचन । कृपासिंधु सुखधाम अमल पंकज दल लोचन ॥ उमारमण दुखदमन शमन त्रयताप सुरेशं । प्रणत कल्पतरु नाम नमत वाँछित प्रदवेशं ॥ जै जै महेश सेवत सुलभ शरणागत वत्सल प्रबल । नित भाग्यवंत वन्दन करत शिव पदपंकज रज अमल ॥

दो० गुरुपद कमल प्रणाम करि सिय रघुवीर मनाय ।
भाग्यवन्त श्रीराम यश बरणौं सब सुखदाय ॥
तब नलनीलहि बोलिकै कह्यो भानुकुल केतु ।
जलनिधि पारहि जानहित रचहुवेगि दृढ़ सेतु ॥
सुनि निदेश मर्कट विपुल चहुँदिशि चले सुखेन ।
लागे गिरिगण आनि बहु नलनीलहि ले देन ॥
प्रभुप्रताप अतिशय सुदृढ़ रचेन्हि ते सेतु बनाय ।
हर्षे लखि रचना ललित सानुज श्रीरघुराय ॥
सो० शिवस्वरूप सुखधाम थाप्यो तहँ रघुवंशमणि ।
रामेश्वर इति नाम कहि वरण्यो महिमा अमित ॥

इनकर दरशन लोग जेकरिहैं जगमहँ सुजन ।
ते तजिकै सब शोग बसिहैं समपुर जायकै ॥
यहिविधि अमित महातम गाई । कहेउ कृपानिधि सबहिं सुनाई ॥
पुनि रघुवीर रजायसु पाई । चलेउभालु कपि कटक बजाई ॥
कउ जलचरन्ह उपरचढ़ि जाहीं । कउ मगसेतु कऊ नभमाही ॥
कौतुक देखि मुदित रघुराई । सादर शिवपद शीशनवाई ॥
अनुज सहित प्रभुकीन्ह पयाना । भये सगुन सुन्दरशुभ नाना ॥
दो॰ सेन सहित रघुबंशमणि उतरि बारिनिधि पार ।
डेरा कीन्ह्यो जायकै हरण अखिल भवभार ॥
दशमुख सुन्यो पार तरि आये । सहित सेन कोशलै नृपजाये ॥
व्याकुल मनमहँ करत विचारा । गयउ भवन कुल विटप कुठारा ॥
तब मयसुता जाय पगलागी । बोली बचन परम अनुरागी ॥
परिहरि क्रोध नाथ ममबानी । करहुश्रवण हित आपन जानी ॥
हरिगीतिका छन्द ॥ नाथतजि रघुनाथ सों सब बैर नावहु माथही । लयदेहु सादर जाय सिय परिपाय करिपुट हाथही ॥ श्रीराम करुणासिंधु आरतबन्धु जनरक्षक सदा । अवलोकि क्षमिहैं शरण निज अपराध पिय कीन्ह्यो यदा ॥
दो॰ मधु मुर कैटभ से सुभट जिनमारे रणजीति ।
तिनकहँ जनि मानुष गनहु मानहु वचन प्रतीति ॥
सवैया ॥ रामकि वाम जुआन्यो चोराइ बसाहिहु सो पिय बैर महाहै । जालगि क्षीरसमुद्र मथ्यो यह तुच्छ त्वया गढ़लंक कहाहै ॥ सीयस्वयम्बर क्यों न बर्यो यह पौरुषका तब तौन रहाहै । जानि परै युतवंश तुम्हें अब चाहत काल कराल गहाहै ॥ तारक छन्द ॥ तेहिते तजिमान भजो रघुवीरै । हित आरत भञ्जन भौभय भीरै ॥

न्यहिते अहिवात रहै पिय मेरो। यश पावन पुञ्ज जगै जग तेरो॥ सुनि भाम कि बानि कही अभिमानी। डर नाहकते मनमें प्रिय मानी॥ सचराचर वश्य अहै जग मोरे। कोहि लागि प्रिया उपजा भय तेरे॥ किरीट छन्द॥ मै निज बाहुनके बलसों युग चौसठि राज कियों मनभायन। देवसुता नरनागसुता मनरूचक जे बरिविवंस लायन॥ त्यों भगवन्त न आन गन्यों भट कन्दुक ज्यों शिव शैल उठायन। देवस सो सुन भामिनि क्यों कहु जाय परो अब शत्रुके पायन॥ यहिविधि प्रियहि बहुत समुझाई। चढ़ि अट्टालक बैठ्यो जाई॥ तहं होइ अति रुचिर अखारा। देखनलाग जोइ मदमारा॥ परम प्रबल रिपु शिरपर आयो। तदपि न शोच तनेकमन लायो॥ कोटि इन्द्र सम विभव विलासा। सन्तत करत न मनमें त्रासा॥

नाराच छन्द॥ इहां श्रीराम सैनसों सुबेल आयकै रहे। बढ्यो प्रमोदजाल तत्र मालशोक के दहे॥ विलोकि रामचन्द्र चन्द ओर पूर्व सों कही। कहो निशेश माहि श्यामतासि कौन है सही॥ कह्यो सुकण्ठ भूमि छाँह शूभ भाष यों कई। हत्योजु राहु चन्द्रहीय शोभ मतातिहै स्वई॥ रच्यो जबै विरंचिहै रत्यास्य काढ़िलो लियो। निशेश सारभाग छिद्र कोइ छिद्र सोहियो॥ सुवाट तत्र व्योम छाँह पर्तं जोहि जानियो। सुश्रय रामचन्द्र आपु फेरियों सुमानियो॥

दो॰ गरल अनुज शशिकरप्रिया निज उर दीन्हो बासु। सविष निकर कर काढ़िसो जारत विरहिनि आसु॥

सो॰ सुनि प्रभु वचन बहोरि चरणकमल शिरनायकै। पवनतनय करजोरि बोल्यो अति मंजुल वचन॥

सवैया॥ हे रघुबीर कृपाकर धीर सुसेवत पीर डरो तनी खोई। अद्भुत आपु चरित्र सबै भगवन्त सुजानि न पावत कोई॥ हे प्रभु

पूरण दास त्वया शशि आस न आन लियें मनकोई। मूरति आपु बसै निधुके उर श्यामलता रघुनायक सोई॥ दोधक छन्द॥ मारुतनन्दनकी सुनि बानी। भेंति प्रसन्न श्रिराम सुजानी॥ दक्षिण ओर निहारि बहोरी। राजिवनैन कह्यो सुखबोरी॥

दो० हेलङ्केश्वर देखु यह हैका दक्षिणओर।
घनइव गरजत होतजनु उपलवृष्टि अतिघोर॥

तब लङ्केश कह्यो सब हाला। दशमुखकरअतिविभवविशाला॥ सुनि प्रभु विहसि नराच चलायो। छत्र मुकुट ताटङ्क गिरायो॥ रावण सभा चकित रहिगयऊ। होत महा यह असगुन भयऊ॥ बोला शीश गिरे भल जाको। खसे मुकुट कसअनभल ताको॥

दो० यहिविधिकहि सवसन कहेउ करहु जाय गृह शैन।
समय पाय मन्दोदरी बोली भरि जल नैन॥

सवैया॥ पति मानहु बात कही हमरी रघुवीर सों दूरि विरोध करौ। जनि मानुप जानि तिन्हैं मनमें वश मोह न यो हठ आनि धरौ। सचराचर व्यापक ब्रह्म उन्हें भगवन्त बिचारि सुहित्त सरौ। प्रभु मोहिंसमेत सुलै सियको रघुवीरकें पायन जाय परौ॥ होरी॥ पिय मानो कही मम बात सही रघुवीरसों रारि रचौना॥ आदिपुरुष अलखित गति जाकी बूझि प्रभाउ परौना। नेतिनेति ज्यहि वेद पुकारत पावत पार हरौना॥ सकलसुख मंगल भौना॥ शंकरचाप कठोर महा अति विदित भुवन तिहुँ जौना। राजसभा रघुनन्दन तोरयो कमलनाल सम तौना॥ कहा तुम वाण रहौना॥ बालि महाबलशालि रह्योहै प्रतिभट जासु कतौना। एकहि वाण प्राण तेहि लीन्हे छल बल एक चलौना॥ तुम्हें किय कांखमें जौना॥ जाको दूत एक पुर आयो कीन्हो सबहि खलौना। जारिकै लंक

रच्यो होरी क्यहि घरघर कौन सुगौना। रह्यो तवै है कत मौना॥ यों भगवन्त कहत मंदोदरि सुनहु तौ यदै श्रौना। सीता देइ मिलौ रघुनाथै नाहि तौ सिरन सचौना॥ भागि तिहुँलोक बचौना॥

दो० मंदोदरी वचन सुनि विहँसि कह्यो अतिमन्द॥ अहो मोह ममता प्रबल कौन परयो त्यहि फन्द॥

सवैया॥ औगुण आठ सदा निवसे उर नारिन के कविवृन्द गाया। साहस भै अविवेक अशौच असत्य अदै अरु चंचल माया॥ तौ रिपु रूप कराल महा प्रिय गाय हनै अति भै उपजाया॥ सो सहजे वश मोहि प्रिया सब जानि प्रसाद त्वया अब पाया॥

दो० यहि विस प्रभुता अमित मम कीन्हेसि प्रिया बखान। तुम समान त्रातु त्रिय जनयी जग तहि आन॥

असकहि सो शठ सोवन लागा। मंदोदरी हृदय दुखजागा॥ काल विवश प्रिय प्रति बौरानी। सूझि परै कछु लाभ न हानी॥ प्रात भगट दशकन्धर जागा। गयउ सभा बैठि अबुध अभागा॥ लागो किन्नर गुण गण गावन। बैठ अशंक लंकपति रावन॥

दो० मित्रभाव चाहै भजै कै भजै अरिभाव। राम मिलन संशय नहीं भाग्यवन्त अतिराव॥

॥ इति श्रीमद्भगवन्तसिंह विरचिते श्रीरामचन्द्र सुयशतरङ्गिण्यां लङ्काकाण्डे श्रीरामचन्द्रसुवेलागमनवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १॥

॥ सवैया॥ करुणालय पालय दीनजनं अमदालय घालय शोक लदा। यश भावन जावन आवन त्यों रिपुरावन दावन वेदवदा॥ खल खण्डन मण्डन भूमि अखण्ड अखण्ड प्रताप अगण्य प्रदा। पद वन्दन हों भगवन्त करो रत जानकि जानकिनाथ सदा॥

दो० इहाँ प्रात रघुवंशमणि बोला सचिव बुलाय।

॥ नारि ॥ कहहुवेगि का करिय कह जामवन्त शिरनाय ॥ छं ॥ ॥ जामवन्त सवैया ॥ हे रघुवीर कृपा सुखसिंधु सुआरतबन्धु दया उरधारै ॥ नीति निशानी सुजान ।शिरोमणि कीरति पुञ्ज सुछन्द पुकारे ॥ जानत हो सब पूंछत मोहिं सुमंत्र कहौं निज बुद्धनुसारे । जो भगवन्त सुभाव मनै प्रभु दूत पठाइय वालिकुमारे ॥ रामसवैया ॥ वालितनय बलबुद्धि निलै मम काज आजु सु लंकहि जावो । रावन देव सतावन सो कहि पावन धर्म हिये दरशावो ॥ हौ अतिआतुर तात तुम्हें बहुभांति कहा कहिके समुझावो। काज हमार हुवे हित तासु सो दे उपदेशन आतुर आवो ॥ प्लवंगमछंद ॥ हे रघुवीर सुसिद्धि स्वयं तव काजहै । दीन्हियउ आदर जानि सुसेवक आजहै ॥ वंदि कृपानिधि पायँ शिरायसु राखिकै । अंगद कीन पयान सु जय जय भाखिकै ॥ त्रोटकछंद ॥ पुरपैठत रावणपुत्र मिल्यो । कपि कौन कहां इत जात चल्यो ॥ हम दूत अहैं रघुनायकके । त्रिशिरा खर दूषण हायकके ॥ पितु आन्यउ वाम जिन्हैं किस्वई । तव फूफुहिं कीन्ह कुरूप दई ॥ सुनि लात उठायउ अंगदको । पटक्यो गहि पांव तवै मदको ॥ नारि ॥ चौ ॥ यह कौतुक बिलोकि चुपसाधी । जहँतहँ चले भागि अपराधी ॥ कोलाहल पुर भयउ अपारा । आवा कीश नगर ज्यहिंजारा ॥ परम त्रास उपजा सबकहीं । विनु पूंछे कहि मारग देहीं ॥ यहि विधि जाय वालिसुतबंका । रावण द्वार अड्यो निरशंका ॥ ॥ दो ॥ तुरत निशाचर एक तब पठयो रावण तीर ॥ । ॥ छ ॥ जाय कहो तेरे निकट आयो कपि यकबीर ॥ छं ॥ छ ॥

दूततोमरछंद ॥ सुनियो सु निसिचरराज । यकदूत श्रीरघुराज ॥ कर आपुके दरवार । पर आइयो बलिभार ॥ रावण ॥ कपि वेगि ला-

वहु जाय। तकिये कहांकर आय॥ सुनि बोलि निशिचर कीश। लैगो जहां दशशीश॥ रावण-दोहा॥ रे बानर कहु कौनतैं कहा ह्वै तव नाम। कौन पठायो है इहां कहु आयेंक्यहि काम॥ अंगदसवैया॥ मै रघुवीर को दूत दशानन अंगद नामहै वानर जाती। श्रीरघुवीर पठायो हमे इत रक्षण हेतु तुम्हारा कुलिश्राती। जो तजि मान भजे भगवान अयान चहे निज जो कुशलाती। नाहिं तो चाहत होन दशा तब दूषण बालि कि भै ज्यहिभांती॥ रावण सवैया॥ कौन विपत्ति परी कहु मोहिं जु आयसि त्रातु करै शठमोरी। मैं वहि मानुष काह भजौं सचराचर मोहिं रह्यो कर जोरी॥ मोसिम को भगवन्त बली प्रभुता ज्यहि जाहिर है नहिं थोरी। अंगद बात विचारि कहै नहिं जानि परै तव बुद्धि मै मोरी॥ अंगदसवैया॥ रेमतिमंद बकै कस व्यर्थ न सूझत नेकु तुझे बशमोहै। पूरणब्रह्म चराचर व्यापक धारकभार मही करजोहै॥ सेवत देव अजादि यदा भगवन्त जु प्राण सदाशिव कोहै। जो रजफंद त्रिलोक बँध्यो दश-कंधर अंध्र क्यों नर सोहै॥

दो०॥ तासु नारि हरि आनि शठ क्यों रवैहै सुखशैन। परिहै यह फल जानि तब जबा छुटि हैं शरपैन॥ रावण॥ कहु कौन को बालक अंगद तै यहि भांतिन जो बदि बोलतहै। भगवन्त अशङ्क न शङ्क धरै मनहिंसन माहिं कलोलत है॥ हमसो भट तिन्हि तपस्विन को कहि पुञ्ज प्रभावहि खोलत है। कत चाहत जात तुकाल मुखे शठ हासन क्यों नहिं डोलतहै॥

दो०॥ महिंसमान मोधाप्रबल जनम्यो जग नहिंआत।

स्यहि आयो अङ्गद कहा नरकर करसि वखान ॥

अंगद कवित्त ॥ वालि वलशालि जो प्रसिद्ध है सुभटलोक जानतहो ताहि तुम रह्यो जाकी कांखही ॥ ताहीकर वालकहौं अंगद श्रिराम दूत प्रभुको सुवल पाय वांत वंढि भाखही ॥ कीन्ह्योहैविभीषण अनाथ लंकनाथ जौन सोई रघुनाथ चालि हेरें किन आंखही । आश्चर्यवन्त कहौं सत्य नातरु करालकाल आयो दशभाल तव ताते वढ़ि भाखही ॥ रावण त्रोटकछन्द ॥ कहु अंगद है वह वालिकहां ॥ अगद ॥ दशग्रीव सन्देस्यउ जाय जहां ॥ रघुवीर विरोध किये गति ह्वै ॥ वरणी स्वहि रावण सादर स्वै ॥ रावण सवैया ॥ अंगद वात सुसत्य वताउ लहो स्यहि वालिको वालक जायो चाहियें तासु कि ऐसि दशा भगवन्त तनै त्र्यहि तो समपायो ॥ जन्मत क्योंनि गये मरि अंगद वालिवलीकर नास धरायो ॥ जे तव तात किये हठि घात तिन्हैंकर तै शठदूत कहायो ॥

दोहा ॥ ताते ममदल लै अवहि चलि मारो द्वउ भ्रात ॥ अंगद अपने ॥ वापको लीजे वैर चुकाय ॥ अंगद गंगाधरछन्द ॥ नीचरे नीच के वंश वोलै कहा वालि ऐसो तुम्हे लाजआवै नहीं । ठानतो भेदहै मूढ मेरे मनै जोरते पौन के शैलडोलै कहीं ॥ भृत्यहै जासु ब्रह्मादि है तासु हो दास वोरे कुलै काह व्यर्थी रटै ॥ लावतो ईशमें भेद जोरे कुवुद्धे तऊना हटै मूढ़ तेरो फटै ॥ रावण गीतिका छन्द ॥ रे दुष्ट टेढे वैन तेरे आजु मैं जो साहतो ॥ सो जानतो कछु धर्म नय गमखाय तासों राहतो ॥ अंगद ॥ तव नीति धर्म सुशीलता शठ सुनी हौं हूं कान हे । परवामचोरी करत यों ही काम नाहिन आनहे ॥ सवैया ॥ कानननाक विना अनुजा निज नैनन हेरि महादुख दागी । कीन क्षमा तुम

धर्म विचारि न नेकहु लाज हियेतव लागी ॥ सो भगवन्त सुशीलता धर्म दशानन पुंजत्विया जग जागी । रामप्रताप प्रतापवली तवपायनदर्श हमो बड़भागी ॥ रावण पद्धरी छंद ॥ शठ कीश काह जल्पै तुव्यर्थ । भटि अहै कौन हमसों समर्थ ॥ ज्यहि सहित शम्भु कैलास शैल । लीन्ह्योउठाय मनप्रेम चैल ॥ अंगद बंधुछंद ॥ कौन बड़ी प्रभुता तुम कीन्हे । कीश फिरे बहु शैलन लीन्हे ॥ रावण दोहा ॥ अंगदते रे कटकमें कौन अहै अस शूर । जो मोसन करिकै समर पाय सकै कहु पूर ॥ कवित्त ॥ हीनवलनाथतव नारिके विरह आपु अनुजहु त्रासदुख दुखित विनायके । तुम शुग्रीव दोऊ कूलके विटप अहो अनुज हमार ह्वै भीरु सो सुभायके ॥ शिल्पकर्म जानै नल नील भालु जामवन्त बूढ़ोसो अत्यन्त भयो जर्जर सुभायके । भाग्यवन्त आहे कपि एकही सुभट जौन आयकै प्रथमगयो लंकही जरायकै ॥ अंगद कुण्डलिया ॥ सुनु रावण साँचीकहै जारयो पुर हनुमान । मोहि अचरज सुनि होतहै तेरो पुर वलवान ॥ तेरो पुर वलवान दह्यो किमि कीश अकेला । वीर न सो वहुचलत कह्यो ज्यहि भट अलवेला ॥ अलवेला सुग्रीवकर सो धावन प्राची अहै । खवरिलेन पठयो हमैं सुनु रावण साँचीकहै ॥ सही वचन तैं जो कही मोहिं न सुनि कछु क्षोभ । कोउन हमरे कटक अस तोसन लड़िलहे शोभ ॥ तोसन लड़िलहे शोभ वधे मेढ़ुक मृगराई । कहेन कोउ भलताहि हवे विमि त्यहि रघुराई ॥ रघुराइहि लघुता परम समुझि न त्वहि मारन त्रिही । तदपि रोष रावण कठिन क्षत्रिज्याति करै है सही ॥

दो० ताते मर्म सिख मानिकै छोड़ि सकल फरफन्द ।

नीच सादर है ॥ श्रीजानकी परुपार्थन रघुचन्द्र ॥ रावण सवैया ॥ है कपिके गुण एक बड़ो बहु यत्न करै अतिपालक काजै । धन्य सु साहब हेत जहाँ तहँ नीचत जो करि लागन लाजै ॥ त्यों भगवन्त सुसाहब को नित नाचि सुकूदिकै कारजु साजै । अंगद जाति स्वयं प्रभु संक कहै गुण स्वामि न क्यों इमि आजै ॥ अंगद कवित्त ॥ तेरी गुणग्राहता समीरसुत सत्य मोहिं नीके के सुनायी जाय राघव समाज है । कानन उजारि सुत मारि पुर जारे तव तदपि न तासु कछु कीन्हे तू अकाज है ॥ कह्यो हनूमान सो विलोके हम आनि सब साँचेहू न मारवमन तेरे रोपलाज है । भाग्यवन्त सोई तव प्रकृति विचारि भली कीन्ही अति ढीठताय तोसों हम आज है ॥ रावण इन्द्रवज्रा छन्द ॥ जोपै कुबुद्धी असि तोहिं आई । तौ तो सुताते लिय होत खाई ॥ अंगद ॥ खायो पिताको अब तातवीर्हि । पै बूझि आयो कछु आजु मोहीं ॥ सवैया ॥ बालि महा बलशालि रह्यो यश पावन पुंज जगो जग जाका । जासम वीर त्रिलोकन में भगवन्त नहीं हम दूसर ताका ॥ ता यश खोलन को दशकन्धर जीवत जो लगि है तु पताका । सोइ विचारि सुनै शठ रावण आजु करौं नहिं तोहिं हलाका ॥ रावण कवित्त ॥ बोलु रे सँभारि क्यों तू वानर लवार नीच मीचको सुदानि है बताउ कौन मोहिं रे । जासु त्रास कम्पित सकल लोक लोकपाल कालहू कराल व्याल कीन्ह वश्य वो हिरे ॥ होसि क्यों न आनि हौं शरण छाँड़ि वा शरण आय भगवन्त नाहु ये प्रबल बीस जो हिरे । कालिह ही सँहारिकै सबन्धु सो नृपालपुत्र बालिपुत्र कारिहौं सु वानरेश तोहिरे ॥ अंगद कवित्त ॥ आयो दूत जाको एक बैरिन अनेक बीच नीचन सँहारि गढ़ लंक गयो जारिकै । थाक्यो करि बुद्धिबल लाग्यो न उपाय एक

कपिको चरितदेखि चेज्यो सबै हारिकै ॥ सोई बल रावण विचारि मनमाहिं तब आयो सिखदैनी कहो तोसन पुकारिकै। भाग्यवन्त देहु लयो जानकी शरणजाय पाइहौ न पार रघुवीर जूसों रारिकै॥ सवैया॥ सादरलै मिथिलेशलली किन अभिरहोसि न संगहमारे। प्रभुसों क्षमवाइहों भूरि जरूरे क्रूर कसूर तिहारे॥ त्यों भगवंत विचारि लखे करि वैर उन्हे क्यहुँ पार न पारे। ईशदई बखशीश दशानन खीसकरै जनि बातके भारे॥ तेरेइकर्म सुबाहुगये मिटि तेरेइ कर्म खरादिक नासे। तेरेइकर्म मरचो सुतअक्ष सुतेरेइ कर्म जरेगृह खासे॥ तेरेइकर्म प्रधान सबै शठ तेरेइकर्म य वैरप्रकासे। खानन्वहे सुनु तोहिं दशानन तेरोइकर्म तुम्हें अब गांसे॥ [illegible] दोहा॥ ताते रावण छांड़िकै उरसि द्वैत॥ की [illegible] वास। [illegible] कर्म वचन मन कपट तजि होसि रामको दास॥ [illegible] रावण सवैया॥ जो तुमही तजि आसभयो हरिदास भलोफल कौनहे पायो। दीहिनि काल कराल मुखे त्विहि मोलिन नेकु दया उनलायो॥ क्यों बचिहौ हमसों अब आजु सलोकहु तो परलोक नशायो॥ ऐसेहि नाथ भजे हितअंगद मो कहं देन भलीसिख आयो॥ अंगद सवैया॥ रे त्रियचोर कथनरते जिन वालिबली शर एकहिमारचो॥ बीरबड़े त्रिशिराखरदूषण भागि बचे न रचेउ रणपारचो॥ तोरि शरासन सीयवरचो भृगुनंदनको जिन गर्व उतारचो। क्यों लड़ि पावहुपार तिन्हें दशकंधर वंदरसो ज्यहिहारचो॥ रावण सवैया॥ देखि डेरै द्विजगायनजे रघुनाथ अनाथहि सेवतचीन्हें। छोड़तहै परद्रव्यसदै परदार बिलोकत लाजहि लीन्हें॥ होत न है परद्रोह जिन्हें भगवन्त रतीमन धर्महि दीन्हें। ते लड़िहैं कहु मोसन क्यों वन घूमत वेष यतीकर कीन्हें॥ अंगदहरिपदछंद॥ रे रावण

वलवंत तोहिं मैंअनमें तनक न डर्तो हौं ।। रामकृपा जलपाय स्वामि कों संतत अशै विचर्तो हौ ।। त्वहिं पितुको गुनि मित्र आपने हित उपदेश उचर्तो हौं । भाग्यवंत गहु शरण रामकी याही सिखवन कर्तो हौं ॥ रावणी॥ तीनिलोक ममशरण आजुहैं हम क्यहिशरणहिं जावैंगे । का करिहैं तपसी वे मेरो साजि सेन जो आवैंगे ॥ हैहैं एक दिवस को चारा कुंभकरण छकि जावैंगे । उनकरा वैहै मृत्यु हमारो सुयश देवगण गावैंगे ॥ अंगदसवैया॥ रावणे रावण के जगमें कहु मैं जे सुने सो सुनावत तोही । एक पताल गयो वलि जीतन वांध्यानि बालकहे गृहजोही ॥ खेलहिं बालकवृन्द तहांकरि कौतुक मारहिं ते बहु ओही। त्यों भगवन्त सुदेखि सदै वलिजाय छोड़ाय दिये सुरद्रोही ॥ एक विलोकि सहस्रभुजा जलजन्तु यथा धरि धायके लीन्हयनि । कौतुकलागि गयो लै मन्दिर जाय छड़ाय पुलस्त्य रो दीन्ह्यनि॥ एकसिकोचि मृतावतहै त्वहिं वालि निजै क्यहि कांखमें कीन्ह्यनि। त्यों भगवन्त अहै इनमें कहु रावणकौन नही हम चीन्ह्यनि॥ रावण कवित्त॥ रेरे शठ कीश सुनु सोईदशशीश वीशबाहुकोप्रभाव जान शम्भुशैल जाको है जानै शिव शूरता सरोजसो उतारि शीश पूज्यों निजपाणि जायवार भूरि ताको है॥ जानै वलवाहु काल जाको दश दिग्पाल आज्ञा वर होतशाल जाके सुनि हांको है । सोई दशशीश जोकी लोकनको ईश जौन भाग्यवन्त धीर त्यों प्रसिद्ध वीरवांको है ॥ सवैया॥ जानत दिग्गजहै दशहू सुनु अंगद होंउरकी कठिनाई ॥ है मदमस्त जुरै जवजाय वेजायभिरयो तिनसो वरिआई ॥ त्यों भगवन्त सुदन्तनसों जिन कोरि करालदिये बहुताई । लागत चोट अहै उरकी रद टूटिगये स्वइ मूलक नाई॥ करि कोपजबै सुनु अंगदहौं

बलवन्त सुभाय चलौं धरणी। तब डोलतहै यहि भाँतिनसों चढ़ते गजमस्त यथा तरणी ॥ भगवन्तसु गायकहौं कहँलौं निज पौरुष की बरणै करणी। लघु बोलसि क्यों यहि रावण जासुन कीरति पुंजपरै वरणी ॥ अंगद सवैया ॥ दाहकबाहि कुठार यदा सुजसा हसबाहु अरण्य भयोहै। सागरसों परसावर जासधि बूड़ि महीपति भूरिगयो है ॥ भागिगयो ज्यहि देखत गर्व सुकीरति पुंज त्रिलोक छयो है। सो भगवन्त अहै नर क्यो महिभारहरै अवतारलयो है ॥ सुनु शठ सम मनुजहैं कैसे। सब धन्विनसम काम न जैसे ॥ नहि सुरसरि सबनदिन समाना। कामधेनु नहिं पशूसमाना ॥ सुरतरु क्यों सब तरुसम होई। दान न अन्नसरिसहै कोई ॥ नहिं पियूषसम रसहै आना। नहिं खगेश सबखगनसमाना ॥ अहिन सरिस सबहैं न अनन्ता। नहिं सबउपल यथामणिचिन्ता ॥ नहिं वैकुण्ठ सरिस सबलोका। लाभ न जसि हरिभक्ति अशोका ॥ तिमिनमनुजसम राम विचारयो। पूरणब्रह्म मनुजतनु धार्यो ॥ जासु भजनबिनु सुनु मतिमन्दा। छूट न विषय मोह भ्रमफन्दा ॥

दो॰ रामभजन बिन जो चहै भवनिधि पारहिजान।
सो मतिमंद कुभाग्य शठ पांवर परम अयान ॥

रावण सवैया ॥ बालिके वंश कुठार भयो तुम अंगद नाम धरायहु सोऊ। दीख नहीं अस जायपरै पितुघातक पायँन के तरकोऊ ॥ ज्यों भगवंत अहै जनतै प्रभु आनिमिले त्वहि तैसहिओऊ। बोलसिरे बदिकाहवृथा करिदीन द्वऊ तुमहे कुलखोऊ ॥ अंगद सवैया ॥ रावणदेखु बिचारि हिये सब नस्वररूप अहै जगजोऊ। या जगमें रहना न क्यहूँ उठिजैहहि एकदिना सबकोऊ ॥ अन्तससय कउ कामनआवत छूटत प्राणप्रिया तनु सोऊ। त्यों भगवन्त सुजानि

यही किन सेवक साहब रामको होऊ॥ रावण॥ राजदियो दशयान जिन्हैं सुनु अंगदतैं अतिवीर बतायो। छोरिलियो स्वइ भारतभाय सनारि तिन्हैं बन मारिव्यदायो॥ राखिरही नहिं राजदई पितुजानि पुभाव तबै हमपायो। ते जिति हैं कहु मोसन क्यों मम राजहि आजु जु छोरनआयो॥ अंगद भुजंगप्रयात छन्द॥ रहे क्यों मृषा मूढ़तैं मारिगाला। किये रामसों वैर ह्वै है यहाला॥ त्वया शीश ये पुंज कीशोंके आगे। परैंगे मही राम नाराचलागे॥ स्वई शीश तौं गेंदसों भालुकीशा। रव्यलैंगे सुचौगान रेवाहुबीशा॥ सुक्रुद्धैंगे श्रीराम संग्रामज्योंहीं। छुटैंगे करालाति नाराचत्योंही॥ न्नलैंगो नतो गाल ऐसो तुम्हारा। भजै जानियो क्योंन रामैउदारा॥ रावण सवैया॥ कुंभकरन्नसों भाय अहै ज्यहि पुत्र प्रसिद्ध है शक्रजितैला। मोर पराक्रम तै न सुनै सचराचर जीति धस्यो कर शैला॥ त्यों भगवन्त सुजाहिर है भट रावण देवनवृन्द सतैला। ताहिकहा सकिहैं करि रेनर बानर जन्मनके जोहरैला॥ कवित्त॥ बानरबटोरि लघु वारिधि बँधायो सेतु प्रभुता सुकौन बड़ी याही तव ईशरे। नाघहिं अनेक खग वारिधि न होहिं शूर पूरणजो बलवारि मेरे बाहु बीसरे॥ बूड़े है अपार जामे सुरनर शूर वीर पाइहैकोपार भुजबीसहु नदीशरे। भाग्यवन्त ऐसो बलवन्त दशशीश ताहि नरको प्रभाव तें सुनावै कहा कीशरे॥ तोटक छंद॥ दिगपाल भरैं ज्यहिके जल को। शठ थाह कहा त्यहिके बलको॥ बलवन्त जु होतै नाथत्वया। नवसीठ पठावत मोहिं स्त्रया॥ जरतै निज दीख कपाल जबै। विधि अंक लिखे निजभाल सबै॥ नरकेकर बाँचि सु मृत्यु तहां। विहसेउँ विधि बानि असत्य महा॥ दो० सोउनसमुझिम्वहित्रासविधि लिख्योजरठमतिमोर।

आन वीर शठहै कहा मम आगे बर जोर॥ अङ्गद सवैया॥ कौन किह्यो करतूति बड़ी तुम बारहिं बार जु मोहिं सुनायो। शैल उठाय धरयो करपै उन कौशन सो यह काज करायो॥ सागर दूत तरयो उनको धनुरेख न पै तुम नाँघन पायो। जानि परयो बलपुंज दशानन जाय जबै पर वास चुरायो॥ कुंडलिया॥ सनु रावण काटे शिरहि होत नहीं कोउ शूर। इन्द्रजालि तनु काटि सब डारै स्वकर हजूर॥ डारै स्वकर हजूर शलभ जरते चश मोहै। वहत भार खरवृन्द कहत तिनको भटकोहै॥ कोहै अधम अबुद्धि सरिस तेरे शरसावन। बकसि वृथा कत मूढ़ विवश सवके सनु रावन॥ सवैया॥ जनि रावण बात बढ़ावसिरे सुनु मैं जु कहो तजि मानसही। न पठायउ नाथ बसीठ हमै कह्यो बारहि बार पुकारि यही॥ यश सिंहहि नाहिन स्यारबधे सु विचारि सह्यो कैंटु जौन कही। दशकंठ नतौ सुख भंजनकै तब जात्यउँ लै सिय राम जही॥ सुन्दर छंद॥ प्रभु सेवक को लघु सेवक मै रजनीचर ईशतु गर्व भरेरे। अपमानहिं रामहि जो न डरो त्वहि देखत कौतुक यों सु करेरे॥ पटको महि सेनस तोहिं अबै करि चौपट तौसब गाँउ डरेरे। युवतीनस तौ सिय लैभगवन्त श्रिरामके पाँयन जाय परेरे॥ तू मदअंध दशाननरे यहि भाँतिन बैठ जु मारत गालहि। सो त्वहि देतनताय भले इन बातनको कुल घातक हालहि॥ बीस भुजा दश शीश उपारिकै मेलत मारि अबै मुख कालहि। पै भगवन्त विलम्ब यहीशठ आयसुहै नहि राम कृपालहि॥

दो० सुनु रावण मैं आजु जो करौं दशा असि तोरि।
तदपि न होवै वीरता मुयहि वधे कछु मोरि॥

सवैया॥ मारग वाम चलै नितही वश काम विमूढ़ अहे रुज

खानी। सूममहा अयशी अतिमूढ़ विरोधक वेदन विप्णुहि जानी॥ क्रोधित निर्धन पोषक अंग अघी परनिंदक जो नितठानी । त्यों भगवन्त विचारि लखे यइजीवत शवसम चौदह प्रानी॥ तोमरछंद॥ अस जानिरे त्वहि आज। नहिं मार तो निरलाज॥ सवैया॥ तोस- नरे समुझाय कहौं दशकन्धर वात विचारसिहीतें । राम विरोध न पैहहि पार सु यद्यपिहै अनपार वलीनें ॥ देखु कहाँ खरदूषण वालि सु कारक औरहु जे अनरीतें । त्योंभगवन्त सवेर अवै किन रामहिं जाय मिले दय सीतें॥रावण॥मारिकै वानरराजहिं जो त्वहिं अंगद वानरराज वनावे। फोरहिं सेतु जो सागर को म्वहिं वाँधि विभीपण भीरु पठावें॥ पूँछ दहैं रिपु अक्ष कि जो शिर सादर आय सुरुद्रहि नावे।तौ भगवन्त उन्हें सिय देउँ जो वारिधि पार द्वऊ तरि जावें॥

अङ्गद दोहा॥

लङ्कहि आजु उखारिकै देत्यों उलटि स तोहिं।
भये विभीपण राज पर याही डर अति मोहिं॥

रावण॥

सुनु शठ जिनके वलहितें वोलत वात वढ़ाय।
ऐसे मनुज निकाय नित डारत निशिचर खाय॥

छप्पै॥ तव अंगद करि कोप अवनि दोऊकर मार्‍यो। मुखभर गिर्‍यो दशास्य मुकुट भूतल शिर पार्‍यो॥ शिर धार्‍यो त्यहि क- छुक कछुक अङ्गदकर लीन्हे। भरेउ प्रभु के पास धर्‍यो पवनज प्रभु चीन्हे॥ दिनराज सरिस परकाश वर निरखि भालु कपि सुख भिये। पुनि राम विभीपण के शिरहिं स्वकर स्वई भूपित किये॥ भुजङ्गप्रयात छंद॥ उहाँ रैनिचारों से लंकेश वोला। करो वद्धरे धारिकै कीश लोला॥ उठो ओर चारो निशाचार धावो। करोहीन

मर्कट्टभू मारि खावो॥ तपस्वीन दोऊ धरौ जाय जीते। लयावो विभीषन्न ह्यां बाँधिभीते॥ अंगद॥ वके क्या वृथा मूढरे लाजछोरे। भयो है कहा सन्निपाताजु तोरे॥ कहे राम मानुष्य ते ऐसिवानी। गिरैं क्योंन जिह्वा त्वयारेभिमानी॥ गिरैंगी तुजिह्वा सही शंक नाहीं। परंतू सशीशौं के संग्राम माहीं॥ त्वया रक्तके राम नाराच प्यासे। तजौं आशतेही तुझै मूढ खासे॥ हुवे क्रोध ऐसो दसौआनतोरौं। त्वयालंक ऊपारि सामुद्र बोरौं॥

दो० गूलरफल सम लंक तव वसहु जंतु तुमबीच।
मै वानर फल खात सोइ वार न लावत नीच॥
पै प्रभु आयसुहै नही करौं स्वई गम आज।
याको फल अल्पहि दिनन पावहिगो निरलाज॥
रामप्रताप विचारि तव वालि तनै अति कोपि।
सुमिरि राम प्रण कै कठिन दीन सभा पदरोपि॥
सुनु रावण मम चरण जो सकसि आजु तैं टारि।
फिरहि राम श्री जानकी जाउँ तोहिं मैं हारि॥

रावण वसुमतीछन्द॥ गहि पद पटको। महि कपि भटको॥ संयुताछन्द॥ घननाद आदिक वीरजे। वहु मानिगे कपि तीरते॥ पद धाय अंगदको धरै। वहुभांति पौरुषसो करै॥ तोटकछन्द॥ टसकै पग वालिकुमारक ना। फिरि बैठहिं आसन मारि मना॥ नहि डोलत अंगदको पगयों। नर कामिनवैन सती मनज्यों॥ कवित्त॥ हाल्यो गिरि मेरु और हाल्यो गिरिअस्तशृंग हाल्यो उदयाद्रिशैल मंदर विहाल्यो है। हाल्यो शिवशैल और सातहू पताल हाल्यो हाल्यो सव लोक सप्त सागर उछाल्यो है॥ हाल्यो अहिकच्छप वराहहू विशेषिहाल्यो हाल्यो दशौ दिग्गज विहायधीर चा-

ल्यो है। भाग्यवंत हाल्यो अति लंक दशकंठ हाल्यो वालिसुत वीर को न पगनेकु हाल्यो है॥ सवैया॥ वीरबड़े घननादसो भूरि सुभट्टन में जिनलीक जहां है। हारि उपाय गयेकरि कै बलकाहुन आयउ काम तहां है॥ डोलत यों न मनो विधना प्रथमै रचिभूतल संग रहा है। त्यों भगवन्त टरै पग क्यों कपि रामको आम प्रताप महाहै॥ अंगद दोहा॥

रे रावण जिन भुजनको, वरणे वहुत प्रभाउ।
सो भुज रहे लुकाय क्यों, आय न टारत पांउ॥

तोटकछन्द॥ तव आपहि कोपि उठ्यो वदहे। झटजाय गह्यो कपिको पदहे॥ गहतै पद वालिकुमार कही। पटुतायुत वात समै जुचही॥ अंगद सवैया॥ मतिमंद वुझाय कह्यो हितमैं अथमैनहि कीन्ह्यसि कान त्वया। नहिं मानत वातनसो वहहै शठ लातनको नरनीच ज्वया॥ अब आयसि आखिर कर्म्म वही खल डारेसि तैं सबलाजध्वया। भगवंतपरे किनरामके पाँवपरेपदहौं न उवारत्वया॥

दो० सुनि अंगदके वचन इमि ह्वै लज्जित सुरआरि।
बैठ सिहासन भूमिकै जनु सब संपति हारि॥
तृणहि करत जो वज्रसम वज्रहि करितृण देत।
तासु दूत प्रण क्यों टरै समुझो सुमति सचेत॥
अंगद रावण मान मथि कहि प्रभु कीरति गाथ।
भागवन्त श्रीराम पद आय नवायो माथ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिद्धवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेअंगदरावणसम्वादवर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय २॥

दो० वन्दो श्रीशंकर चरण कमल अमल भवपोत।
जिनकी कृपा कटाक्षते उदय ज्ञानरवि होत॥

साँझ जानि रावण वहां गयो, भवन सकुचाय।
मयतनया पुनि आय त्यहि बहु विधि कहा बुझाय॥
सो शठ कीन नेकु नहि कानै। काल विवश कैसे हित मानै॥
होत प्रात उठि सभा सिधावा। बैठ सिंहासन भय बिसरावा॥
इहाँ राम सब सचिव बुलाई। आयसु दीन चढहु गढ धाई॥
सुनि लंकेश ऋक्षेश कपीशा। चारि अनी कीन्हे दल कीशा॥
चहुँ दिशिते करिकै अति शोरा। लीन्हेनि घेरि लंक गढ घोरा॥
पूरुब दिशि नलनील सिधाये। दक्षिण द्वार बालि नृप जाये॥
मारुत सुत पश्चिम रणधीरा। सानुज उतर रहे रघुबीरा॥
वानर राज बिभीषण योधा। चहुँ दिशि रहे लेत पुर शोधा॥
यहि विधि भालु कीश भटबंका। लीन्हेनि घेरि लंक दै हंका॥
जैति राम जै लक्ष्मण बोलहि। चहुँदिशि लिये शैल द्रुम डोलहिं॥
दो० सुन्यो दशानन कपिन पुर घेलो चहुँ दुवार।
अति रिस लीन्हेउ बोलि तब निशिचर चमू अपार॥
कहेउ जाय कपि भालु सब गहि गहि डारहु खाय।
यों नहि मनिहैं पाय मुख चढे नीच शिर आय॥
आयसु पाय चले तमचारी। शूल कृपाण परिघ वरधारी॥
पूरुब द्वार प्रहस्त पठावा। दक्षिण सुभट महोदर धावा॥
मेघनाद पश्चिम दरवाजा। उत्तर रहेउ दशानन राजा॥
विरूपाक्ष मधि देशहि राखा। लीन्हे शोध रहे मृगशाखा॥
नारान्तकहि कह्यो चहुँओरा। लीन्हे शोध रह्यो बरजोरा॥
यहि विधि चहुँ दिशि सैन पठाई। दीन्हेसि युद्ध निशान बजाई॥
दो० उतते रजनीचर चमू उतते वानर रीछ।
चले धाय जय जय करत युगुल जैतिकी ईछ॥

सवैया ॥ इतते करि हूह निशाचर जूह समूह सुसंयुग पै जु-टिगे । उतते कपि ऋक्ष चमूशर तीव्र सुवेल शरासनते छुटिगे ॥ तरु तोमर शैल त्रिशूल पवाँरत मारत घाय घने लुटिगे। भगवन्त सुजयजय कै रण में दल रावण राम दुऊ जुटिगे ॥ दुहुँओरते मारु कराल परी करि अद्भुत वीर रहे करणी। ललकारि प्रचारि भिरैं भट झुण्ड सुखंडित मुण्ड परैं धरणी ॥ कहरैं भट घायल पुंजपरे बहिशो-णित जाल चलींतरणी। भगवन्त महारण रोरमच्यो गति कौन कहै कवि सो वरणी ॥ अतिक्रुद्ध सो बानर भालु बली रजनीचर सैनमे धायरले । भटकोटिन कोटि चकोटि बकोटन डारिकै भू धरिपायँ मले ॥ भय व्याकुल भूरि निशाचर नीच सुपायकै बीच परायचले। भगवन्त श्रिरामप्रताप प्लवंगन आरिनवंगन मारिदले ॥ छन्द भुजंगप्रयात ॥ चली यातुधानावली भागि कैसे। बली पौनके जो-रते मेघ जैसे ॥ परयो लंक हाहा भयो शोरभारी। रुदैं बालभामा सु हाहापुकारी ॥ दियें रावणै गारि ते खोरिडारी। जुकर्तें निलै राज मौतै हँकारी ॥ विचलते सुन्यो रावणासैन ज्योही। कह्यो टेरिकै यातुधानो से त्योही ॥ जुसंग्रामते पावँ पाछेक फेरयो। सही बद्ध ताको भयो पानि मेरयो ॥ फिरे मानिकै ग्लानि तौ रैनिचारी। दुहूँ ओरते मर्ण सोंचो बिचारी ॥ सुलै अस्त्र शस्त्रादि नानाप्रकारे। महा युद्धकै भालु कीशोंकोमारे ॥ त्रसे भालुकीशालि भागे पुकारी। सकै एक एकैन संभारकारी ॥ रह्यो द्वारपच्छे हनूमानियोधा। करै तत्र संग्राम शक्रारि क्रोधा ॥ टुटै द्वारना सो जुटे रैनिचारी। महा युद्धकुद्धे दुऊवीरभारी ॥ फिरी सैन्य कीशो किसी थूयपायो। भयो क्रोध अत्यन्तही वायुजायो ॥ प्रलयकालसों गर्जिदै हाँकधायो। फलंकामे एकै सुलंकापै आयो ॥ लियो शैल उत्पाटि तौ एकभारी।

हन्यो। धायकै मेघनादै प्रचारी॥विभंज्यो रथै सारथी शत्रुपारयो।महा क्रुद्धकै तासुही लातमारयो ॥ दुजे सूत वेहालसो देखिधायो। छि-ती स्यन्दनै घालि लंकाहि लायो॥ हनूमान तौ क्रोध कैकै अपारा। पिल्यो फेरिकै वीर लंका मझारा॥ सवैया॥ अंगद बातसुन्यो गढपै चढि बातकोजात अकेलगयो है। त्यो भगवन्त सुवीर वड़ो तहँ आवत एक फलंकभयो है॥ युद्धसों क्रुद्धभगे द्वउवीर सँभारि श्रि-रामभत।प लयो है। रावण भौनचढे द्वउ धाय कहाँ हय रावण हाँक दयो है॥ श्रीरघुवीर कि जयजय हाँकि लगे उतपात करै द्वउवंदर। दीनदहाय सकलसनिलै अवलोकि सभीतभयो दशकन्धर॥ हाय सुहायपरयो गढ़लंक जुभागि दुरे बहुहै गिरिकन्दर। त्यों भगवन्त कहै छवि क्यों जनु क्षुब्धित सिन्धुमथै इइमन्दर॥ हरिगीतिका छन्द॥ पुर नारिवृन्द पुकारि रोवहि हाय अवहै है कहा।उतपातके यहरुप दोऊ कीशभट आये महा॥ बलविपुल इनको विदित घर घर सुभट नहि इनसो जहाँ। अव कुशल नाहिन अहय जीवन भागिकहु वचिये कहाँ॥

दो० कपिलीलाकरि तिनहि वहु डरपावहि द्वउघेरि।
रामनाम कहवाय मुख जानदेहि तव फेरि॥

कवित्त॥ लीन्हे हेमखम्भन उखारि पुनि धारिकर दोऊ कपि धीरपरे कूदि रिपुदलमे। करि हरिनाद मनुजादन झपटिधारि प-टकन भूमिते फुटत वेलफलमे॥ फेकत लँगूरनै लपेटि भट कोटि कोटि फटकत ठौरठौर परे जलथलमे। भाग्यवन्त वीर रणधीर त्यो युगुल कीश दीन्हे बिचलाय रिपुदल एकपलमे॥

दो० रिपु दल मारि विहाल करि अंगद अरु हनुमन्त।
साँझ जानि आये तड़कि राजत जहँ भगवन्त।

गये जानि अंगद हनू फिरे सकल कपि भालु ।
चितय कृपा दृग श्रम विगत कीन्हे राम कृपालु ॥

छप्पै ॥ फिरे भालु कपि जानि बहुरि निशिचर गण धाये । इतते कपिन विलोकि पलटि रण सन्मुख आये ॥ द्वउदल प्रबल प्रचारि सुभट महि संयुग जूटे । राम कृपा बल पाय कपिन निशिचरदल कूटे ॥ निज हारि हेरि कायादि भट रचेन्हि असुर माया विकट । क्षण माहिं भयो अँधियार अति सूझन काहू कछु निकट ॥ पुनि बरषै बहु लागि दुष्ट रुधिरोपल छारा । देखि निविड़तम पुंज भयो कपि दल खम्भारा ॥ जानि राम सब मर्म कह्यो अंगद हनुमाना । सुनत चले अति क्रुद्ध सुभट दोऊ बलवाना ॥ पुनि राम साजि शायक बृहद मार्यो रिपु दल दिशि तरल । मिटिगई तुरत माया न तम भवप्रकाश हरषे सकल ॥ कवित्त ॥ पायके प्रकाश कपि ऋक्षन विगत त्रास धाये धुकि हरषि सुगिरितरु तूरिकै । हाँक हनूमान युवराजकी सुनत घोर भागे भटकौणप समर मुहँ मूरिकै ॥ भाग्य-वन्त जैतिजै पुकारि कपि दौरि धारि पटकि पछारि महि डारे बहु धूरिकै । मारिकै हटाय रिपु दल विचलाय कीश आये रघुनाथ पै सकल मोद पूरिकै ॥

दो० निशा जानि चारिउ अनी आये जहँ रघुवीर ।
रामचन्द्र मुखचन्द्र लखि भये विगत श्रम पीर ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे लङ्काकाण्डेप्रथमयुद्धकपिदलजयप्राप्तवर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ३ ॥

दो० भवनिधि पारहि जानको बोहित जाको नाम ।
भाग्यवन्त वन्दन करौं करि प्रणाम स्वइ राम ॥
वहाँ सचिव सब बोलिकै पूछ्यो निशिचर नाह ।

अर्द्धकटक मार्‍यो कपिन कहहु करी अब काह ॥
माल्यवन्त तब वचन मृदु बोला परम सुजान।
तात कहौ मत मैं कछुक करहु जानि हितकान ॥
जबते श्रीमत जानकी हरिआन्यो हठितात।
तबते तुम्हरी एक नहिं परी पूरि कहुँ बात ॥
अबही भललै जानकिहि जाइ देहु रघुनाथ।
जो चाहौ आपन कुशल कहौ सत्य दशमाथ ॥
सुनि रिसाय रावण कह्यो कहा कहसि रे नीच।
करिया मुखकरि जाहि उठि नतुआयो तव मीच ॥
कालविवश त्यहि जानिसो चला कहत दुरवाद।
सन्मुखआइ सदर्प तब बोला वच घननाद ॥
प्रात पराक्रम तात मम देख्यो करिहौ जौन।
रिपु सन्मुख अबही कहा कहौ बरणि क्रमतौन ॥
सो० सुनि सुत वचन भरोस पायो मन रावण परम।
होत प्रात करि रोस लागि गये कपि द्वार चहुँ ॥

तोमर छन्द ॥ करि कोप तौ कपि धाय। गढ घेरि लीन्हेनि आय ॥ इतते तमीचर धारि। लिय दौरि क्रुद्धि प्रचारि ॥ अति होन लाग्यउ मार। दुहुँ ओरते चहुँद्वार॥ बहुभाँति आयुध पानि। गहि सौंह मारत तानि ॥ कपि ऋक्ष बीर प्रचण्ड। गहि वृक्ष शैल निखण्ड ॥ रिपु सैन ऊपर डारि। रघुबीर जैति पुकारि ॥ गयपेलि निशिचर सैन। कपि भालु धे बलऐन ॥ गहि पाँव कोटिन कोटि। पटके महीखल खोटि ॥ भय यातुधान बिहाल। सुनि मेघनादय हाल ॥ चढियान लै सँग नीच। रण आइगो त्यहि बीच ॥ दय हाँक गर्ज्यउ घोर। कहँ दोउ भूप किशोर ॥ कहँ नील औ नलवीर

शुसग्रीव है कहँ भीर ॥ कहँ वालि पुत्र लवार । कहँ वीर पौन कुमार ॥ कहँ है विभीषण द्रोहि । हठि आजु मारउँ ओहि ॥ असहाँकि सर्प समान । वहु लाग छाँड़न वान ॥ लखि ठौर ठौरन व्याल । चले भागि वानरभाल ॥ तव देखि भाजत कीस । हनुमंतकै अति रीस ॥ उतपाटि पर्वत एक । त्यहि धाय मारयउ नेक ॥ गिरि देखि आवत सोइ । रथ सारथी दिय खोइ ॥ भजि आपु व्योम लुकान । हनुमान मर्महिजान ॥ इतते प्रचारत वीर । नहिं आवसो कपितीर ॥ रघुवीरपै पुनि जाय । कटुवैन दुष्ट सुनाय ॥ वहु अस्त्रशस्त्र प्रचारि । रह्यो व्योमते शिरडारि ॥ रघुवीर आयुध तासु । किय काटि तिलसों आसु ॥ अवलोकि पुंजप्रताप । निरलज्ज लज्यउ आप ॥

दो० ह्वै लज्जित घननाद तव मायहि कीन प्रकाश ।
वरषैलाग अँगार वहु शठ चढिजाय अकाश ॥
जलधारा महिते विपुल भये प्रकट चहुँओर ।
रटहिं पिशाच पिशाचिनी मारु काटु धुनिघोर ॥
रक्त पीप विष्ठा उपल छार हाड़ कचधूरि ।
वरषिकीन अँधियार अति सूझ न कछु ढिगदूरि ॥

त्रोटक छन्द ॥ अति व्याकुल वानर भालुभये । तजि जीवन की सव आशदये ॥ करुणाकर राम सुजानहिये । मुसकाय शरासन वाणलिये ॥ शर एकहि मायहि कीनजुदै । तमपुंज यथा दिनराज उदै ॥ कृपया दृग वानर भालुलखे । सव त्रास विनाशहिये हरखे ॥ हरिगीतिका छन्द ॥ तव राम आयसुपाय लक्ष्मण अंगदादिक कपिभले । लय साथ कटिकसि माथ धनुशर हाथ रण सन्मुखचले ॥ तन गौर वाहुविशाल लोचनलाल नखशिख शोभहीं । भगवन्त अंग अनन्त छवि लखि कामकोटिन लोभहीं ॥

दो० उतते रावण सुभट बहु दीन्हे बोलि पठाय।
अस्त्रशस्त्रले विविधते सन्मुख पहुँचे आय॥
भूधर नख विटपायुधन धरि इत वानर भालु।
धाय लिये सन्मुख हुवन कहि जे रामकृपालु॥

नाराचछंद॥ भिरे प्रचारि वीरत्यो यथा सुयोग पायकै। अनेक अस्त्र शस्त्र डारि दीनमारि घायकै॥ सुमारि मुष्टिकानलात घात दांत काटही। प्रवल्ल भालु कीशधारि मारिफेरि डाटही॥ सुमारु मारु काटु काटु धारु धारुबोलही। महाबली सुराक्षसालि सोहते न डोलही॥ परे अनेक भूमिरुंड हीनमुंड धावही। सुजैति जै पुकारि मुंड खान आस्य वावही॥ अनेक वीर घायले सुभांतियो विराजते। मनो पलास वृक्ष फूलि जालशोभसाजते॥ रहेअनंत मेघनाद क्रुद्ध युद्ध कैदऊ। युगुल्लवीर वांकुड़े न पावजैति त्यों कऊ॥ करैअनेकभांति छल्ल वल्ल रैनिचारका। भयो सुक्रोधवंततो अनंत अंत कारका॥ दल्योरथै तुरंग सूत मारिपुंज बाणनै। कियो विकल्लशेप भूरि यातुधान प्राणनै॥

दो० मेघनाद तौ विकल ह्वै मनमहँ कीन विचार।
परम सुभट यह लेन अब चाहत प्राण हमार॥
तब सकोप रावण सुवन वीरघातिनी सांगि।
हनि मारेसि लच्मण हृदय तेजपुंज सो लागि॥

लागत शक्ति परेउ महिवीरा। मुर्च्छितलखि आवा चलितीरा॥
हारे असुर उठाय अशेषा। जगदाधार उठै किमि शेषा॥
तब खिसियाय चल्यो बलवंता। त्यहि अवसर आयो हनुमंता॥
ताहि देखि उपजा अतिक्रोधा। मास्यो हनि मुष्टिक कपियोधा॥
परेउ भूमिकरि चरण प्रहारा। गहिपद बहुरि लंकपर डारा॥

सांझ जानि हनुमान अनंता। लाये जहँ राजत भगवंता॥
अनुज देखि प्रभु अति दुखमाना। तव करजोरि कह्यो हनुमाना॥
नाथ लपणहित शोच न कीजे। सोइविधिकरउँजोआयसुदीजे॥

कवित्त॥ कहियो निशेश गारि पट इव राघवेश अमृतचुवाय मुखज्यावों अहिनाथ ही। कहियो विवुध वैद्य आनौ गहि मारि मौत मेटौं दुख सबके सकल एक साथही॥ कहियो पतालपेलि दलि नाग अमीकुण्ड आनौ यहि ठांवसो उपारि निजहाथही। कहियो सुतनु त्यागि उठौं जागि घटशेष आयसु जु होयकरौं कृपा पाथ नाथही॥

सुनि हनुमान वचन रघुवीरा। हरपे सहित भालु कपिभीरा॥
जामवन्त तब कह सुनु रामा। वैद्य सुखेन रहत अरिग्रामा॥
पठवहु कोउ तेहि लाव तुरन्ता। आयसुपाय चल्यो हनुमन्ता॥
भवनसमेत सुखेनहि लायो। प्रभुपद वंदि सो वचनसुनायो॥

दो० द्रोणाचल ऊपर ललित अहै सजीवनिमूरि।
जाहु पवनसुत आपही लावहु वेगिहि भूरि॥
रामचरण उर राखिकै प्रबल प्रभंजन जात।
चल्यो सजीवनि हेतु पुनि सुमिरि रामजगत्रात॥
हालपाय यह रावणा कालनेमि पहँ जाय।
पठयो वाग्नि सो कपटमुनि वैठ पंथ त्यहि आय॥

छप्पै॥ मारुतसुत मग जात लख्यो आश्रम शुभ सोई। कीन्ह्यो मन अनुमान अहैमुनिवर इत कोई॥ याच्यो जल ढिगजाय दीन सरसुभंग वताई। पैठत पकस्यो पांव धाय मकरी दुखदाई॥ हनुमान ताहि मास्योतुरत गई गगनकहि मुनिमरम। पुनि असुरलँगूर लपेटि महिपटकि चल्यो हर्षित परम॥ कवित्त॥ देखि शैल सुखमा विला

समान भांति भांति औषधी सुचारु यत्र मोदको निधानहै। रंग रंग वृक्षनललित वर वेलि फैलि छवि को सकेलि मैनतानि ज्यों वितान है॥ डोलत समीरत्यों त्रिविध मंजु कोकिलालि बोलत भ्रमरमाल जालकर गानहै। भाग्यवंत हेरिवहु बुद्धिपैन मूरितव सहसा उपारि द्रोण लीन्ह्यो हनुमानहै॥

दो० गहि गिरि रातिहि गगनपथ चल्यो वेगि कपिधाय।
अवधपुरी ऊपर जवहिं पहुँच्यो आय हहाय॥

वसंततिलका छन्द ॥ देख्यो सुव्योम पथ भारतदुष्ट जानी। मार्यो विहीनफर शायक तीव्रतानी॥ लाग्यो नराच परिमुर्च्छित राम भाख्यो। द्रोणाद्रि व्योम पवमान सुसाधि राख्यो॥ इंद्रवज्राछंद॥ सुन्ते सुवानी उठिभर्त धाये। यत्रांजनीजा तुर तत्रआये॥ उपेन्द्र वज्राछन्द॥ विलोकि कीशै अति भे दुखारी। सुवानिवोले ढरिनैन वारी॥ सवैया॥ कायगिरा मन छांड़िछलै म्वहिं रामकेपायँन जो रति होई। त्यों भगवंत सुएक हिये गति जानतजान शिरोमणि ओई॥ होहिं प्रसन्न जु मोपर आजु कृपाकर राम सुसाहेव सोई। तौ उठि वैठहु कीशअवै श्रम शायकशूल सवै तनखोई॥

सो० सुनत भरतके वैन श्रवण सुखद सांचे सरल।
कहि जै राजिव नैन उठि वैठ्यो मारुत सुवन॥

सवैया॥ लीन लगायहिये हनुमानहि भारतपुंज प्रमोदहिछाये। प्रीति पुनीत अपार हिये न समात उभे भरिलोचन आये॥ तात कहो कुशलातभली सिय सानुजराम न हालहिपाये। त्यो भगवंत श्रिरामचरित्र समास सवै कपि गाय सुनाये॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सुनिराम सिय सुधि भरत व्याकुल नयन युगजल छायऊ। हादैव मै कतजयउँ जग प्रभु काज एकन आयऊ॥ पुनिजानि कुसमय

धीरधरि बलवीरयों कपिसन भणी। चढ़ि मामशायक तात वेगिहि जाहु जहँ रघुकुल मणी॥ सुनि भरतके इमिवचन उपज्यो गर्वमन हनुमानहै। अस वीरको चलि सकिहि मोरे भार ज्यहिकर बानहै॥ प्रभु प्रभाव पुनिसमुझिकपीशा। बोला बचन चरणधरि शीशा॥ तव प्रताप उर राखि कृपाला। जैहौं जहँ रघुपति यहिकाला॥ अस कहि नाथ रजायसु पाई। लै गिरि चल्यो पवनसुत धाई॥ इहां देखि अनुजहि रघुवीरा। बोले नर इव वचन अधीरा॥

सवैया॥ तात स्वभाव त्वया मृदुमोहिं सकौ न कवौ दुख दीन निहारी। मोंहित लागि तज्यो पितु मातु सह्यो बन आय सुसंकट भारी॥ त्योंभगवन्त कहां अब सो अनुराग हवै वह आनँदकारी। जो नहिं होत खड़े उठिकै लखि व्याकुलता अति आजु हमारी॥ ज्यो खग पंखविना अति दीन भुवंग विनामणि व्याकुल जैसे। जीवन बंधु मया विनु तोहिं जियावहि जो जड़दैव है तैसे॥ जैहहुँ औधसुहै क्यहि लै हित नारि गँवाइ सुभाइहि ऐसे। त्यों भगवन्त सँभारि सनेह उठौ किन तात पर्यो महि कैसे॥ प्राणप्रिया सुत अंबहि तात सु सौंप्यसि मोहिं तुम्हे गहि पानी। देहहुँ जाय कहा त्यहि उत्तर जीवन जासु तुम्हें सुखदानी॥ देखि महा यह संकट मोहिं सिखावत क्यो उठि वेगि न आनी। मैं विनु तोहि जियौं पल ना यक तात पुकारि कहौ फिरि वानी॥

दो० सुतवित नारि सुधाम धन पुनिपुनि ह्वै जगजात।
पै भगवन्त न बिछुरि फिरि मिलत सहोदर भ्रात॥

सो० असविचारि जियतात चतुरशिरोमणि मृदुसुचित।
उठहु वेगि सुखदात सुठि सनेह संभारि मम॥
नर इव राम कृपालु करत बिलाप अनेक विधि।

सुनतसकल कपिभालु भयेमगन करुणाजलधि ॥
त्यहि अवसर हनुमंत आइगयो शुभ मूरिलै।
हरषि मिले भगवन्त परम प्रीति उर लायकै ॥
छप्पै ॥ कीन्ह्यो वैद्य उपाय तुरत बैठे उठि शेषा। भेंट्यो अनुजहि राम मुदित कपिभालु अशेषा॥ पहुँचायो गिरि वैद्य हनू जहँते जिमि लायो। देखि सुभट,बलवंत परम रघुपति मन भायो॥ श्री राम चरित अद्भुत परम को जानै क्वका करत। नित गाय गाय भगवन्त स्वइ परमानंद उरमें भरत॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहचमात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डे लक्ष्मणाहितरामविरहहनुमान्सजीवनीगृहीतारामनचरणोनामचतुर्थोऽध्याय ४॥

दो॰ परब्रह्म परमातमा पूरण विश्वाधीश।
भाग्यवन्त श्री राम पद पद्म नवावों शीश॥
जेहि विधि लषणहि रमिजियाये। सो वृतान्त सुनि रावण पाये॥
है अति विकल दशानन वीरा। आवा कुम्भकरण के तीरा॥
बहु उपाय करि ताहि जगावा। पूछेसि सब वृत्तांत, सुनावा॥
निशिचर सुभट जिते बल भारे। तात कपिन सो सब संहारे॥
कुम्भकरण बोला सुनि बानी। कीन्ह्यो तात परम निजहानी॥
जक्ष मातु सीतहि हरि आन्यो। पूरण ब्रह्म न प्रभु पहिचान्यो॥
दो॰ अब चाहत कैसे कुशल बेसह्यो काल कराल।
प्रथमै तात न आय किन मोहि जनायो हाल॥
ताते अब भरि अंक मोहि लेहु भेंटि तुम तात।
जाय करौं लोचन सफल देखि श्याम मृदुगात॥
रोलाछन्द॥ तब रावण बहु ताहि महिष मदिरा मँगवाई। दीन्हेसि अशन कराइ भयो मदमस्त अघाई॥ गरज्यो घोर कठोर

चल्यो रिपु सन्मुख धाई। देखि विभीषण आय मिल्यो आगे तेहि आई ॥ करि प्रणाम करजोरि सकल निज हाल सुनायो। सुनि बहु ताहि सराहि बहुरि प्रभु पास पठायो ॥ कह्यो विभीषण आय सपदि सुनियो रघुबीरा। कुम्भकरण रिपु आय सुभट आवत रण-धीरा ॥ सुनि सब बानर भालु चले गिरितरु धरिधाई। डारन्हि एकहिबार तासु ऊपर लै आई ॥ बरषत सुमन समान जानि धायो सुखदाई। धरिधरि भक्षण लाग भालु मर्कट समुदाई ॥ श्रुति नासा मुख बाट निकरि भागहिं कपि कैसे। गिरिवर गुहा विहाय विपुल टीड़ीगण जैसे ॥ कोटिन पटकै भूमि पकरि कोटिन तन मर्दै। कोटिन लीन्हे खाय मेलि कोटिन दिय गर्दै ॥

दो० कुम्भकरण मदमस्तयों मर्दत बानर भालु।
जाय दीख शोभासदन आगे राम कृपालु ॥
करि प्रणाम मनही मनहि भरि लोचन छवि हेरि।
बोला बचन सक्रोध तब कुम्भकरण अस टेरि ॥

भुजङ्गप्रयात ॥ न हौं ताड़का शुभ्रबाहू हौं मैना। न हौं शम्भु कोदण्ड मारीच पैना ॥ न हौं खर्न दूषन्न त्रैशिर्न बाली। अहौं कुम्भकर्णाख्य मैं शत्रुशाली ॥ करौ राम संग्रामको आय मोसो। पुजो काम आयोहितै जासु सोसो ॥ यसुन्तै हनूमन्त कै कोपधायो। हन्यो मुष्टिका ताहि भूभूमि आयो ॥

पुनि सम्भारि उठा बलवन्ता। मारेसि घूर्मि परा हनुमन्ता ॥ नलनीलहिगहिअवनिपछारेसि। कांवदादिकपिराज सिधारेसि ॥ डारेसि पटकि अनेकन बानर। चले भागि टेरत करुणाकर ॥ मुरछा विगत समीर कुमारा। जागि कीन सुग्रीव सँभारा ॥ बीच पाय सोउ निकरत भयऊ। काटि श्रवण न

काटे श्रवण नासिका जानी। फिरा मानि मन परम गलानी॥
कीन्हेसि कपिदल मारि विहाला। काहुन रहा धीर तेहि काला॥

दो० सहज भयावन रूप तेहि पुनि श्रुति नासा हीन।
उपज्यो कपिदल त्रास लखि चहत ग्रास जनु कीन॥
सजि शारंग कृपायतन तव छाड़े शर लक्ष।
चले शत्रु सन्मुख मनहुँ काल व्याल युत पक्ष॥

क्षण महँ सकल निशाचर सैना। डारेनि काटि राम शर पैना॥
कुम्भकरण तव करि रिस भारी। प्रभुदिशि चल्यउ शैल करधारी॥
राम भुजा सो खण्डन कीन्हा। तवल्यहि वामपाणि गिरिलीन्हा॥
सोउ भुज महि प्रभु काटि गिरावा। तव पसारि मुख करि रिस धावा॥
तव प्रभु विलग कीन हतिशीशा। गिरा जाय आगे भुज वीशा॥
विनु शिर भुज धावा चिकारी। करि युग खण्ड राम महि पारी॥
तासु मरण लखि सुर मुनि भारी। मुदित कहहिं जय राम खरारी॥
को कृपालु त्रिभुवन सम रामा। दीन्हो अस अधमहि निज धामा॥

दो० समरभूमि रघुवंशमणि राजत करुणा कन्द।
भाग्यवन्त शोभा निरखि मुदित भालु कपिवृन्द॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डेकुम्भकरणवधवर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५॥

दो० श्रीरघुनन्दन जानकी वंदौं पद शिरनाय।
जासु कृपा वारिधि अगम विनु प्रयास तरिजाय॥

कुम्भकरण को शीश निहारी। दशमुख हृदय भयो दुखभारी॥
मेघनाद तेहि अवसर आयो। कहिबहुभांति पितहि समुझायो॥
होत प्रात चढ़ि यान सिधावा। समरभूमि अतिआतुर आवा॥
प्रलय पयोद सरिस घहराना। तजन लागि आयुधविधिनाना॥

इतते बानर भालु समूहा । धरिगिरि तरु धाये करि हूहा ॥
होन युद्ध लाग्यो अति भारी । निजनिज प्रभु जै जैति पुकारी ॥
मेघनाद विरच्यो तव माया । रथ चढ़ि गयो गगन खलराया ॥
अस्त्र शस्त्र बहु भांति चलायो । मारि दुष्ट बाणन झरि लायो ॥

दो० गहि गिरि तरु बानरनिकर धावहि तरकिअकास ।
जव नहिं देखहि ताहि फिरि आवहिं परमउदास ॥

सवैया ॥ रावणको सुत वीरवली कपि भालुन मारिके व्याकुल कीन्हें । छूटिगये धृत धीरनके हनु अङ्गद आदि जिते भट चीन्हे ॥ मारिके वाण त्रिशूल कृपाणन आयुध पाटि दशौदिशि दीन्हे । वोलतवैन कठोर महा पुनि आइ सु धेरि श्रिरामहिं लीन्हे ॥

दो० नागफांस में बांधि पुनि लीन्हेंसि राम कृपालु ।
प्रभु बंधन अवलोकि कै भये विकल कपि भालु ॥
जामवन्त लखि धाय तेहि हतिमहि दियोगिराय ।
परम क्रोध पुनि गहिचरण दीन्ह्यो लङ्क बहाय ॥
तव खगपति सव आइकै डारे पन्नग खाय ।
विगतत्रास कपि भालु लखि उठेसकल हरषाय ॥
गहि गिरि नखविटपायधन लिये कपिन पुनिधाय ।
देखत रजनीचर कटक व्याकुल चले पराय ॥
मेघनाद उत जागिके तुरत गयो गिरि खोह ।
करनअजय मख लागतहै शठ निलज्ज रतद्रोह ॥

हरिपद छंद ॥ यह सुधि पाय विभीषण प्रभुसों कह्यो जोरियुग पानी । मेघनाद मख करै अपावन सुरदावन अघखानी ॥ जो प्रभु सिद्ध होन सो पाइहि वेगि जीति नहिं जैहै । पठवहु कीश जाय मखभंग तव तजिकै चलि ऐहै ॥ सुनि रघुवीर बोलि लिय तुरतै

अङ्गद अरु हनुमाना। लक्ष्मण संग जाहु सब भाई करहु भंग मख ठाना॥

दो॰ तुम लक्ष्मण रण मेघ रव अवशि किह्यो खल हंत।
प्रभु आयसु शिर राखिकै गवने तुरत अनंत॥
कीन्हे कपिन विध्वंस मख अतिआतुर तहँ जाय।
लै धनु शर घननाद तब धावा कपिन रिसाय॥
मारि शरन व्याकुल कियो कपिन कहत दुरवाद।
रामानुज सन आय पुनि भिर्यो प्रबल घननाद॥
अस्त्र शस्त्र छोड़े विपुल तिल सम काटे शेष।
निजबाणन पुनि मारि तेहि व्याकुल कियो विशेष॥
विविध रूप धरि धरि असुर करै समर बलवन्त।
जानि प्रबल रिपु लषण उर उपज्यो क्रोध अनंत॥

तब लक्ष्मण मारेउ शर एका। काटि तासु भुज लंकहि फेंका॥ पुनि धावा करि घोर चिकारा। तुरत लषण शर दूसर मारा॥ लागत बाण समेत सनेहा। राम लषण कहि छोड़ेसि देहा॥ देखि देव नभ बरषहि फूला। जयजय करहि परम अनुकूला॥ तब लक्ष्मण रघुपति पहँ आये। सादर चरण कमल शिर नाये॥

दो॰ दशकंधर सुनि सुवनवध कीन्ह्यो विपुल विलाप।
नारि बृन्द रोवत निरखि समुझाई बहु आप॥

छप्पै॥ नाम सुलोचनि नारि तासु अतिशय छविराशी। पति भुज देखि सशोक शोच निज हृदय प्रकाशी॥ कलम दई कर तासु लषण कीरति लिखि दीन्ही। पावन परम अपार निरखि अति रोदन कीन्ही॥ पुनि सखिन सहित रघुबीर पहँ जाय माँगि शिर

मैं सतीन श्रीराम कृपा घननाद प्रिय लही परम उत्तम गती॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथे लङ्काकाण्डेमेघनादवधवर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः॥६॥

दो० मेघनाद जूझेउ जबहिं तब रावण स विषाद।
कीन्ह्यो हृदय विचारि निज अहिरावण को याद॥
तुरतहि सो आयो तहां कह्यो दशानन हाल।
पाला लै देविहि इन्हैं देहौ बलि पाताल॥

सवैया॥ वेष बिभीषण को धरिकै अहिरावण बंधु दुऊ हरिला-यो। जाय पताल सु देविहि को बलिदेन हितै दउ ठाढ़ करायो॥ श्री हनुमान सुजाय तबै हति दुष्ट ससेनहिं धूरि मिलायो। त्यो भगवन्त श्रिरामहि सानुज आनि समाजको शोक नशायो॥

दो० अहिरावणको नाश सुनि है रावण अति क्रुद्ध।
साजि सेन चतुरंग तब चला आपुहित युद्ध॥

सवैया॥ साजि चमू चतुरङ्ग अपार चल्यो रण रावण बाजन बाजे। पूरि रही नभ मण्डल धूरि सुप्राविट मेघ मनो दल साजे॥ गर्व्व गुमान भरे रजनीचर नाद करे जनु केहरि गाजे। त्यों भगवन्त दशानन लै दल आइगयो रण संयुग काजे॥ धाय लिये कपि भालु बिशाल कराल ज्योंकाल महाबल पूरे। मानहुँ शैल सपक्ष बिराजहिं बृन्दन बृन्द अनूपम रूरे॥ आयुध दन्त नखाचल धारि प्रचारि चले तरु तालन तूरे। त्यों भगवन्त दुहूँ दिशितें कहिं जेति सुजय निज जोरिन जूरे॥ मारु कराल मची रण में भट एकन एक जहाँ तहँ जूटे। अस्त्र सुशस्त्र अनेकन भांति सुआयुध जाल दुहूँ दिशि छूटे॥ मारि पछारि उ-

तारि भुजा शिर फेंकि दिये नभ गृद्धन लूटे। कालकराल सो भालु वलीमुख पेलिके सैन निशाचर कूटे॥ शोणित पाणि भरे कपि भालु सक्रुद्ध महाबलवन्त विराजैं। मर्दहिं सैन निशाचरकी करि केहरि नाद मनो घनगाजैं॥ मारि चपेटन काटिकै दाँतन डाटि गिराइकै लातन गाजैं। देखत युद्ध प्लवंगनकी तजि धीरज धीर निशाचर भाजैं॥ धाय धरैं पटकैं भट भूतल तोरि भुजा शिर व्योम चलावैं। फारहिं गाल विदारि उरैं पुनि आँतन काढ़िकै माल बनावैं॥ रूपधरे नरसिंह मनो बहु आँगन युद्धसे खेल मचावैं। त्यों भगवन्त सुधार गिरा रहिछाय त्रिहूंपुर ठाँवनठाँवैं॥ तोमरछन्द॥ विचलत सैन सुदेखि। दशकण्ठ क्रोध विशेखि॥ भुजबीस तौ दश चाप। गहि बीर धायउ आप॥ लखि आवते दशशीश। उर माँझके अति रीश॥ उत पाटि पर्वत वृक्ष। लिय धाय वानर ऋक्ष॥ यकबार ऊपर तासु। लयजाइ डारिन्हि आसु॥ तिल सा रिखे भय संग। द्रुम शैल लागत अंग॥ चहुँओर धै दशशीश। गहि लाग मर्दन कीश॥ अवलोकि सो जिमि कालु। चले भागि वानर भालु॥ सब त्राहित्राहि पुकारि। रघुबीर राम खरारि॥ कपि भालु भागत जानि। दशचाप शर संधानि॥ सवैया॥ तानि दशौ धनु शायक तीव्र दशानन कोपित पुंज पवाँर्यो। लागहिं ते ह्वय पन्नग धाय रहे नभ छाय धरा दिशि चार्यो॥ भागि चले कपि भालु भयातुर सेन समूह कलाहल पार्यो। आरत बैन पुकारत रामहि रक्षहुनाथ दशानन मार्यो॥ भुजङ्गप्रयातछन्द॥ विचल्ले चमू कीश देख्यो सु ज्योंहीं। चल्यो साजि शारंग सौमित्र त्योंहीं॥ रहे नीचका मारि ते कीश भालू। विलोकु इतै मोहिं मैं तोर कालू॥ तोटकछन्द॥ सुनि रावण तो अस कोपि कह्यो। सतघातके खोज

जत तोहिं रह्यो ॥ अब आजु निपाति त्वहीं डरिहौं । रण माहि सुशीतल ही करिहौं ॥

दो० अस कहि रावण कोप करि मारेउ बाण प्रचण्ड ।
तुरत लषण सो काटिकै करिडारे युग खण्ड ॥

कवित्त ॥ कोटिन कराल किये आयुध प्रहार खल तिल सो लपण काटि डारे एक हाथही । फेरि निज बाणन प्रहार करि शेप तासु स्यन्दन विभंजि सूत मास्यो त्यहि साथही ॥ शत शत बाण पुनि वेधे दशौ शीश उर मारि शत बाण महिपास्यो दशमाथही ॥ कोप करि रावण बहोरि उठि ब्रह्मदत्त मास्यो सो प्रचण्ड शक्ति लागी अहिनाथही ॥ सवैया ॥ लागत शक्ति पस्यो महि वीर अनंत उठाय दशानन हास्यो ॥ भूरि रही महिमा न उठ्यो बल सागर नागर कोशलवास्यो ॥ चौदह भूवन जो शिरपै भगवन्त यथा रजको कण धास्यो । चाहत ताहि उठावन रावन मूढ़प्रभावन पुञ्ज विचास्यो ॥ मोदक छन्द ॥ देखि दशा यह मारुतनंदन । आयउ धाय जहां जगवन्दन ॥ दौरि दशानन मुष्टिक मास्यउ । भूमि रह्यो कपि भूमि न पास्यउ ॥ मास्यउ फेरि हनू दशकन्धर । भूमि पस्यो जनु घूर्मित मन्दर ॥ लै लषणै हनुमान सिधायउ । देखत राम महादुख पायउ ॥

दो० काल कठिन तुम कालके जग रक्षक बल ऐन ।
उठि बैठे लच्मण तुरत सुनत राम मृदु बैन ॥

कवित्त ॥ साजि चाप शायक निषंग संग बानराली क्रोधकै लषण शत्रु सोंह फेरि आयऊ । मारि पुञ्ज बाणन विभंजि यान सूत हति रावणै विहाल करि अवनि गिरायऊ ॥ दूसरे सुसारथी विलोकिकै विकल ताहि धाय घालि स्यंदनै सुलंक बेगि लायऊ ।

भाग्यवन्त राघवेश बंधु त्यों प्रताप पुञ्ज शायकै बहोरि स्वामि पायँ शीश नायऊ ॥ दशमुख उत मुरछा ते जागा । करनलाग कछु यज्ञ अभागा ॥ सो सुधि कतहुं विभीषण पायो । सपदि आय रघुपतिहिं जनायो ॥ तुरत कपिन पठये रघुराई । यज्ञ विध्वंस किहिनि ते जाई ॥ तब सकोप रावण बल पैला । रण सन्मुख आवा सजि सैना ॥

दो० यहां देवतन आइकै प्रभुसन विनती कीन ।
सुनि सुरदुख रघुवंशमणि धनुष बाण कर लीन ॥

सवैया ॥ लै धनु शायक श्रीरघुनायक बांधि जटा शिर जूट सँवारे । श्याम तमाल सो गात मनोहर लोचन शोक विमोचन हारे ॥ आनन पूरणचंद लसयत बाहु विशाल महाबल भारे । त्यों भगवन्त विलोकि प्रभा झरि फूलन देवन जैति उचारे ॥ त्यहि बीच निशाचर नीचचमू करि हूह सु सन्मुख आइगई । अवलोकत वानर भालु इतै करि क्रुद्ध विरुद्धन धाइलई ॥ जुटिगे भट भूरि दुहूं दिशि ते निज नाथनकी कहि जैति जई । भगवन्त उमंग भरे सब बीर प्रचारि पुकारिकै युद्धठई ॥ त्रिभंगी छंद ॥ रजनीचरधारी जनु धदकारी सघन दरारी घिरिआई । तरवारी चमकैं चहुँदिशि झमकैं दामिनि दमकै जनु धाई ॥ गज बाजि चिकरहीं जनु खकरहीं जलद घुमरहीं नभ घेरे । लंगूर विराजैं जनु नभसाजैं धनुसुरराजैं बहुतेरे ॥ उड़ि धूरिअपारा जनु जलधारा बाण प्रहारा वृन्द घनो । दुहुँ दिशिन अपारे करत प्रहारे पर्वत पारे वज्र मनो ॥ रघुवीर रिसाई शर झरिलाई रिपु समुदाई लागि मरे । लागत तन तीरा चिक्करहिं वीरा घुमि अधीरा अवनिपरे ॥ शोणित सरिधारा चली अपारा सुभट पहारा फेरिमनो । द्रुम कूल सजेता दल रथ रेता चक्र परेता

भवैंरघनो ॥ जलजंतु समाना करि हरिनाना विविध विधाना कौन गनै। करपद झखजारा केशसेवारा विपुल पसारा सुकबिभनै॥ शर शक्ति भुअंगा चाप तरंगा मगर निषंगा पट फेनू। कच्छप जनु ढाला विविध विशाला कठिनकराला भयदेनू॥

दो० भूत प्रेत वैतालवहु मज्जहिं योगिनिमाल।
महायुद्ध रणमें मच्यो दोऊ दिशि विकराल॥

कवित्त॥ धाय धाय कालसो कराल कपि भालुजाल वेप विकराल गहि यातुधान मारहीं। तोरि शीश बाहुन उखारि महिपारि भूरि लूमन लपेटि वहु सागर मे डारहीं॥ काहेरे अनेक परे घायल विकल वीर लोथिन अनेक लिये स्यार पेट फारहीं। भाग्यवंत भुंडन के भुण्डबिनु मुंडरुंड धावहिं सुमुंड वहु जैजय पुकारही॥ लीन्हे कंक काकवहु बाहुन उड़ात नभ एकन सो एक तहां छीनि छीनिखावहीं। एककहैं ऐस्यहू समूह में अघात हौ न दारिद तुम्हारे कहूं कबहूंनजावहीं॥ तटनी समरतीर खैंचैं गहे आंत गीध मानहु स्यलार भूरि वनशी वझावहीं। जात भटवहे भूरिचढ़े खग वृन्दजनु खेलत सुछैल लिये नावरि सुहावही॥ योगिनीं जमाति मिलि भांतिभांति मुंडनके खप्पर सुधारिचलीं गावतै सुजूटि जूटि। लोथिनसों जाल वही लोहुन प्रवाहहेरि आनँद उमँगि त्यों पियनलागी घूंटिघूंटि॥ चारो ओर धावत पिशाच प्रेत वृन्दवृन्द भावत सुमनमांस खावतहैं लूटि लूटि। भाग्यवंत पूरण प्रहर्ष त्यों करतशोर रहीं स्वछाय तिहुँलोकन में फूटिफूटि॥ युद्ध तटनी के तट सोमिटे पिशाच प्रेत भूत वैताल जाल योगिनीं जमातहे। खप्पर कपालके कमंडल सो मूड़ लिये तीरतीर बैठत जे न्हायन्हाय जातहैं॥ ओझरी कि झोरीसन कांढि काढ़ि रावजनु घोरिघोरि पियत प्रमोद सरसातहैं। कोऊ प्रेत भूत

भट मूड़नको फोरि फोरि सतुवा सो सानि सानि गूदा खून खातहैं ॥
सवैया॥ शोणित धार अपारचलीं वेहि डुष्टनफोरि शरीरनकारे। सो
हतसो भगवंत मनोगिरि कज्जल सो चले गेरु पनारे॥ ढेरलगेवहु
लोथिन के लखि कायर ही ह्वैजात दरारे। छायरही रव घोरामहा
मुनि शूरन चित्त उछाहन भारे॥वानर भालु वली बिकराल निशा-
चर सेनसमूह सँहारे। कोटिन मारि चकोट चपेटन लूमलपेटिकै
साविडारे॥ गर्जत तर्जत धावतहैं चहुँओर महावल पुंजनभारे।
त्यों भगवन्त प्लवंगन की रजनीचर युद्ध विलोकतहारे॥

तव रावण निज हृदय विचारा। निशिचर वंश भयउ संहारा॥
मैं अकेल कपि भालु अपारा। करौं कछुक माया विस्तारा॥
प्रभुहिं पयादे लखि सुरराई। दीन्ह्यो निज रथ तुरत पठाई॥
वरणि न जाइ मनोहरताई। हरषि चढे तापर रघुराई॥

हरिगीतिका छन्द॥ आरूढ रथ रघुवंशमणि अवलोकि सुर
जयजयकियो। कपि भालु हर्षित तोरि गिरितरु धाय अरि सैनहि
लियो॥ नहिं जात कीशन मारुसाहि दशशीश तव मायाठनी।
बहुरूप कीन्हे प्रकट लक्ष्मण वालिसुत मर्कटधनी॥ अवलोकि ड-
रपे भालु कपि हँसि राम धनुशायकलियो। क्षणमाहिं कीन्ह्यो दूरि
माया निरखि सव हरप्योहियो॥ तव राम सवसन चितय वोले श्र-
मित श्रीरवनायकै अव माम रावण द्वन्दयुद्ध विलोकियोचितखायकै॥

दो॰ असकहि श्रीरघुवंशमणि विप्रचरण शिरनाय।
सुमिरि शम्भु गिरिजा गणप दीन्ह्यो यानचलाय॥
प्रभुहिं देखि रावण सुभट चला क्रुद्धि वलऐन।
गर्जत तर्जत आइकै सन्मुख बोला वैन॥

सवैया॥ जीत्यहु जे भट संयुगमे सुनु तापसहों तिनके सममैना।

रावणनाम भुजा हिर है यश लोकप जासुपरे वंदि ऐना ॥ दूषण वालि कबन्ध वध्यो घटकर्ण समेघरवादिक सैना ॥ आजु निवाहि लयहौं सत्र वैरजु त्यागि धरा रण भागहि नैना ॥ तोमरछन्द ॥ वश काल रावण जानि । रघुवीर बोल्यउ वानि ॥ सवैया ॥ जनि जल्पसि रे यश नाशत है सुनि नीति विचारिकरै सुक्षमा ॥ जग पूरुष तीनिप्र कारकहे कवि पाटल औ पनसौव समा ॥ प्रद एक प्रसून प्रसून फलौ यक केवल होत फलेकनमा ॥ न करैं कहि एक करैं कहिकै भगवन्तकरै न धरै सुखमा ॥ श्रीरघुवीर के नीतिमई करि मंजुल बैन दशानन काने । नेकुधरयो हियरे न विचारि सुमूढ कुजाति कुबुद्धि अयाने ॥ त्यों भगवन्त सगर्व कह्यो सुनु तापस मोहिं सिखावत ज्ञाने ॥ वैरबढावत तौ न डरयो अव लागत ग्रीव बचावत माने ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ असकहि दशशीशा करि उर रीसा गहि भुज बीसा धनुतीरै । शर कुलिश समाना मारन नाना लगि अयान रघुवीरै ॥ दिशि विदिशित पाटे महि नभ डाटे लखि प्रभु काटे श घोरा । तवतो खिसियाई शक्ति चलाई दत अजधाई प्रभु ओरा ॥ लगि आवत ताही शर सँग माही प्रभु दिशि वाही फेरिदई । रावण च मारि आयुध सारै काटि निवारे कृपामई ॥ शतबाण पवाँरिसि सारथि मा रेसि रामपुकारेसि विकल सुनी । तुरते प्रभुधायो सूत उठायो अ तिरिस पायो रामपुनी ॥ सजि चाप विशाला विशिख कराला रा कृपाला वहु मारयो । करि वाजि निकंदन सूत सस्यंदन हति रघु नंदन महि पारयो ॥ दश वदन लजाना चढि रथ आना आयु नाना विधि छोड़े । निष्फल भयसारे शूल पवारे दश महि पारे च घोड़े ॥ प्रसु वाजि उठायो अतिरिस पायो विशिख चलागो व आसू ॥ दश दश शर साथा दशहुन माथा हति रघुनाथा दि

तासू ॥ लखि रुधिर प्रवाहा निशिचरनाहा करिकै हाहा धुकि धायो ॥ छोड़्यो शरतीशा तब जगदीशा रिपु भुजशीशा महि आयो ॥ भय तुरत नवीने पुनि प्रभुछीने डमि हरिकीने बहु दावे । छाये नभमाहू बहु शिर बाहू केतु सराहू जनुधावै ॥ प्रभु वाण चलावे गिरन न पावें छिदि नभ जावें शोभ लह्यो ॥ मानहुँ दिनराई सुकर रिसाई राहुहिं धाई पोहि रह्यो ॥ रघुवर शर चण्डे जिमि जिमि खण्डे रिपु शिर मण्डे फेरि नये । लखि बाढत शीशा इमि खलईशा गहि भुजवीशा धनुष लये ॥ शर मारि सकोपा प्रभु रथ तोपा भयउ सोलोपा तकि न पस्यो । लखि सुरन दुखारी कार्मुक धारी शरण निवारी शिरनि हस्यो ॥ दिशि विदिशि ते डोलें जै जय बोलें करत कलोलें भय जावे । कहँ राम अहीशा प्रबल कपीशा कहि कहि शीशा बहुधावै ॥ दश मुख रिसबोरा करि अति शोरा शक्तिकठोरा हनेसि छली । लंकेश्वर ओरा शक्ति सु घोरा तुरत सजोरा चमकि चली ॥ लखि रघकुल भूपण टारि विभीपण शक्ति सुतीपण आपु सही । श्रम वश जग भूपण देखि विभीपन देत सुसीखन जैसचही ॥ गहि गदा सिधास्यो हनि उरमास्यो प्रभु वल पास्यो प्रवलअरी । पुनि उठा सँभारी भिरा प्रचारी द्वउ बलभारी समरकरी ॥ देखत हनुमाना अति बलवाना गहि पाषाना समदि चल्यो । करि चरणप्रहारा दश मुखपारा सारथिमारा रथहि दल्यो ॥ उठि बहुरि सुरारी कपिहि प्रचारी हन्यो करारी भट दोऊ । भे युद्ध अपारा गगन मँझारा पावनपारा कहि कोऊ ॥ मारुत सुत व्यंकट लखि वश संकट धाये मर्कट समुदाई । लखि कीश निकाया निशिचरराया विरच्यो माया दुखदाई ॥ कपिभालु समेते कटक मजेते तहँ तहँ तेते दश शीशा । भय प्रगट निहारी डरि बनचारी भगे

पुकारी जगदीशा ॥ जगदीश विलोका कटक सशोका सुर मुनियोंका दुखभारी । हँसि चापसुधारी शरयकमारी सकल सुरारी भय टारी ॥ हरषे सब बन्दर यक दशकंधर लखि तरु मंदर धरि धाये । जै जै कृतलेखा गगन अशेषा दशमुख देखा रिसवाये ॥ रिसवाय सुरारी सुरन प्रचारी भगे पुकारी रघुवीरै । सुनि अङ्गद धायो मारि गिरायो पुनि चलिआयो प्रभुतीरै ॥ उठि बहुरि दशानन हति निज वानन कपि वलवानन विचलाये । लखि राम प्रवीने शिर भुजछीने तुरत नवीने ह्वैआये ॥ लखि वाढ़त शीशन भुजरिपु कीशन भरिउर रीसन वहुधिये । दशमुखहि प्रचारी वहुविधि मारी गिरितरु भारी विपुलहये ॥ नल नील जुझारे कूदि विदारे नखन लिलारे रिपुकेरे । लखि रुधिरप्रवाहा निशिचरनाहा हनहुनगाहाक रतेरे ॥ पटकत छुटिभाजे रिपुपर गाजे तवधनुसाजे लंकेशा । हति सबन गिराये कपि मुरछाये लैदल धाये ऋक्षेशा ॥ सवैया ॥ ऋक्षपते दलसाजि तबै रिपुरावणको बहुभांतिन मारयो । कोपिदशानन वीरवली हति भालु अनेकन भूतल पारयो ॥ देखि सुसेन सँहार ऋक्षेश प्रहारि पदै रिपु मूर्च्छित डारयो । त्यों भगवंत सुजैजै के सहसेन श्रीराघवपाहिं सिधारयो ॥ संयुताछन्द ॥ तवसूत दूर रावनै । रथवालिगो लै भावनै ॥ मिलियातुधान सत्रासही । लिय घेरि रावण पासही ॥

दो० जामवन्त योधा प्रबल अति वल बरणि न जाय ।
समरभूमि ते रावणै जो गृह दीन भगाय ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितभक्तिशिरोमणिग्रन्थेलङ्काकाण्डे रामरावणसमरजाम्ववानपदप्रहाराद्रावणमूर्छावर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० चरण कमल रघुवीर के वंदौं सुरतरु तोर ।

जासु कृपा भगवन्त नित सिद्ध मनोरथ मोर ॥
तेहि निशि त्रिजटा जायके जनकसुता के पास।
समाचार रिपु के सकल कहि सो कीन प्रकास ॥

कवित्त ॥ शीशबाहु बाढ़सुनि शत्रुकी सुसीय हीयऊपजी सुजाल त्रास नैनजल छाइयो । बारबार त्रिजटासों पूंछती सशोच सीय होइहै सुकाह कहि मोहि समुझाइयो ॥ नाथ शरलाग्यहू न होत दशमाथ नाश मोरही अभाग भूरि मातुबाहि ज्याइयो । भाग्यवंत त्रिजटा सप्रेम सुनि कहीबात उर शरघात रिपु मरीधीर लाइयो ॥ याकेउर बास तव रावरे सु उरमाहिं प्रभुको नित्रासनित वेदन प्रकाशिहै । राम उर धाम सुखभुवन अनेक बास लागते सुत्राणसब साथही विनाशिहै ॥ भाग्यवंत जानिमन याही रघुबंश नाथ मारते न ताहि मन मेरे सत्यभासिहै । काटने शिरनि जब होइहै विकल आपु जाइहै सुछूटि ध्यान मारितब नाशिहै ॥ सवैया ॥ यहबातसुनाय जबै सियको त्रिजटा उठि मंदिर आपुगई । रघुबीर वियोग कि पीरगँभीर सुधीर सिया उर माहिं जई ॥ फरक्यो तब बाम भुजा दृग बाम सुमंजुल मंगल मोदमई । भगवंत विचारि भले सगुनै मिलिहै रघुनाथ प्रतीति भई ॥ प्रात दशानन जागिउतै चढ़ि स्यंदन संयुग कोपि सिधायो । गर्जत तर्जत घोर कठोर सुबीरबली रण सन्मुख आयो ॥ देखतबानर भालुइतै धरिभूधर वृक्ष प्रचारत धायो । त्योंभगवंत दशाननके दलपेलिकै दुष्टन मारिहटायो ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कियो मारि हैरान दुष्टेशकीशा । रच्यो कोपिमाया तबै बाहुबीशा ॥ भये भूत बैताल संभूत जाला । धरे चाप नाराच धाये कराला ॥ लिये योगिनी यूथ कर्वाल हाथै । गहे पाणि दूजे सुमर्त्यान माथै ॥ पिये शोणितै सद्य सो नाचि गावैं । रटैं मारु मारु मुखै धाय धावैं ॥

भये भीत कीशालि भागे पुकारी । जहाँ जायँ देखें प्रवर्ताग्नि भारी ॥ लग्यो फेरि वर्षे महातम वालू । भये भूरि व्याकुल्लकीशालि भालू ॥ पुगज्यों महा कोपकै शब्द घोरा । पखो लोक तीनों हहाकार शोरा ॥ ससौमित्र सुग्रीव राघव समेता । किये रावणा वीर सारे अचेता ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ यहि भाँति वीर अचेत करि सब प्रवल पुनि माया करी । हनुमान प्रगटेसि भूरि घेरेन्हि जाय रामहि गिरिधरी ॥ चहुँओर वाय उठाय लूमन मारु मारु पुकारहीं । रघुवीर भंजनभीर ताके वीच यो छवि धारहीं ॥ तोमरछन्द ॥ जनु इंद्र चाप अनेक । लिय वारि विरची नेक ॥ त्यहि मध्य राम कृपाल । जनु सोह वृक्ष तमाल ॥ चतुरंसाछन्द ॥ तव रघुनाथा । धरि धनु हाथा ॥ यक शर हाया । निशिचर माया ॥ सकल विनाशी । प्रभु अविनाशी ॥ पुनि वहुधारी । शिर भुज आरी ॥ हति शर काटे । महि नभ पाटे ॥ पुनि जमि आवैं । विलँवन लावैं ॥ मरत न आरी । श्रमित खरारी ॥

दो० राम विभीषण ओर तव चितयो आँखि उठाय । कह्यो विभीषण जोरिकर सुनियो श्रीरघुराय ॥ प्रभु सर्वज्ञ कृपायतन जानत सव उर हाल । निजजन गुरुता देन हित मोहिपुछेउ यहिकाल ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥ हे दीनवंधु कृपाल याके नाभि अमृत कुंडहै । वल तासु जीवत मरत नाहिंन प्रवल अरि दशमुण्डहै ॥ सुनि राम जग अभिराम वाण कराल हर्षि सुधारेऊ । अति होन असगुन लागि हाहाकार त्रिभुवन पारेऊ ॥ हरिपदछन्द ॥ श्रुति अजंत प्रभु खैंचि शरासन मारे शर यकतीशा । शोष्यो वाण एक नाभी शर अपर हरे भुज शीशा ॥ शिर भुज हीन रुण्ड महि नाच्यो धरणि

धसै धरधाई। तव युग खंड दियें करि ताको विशिख मारि रघुराई॥ गरज्यो भरत घोर रवभारी कहाँ राम रणमारो। अस कहिपरयो धरणि दशकन्धर देवन जैति उचारो॥ सवैया॥ जय राम कृपा सुखकेन्द स्वछन्द निकन्दन द्वन्द प्रताप महा। प्रति अंग अनंग अनेकप्रभा भगवन्त विलोकत शोक दहा॥ मुकुटाद्भुत जूटजटानि विचित्र प्रसूनन की अति शोभ जहा। छवि पावत शेष न पार कहीं लघु बुद्धि बखानि कहो सुकहा॥ करि दृष्टि दया सुरवृन्द अभै रघुनाथ अनाथन नाथ किये। हरषे लखि वानर भालु सबै जय राम कृपा सुख पुंज हिये॥ बरषें नभ देव प्रसूनन माल निहाल सुदुंदुभि जाल दिये। भगवन्त दशानन पाप समुद्र में बूड़त देवन राखि लिये॥

दो॰ जै जै करि बरषहिं सुमन सुर नभ चढे विमान।
भाग्यवन्त रणभूमि में शोभित श्रीभगवान॥

सवैया॥ रावण रामको युद्ध महा यह को कहिके कवि पारहि पावै। शारद शेष गणेश विरंचि महेश थके श्रुति नेति बतावै॥ जा दल युद्ध प्रचण्ड बली कहिबोति कठोर विचार न आवै। त्यों भगवन्त श्रिराम चरित्र यथा मति गाय हिये सुखछावै॥

दो॰ निज कर जाको मारिके राम परमपद दीन।
तेहि रावणको कौन विधि वरणैं सुकवि प्रवीन॥

॥ इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेसकलशिरोमणिग्रंथेलङ्का काण्डेरावणवधवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८॥

॥ सवैया॥ दीनदयाल सुजान सुशील शिरोमणि वेद पुकारत गाथे। घोर भवार्णव बोहित नाम सुसेवक पद्म प्रदानंद पाथे॥ गोद्विज देव धरा दुखभञ्जन रञ्जन भक्त धरे धनुभाथे। वंदतहे भगवन्त सदा कर संपुट कै पद श्रीरघुनाथे॥ पद्धरी छंद॥ मय नादि नारिमुनि

भये भीतकीशालि आगे पुकारी । जहै जायँ देखें प्रवर्ताग्नि भारी ॥ लग्यो फेरि वर्षे महातप्त वालू । भये भूरि व्याकुल्लकीशालि भालू ॥ सुगर्ज्यो महा कोपकै शब्द घोरा । पस्यो लोक तीनों हहाकार शोरा ॥ ससौमित्र सुग्रीव राघव समेता । किये रावणा वीर सारे अचेता ॥ हरिगीतिकाछन्द ॥ यहि भांति वीर अचेत करि सत्र प्रवल पुनि माया करी ॥ हनुमान प्रगटेसि भूरि घेरेन्हि जाय रामहि गिरिधरी ॥ चहुँओर धाय उठाय लूमन मारु मारु पुकारहीं । रघुवीर भंजनभीर ताके वीच यो छवि धारही ॥ तोमरछन्द ॥ जनु इंद्र चाप अनेक । लेय वारि विरची नेक ॥ त्यहि मध्य राम कृपाल । जनु सोह वृक्ष तमाल ॥ चतुरंसाछन्द ॥ तब रघुनाथा । धरि धनु हाथा ॥ यक शर हाया । निशिचर माया ॥ सकल विनाशी । प्रभु अविनाशी ॥ पुनि वहुवारी । शिर भुज आरी ॥ हति शर काटे । महि नभ पाटे ॥ पुनि जमि आवैं । विलँवन लावैं ॥ मरनन आरी । श्रमित खरारी ॥ ... दो० राम विभीषण ओर तब चितयो आँखि उठाय । ... कह्यो विभीषण जोरिकर सुनियो श्रीरघुराय ॥ ... प्रभु सर्वज्ञ कृपायतन जानत सब उर हाल । ... निजजन गुरुता देन हित मोहिपूछेउ यहिकाल ॥ ... हरिगीतिकाछन्द ॥ हे दीनवंधु कृपाल याके नाभि अमृत कुंडहै । चल तासु जीवत मरत नाहिन प्रवल अरि दशमुण्डहै ॥ सुनि राम जग अभिराम वाण कराल हर्षि सुधरिऊ । अति होन असगुन लागि हाहाकार त्रिभुवन पारेऊ ॥ हरिपदछन्द ॥ श्रुति प्रजंत प्रभु खैचि शरासन मारे शर यकतीसा ॥ शोष्यो वाण एक नाभी शर अपर हरे भुज शीशा ॥ शिर भुज हीन रुण्ड महि नाच्यो धरणि

धसे धरधाई। तव युग खंड दिये करि ताको विशिख मारि रघुराई॥ गरज्यो भरत घोर रवभारी कहाँ राम रणमारो। अस कहिपरयो धरणि दशकन्धर देवन जैति उचारो॥ सवैया॥ जय राम कृपा सुखकन्द स्वछन्द निकन्दन द्वन्द प्रताप महा। प्रति अंग अनंग अनेकप्रभा भगवन्त विलोकत शोक दहा॥ मुकुटाद्भुत जूटजटालि विचित्र प्रसूनन की अति शोभ जहा। छवि पावत शेष न पार कही लघु बुद्धि बखानि कहौ सुकहा॥ करि दृष्टि दया सुरवृन्द अभै रघुनाथ अनाथन नाथ किये। हरपे लखि वानर भालु सबै जय राम कृपा सुख पुंज हिये॥ वरपैं नभ देव प्रसूनन माल निहाल सुदुंदुभि जाल दिये। भगवन्त दशानन पाप समुद्र मे बूड़त देवन राखि लिये॥

दो० जै जै करि वरपहि सुमन सुर नभ चढे विमान।
भाग्यवन्त रणभूमि मे शोभित श्रीभगवान॥

सवैया॥ रावण रामको युद्ध महा यह को कहिके कवि पारहिं पावै॥ शारद शेप गणेश विरञ्चि महेश थके श्रुति नेति बतावै॥ जा दल युद्ध प्रचण्ड बली कहिवोति कठोर विचार न आवै। त्यों भगवन्त श्रिराम चरित्र यथा मति गाय हिये सुखछावै॥

दो० निज कर जाको मारिके राम परमपद दीन।
तेहि रावणको कौन विधि वरणै सुकवि प्रवीन॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहचमात्मजभगवन्तसिंहविरचितसङ्क्षिप्तश्रीरामणीयरामायणे लङ्काकाण्डे रावणवधवर्णनोनामश्रष्टमोऽध्याय ८॥

सवैया॥ दीनदयाल सुजान सुशील शिरोमणि वेद पुकारत गाथे। घोर भवार्णव वोहित नाम सुसेवक पद्म प्रदानँद पाथे॥ गोद्विज देव धरा दुखभञ्जन रञ्जन भक्त धरे धनुभाथे। वंदतहै भगवन्त सदा कर संपुट कै पद श्रीरघुनाथे॥ पद्धरी छंद॥ मय नादि नारिसुनि

मरणकंत। ह्वै विकल रुदत धाई तुरंत ॥ गति नाह देखि रोवैं पुकारि। उर ताड़ि ताड़ि तन सुरति डारि ॥ गुण तेज रूप बल बुधि प्रताप। बहु वरणि वरणि करतीं विलाप ॥ बल बाहु जासु तिहुँ लोकराज। प्रिय कीन ताहि खग भखत आज ॥ ज्यहि कमठ शेप सहि सक न भार। महि परेउ आजु तन भरि सो छार॥ भुज बलहि काल यम जित्यो नाथ। अब आजु परयो कस ज्यों अनाथ॥ कुंडलिया॥ नाथ बैर रघुनाथ सो करि फल पायो एहु। रहा न तुम्हरे कुल विपे रोवनहारो केहु ॥ रोवनहारो केहु कालवश कहा न मान्यो। त्रिभुवनपति श्रीराम तिनहिं करि मानुष जान्यो ॥ जान्यो कछु न कुभाव मुनिन दुर्लभ रघुनाथा। दीन्ह्यों गति प्रिय तुमहिं राम सम और न नाथा ॥

दो० तब रघुवीर विभीषणहिं सादर आयसु दीन।
देश काल विधिवत सरिस मृतक कर्म सब कीन ॥

कह्यो अनुजसन तब भगवन्ता। कपिपति जामवन्त हनुमन्ता॥
अंगद अरु नल नील समेता। जाहु सकलमिलि लंकसचेता॥
राज तिलक सुन्दर सुखदाई। देहु विभीषण शीश चढाई॥
भलेहि नाथ कहि जाय सप्रीती। कीन्ह्योंतिलक यथा श्रुतिरीती॥
बाजे बाजन विविध प्रकारा। लगे होन शुभ मंगल चारा॥
सहित विभीषण बहुरि अहीशा। आइ रामपद नायउ शीशा॥
प्रभु हनुमानहिं कह्यो बहोरी। जाहुतात जहँ जनककिशोरी॥
समाचार कहि लै कुशलाता। आवहु वेगि घूमि बलभ्राता॥

दो० पवनतनय तब जायकै सियपद नायो माथ।
पूंछि कुशल बरण्योसकल चरित जोरियुग हाथ॥

सवैया॥ मातु दशानन संयुग मैं रघुनायक शायकसो निज

जीते। लंककि राज विभीषणकोदय देवनवृन्द किये डुखरीते॥ हैं कुशलात धरौ धृति मात कृपा सुखव्रात सवन्ध पिरीते। त्यों भगवन्त मिलै अब चाहत नाथ तुम्हैं फुर मानहुँ हीते॥ तिलका छन्द॥ सुनि वायुतनै। वरवानि मनै॥ सुखपुंज सिया। सति मानिकिया॥

॥ दो० सुनु सुत तोको देउँका कीन्ह्यो मन अनुमान।
तीनिलोक नाहिन कछू है यहि वचन समान॥

॥ सवैया॥ मातु त्रिलोकन राजससाज लहे हम आज न संशय यामैं। आनँदकन्द कृपा सुखवृन्द स्वछन्द सदा परिपूरणकामैं॥ रावण देव सतावनको रणजीति सुपाय विजय अभिरामैं। हेरि अनन्त प्रभा भगवन्त उदार अपार सुसानुज रामैं॥ संयुता छन्द॥ सुनु पुत्र सदगुण जावते। निवसैं त्वया उर तावते॥ करुणा सदा रघुनाथकी। रहिहै सु लच्मण साथकी॥

सुनि हनुमान हरषि शिरनाई। आइ प्रभुहिं सिय कुशलसुनाई॥ सुनिसियकुशल सकलसुखऐना। भये प्रेम वश राजिवनैना॥ ॥ हरिपद छन्द॥ तब रघुवीर विभीषण अंगद हनुमत संग पठाये। सादर सियहि चढाय पालकी प्रभुसमीप लैआये॥ राख्यो प्रथम अनलमहँ सीतै करि उर अन्तर शाखी। सो प्रभु प्रकटकीन चहैं ताते वचन कटुक कछु भाखी॥ सुनि लच्मणते तुरत जानकी पावक प्रबल मँगाई। चितारचाय कह्यो जो मोरे मनक्रम वचन सदाई॥ तजि रघुवीर आनगति नाहिन तो कृशानु उरवासी। होहु हमैं श्रीखण्ड सारिखे यहि अवसर सुखरासी॥ असकहि गई प्रविशि सिय तामे धरि पावक द्विजरूपा। सौंप्यो प्रभुहिं लाय श्री सादर पावन परमअनूपा॥

दो०॥ राम वामदिशि जानकी राजत स्वइ सुखसार। भाग्यवन्त शोभा अमित क्यों मुखवरणौं पार॥ नभ निशान बाजहिं विपुल वरषहिं निर्जर फूल। भाग्यवन्त सिय राम छवि हृदय वसहु सुखमूल॥
दशरथसहित सकल सुरवृन्दा। आये जहँ प्रभु करुणाकन्दा॥
सानुज उठि रघुपति शिरनाई। करि विनती कहि कथासुनाई॥
तव प्रसाद रण सन्मुख ताता। जीत्यो असुर अजयबलव्राता॥
सुनि दशरथ अति आनँदभारे। दै अशीश सुरलोक सिधारे॥
राम लषण सियरूप निहारी। विधिमन भयो प्रगट सुखभारी॥
नखशिख निरखि रूप अनुरागे। करन सप्रेम विनय विधिलागे॥
॥ कवित्त ॥ जयति जे उदार भूमिभार हार कारुणीक रूप शील धाम त्यों न हेरि शोभ आनकी। धीर वीर साहसी समर्थ दानि अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिहूके वेद कीर्त्ति गानकी॥ भानु वंशपद्म के प्रकाश कार भानुचंड पारब्रह्म दार जाल भीति देवतानकी। भाग्यवंत जानिदास देहु पाँय प्रेमचारु नौमि नौमि नौमि त्यो सबंधु राम जानकी॥ शिव अस्तुति कवित्त॥ मोह तम तरणि विशुद्ध बोध कारुणीक दीनबन्धु साहेब सदैव दास हित्तही। पूरण प्रताप यश जाहिर अखिललोक सुखमा समृद्धि मन लेत नित्तु वित्तही॥ धारि अवतार भवभारको विध्वंसि भूरि तूरित्रास देवन प्रसादपूरि चित्तही। भाग्यवन्त राम सीय सानुज कृपायतन कीजिये निवास त्यो सु दास हीय नित्तही॥ इन्द्र अस्तुति कवित्त॥ श्याम गौर गात मञ्जु वारिजात दिव्य नैन सुखमा समृद्धिवार मैन कोटि कीजिये। पाणिचाप बाण भृत्य कृत्यनाश राकसालि पालि निर्जरालि दालि शोक सुक्ख भीजिये॥ छाइयो प्रतापलोक लोकनै कृ

लाप आप नामके प्रताप पापताप तीनि छीजिये । भाग्यवंत जानि दास जानकी सबन्धु रामकृपया कटाक्षके स्वभक्ति चारु दीजिये ॥

दो०। करि विनती करजोरि पुनि कह्यो हरषि सुरराज ।
जो प्रभु आयसु होय मोहि करौं वेगि स्वइकाज ॥
तात भालु कपि विपुलमम हने निशाचर जौन ।
ममहित त्यागे प्राणनिज सकलजियावहु तौन ॥

सुनि सुरपति अमृत वरपाई । दिये भालु कपि सकल जियाई ॥ जै जै करि सुर सकल सिधाये । आय विभीषण सब शिरनाये ॥ करिप्रणाम विनती करि सादर । बोले वचन सुनिय परमाधर ॥ नाथ जानि जन कीन्ह्यो दाया । सब प्रकार मोकहँ अपनाया ॥ कहँ लगि करौं प्रशंसा भूरी । त्रिभुवन रह्यो सुयश भरिपूरी ॥ अब चलि जनगृह पावन कीजै । कह रघुवीर सखा सुनिलीजै ॥ मोहि तोहिं कछु अंतर नाहीं । परयंह समुझि देखु मनमाहीं ॥ मम मन भरत विलोकौं जाई । गयेअवधि पुनिमिलवन भाई ॥ करहु कल्प भरि राज सुहाई । अन्तधाम मम निवस्यो आई ॥ सुनि पुनि भवन विभीषण जाई । भूषणपट भरि पुष्पक लाई ॥ प्रभु आयसु नभ चढि वरषाये । मनभावत सबहिन सो पाये ॥ पहिरि पहिरि कपिभालु अनूपा । आये जहँ रघुपति सुरभूपा ॥ देखि राम हरषित करिदाया । बोले वचन प्रेम जनुजाया ॥

सवैया ॥ हे कपिभालु सुनो सगरे तुम्हरे बल मैं रिपु रावण जीता । राज विभीषणको सुदई करि आपनि पायगई हमसीता ॥ जाहु घरै अपने अब मोहि भज्यो भगवन्त कस्यो जनि भीता । आयसु पाय चले कपिभालु सुधारि हिये सिय राम पुनीता ॥ हरिपद छंद ॥ जामवंत कपिराज विभीषण अङ्गदादि हनुमंता । नीलनला-

दि यूथपति औरौ सुभट जिते बलवन्ता ॥ सीता अनुज सहित रघुनन्दन चढ़ि विमान सब साथा। उत्तर दिशा चलायो सादर नाय विप्र पद माथा॥ जय जय करहिं देव नभ संकुल कोलाहल बहु होई। होहिं सगुन सुन्दर सुखदायक मुदित राम सिय जोई॥ सादर सियहि देखावंत रघुवर जहँ जहँ असुर सँहारे। दरशे आइ सेतु सागरको शंकर अरचनकारे॥ दण्डक पंचवटी मिलि कुंभज अत्रि आदि ऋपिराजे। करि प्रणाम अनसूयहि आये चित्रकूट सुख साजै॥ करि मज्जन पय भेटि मुनिन कहँ बहुरि विमान चलाये। यमुनहिं पूजि वन्दि मुनि वृन्दन मुदित प्रयागहि आये ॥ करि मज्जन सादर तिरवेणिहि द्विजन दान बहु दीन्हे। वारबार शिर नाय प्रयागहि चले अवध सुधि कीन्हे॥ हनुमानहि रघुवीर बोलि तब तुरतहि अवध पठायो। कहि भरतहि मम कुशलकुशल उन लै तुम आतुर आयो॥ गवन्यो हरपि प्रवल मारुत सुत प्रभु आये जहँ गंगा। उतरे देखि देवसरि पावनि करणि सकल अघभंगा॥ सिय सुरसरि हिं पूजि बहु भांतिन लहि अशीश मन भाई। सुनत निपाद नाथ अति आतुर पस्यो चरण तल आई॥

दो० देखि राम उठि सादर भेट्यो हृदय लगाय।
परम प्रीति बैठाय ढिग पूछी कुशल सुभाय॥

पद॥ नाथ कुशल पदपद्म निहारे। जे पद कमल पूज्य अज शङ्कर शरण सभीत हरण अघ भारे॥ दीनदयाल प्रणत आरत हर सुयश पुनीत पुराण पुकारे। पूरण काम धाम सुख सुन्दर राम कृपाल प्रेम रसभारे॥ सब विधि अधम निपाद नीच मै कुटिल कुजाति कुकर्म्म अगारे। सो उरलाय भरत जिमि भेट्यो गहिगुण

दोपन एक विचारे ॥ यह शोभा यह रूप माधुरी यहय सुभाव कृपाचित धारे। सीता राम लषण तीनो जन भाग्यवन्त उर बसहु हमारे ॥

दो० रावण राम सुयुद्ध यह जे गावहिं करि प्रीति।
बिनु श्रम भवनिधि पारते जाहिं मोह दल जीति ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहयमात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणि
ग्रन्थेलङ्काकाण्डेश्रीरामचन्द्रागमनशृङ्गवेरपुरप्राप्त
वर्णनोनामनवमोऽध्याय ९ ॥

इतिलङ्काकाण्डसमाप्तम् ॥



भक्तिशिरोमणि उत्तरकाण्ड ॥

॥ सवैया ॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन पावन पीत पटाद्भुत भ्राजै। पाणव कार्मुक वाण कसे कटितूण-विभञ्जन दुष्ट समाजै॥ सीय सपुष्पक यान अरूढ़ सुसेवत बंधु महा सुखसाजै। वंदतहै कर सम्पुट कै भगवन्त सप्रेम सदा रघुराजै॥ छप्पै ॥ रह्यो अवधि दिन एक अवध आये प्रभु नाही। कृश तनु राम वियोग सकल शोचहिं मन माही॥ सगुन होहिं शुभ देखि मुदित जहँ तहँ सब कहही। मन अनंद अस होत मनहुँ आवन प्रभु चहही॥ तव भरत नयन भुज दक्षिण उठे फरकि पुनि पुनि सुतन। शुभ सगुन जानि उर हरप अति लागे करन विचार मन॥

सो० तेहिं अवसर हनुमान विप्ररूप धरिकै सुभग।
आय गयो तेहि थान गत आसन श्रीभरत जहँ॥

सवैया॥ शीश जटा कृश गात किये मुनि वेप मनै प्रभु पांवरि दीन्हे। लागि रही रट राम सिया रसनासन चारु कुशासन कीन्हें॥ त्यागि दिये पट भूपण भूरि सु औधि अधार हिये दृढ लीन्हे। त्यो भगवन्त विलोकत भारत वूझि मिले हनुमानहिं चीन्हें॥ शोचहु

जाहि सप्रेम सदा कुशलात महामुद मंगल छावत ॥ जीति रणे रिपु रावणको दये स्वस्थल वासि सुदेवन सेवित ॥ भूप विभीषण को करि कीरति नारद शारद शंकर गावत ॥ सानुज सीयस मेत भगवन्ते विमान चढे प्रभु औधहि आवत ॥ सुनत भरत अति आनंद छाये । परम प्रीति गहि हृदय लगाये ॥ वार वार अति आदर देई । बोले वचन प्रेम जनु भेई ॥ तात सँदेश कह्यो जस मोही । तसो कछु है न देउँ जो तोही ॥ ताते तव ऋणियां मैं ताता ॥ सुनि हरष्यो कपि पुलकित गाता ॥ वार वार पद शीश नवाई । चल्यो पवनसुत आयसु पाई ॥ भरत आय पुर गुरुहि सुनाये । कहि प्रभुकुशल जननि सब भाये ॥ दो० सदल जीति रावण असुर सानुज सीयसमेत ॥ गावत यश सुर नर मुदित आवत कृपानिकेत ॥ ॥ हरिपद छन्द ॥ प्रभुआगमन सुनत उठि धाये सकल अवधपुर वासी । मंगलसाज साजि बहु भाँतिन चले मिलन सुखरासी ॥ हरषित भरत बन्धु गुरु परिजन सहित प्रेमरसपागे । कृपानिधान राम कहँ सादर चले लेन हित आगे ॥ परमानन्द अवधपुर छायो चढी अटारिन नारी । निरखहि गगन विमान मनोहर दरश आश उर भारी ॥ श्रीहनुमान जाय उत रामै भरत कुशल कहि गायेउ । चढि विमान रघुवंशविभूषण आतुर अवधसिधायेउ ॥ कृपासिन्धु सब कपिन देखावत अवधपुरीकी शोभा । महिमा अमित कही श्रीमुख जो कहै सुकवि असि कोभा ॥ अवत देखि लोग सब रघुपति पुर ढिग यान उतारे । दीन्हे पठै धनदपहँ पुष्पक रामसुजान उदारे ॥ दो० भीर संग पुरलोग सब आये जहँ रघुवीर । देखि राममुख चंद्र छवि भये विगत तन पीर ॥

कुंडलिया ॥ कीन्हे राम प्रणाम तव सानुज गुरुपद धाय । भेंटि कुशल बूझी प्रभुहिं प्रीतिसहित मुनिराय ॥ प्रीतिसहित मुनिराय कुशल हमरे तवदाया । पुनि विप्रन्ह शिरनाय सबहिं भेंटेरघुराया ॥ आय भरतपुनि शीश राम पायँन धरिदीन्हे । प्रेम मगन नहिउठत राम बहुविधि बलकीन्हे ॥

दो० बलकरि कृपानिधान पुनि लीन्हो हृदयलगाय ।
भरत रामके प्रीति अति नहिं मुख वरणि सिराय ॥
कृपासिंधु बूझत कुशल कहत भरत शिरनाय ।
सब विधि मंगलकुशल अब नाथदरश तवपाय ॥

पुनि रिपुहनहि मिले रघुनाथा । लषण भरत पद नायो माथा ॥ बहुरि लषण रिपुहन द्वउ भाई । मिले परस्पर प्रेम बढ़ाई ॥ सानुज भरत सीयपद वन्दे । अभिमत आशिषपाइ अनन्दे ॥ पुनि सानुज कृपाल सुखरासी । क्षण महँ मिले सबहि पुरवासी ॥

दो० यहि विधि सबहिंन देतसुख चले राम सुखकंद ।
कौशल्यादिक मातु सब लखि धाईं सानंद ॥

सवैया ॥ पूरणप्रेम प्रमोदभरी जननी सब देखत रामहि धाईं । ज्यों दिनअन्त सुवच्छन हेरि हुंकारि कै धावहिं धेनुलवाई ॥ सानुजराम मिले सब मातन जात न सो कहि प्रीतिसुहाई । त्यों भगवंत विलोकतरामहिं दूरिभयो दुख आनँद छाई ॥

दो० तव सीता सासुन सकल जाइ नवायो शीश ।
बूझि कुशल मनभावती दीन्ही सवन अशीश ॥

हरिगीतिका छन्द ॥ श्रीराम रूप अनूप नखशिख मातु सकल निहारहीं । लयँ हेमथार सँवारिआरति वारवार उतारहीं ॥ मणिवसन भूषण वारि सादर वायु अंचल ते करैं । भगवंत सानुज रामसीतहि

निरखि उर आनँदभरे ॥ हरिपदछन्द ॥ जामवंत कपिराज विभीषण अंगदादि कपिवीरा । नील नलादि वायुसुत सुन्दर धारे मनुजशरीरा ॥ भरतसनेह शीलव्रतनेमै सादर सकल सराहैं । पुरजनरीति प्रीति रघुवरकी निरखि निरखि सुखलाहैं ॥

दो० प्रभु आयसु तिनपायके गुरुपद नाये शीशे ।
जानि राम प्रियलाय उर दीन्हो मुनि आशीश ॥

सो० पुनि तिनलायो शीश कौशल्याके चरण तल ।
दीन्ही हरपि अशीश जानि राम प्रिय भावती ॥
गगन सुमन सुर वृन्द वरपि हरपि जै जै करहिं ।
गवने गृह रघुनन्द त्रिभुवनपति शोभा सदन ॥

कवित्त ॥ द्वारद्वारप्रति चारु कंचन कलशधारि वन्दनै पताक केतु सवहिन साजे हैं । वीथिने सिंचाय शुचि सुन्दर सुगन्ध जाल गजमणि चौकल्यों सुमणि दीपराजे हैं ॥ साजे पुरलोगन सुभाँति भाँति मंगलांग वाजे वहु वाजन सुगजवाजि गाजे हैं । भाग्यवन्त सुखमा श्रिऔधकी वखान कौन देखते सुछविजासु सुरराजलाजेहैं ।

सवैया ॥ कंचनथार सँवारि सुआरति अंगन अंग शृंगार शृंगारी । गावत मंगल राग मनोहर वृन्दन वृन्द चली मिलि नारी ॥ आरति भंजन राघवकी शुभ आरतिकै धन भूपणवारी । त्यों भगवन्त विलोकत रूप अनूप लहै सव आनँदभारी ॥

दो० प्रथम केकयी के भवन गये राम सुखदैन ।
वहुविधि ताहि प्रबोधिकै पुनि आये निज ऐन ॥
महामोद छायो अवध आये रामसुजानि ।
भाग्यवन्त श्रीरामयश करौं मुदित सव गानि ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकांडे श्रीरामानन्दअयो... निजआनन्द... ॥ १ ॥

दो० राम लषण श्रीजानकी भरत शत्रुहन साथ।
आय भवन बन्दन करौ धरि पद पंकज माथ॥
प्रात वशिष्ठ बुलाइकै गुरुजन विप्रसमाज।
कह्यो राज्यपद रामको देहु सुसाइति आज॥
मुनि बोले द्विजगण हरषि भली कह्यो मुनिराज।
अव विलम्ब नहिं कीजिये वेगि करौ यह काज॥

त्रोटकछन्द॥ तब बोलि वशिष्ठ सुमन्त लिये। सब साजहु साज निदेश दिये॥ पठये बहु धावन बोलि तबै। भयलावत मंगल द्रव्य सबै॥ चहुँओर सजावत भे नगरै। सिंचवाय सुगन्धहिये डगरै॥ रथ बाजि गयन्द सजे सगरै। सुद तोरन ठौरन पै बगरे॥ बहु भाँतिन बाजि निशानरहे। छविपावत पारन शेषकहे॥ नभ देवन दुन्दुभि बाज दिये। झरि फूलन के जय जैति किये॥ हरिपदछन्द॥ प्रभु आयसु तब पाय सेवकन प्रथम सखन अन्हवाये। सुग्रीवादि साजि पटभूषण शुभ आसन बैठाये॥ तब रघुबीर भरतके सादर निजकर जटा छुड़ाये। तिहुँ भ्रातन अन्हवाय आपही पटभूषण पहिराये॥ बिवरायेउ पुनि जटा आपने करि मज्जन तन साजे। भूषण बसन मनोहर मंजुल निरखि काम बहु लाजे॥ सासुन सकल जानकि हि सादर मज्जन तुरत कराई। दिव्य बसन भूषण बहु सुन्दर अँग अँग सजे बनाई॥ राजति राम बाम दिशि सीता छवि समुद्र सुख खानी। शोभा अमित देखि सब मातन जन्म सफल करि मानी॥

दो० ब्रह्मादिक सब देवता नारदादि मुनि वृन्द।
चढ़ि बिमान आये अवध देखन हित सुखकन्द॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरषे मुनिनाह।
रतन सिंहासन दिव्य तब मँगयो सहित उछाह॥

कवित्त ॥ कोटि शशि सूर सों प्रकाशपुंज होत जासु जगमग ज्योति मन मीनन को जारहै। हेमहीर आदि कल कलित ललित चारु चित्रित विचित्र कामदायक वहार है। जात चकचौंधि दृष्टि हेरिये सुविधि कौन तेजि को समृद्धि मोहतम तोमहार है। भाग्यवन्त शेष शम्भु शारदा चकित देखि रामके सिंहासन कि सुखमा अपार है॥ जटित विचित्र मणि माणिक जवाहिरादि पन्नन प्रकाश पुंज होत तमनीशनै। मंजु मुक्त झालरै विराजमान ओरचारि कमलाष्टदल चारु भ्राज मध्य आसनै॥ अवनि अकाश लोकलोक प्रकाश दिव्य प्रगटी सुद्युतिजाल प्रदभव्य दासनै। भाग्यवंत सुखमा समृद्धि सो बखान कौन अमंत विरश्चि बुद्धि राघव सिंहासनै॥

दो॰ तापर श्रीसीता सहित विप्रन शीश नवाय।
रामचन्द्र बैठे हरषि मुनिवर आयसु पाय॥
प्रभु शोभा अद्भुत अमित लखि हरषे सुरवृन्द।
बरषि सुमन दुंदुभि दिये जय कृपाल सुखकन्द॥
मुनि वशिष्ठ प्रथमै तिलक कीन्ह्यो रघुवर माथ।
पुनि सब विप्रन को दियो आयसु श्री मुनिनाथ॥

राज तिलक सुन्दर शुभ देखी। हरषे सब नरनारि विशेखी॥
परमानन्द मगन सब माता। करहि आरती पुलकित गाता॥
दिये दान बहु द्विजन हँकारी। कहि न जाय उर आनँद भारी॥
जयजय करहि कोलाहल होई। मन भावन पाये सब कोई॥
बाजहि विपुल निशान सुहाये। जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये॥
पढ़ै वेद भूसुर समुदाई। मागध सूत वन्दि गुणगाई॥

कवित्त ॥ वेद मंत्र ब्राह्मण उच्चार जयकार नभ देवन अपार वृष्टि सूक्ष सुमनानकी। पावन प्रताप यश कीरति कलाप ——

मागध-सवन्दि सूत गायकनगानकी ॥ नाग नभ नगर निशान धुनि धूमधमि विरची विचारि वेद रचना विधानकी। भाग्यवन्त विस्तृत प्रताप पुंज ठामठाम हेममै सिंहासनै विराजैं राम जानकी॥ सज्जितांग भूषण विचित्र पट क्षौम धारि गामिनी द्विरद ब्राम दामिनी समानकी। दूब दधि रोचना कनकथार भार भरि आरती सँवारि चली भारतीसि गानकी ॥ आरती उतारि वारि तन धन प्राण हेरि सूखमा समृद्धि मार्ग दृग चारु पानकी। भाग्यवन्त राजनके राज रघुवंश राज हेममै सिंहासनाजु राजै राम जानकी॥ सेवा साज साजि लिये सेवक सखादि बंधु आस पास राजत विचित्र शोभ ठानकी। व्यजनादि चामर सुछत्र चारु भरतादि भृत्य कृत्य गान नृत्यदार देवतानकी ॥ हेमहीर आदि बखशीश गथ होत पाय देतहैं अशीश आश पूर्ण याचकानकी। भाग्यवन्त राज वंश शीशताज महाराज हेममै सिंहासनाजु राजैं राम जानकी॥ फर्श फेन क्षीर सों फटिक भीतिकान फोरि प्रगटी सुभास्य सम चन्द्र चन्द्रिकानकी। ज्योति दीप वृक्षनकि त्रक्षन विमन्दुकार हार कृतकेतु मन सूखमा वितानकी॥ चौघड़े चगेरे चारु गेरलय गंध पात्र पान पीकदान दिव्य द्युति माणिकानकी। सोह साज राजसी समाज पुंज भाग्यवन्त हेममै सिंहासनै विराजैं राम जानकी॥ चौघिड़े मयन्द कर केशरी चगेर धारि आरसी प्रनस नील सज्ज सौज पानकी। द्विविदेत्रदान दधिमुख खासदान साजि गवलै गिलौरिकाग्रनल-पीकदानकी॥ अंगदासि चाप लंकनायक सुगर ढाल तूण जामवान शक्ति आगे हनुमानकी। भाग्यवन्त राजसी समाज साज पुंज भ्राज हेममै सिंहासनाजु राजै राम जानकी ॥ धारि धर्म धूरिका निकारि भवभूरि व्याधि पूरि-प्रणराज शत्रुतारि

तारि भ्राजते। चेलदै त्रिलोक दखि मेदिनी-कदम्बभार पारकैस दिव्यभीति आथपसमाजते॥ क्रूरकर्म खोजनासरोज धर्मी रोजरोज पायभे प्रकाश साधु सज्जनालि गाजते। भाग्यवंत राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ मंडितार्क जालसों प्रकाशपुंज हेम कीट क्षौम जरतार दिव्य अम्बरांगुभ्राजंते। मंजु मुक्तमाल कल कारमुक छत्र पाणि जग मगज्योति मणि भूपण सुसाजते॥ श्यामजलदाभ तनं सूखम सम्रद्धि चारु हारि हेरि ऊपमान रतिकाम लाजते। भाग्यवंत राजनके राजराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते॥ भानुसों प्रताप जग जालभो उदित चारु जैतिजे निशान दिव्य लोक लोक बाजते। पापताप यामिनी विनाशपाय कामक्रोध चोर बृन्द ओर चारित्रास भूप भाजते॥ साजि भेंट राजसी नरेश देश देश आनि धारि अग्र अस्तुती समग्र भूप साजते। भाग्यवंत भूपवंश शीशताज रामचंद्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ पंथ सतसाफभे अपन्थवन्द धाम धाम खुलिगे कपाट कुलिसज्जित सुसाजते। नीतिको प्रचार जग रीतिप्रीति सोहियत जोहियत जाहिमन मोद पुंज भ्राजते॥ पूर्ण सौजभावती समस्त नेकु इच्छयान दूरि दुष्कृताघहंत भी तिभक्त राजते। भाग्यवंत भानुसों उदितराजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्रआसनै विराजते॥ व्योमतन श्याम दिव्य भूपण नक्षत्र जाल चन्द्रमास्य मालशोभ दामिनीकि साजते। कौमुदी सुकीर्त्ति मंजु भ्राजतीसुवनभूरि स्रवतो सुधासो सुखसंकुल सुराजते॥ आनंदाब्धि वाढ़िचल विदिशि दिशान फैलि भव्य मूल सूखमा सरतिमार लाजते। भाग्यवन्त राजनके राज राजा रामचन्द्र जानकीस आजु भद्र आसनै विराजते॥ स्वच्छसार शोभ में प्रकाशमान दीप दीप जा-

गती सुकीर्त्तिजाल बीच वेद गाथके। ज्योतिजग ज्योतिधौ ज्वलित आदिज्योति ज्योतिज्योति पुंज उपमान सम एक साथकी॥ अक्षतादि चन्दन सरोचना कलित चारु सूखमा वलित पाणि कंजमुनि नाथके। भाग्यवन्त शीव मन मैनको हरनहार राजसी तिलक माथ सोहै रघुनाथके॥ भ्राजपुंज राजसी समाज साज भाग्यवंत सूखमा अदभ्रपीर शेष सो न पावते। शोकते विशोक लोक लोकनै महर्षि दांत्रि चात्रि कालिदास कीर्त्ति ख्याति स्वामि गावते॥ विप्र साधु सज्जनालि देवता मुनीन्द्र वेद आनंदाढ्य जाल भावलोकि प्रेम भावते। कारुणीक रामचन्द्र जानकीस भद्रधाम धामदा समग्र अर्थ अस्तुती सुनावते॥ वशिष्ठ स्तुति कवित्त॥ वेद तत्त्वसारमें समर्थ हंस वंशराज उपमान भ्राजसम उपमा वरोहिये। विप्रसाधु सज्जनार्थ आनि है नृपति लाल भंजिभार भूवजाल यश क्यों सराहिये॥ नाम गुणधाम बल पार है न श्रुति गाथ हाथके सु ओंह भक्ति भावना निवाहिये। भाग्यवन्त भानुवंश शीशताज रामचन्द्र शवरी सु राज्य यो अचल नित्त चाहिये॥ सवैया॥ साधु महीसुर सज्जन हेत कृपाकरि है अवधेशके बारे। पालने देवनके खल घालन धर्म प्रचारि यशे विस्तारे॥ आगम वेद पुराण कहै सब अद्भुत कर्म है राम तुम्हारे। जै ति सु जै भगवन्त सदा नृपनंदन दुःख निकंदन हारे॥ ब्रह्मा स्तुति कवित्त॥ पावतो न मर्म शेष शारदा निगम शम्भु अद्भुतावतार कर्म रावरे सकल है। अक भूमि भूसुर मरन काज धारि तनु कृत्यकार आलपुंज लीलया अमल हैं॥ भाग्यवन्त पालिपद अग्रदास वृन्दने सु घालि दुष्ट दुष्कृतौघ दलि पुंज दलहैं। भानुवंश भूषणावतार पूर्णनाथ आप भ्राजते प्रताक जग यशके अचल है॥ राम चरित्र अपार सबै तब शंकर

शेष न जानने हारो ॥ अद्भुत लै अवतार अनेक महीसुर सज्जन के दुख टारो ॥ मोद मई कृत लीलन पुंजि जु गावत पावत हैं भव पारो ॥ कोशलराज कुमार दवो भगवन्त सु साहेब दानि उदारो ॥ शिवस्तुति सवैया ॥ रामस्वरूप तुम्हार सदै मुदमंगलमय मृदु मूरति सो है ॥ ध्यावत कोटि कटै भवसंकट दायक हू फल वांछित को है ॥ आगम वेद पुराण प्रशंसत नेति निरन्तर गावत जो है ॥ त्यों भगवन्त सु जैति सदा रघुराज हरो भ्रमफन्दन मोहै ॥ रोला छंद ॥ जै करुणा सुखधाम राम भवभार विभञ्जन ॥ शमन पाप संताप हरित दुख दारिद्र गञ्जन ॥ जै अवधेश सुरेश ब्रेश यश विस्तृत पावन ॥ नील कमल तन श्याम काम शत कोटि लजावन ॥ जै धृत शर कोदण्ड कठिन खल दल बल खण्डन ॥ प्रणत पाल सर्वज्ञ तज्ञ तारण महि मण्डन ॥ जै रञ्जन सुर संत भक्त वत्सल वलधामं ॥ गुणागार भवपार पोत पावन इदनामं ॥ जै अनाथहित नाथ पाहि प्रणतारति मोचन ॥ रघुकुल कमल पतंग सुखद पंकज दल लोचन ॥ जै पूरण अवतार देव त्रय सम्भव कारण ॥ कृत अद्भुत शुभ चरित सुलभ जीवन उद्धारण ॥ जै प्रद भुवन प्रमोद भूप मणि मौलि कृपाल ॥ महाराज राजेन्द्र राम यश विदित विशाल ॥ जै जै जै श्रीराम कृपा वारिधि गुणधामं ॥ भाग्यवन्त निज भक्ति देहु संतत अभिरामं ॥ [illegible] ॥ दो० ॥ वार वार हर मांगों धरी चरण पर माथ ॥ [illegible] निज पदपंकज भक्ति मोहिं देहु दया करि नाथ ॥ [illegible] ॥ इन्द्रस्तुति सवैया ॥ हे रघुवंश विभूषण राम गुणोत्तम धाम विनय सुनि लीजै ॥ भव्यवतार अपार कथा श्रुति गावत पै तव अंत न कीजै ॥ त्यों भगवन्त तुम्हें प्रिय सो निशिवासर भंग लखो ज्वर

भीजै। मैं निषया वश नाथ सदा जन जानि स्वभक्ति कृपा करि दीजै॥ सूर्यस्तुति हरिगीतिका छंद॥ जै राम जब ते वंश हमरे जन्म करि करुणा जयो। विस्तार पावन सुयश तिहुँपुर तोप बड़ तब ते भयो॥ भगवन्त करि अब नाथ दाया भक्ति आपनि दीजिये। चिरजीव जोरी चारु संतत प्रेमरस हम भींजिये॥ अग्निस्तुति सवैया॥ भ्राजत राज तिहूँ पुरमें रघुराज समाज स आज तिहारो। संतत संतन देवन के हितकारक वेद पुराण पुकारो॥ खण्डनके खल वृन्दन भूमि विमण्डनके दुखदन्दनटारो॥ जै जय जै भगवन्त सदा रघुवंश विभूषण राम उदारो॥ मरुतस्तुति किरीट छंद॥ भूप शिरोमणि चक्रवती अवधेन्द्र कुमार प्रशंसन लायक। व्यापक ब्रह्म चराचर मैं अवतार धरयो महि भार नशायक॥ गावतहै यश पावन वेद अदभ्र सदा सुर संत सहायक॥ जै जय जै भगवन्त सदै प्रणतारति भंजन श्रीरघुनायक॥ भूमिस्तुति सवैया॥ खल कर्मन कुत्सित पातक भार जबै जब मोपर आनि परयो। अवतार अनूप अनेकन धारि तबै तब दुष्कृत नाथ हरयो॥ यश विस्तृत पावन लोक तिहूँ जन रञ्जन भंजन शोक करयो। भगवन्त प्रशंस करौं प्रभु क्यों तुम सो प्रभु और न जन्म धरयो॥ वेदस्तुति सवैया॥ रघुनायक नायक देवनके नहिं पावत योगिन यत्न करे। पचिहारि अनेक विरक्तगये नित ध्यावत शंकर ध्यानधरे॥ स्वइ राघव प्राणिगहे कपि भालु स्वइच्छित बोलत मार्गसरे। भगवन्त सुजैजय नाथ तथा चरिताद्भुत जाल जितेवगरे॥ तोटक छन्द॥ जय रामकृपा सुखधामहरे। सबरूप अनूप न भूपपरे॥ भुजदण्ड प्रचण्ड प्रभा रहिने। दशकन्धर आदि सदुष्ट हने॥ अवतार नृधारि भुभार हरयो। यश पावन लोक तिहूँ बगरयो॥ सह शक्ति

सुसेवक जानिक्षमो॥ रज शठुर दुस्तर कौनतरै॥ नरनाग सुरासुर जौनहरै॥ करुणाकरि आपु लखे जिनहीं। भवसिन्धु अगाधतरे तिनहीं॥ भैवं दुःखनिकन्दन नामजदा। कुरुत्रातुमयी स्वइराम सदा॥ सुरअंत भंजन भारमही। रघुनाथ अनाथन नाथसही॥

दो० चरणकमलं अनपायनी भक्तिदेहु जगदीश। भाग्यवन्त करजोरिकै नाथ नवावों शीश॥

नारदस्तुति नगस्वरूपिको छन्द॥ नमामि राम नागरं। कृपा सुशील सागरं॥ भवाब्धि घोर तारणं। त्रिताप पापहारणं॥ समस्त विश्वपालनं। सुरारि वृन्द घालनं॥ स्वभक्ति चारु दीजिये। कृपा कटाक्ष कीजिये॥ शारदस्तुति छप्पै॥ जैजै श्रीरघुवीरधीर त्रिभुवनहितकारी। राजवंश अवतंस चरित अद्भुत भयहारी॥ सेवत सुलभ उदार भक्तवत्सल गुणरासी। पूरणब्रह्म समान सदा अग जगमें वासी॥ निज भक्तहेत धरि विविधतनु करत कठिन संकट शमन। यश गायगाय नर भवतरत जयजै श्रीसीतारमन॥

दो०। यहिविधि सुरनरमुनि सकल प्रभुसन अस्तुतिकीन। भाग्यवन्त अनपायनी भक्तिमांगि वरलीन॥

इतिश्रीमद्देवध्यानसिंहरमात्मजभगवन्तसिंहविरचितेसाक्षिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकाण्डे श्रीसीतारामचन्द्रराज्याभिषेकसुरमुनिआदिस्तुतिवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामशरीर सुहावन पावनपुंज लजावन मैना। चारु सुचीर विभूषण मंजुल अंगन अंग सजे छवि ऐना॥ राजत राज सिंहासनपै रघुनायक दायक दासन चैना। वन्दतहैं कर सम्पुटकै भगवन्त ससीय श्रीराजिवनैना॥ राजत रामसिंहासनपै सुखमा भगवन्त न सो कहिजाती। आनंदमंगल छायरह्यो पुर बाजि निशान रहे बहुभांती॥ नाचनटी बहु नाचकरै गुण किन्नर

गावतुहै दिनराती ॥ शचिकपाय सुदान अशीशत जातनही उर मोद समाती ॥ दो० यहि आनन्दसमेत सब गये मास षटबीति ॥ तब रघुपति निज सखनसन बोले वचनसप्रीति ॥ सवैया ॥ हे नल नील सुऋक्षपते युवराज विभीषण वानरनाहू। काजकियो तुम मोरबड़ो क्यहिभाँति करौं भगवन्त सराहू ॥ भरत आदि सुभ्रातन ते बहु प्रीतम मोहिं सबै तुम आहू। संतत मोहिं सप्रेम भज्यो रहक्षेम सबै अब मंदिर जाहू ॥ दो० सुनि प्रभु वचन सनेह रस भये मगन कपिवृन्द ॥ रहे निरखि यकटक सकल रामचन्द मुखचन्द ॥ देखि प्रीति अति राम कृपाला। भूषण वसन विचित्र विशाला ॥ भांति भांति बहु मोल मँगाये। निजकर भरत सबन पहिराये ॥ भये मुदित मन सुख न समाई। तब रघुपति लिय सबन बुलाई ॥ अति सादर समीप बैठारी। मुनि प्रति राम वचन उच्चारी ॥ दिग्पाल छंद ॥ एताव शैलवासी नल नील बंधु दोऊ। बुधिवन्तवीर बांके सुनु काज कीन जोऊ ॥ इन सिंधु सेतु बांधे दशकंठ शीश फारे। संग्राम शत्रुभारी बहु खोजि खोजि मारे ॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बंधुहूते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये बालिबंधु ज्ञानी सुग्रीव नाम याको। किष्किंधा रजधानी कपिराज वीर बांको ॥ बहु यंत्र मंत्र जानै संग सेनि भूरिबांकी। करवाय शोध सीते रण युद्ध कीन हांकी ॥ मुनिराज काज मेरें इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहि प्रियलागे ॥ ये बालि पुत्र ज्ञानी है अंगद नाम याको। यशवन्त बुद्धिराशी बलवन्तवीर बांको ॥ दशकण्ठ सभाजाई पगरोपिमान भंज्यो। दहि लंकभवन

दीन्हे रण शत्रु अरि गंज्यो ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये ऋक्षराज शूरो जामवन्त नाम जानी। दलपुंज संग याके बुधिवन्त वीर मानी ॥ रिपु लात घात पार्यो रणभूमि छोरि लीन्हें ॥ घननाद मान तूर्यो बहु युद्ध घात कीन्हें ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहिं प्रिय लागे ॥ ये राक्षस कुल माहीं दशकण्ठ बन्धु शूरो ॥ है विभीषण नाम याको यशवन्त भक्तरूरो ॥ तजि बन्धु आनि मोहीं मिलिकाज भूरि कीन्हे। दर्शाय मीचु रिपु की कहि वैद्य नाम दीन्हे ॥ मुनि राज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहि प्रिय लागे ॥ ये पवनपुत्र नामी हनुमान नाम याको। मिलवाय मोहिं दीन्हें कपिराज वीरबांको ॥ मुख मेलि मुद्रिका लै तरि सिंधुपार जाई। पुर जारि मारि अक्षै सुधि सीय वेगिलाई ॥ सौमित्र दुःख मेट्यो गिरिद्रोण रैनि लायो। करि युद्ध क्रुद्ध भारी रिपु सैन मारि दायो ॥ मुनिराज काज मेरे इन देह गेह त्यागे। भरतादि बन्धुहू ते बहु मोहि प्रियलागे ॥

दो० कपिसमाजके गुण अमित वरणि पार नहिहोहि।
प्राण सरिस मुनिराज ये सततहे प्रिय मोहि ॥

सुनि प्रभु वचन हरषि मुनि नाहू। पुनि उठि मिले मुदित सबकाहू ॥ तब रघुपति सबहिन सनमानी। बिदाकीन कहिकहि मृदुवानी ॥ उर धरि राम रूप प्रभुताई। चले सकल चरणन शिरनाई ॥ तब अंगद प्रभु पद शिर नायो। जोरि पाणि मृदुवचन सुनायो ॥

कुंडलिया ॥ कहा हमारो काजहै प्रभु तजि कहियो गेह। तुम सर्वज्ञ कृपायतन जानहु शील सनेह ॥ जानहु शीलसनेह मरण अवसर मोहिंवाली। करुणासिंधु कृपालु गयो कौंछे तववाली ॥

घालि सकल दुख दोष किन्यो प्रतिपाल महाहै। तुम तजि दीनदयाल काज अस गेह कहा है।। राखिय शरण कृपायतन अब हिं जनि त्यागौ नाथ। दीनबंधु दाया सदन विनै करौं धरि माथ।। विनै करौं धरि माथ टहल गृहकी लघु करिहौं। प्रभु पद पंकज देखि अगम वारिधि भव तरिहौं।। हौं बालक अज्ञान विनय कैसे प्रभु भाखिय। भाग्यवन्त जन जानि शरण पंकज पद राखिय।। कीन्ह्यो अंगद बहु बिनै बार बार शिर नाय। देखि प्रीति रघुवंशमणि लीन्ह्यो हृदय लगाय।। लीन्ह्यो हृदय लगाय माल निज उर पहिरायो। सजल नैन मृदु बैन राम बहु विधि समुझायो।। समुझायहु बहु भाँति चल्यो चरणन चितु दीन्ह्यो। बार बार उर लाय बिदा रघुपति कपि कीन्ह्यो।।

।दो०। भरत लषण रिपुहन अनुज सहित संग हनुमान।
सकल कपिन कहँ पठय फिरि आये जहँ भगवान।।
तब रघुवीर निषाद कहँ दीन्ह्यो बोलि निदेश।
जाहु सखा गृह आपने आवत रह्यो हमेश।।
सुनि प्रभु बचन सप्रेम गुह बहु विधि विनय सुनाय।
चरण कमल उर राखि के चल्यो भवन शिर नाय।।
प्रभु चरित्र सुंदर सुखद देखि देखि पुर लोग।
कहहिं धन्य हम भागवड़ जो यह भयो सँयोग।।

।।इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे उत्तरकाण्डेश्रीरामचन्द्रवशिष्ठप्रतिकपिसमाजप्रशंसासुग्रीवादि निजभवनगमनवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३।।

।दो०। बंदौं श्री सीता रमण शमन पाप संताप।
भाग्यवन्त तिहुँ लोक में जाको विदित प्रताप।।

यहि विधि राम सकल सुखदाता। राजहिं सभा सहित लघु भ्राता।। श्याम गात सुभग सब अङ्गा। लाजहिं छवि लखि कोटि अनङ्गा।।

पीतबसन द्युति तड़ित लजावन। भूषण विविध सुदेश सुहावन॥
चरणकमल शुभ चिह्न सुहायें। मुनि मन भृंग रहत जहँ छाये॥
कटि किंकिणी मनोहर सोहै। सुनिरव मधुर मदन मन मोहै॥
नाभी रुचिरा उदर अतिभ्राजा। उर आयत मणिमाल विराजा॥
केहरि कंध दंड भुजभारी। अङ्गदादि भूषण बहुधारी॥
कर धनुबाण सुभग दर ग्रीवा। आनन चन्द्र अमल छविसीवाँ॥

दो० वारिज लोचन गोल श्रुति सोहत अमल कपोल।
चारु चिबुक रद अधर शुचि हरतहृदय मृदुबोल॥

कानन कुंडल सोहहिं लोला। नाकबुलाक सुछबि अनमोला॥
चितवनि चारु चित्त मन हारी। भृकुटी बंक अलक छविकारी॥
मृग मद तिलक सोह वर भाला। हिमकीट शिर परम विशाला॥
नख शिख रूप अनूप विराजै। देखत काम कोटि शतलाजै॥
निरखहिं छवि सादर सब भाई। होहिं मुदित जीवन फलपाई॥

दो० राम रूप शोभा अमित बरणि सकै नहि शेष।
भाग्यवंत लघु बुद्धि मैं करौं कवनविधि लेख॥

सवैया॥ रामप्रताप उदै रविसों अघओघ महातम पुंजनशाने। सज्जन संत सरोज खिले खल लम्पट कैरवसों मुरझाने॥ धर्ममलिंद उड़े सब ठाँय अधर्म उलूकसमाज लुकाने॥ भक्तनकोक अनंदलह्यो भगवंत विशोक बसे सुथाने॥ राम भक्ति रंजा सुखी सब लोक मिटे दुखदारिद दोष त्रितापा। पूरिरह्यो जग धर्ममई वचमानसकर्म नहीं कहुँ पापा॥ बैर विहाय चरैं मृग कानन निर्भयसाधु करैं तपजापा॥ काहुहिं लेश कलेश नहीं भगवंत उदै रवि रामप्रतापा॥ कामदरूप भई वसुधा सुखसंपति छायरह्यो सब ठाईं। दारुण दर दुकाल गयो तजि व्याल कुचाल सचाल चलाई॥

अमी सरितान स्रवे मणि आकरहैं गिरि संकुल जाई । कोशलराज समाज विभो भगवंत सकै न अहीशहु गाई ॥

॥ दो० ॥ रामराज सुख सम्पदा रह्यो सकल जग छाय ।
॥ चारिहुवर्ण सुधर्म रत रहे राम यश गाय ॥
॥ आनँदमंगल अवधपुर दिनदिन प्रति अधिकाय ।
॥ मुदित सकल निज निजभवन बहुविधि रचेवनाय ॥

कुंडलिया ॥ धवलधाम अभिराम अति कंचनखंभ विशाल । चामीकर मै कलशशुभ धरे दीपमणि जाल ॥ धरे दीपमणिजाल देहरी विद्रुम सोहै । रचना अमित अनूप देखि मुनिजन मनमोहै ॥ मोहै विधि चटपट कुलिश तोरणवर सुखमा लखति । सुरपति सदन न पटतरति धवलधाम अभिराम अति ॥ जातरूप मै रचित अति सोहत पुरबाजार । धनिक वणिक बैठे विविध लैलै वस्तु अपार ॥ लैलै वस्तु अपार पार गनिको त्यहि पावै । देखत विभुजिन केर धनदमनमांहिं लजावै ॥ जावै जो विनुवखु तहां लहै वस्तुभावत समति । किमि बजार सुखमा कहै जातरूप मै रचित अति ॥ सोहत पुर चहुँ दिशि अमित सुभग वाटिकावाग । सदासुमन फल सहित द्रुम गुंजत मधुप सराग ॥ गुंजत मधुप सराग उड़त लैलै मकरंदा । करत मुखर खगवृन्द जहां तहँ सहित अनंदा ॥ सहित अनंद बसंत नित रहत जहां निशिदिन रमित । कहि न सकै भगवन्त छवि सोहत पुर चहुँदिशि अमित ॥ पुर उत्तर सरयूसरित सोहत पावनधार । उठत तरंगै विविधविधि भवँर अवर्त्त अपार ॥ भवँर अवर्त्तअपार घाट सुन्दर सबबांधे । मणिमय शुभ सोपान पंत्र कहुँ सखियन रांधे ॥ रांधे पनिघट सुभग बहु करत जहाँ मज्जन वनित । देवालय रंजित तटनि पुर उत्तर सरयूसरित ॥ जावे

दरशनके किहे पाप ताप मिटिजाय। तेहि सरयूवरसरित की को कहै महिमागाय ॥ को कहै महिमागाय प्रेम युत मज्जत प्रानी। रामधाम पथ पाव लहत जो कोउ मुनिज्ञानी॥ ज्ञानी मुनिजन वृन्द वासकीन्हे ढिगताके। पियें सदा शुचिनीर नमें सन्तत शिरजाके॥

दो० जहँतहँ तुलसीवृन्द बहु लाये सकल मुनीश।
कहिनसकै भगवन्त सो सुखमा गणपअहीश॥

कवित्त ॥ ठौर ठौर सोहन तड़ाग दिव्य वारि मंजु पूरित विकाश पद्म रंगरंग ह्वैरहे। आसपास चंचरीक भीरभूरि वृन्दवृन्द घूमि घूमि वासनै सुगुंजिगुंजि लैरहे॥ धारि धारि मोदहीं मराल भाँति भाँतिनै सुकूजि कूजि पुञ्जपुञ्ज शोर घोरकैरहे। कोकिला चकोर कीर सारिका मयूर चक्र वाटिकान वागमे कलोलनै मचैरहे॥

दो० पुरशोभा अद्भुत अमित क्यहि विधिकहौं वखानि।
परब्रह्म श्रीरामजी भये भूप जहँ आनि॥
पुर नर नारि सप्रेम सव करहि रामगुण गान।
लहहिं परम आनँद निरखि रघुकुल पंकजभान॥

छप्पै ॥ सेवहिं सादर वन्धु सकल रामहि दिन राती। राखे रुख नितरहहि यथा चातक दिशि स्वाती॥ रामचन्द्र वहुभाँति करहि भ्रातनपर प्रीती। सिखवहिं तिनहि सप्रेम सदा सुन्दरविधि नीती॥ प्रभु कहहिं कथा इतिहास वहु सुनहि सकल मनुलायकै। ब्रह्मादि देव सन्तत सकल नावहिं पद शिरआयकै॥ विश्वामित्र वशिष्ठ आदि यात्रत मुनि गुरुजन। जुरहि सभासद आइ सहित सवमंत्री पुरजन॥ रामरूप छविदेखि सकल जीवन फलपावै। शासनलै सव लोगसहित मुद भवन सिधावैं॥ नित नारदादि मुनिवरनिकर

आय आय पायँन नमत । लखि भाग्यवन्त नखशिख सुछवि बहु प्रकार अस्तुतिकरत ॥

दो० वहुप्रकार अस्तुति करहिं नावहिं पदरज माथ ।
कमलनैन श्रीराम छवि लखि सवहोहिं सनाथ ॥
सानुकूल सवपर सदा करहिं कृपा श्रीराम ।
सेवहि पद भगवन्त सव सहित प्रेम वसुयाम ॥
रामराज वैभव अमित को कहि पावै पार ।
निजसुखहित भगवन्त कछु कह्यो सुमति अनुसार ।

इतिश्रीमदयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेउत्तरकाण्डे श्रीरामराज्योत्सववर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ४ ॥

दो० वन्दौ श्रीरघुवर चरण भवनिधि तारक पोत ।
भाग्यवंत सुमिरत जिन्हें उदय ज्ञानरवि होत ॥
द्वैसुत सुन्दर जानकी जाये सव गुण धाम ।
सूरवीर विजयी समर लवकुश पावन नाम ॥
पुष्कल तक्षक भरतके भये पुत्र युग आनि ।
चित्रकेतु अङ्गद उभय लक्ष्मण के सुत जानि ॥
सुभुज शत्रुघाती उभै रिपुसूदन सुत पाय ।
सव गुणधाम अनूपछवि कहो कवन विधिगाय ॥
आदि अंत जाके नही पावत वेद न पार ।
नरतनु धरि भगवन्त सो कृत शुभचरित अपार ॥

यक दिन एक श्वान मगमाही । वैठो रहै मुदित डर नाही ॥
विन अपराध विप्र यक आई । मास्यो चरण श्वान दुख पाई ॥
फिरियादी प्रभु पहँ स्वइ आयो । तुरत राम द्विज वोलि पठायो ॥
कह्यो श्वान तें तव सुरनाहा । याको दंड देउं कहु काहा ॥

कह्यो श्वान याको रघुराई। यती बनाइ गयंद चढ़ाई॥
पुर फिराय चहुँ दिशि ते लीजै। शिव मंदिर अधिकारी कीजै॥
सुनि ऐसे कीन्ह्यो जग त्राता। कह्यो श्वान ते पुनि प्रभुवाता॥
यामें कौन दंड यहि भयऊ। तब शिरनाय कहत सो भयऊ॥
पूरुब विप्र जन्म में धारा। धान्य गोसाई कै यकबारा॥
खायउँ भयउँ श्वान सो आई। जन्म भयंत खई यह खाई॥
ह्वै है कौन दशा यहि केरी। सुनि सब मुदित भये तेहि बेरी॥

दो० यक उलूक कर गृद्ध यक लीन्ह्यो भवन छड़ाय।
झगरत दोऊ रामपहँ फिरियादी भे आय॥

पूछ्यो प्रभु काको यह गेहा। कह्यो गृद्ध गृह मेरो येहा॥
कह उलूक प्रभु भवन हमारा। झूठ कहत यह गृद्ध लबारा॥
तब प्रभु पूछ्यो सचिवन पाहीं। कहो भवन काको यह आहीं॥
सबहिन भवन उलूक बतायो। तब प्रभु ताको तुरत देवायो॥
पुनि गृद्धहि पूछ्यो जगत्राता। कोतैं अहसि सत्य कहु बाता॥
जो मम राज्य माहि निरबाधा। कीन्हेसि दंडयोग अपराधा॥
बोला गृद्ध सुनहु जगदीशा। पूर्व जन्मकर मैं अवनीशा॥
ऋषयशाप यह तनु मैं धारा। अब तव दरश भयउ उद्धारा॥

दो० एक विप्रकर सुत मर्यो बिनु अवसर दुख दीन।
आय कह्यो सो रामसों आरत वचन अधीन॥

हे प्रभु राज्य आपुके माहीं। होनअनीति चहियअसिनाही॥
बिनु अवसर अकालमृतु घेरो। मर्यो कवन कारण सुतमेरो॥
सुनि पूंछेउ प्रभु मुनिनविचारी। कह मुनि नारद सुनहु खरारी॥
शूद्र एक तप करै अपारा। तेहि अघ मर्यो सु विप्रकुमारा॥
सुनि विमान चढ़िकै रघुराई। तुरतहि जात भये तेहि ठाई॥

माधवविलास ≈)

माधवप्रसाद तेवारी जी संग्रहीत इस मे नायकाभेद के कवित्त वर्णित है ॥

कृष्णप्रिया ॥≈)

मंगलीप्रसाद विरचित ब्रजविलास की तरहपर श्रीकृष्णजी का जन्मसे वैकुंठगमन पर्यंत चरित्र है यह काव्यालंकार युक्त बहुतही सुन्दर पुस्तक है ॥

रामसुधा –)

जिसको ब्रजचन्दजी ने महाराजाधिराज काशीनरेश की आज्ञानुसार अनेक रागो व कवित्तो से श्रीरामचन्द्रजी का गुणानुवाद गाया है ॥

कविप्रिया सटीक ॥–)

टीका हरिचरणदास कवि कृत–जिस मे नृपवंश व कविवंश वर्णन, कवित्तदूषण, कवि व्यवस्था, गणागण फलाभाव सामान्यालंकार, नखशिख, नायक नायका भेद और चित्रालंकारादि वर्णित है ॥

श्यामकेलि –)।

लाला गोविन्दसहाय कायस्थ भटनागर सिकन्दराबादी कृत–इस में श्रीकृष्ण व राधाजी के चरित्र और लीलाओं का वर्णन है ॥

कुंडलिया गिरिधरदास मूल)॥॥

इसमे गिरिधरदासजीने सामयिक वार्ता· चेतावनी कुण्डलि-वर्णन की है ॥